प्रकाशकीय

धर्म जब फलित होता है तो व्यक्ति और समाज रूपान्तरित होते हैं। धर्मपाल प्रवृति इस युग मे धर्म के चमत्कारी फलितार्थ और समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण का एक अप्रतिम उदाहरण है।

यह क्रान्ति घटित हुई युगद्रष्टा, युगस्रष्टा तपोनिष्ठ समतादर्शी आचार्य श्री नानालाल जी म सा. के प्रखर तेजस्वी व्यक्तित्व एव धर्म प्रेरक मर्म-स्पर्शी ओझस्वी व्याख्यानो और संवादो से।

मालवा के 600 गांवो मे फैली हुई एक विशाल जनमेदिनी ने मांस-मदिरा आदि दुर्व्यसनो का त्याग कर सम्यक् सस्कारो के पथ पर चलने का संकल्प ग्रहण किया, पिछडे हुओ ने ऊपर उठने और आगे बढने की ललक जगाई। व्यक्ति बदले। स्थिति बदली। परिस्थितियो ने मोड लिया। गाव-गांव में नवोन्मेश की लहर व्याप गई। जाति, वर्ग समुदाय प्रभावित हुए। नव समाज की रचना साकार होने लगी। एक ऐसा समाज जहां विषमता के संकोच और समता के विस्तार की गूंज मुखर हो उठे। जहां अनैतिकता और दुराचरण पर नैतिकता और सदाचरण का वर्चस्व स्थापित होने लगे। जहां विकृति भी प्रकृति की ओर मुडने का उपक्रम करे। सुविधाभोगी शहरवासी ग्रामाचलो की कटकाकीर्ण पथरीली पगडडियो पर पदयात्रा करने निकल पडे।

यह धर्म क्रान्ति ही 'धर्मपाल-प्रवृति' की बुनियाद है।'धर्मपाल-विशेषाक' इस प्रवृति के उद्भव और विकास का एक जीता-जागता चित्रण है। इसे सुधि पाठको के हाथ में सौपते हुए हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह

अंक समता समाज रचना की मुहिम को आगे बढाने के यदि यत्किंचित भी सहायक बना तो हम अपना प्रयत्न सफल मानेंगे।

इस विशेषांक के सत्वर और श्रेष्ठ प्रकाशन में श्री नरेन्द्रजी भानावत तथा श्री भंवरलाल जी कोठारी का विशेष सहयोग रहा है। श्रमणोपासक के सह-सम्पादक श्री जानकीनारायण श्रीमाली एव जैन आर्ट प्रेस के मैनेजर श्री सरल विशारद व उनके सहयोगियो ने अनथक श्रम कर इस विशेषाक के सामयिक मुद्रण के लक्ष्य को प्राप्त कराया है।

देश भर में फैले सघ-निष्ठ महानुभावों ने अहमदाबाद, कलकत्ता बैंगलोर, दिल्ली, जयपुर, रतलाम, मद्रास, आसाम, बीकानेर तथा अन्य क्षेत्रो से प्रभूतमात्रा में विज्ञापन प्रदान कर व कार्यकर्ताओ ने एकत्रित कर जो सहयोग प्रदान किया है, वह अभिनन्दनीय एव प्रशसनीय है।

हम इन सभी के प्रति हृदय से आभारी हैं।

दीपचन्द भूरा	चम्पालाल डागा	पीरदान पारख
अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	मत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

□

यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से संघ एवं संपादक की सहमति हो।

□
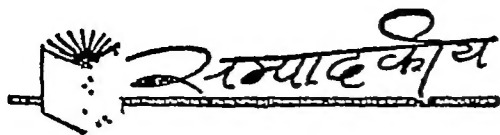
धर्म आत्मा का स्वभाव है। सभ्यता का विकास इन्द्रिय-सुख और विषय–सेवन की ओर अधिकाधिक होने से आत्मा अपने स्वभाव में स्थित न होकर विभावाभिमुख होती जा रही है। फल स्वरूप आज ससार में चहु ओर हिंसा तनाव, अनास्था और विषमता का वातावरण बना हुआ है

विषमता से समता, दुख से सुख और अशान्ति से शान्ति की ओर बढने का रास्ता धर्ममय ही हो सकता है। पर आज का सबसे बडा सकट यही है कि व्यक्ति धर्म को अपना मूल स्वभाव न मानकर उसे मुखौटा मानने लगा है। धर्म मुखौटा तब बनता है जब वह आचरण में प्रतिफलित नही होता। कथनी और करनी का बढता हुआ अन्तर व्यक्ति को अन्दर ही अन्दर खोखला बनाता रहता है।

व्यक्ति अनन्त शक्ति और निस्सीम क्षमताओ का धनी है। धर्म की सम्यक् आराधना उसकी शक्ति और क्षमता को शतोमुखी बनाती है जबकि धर्म की विराधना उसे अधोगामी बनाकर कही का नही रखती।

ससार मे चार वातें अत्यन्त दुर्लभ कही गई हैं—मनुष्य जन्म, शास्त्र–श्रवण, श्रद्धा और सयम में पराक्रम । आज मनुष्य जन सख्या के रूप में तो तीव्र गति से वढते जा रहे है पर मनुष्यता घटती जा रही है । मनुष्य जन्म पाकर भी लोग सतसग और विवेक के अभाव में हीरे से अनमोल जीवन को कौडी की भाति नष्ट किये जा रहे हैं । यही कारण है कि जीवन और समाज में निरन्तर नैतिक ह्रास और सास्कृतिक प्रदूषण वढता जा रहा है, इसे रोकने का उपाय है—सही जीवन–दृष्टि का विकास और विवेक पूर्वक धर्म–पालन

परम श्रद्धेय, जिनशासन प्रद्योतक, समता विभूति **आचार्य श्री नानालाल जी म सा.** ने आज से लगभग **20** वर्ष पूर्व धर्म की नैतिक और सामाजिक शक्ति को पहचाना और उसे सामूहिक क्राति के रूप में जीवन निर्माणकारी युग-प्रवर्तक मोड दिया । मालवा क्षेत्र के हजारो अस्पृश्य कहे जाने वाले लोग जो मद्य, मास, शिकार आदि दुर्व्यसनो से ग्रस्त थे वे आचार्य श्री की अमृतवाणी से प्रभा-वित/प्रेरित होकर निर्व्यसनी सात्विक जीवन जीने के लिए सकल्पवद्ध हुए, दृढ़–प्रतिज्ञ वने । धर्म को सही अर्थों में धारण करने की उनकी प्यास जगी । वे **धर्मपाल** वने । उनका जीवन क्रम वदला, व्यवहार वदला दृष्टि वदली । अव उनमें क्रूरता नही रही, वे करूण और सवेदनशील वने, श्रमनिष्ठ और स्वावलम्वी वने, सुसस्कारी और धर्मपरायण वने ।

'धर्मपाल–प्रवृति' का वह वीज आज अकुरित होकर पल्लवित पुष्पित और फलित हो उठा है । इसके रख–रखाव, सिंचन आदि में अनेक सत–सतियो समाजसेवियो, श्रीमन्तो और विद्वानो का विविध आयामी सतत सहयोग रहा है । धर्मपाल प्रवृति मनुष्य के स्वभाव/चरित्र निर्माण की महत्वपूर्ण प्रवृति है । इस प्रवृति

से जन साधारण अधिकाधिक परिचित होकर अपने को सुसंस्कारी और धर्मनिष्ठ बनाये, इसी उद्देश्य से इस विशेषाक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

यह विशेषाक चार खण्डो मे विभक्त है । प्रथम खण्ड **'धर्म : धारणा और धरातल'** मे धर्म के विविध पक्षो पर प्रकाश डाला गया है । द्वितीय खण्ड में धर्मपाल प्रवृति के उद्गम एव विकास की कथा तथा तृतीय खण्ड में इस प्रवृति से सम्बन्ध विभिन्न कार्यकर्त्ताओ, विद्वानो, समाजसेवियो और धर्मपालको की सस्मरणात्मक अनुभूतियो को प्रस्तुत किया गया है । चतुर्थ खण्ड में सस्कारी जीवन जीने की सचित्र कथाएँ दी गई है । और साथ में धर्मपाल प्रवृति की चित्रमय झाकी भी प्रस्तुत की गई है । आशा है यह विशेषाक धर्मपालना के प्रति जनमानस को प्रेरित/प्रोत्साहित करने में अपनी विशेष भूमिका निभायेगा ।

हम अपने सभी विद्वान् लेखको विज्ञापनदाताओ एव सहयोगियो के प्रति उनके मूल्यवान योगदान के लिए हार्दिक आभार प्रकट करते है।

—डॉ. भानावत

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ

बीकानेर

एक परिचय

१९८४

□

श्री अ भा. साधुमार्गी जैन सघ की स्थापना वि स २०१९ मिति आश्विन शुक्ला २ को हुई। सघ का उद्देश्य सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र की अभिवृद्धि करते हुए समाजोन्नति के कार्यो को करना है। इन उद्देश्यो की पूर्ति एव प्राप्ति हेतु वर्तमान मे सघ की निम्न मुख्य प्रवृत्तिया चालू हैं—

सम्यक् ज्ञान :

सम्यक् ज्ञान के अन्तर्गत हमारी निम्न प्रवृत्तिया सचालित हो रही है—

प्रकाशन :

१ साहित्य प्रकाशन
२ 'श्रमणोपासक' पाक्षिक-पत्र का प्रकाशन

शिक्षण :

१. धार्मिक परीक्षा वोर्ड का संचालन
२. धार्मिक शिक्षण शालाओ को अनुदान
३. प्रतिभावान छात्रो को छात्रवृत्ति

४. श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर का सचालन
५. श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार, रतलाम का सचालन
६. श्री सुरेन्द्रकुमार साड शिक्षा समिति के माध्यम से सम्यक् शिक्षण
७. विश्वविद्यालयो मे जैनोलाजी शिक्षण व शोध का प्रयत्न
८. श्री धर्मपाल जैन छात्रावास, रतलाम का सचालन
९ समता प्रचार सघ, उदयपुर का सचालन

साहित्य प्रकाशन ।

सघ द्वारा श्री गणेश स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत साहित्य प्रकाशन का कार्य हो रहा है, जिसमे अब तक लगभग ४० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। कुछ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के ग्रन्थो मे—प्राकृत पाठमाला, समराइच्च–कहा प्रथम खण्ड (प्रथम व द्वितीय भव), लार्ड महावीर इन दी रिलेवेन्स ऑफ टुडे, लार्ड महावीर इन हिज टाइम्स तथा सुगम पुस्तकमाला के अन्तर्गत श्रीमद् जवाहराचार्य जीवन और व्यक्तित्व,समाज,शिक्षा सूक्तिया व राष्ट्र-धर्म-उल्लेखनीय हैं।

इन मे से कुछ ग्रन्थो को भारत और विदेश (फ्रैंकफुर्त के पुस्तक मेले आदि) मे विशेष रूप से समादृत किया गया है।

जैन दर्शन साहित्य संस्कृति पुरस्कार योजना :

सघ ने जैन दर्शन साहित्य सस्कृति को प्रोत्साहन देने एव इसके भडार को श्रेष्ठ कृतियो से सुसज्जित करने हेतु एक अभिनव योजना अपने हाथ मे ली है। जैन दर्शन-साहित्य एव सस्कृति की विविध विधाओ मे रचित कृतियों मे से चयनित सर्वश्रेष्ठ कृति को प्रतिवर्ष ५१००) रु० के प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाता है। यह पुरस्कार स्व० प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति पुरस्कार हेतु प्राप्त राशि से प्रदत्त किया जाता है।

श्रमणोपासक पत्र-प्रकाशन ।

'श्रमणोपासक पत्र' के प्रकाशन की दिशा में विशेष प्रयास जारी है । इसके आकार एव वाह्य आवरण को अधिकाधिक सुरुचि-पूर्ण तथा कलात्मक बनाने के साथ ही साथ इसकी सामग्री की उत्कृष्टता श्रमण सस्कृति के अनुरूप विचार-सरणी तथा सम्यक् ज्ञान, दर्शन चारित्र की अभिवृद्धि करने वाले लेखो को इसमे वरीयतापूर्वक स्थान देने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है ।

श्रीमद् जवाहराचार्य शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे हमने श्रीमद् जवाहराचार्य विशेषाक के प्रकाशन से शुभारम्भ किया जाकर इसी प्रेरणा के सम्वल पर सन ७८ मे 'समता-विशेषाक' एव सन ७९ मे 'वाल–विशेषाक' सन ८१ मे "वाल-शिक्षा सस्कार सगोष्ठी विशेषाक" का प्रकाशन भी किया गया है और 'धर्मपाल–विशेषाक' का आज दि. २ मार्च ८४ को विमोचन हो रहा है ।

श्रमणोपासक का प्रत्येक विशेषाक हमारे ऐतिहासिक सग्रहणीय विशेषाको की शृ खला मे एक उत्कृष्ट अङ्क के रूप मे स्मरण किया जाए, यही हमारा प्रयत्न है ।

शिक्षण :

शिक्षण की दृष्टि से हमारी अनेक वहु उद्देश्ययी बहु-आयामी प्रवृत्तिया है, जिनके द्वारा समाज शिक्षण और लोक-शिक्षण के अभिनव भागीरथ प्रयत्नो को मूर्तरूप प्रदान करने के प्रयास चल रहे है ।

धार्मिक परीक्षा वोर्ड :

धार्मिक परीक्षा वोर्ड का कार्य निरन्तर प्रगति कर रहा है । प्रति वर्ष इसकी परीक्षाओ मे लगभग तीन हजार से भी अधिक

विद्यार्थी प्रविष्ट होते है ।

धार्मिक शिक्षण शालाएं :

संघ द्वारा १६ धार्मिक शिक्षण शालाओ को अनुदान दिया जा रहा है । इन शालाओ के निरीक्षण हेतु 'निरीक्षक-मन्डल' का भी गठन किया गया है । इस दिशा मे विशेष प्रगति के लिये हमारा निवेदन है कि सभी स्थानो पर बालक-मण्डलियो एव धार्मिक शिक्षण-शालाओ का गठन अवश्य किया जाए ।

छात्रव ति :

प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति देने की योजना का लाभ उठाने के लिये अधिकाधिक छात्र आगे आए है और उनकी अपेक्षाओ की पूर्ति का प्रयास किया जा रहा है । यह दायित्व हमारी महिला समिति ने सहर्ष स्वीकारा है ।

छात्रावास :

श्री गणेश जैन छात्रावास , उदयपुर के नव-निर्मित भवन से द्विगुणित क्षमता का लाभ उठाने के प्रयास किये जा रहे हैं । यहां लौकिक शिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक रहे छात्रोके निवास,भोजन तथा धार्मिक-शिक्षण की सुव्यवस्था पुन: स्थापित करने हेतु हम यत्न-शील हैं ।

विश्वविद्यालयों में जैनोलाजी की शिक्षा :

उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर में जैनोलॉजी एव प्राकृत शिक्षण विभाग की स्थापना हेतु सघ द्वारा दो लाख रूपये की राशि भेंट की गई है । एक लाख रूपये की राशि सरकार ने अनुदान स्व-रूप दी है । इस तीन लाख रूपये की राशि पर प्राप्त ब्याज से

उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर मे 'जैनोलॉजी एव प्राकृत शिक्षण विभाग' प्रारम्भ हो गया है। एम ए प्राकृत की नियमित कक्षाए प्रारम्भ करने के लिये इस विभाग मे प्राकृत के एक सहायक प्रोफेसर की पाच वर्ष की नियुक्ति के प्रस्ताव को स्वीकार कर सघ ने इस दिशा मे एक स्तुत्य एव अनुकरणीय कदम उठाया है।

विश्वविद्यालय के पत्राचार-पाठ्यक्रम मे बी ए. मे प्राकृत विषय प्रारम्भ करने के लिये भी सघ द्वारा विश्वविद्यालय से अनुरोध किया गया है एव आवश्यकता पडने पर आर्थिक अनुदान देने का प्रस्ताव विचाराधीन है।

शोध :

प्रकाशन व शिक्षण की उपादेयता को पूर्णता के स्तर तक पहुचाने के लिये शोध का महत्व निर्विवाद है। इस दृष्टि से रतलाम मे स्थापित श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार प्राचीन अलभ्य पुस्तको के सकलन और उपयोग की योजना को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु श्री रखबचन्द जी सा. कटारिया के नेतृत्व मे उत्साहपूर्वक जुटा हुआ है।

श्री धर्मपाल जैन छात्रावास :

श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीपनगर, रतलाम सघ की बहुआयामी प्रवृत्ति-शृखला की एक महत्वपूर्ण कडी है। प्रकृति के सुरम्य प्रागण मे स्थित यह छात्रावास दलित वर्ग विशेषतया 'धर्मपाल जैन' के उत्थान की आधार शिला सिद्ध होगा। प्राचीन एव अर्वाचीन वातावरण का सगमस्थल यह छात्रावास समाज एव देश को सुनागरिक प्रदान करने मे सक्षम होगा, ऐसा विश्वास है।

श्री सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा सोसायटी, नोखा :

उपर्युक्त शिक्षण प्रवृत्तियो के साथ ही सघ की यह सहयोगी सस्था अध्ययनरत पूज्य सत-सतिया जी म सा एव वैरागी भाई-बहिनो के धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था करती है।

दर्शन और चारित्र्य :

सम्यक् दर्शन व सम्यक् चारित्र्य की आराधना करने हेतु संघ ने भगवान् महावीर के परिनिर्वाण वर्ष और श्रीमद् पूज्य जवाहराचार्य जी के जन्म शताब्दी वर्ष के स्वर्णिम सन्धियोग मे जीवन और व्यवहार मे समभाव साधना की ओर जन-जन को उन्मुख करने हेतु विविध प्रयास किए, जिनमे से उल्लेखनीय हैं, जीवन-साधना, सस्कार-निर्माण एव धर्मजागरण पदयात्राए तथा स्वाध्याय एव साधना-शिविर।

यात्रा और शिविर की इन जीवनोन्नायक प्रवृत्तियों को प्रत्येक वर्ष के कार्यक्रम में स्थायी रीति से सम्मिलित करने हेतु सघ संकल्पित है ।

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति :

संघ की सहयोगी संस्था के रूप मे 'महिला समिति' नारी-जागरण हेतु विशेष रूप से कियाशील है । समिति द्वारा रतलाम में 'श्री जैन महिला उद्योग मन्दिर' की स्थापना की गई है, जिसके माध्यम से बहिने घरेलु उद्योग का प्रशिक्षण एव रोजगार प्राप्त कर रही हैं ।

आर्ट प्रेस :

संघ का यह निजी प्रेस अब फिर कार्यक्षम एव सुसंगठित से कार्य कर रहा है, जिससे पिछले कुछ समय मे प्रकाशन की व स्तर मे सन्तोषजनक सुधार हुआ है ।

सहयोग :

स्वधर्मी सहयोग के क्षेत्र मे सघ अपने साधन-सामर्थ्य के अनु

सार यथाशक्य सहयोग करने मे प्रवृत रहा है तथा हम इस दिशा मे और आगे बढने को उत्सुक हैं।

जीवदया-प्रवृत्ति

सघ द्वारा इस क्षेत्र मे सघन प्रयास किये जा रहे हैं। केन्द्र तथा राज्य सरकारो से 'पशु-पक्षी बलिवध निषेध विधेयक' पारित करने हेतु समय-समय पर पत्राचार किया जाता है।

श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति :

इस समाजोन्नति एव राष्ट्र जागृति मूलक प्रवृत्ति द्वारा पिछडे हुए वर्गों के व्यसनयुक्त, अशिक्षित व असस्कारित लोगो को व्यसन मुक्त, शिक्षित एव सस्कारित करके उनकी सामाजिक स्थिति को समुन्नत बनाने का एक महान् युगप्रवर्त्तनकारी कार्य सम्पन्न किया जा रहा है। प्रवृत्ति कार्य का वैज्ञानिक विभाजन किया गया गया है तथा नियमित प्रवासो द्वारा इसे द्रुत गति प्रदान करने के प्रयास किये गये है। धर्म-पाल-शालाओ मे सस्कारो के साथ ही साक्षरता का अभिनव, लोक-शिक्षणकारी, जनोपयोगी कार्य चल रहा है।

यह प्रवृत्ति (१) सर्वेक्षण (२) शिक्षण (३) प्रशिक्षण (४) निरीक्षण एव (५) परीक्षण की सुनियोजित कार्य पद्धति से अपने ६ विभागो (१) रतलाम (२) जावरा (३) खाचरौद (४) नागदा (५) मक्सी और (६) मन्दसौर मे सुयोग्य निष्ठावान कार्य-कर्त्ताओ के सहयोग से सतत प्रगति कर रही है।

सघ कार्यक्रम

सघ ने युगसृष्टा, युगद्रष्टा ज्योतिर्धर स्व. श्री जवाहरलाल जी म सा के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे अनेक जीवन-उन्नायक एव

युग-निर्माणकारी योजनाएँ एव कार्यक्रम हाथ मे लिये और उन्हे क्रियान्वित किया है ।

वीर सघ :

सघ की शताब्दि वर्ष कार्यक्रमो की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही वीर सघ का निर्माण । श्रमण सस्कृति के उच्चस्थ शिखर पर आसीन आत्म-साधक, साधुत्व एव गृहस्थी के दायित्वो मे फसे हुये गृहस्थी-जनो के बीच निवृत्ति, स्वाध्याय, साधना और सेवा का अपने जीवन मे क्रमिक विकास करने वाले सम्यक् आचरण युक्त सच्चे श्रावको का यह सघ 'वीर-सघ' एक महान चारित्रिक क्राति के सूत्रपात का प्रतीक है । सभी क्रियाशील धर्मानुरागी जनो से इस सघ की सदस्यता ग्रहण करने का आत्मिक अनुरोध है ।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

मालवा की धर्मभूमि के दलित पिछडे जनो के बीच चिकित्सा और स्वास्थ्य के लिये स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन विगत ३ वर्ष से प्रारम्भ किया गया है । सुप्रसिद्ध चिकित्सक पद्मश्री डा नन्दलाल जी बोरदिया की पुण्य स्मृति मे 'पद्मश्री डा नन्दलाल बोरदिया स्वास्थ्य परीक्षण शिविर' का आयोजन प्रतिमाह किया जाता है जिसमे सुयोग्य एव सेवाभावी चिकित्सको का दल स्वास्थ्य परीक्षण कर तत्काल चिकित्सा करता है । इस योजना से सहस्त्रो-जन लाभान्वित हो रहे है । इस सतत गतिमान चिकित्सा और स्वास्थ्य की योजना से सघ-गौरव मे अप्रतिम वृद्धि हुई है ।

सुगम पुस्तकमाला .

पूज्य श्री जवाहराचार्य जी के साहित्य को सहज बोधगम्य रीति से प्रचारित करने के लिए 'श्रीमद् जवाहराचार्य सुगम पुस्तक-माला' के अन्तर्गत उनके जीवन के विविध पहलुओ पर प्रकाश डालने वाली आठ प्रकाश्य पुस्तको मे से पाच प्रकाशित कर दी गई हैं, शेष तीन शीघ्र प्रकाशित की जा रही हैं ।

युवासंघ :

युवासघ हमारी महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है । अभी यह प्रारम्भिक अवस्था मे है किन्तु हमारा युवावर्ग अत्यन्त उत्साही, सेवाभावी एव कार्यक्षम है । आगामी वर्षो मे इसका रूप और अधिक निखरेगा, ऐसा हमारा विश्वास है ।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

पदाधिकारी मण्डल

अध्यक्ष

श्री दीपचन्द जी भूरा

❀

उपाध्यक्ष

श्री मोहनराज जी बोहरा — श्री लूणकरण जी हीरावत

श्री उत्तमचन्द जी गेलड़ा — श्री भवरलाल जी बैद

❀

मन्त्री

श्री पीरदान जी पारख

❀

सहमन्त्री

श्री उगमराज जी मूथा — श्री मगनलाल जी मेहता

श्री विनयचन्द जी कांकरिया — श्री हस्तीमल जी नाहटा

❀

कोषाध्यक्ष

श्री चम्पालाल जी डागा

❀

ट्रस्ट मण्डल

श्री गणपतराज जी बोहरा

श्री पारसमल जी काकरिया

श्री मदनराज जी मूथा

श्री महावीरचन्द जी धारीवाल

श्री दीपचन्द जी भूरा

श्री पीरदान जी पारख

श्री चम्पालाल जी डागा

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

पदाधिकारी मण्डल

संरक्षिका

श्रीमती यशोदा देवी बोहरा
श्रीमती उमराव बाई मूथा
श्रीमति केशर बहिन झवेरी

❀

अध्यक्षा

श्रीमति सूरजदेवी चोरड़िया

❀

उपाध्यक्षा

श्रीमति सौरभदेवी मेहता
श्रीमति स्वर्णलता बोथरा
श्रीमति नीलादेवी बोहरा
श्रीमति शाती देवी मेहता

❀

मन्त्री

श्रीमति प्रेमलता जैन

❀

सहमन्त्री

श्रीमति रोशनदेवी खाबिया
श्रीमति शान्तिदेवी मिन्नी
श्रीमति घीसीबाई आच्छा
श्रीमति शान्ता भानावत

❀

कोषाध्यक्ष

श्रीमति प्रेमलता गोलछा

❀

श्री जैन महिला उद्योग मन्दिर, रतलाम
श्रीमति शान्ता देवी मेहता, सञ्चालिका

भूतपूर्व अध्यक्ष

श्री छगनलाल जी वैद (१९६२-६५)
श्री गणपतराज जी वोहरा (१९६५-६८)
श्री पारसमल जी काकरिया (१९६८-७१)
स्व हीरालाल जी नादेचा (१९७१-७३)
श्री गुमानमल जी चोरडिया (१९७३-७७)
श्री पूनमचन्द जी चौपडा (१९७७-८०)
श्री जुगराज जी सेठिया (१९८०-८२)

□

भूतपूर्व मन्त्री

श्री जुगराज जी सेठिया
श्री भवरलाल जी कोठारी
श्री सरदारमल जी काकरिया

श्री सु. सां. शिक्षा सोसायटी, नोखा

अध्यक्ष

श्री भवरलाल जी कोठारी

□

मन्त्री

श्री धनराज जी वेताला

उपाध्यक्ष

श्री मोहनलाल जी मूथा
श्री करनीदान जी लूणीया

सहमन्त्री

श्री जयचन्द लाल जी सुखानी

कोषाध्यक्ष

श्री मोतीलाल मालू

धर्म: सार्वभौम चेतना का सत्संकल्प

● डॉ० महावीर सरन जैन

'धर्म' शब्द की निष्पत्ति 'धृञ धारणे' से हुई है। 'धृञ-धारणे' धातु का अर्थ है धारणा करना। 'धर्म' धर्मी का प्राण, सार एवं अस्तत्व है। मानवीय सत्ता रूपी द्रव्य मे धर्म रूपी गुण अनुस्यूत है। मनुष्य को जो धारणा करना चाहिये, पालन करना चाहिये, वही धर्म।

धारण करने योग्य क्या है? हिंसा, क्रूरता, कठोरता, अपवित्रता, असत्य, असयम, व्यभिचार, परिग्रह—ये सब धारण करने योग्य है?

इस दृष्टि से हमें धर्म का महत्त्व केवल व्यक्तिगत साधना या व्यक्तिगत आत्मोदय की दृष्टि से ही नही अपितु उसके सामाजिक महत्त्व की दृष्टि से भी आकना चाहिये। शास्त्रो में कोई बात कही गई है, इसी कारण हम धर्म का पालन करें, इस बात को आज के वैज्ञानिक युग में व्यक्ति स्वीकार नही कर पा रहा है। इस कारण हमें धर्म को सामाजिक सन्दर्भों में रखकर देखना होगा। केवल कामना की दृष्टि से नही अपितु इसी धरती पर, इसी जीवन में, धर्म हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों प्रकार के जीवन को किस प्रकार प्रेरित कर सुख और आनन्द प्रदान करने में सहायक होता है, इस दृष्टि से विवेचना करना होगी।

यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति हिंसक बन जाये तो ससार चार दिन भी नही चल सकता और न इसका अस्तित्व ही कायम रह सकता है। यदि समाज के सभी व्यक्ति झूठ बोलने लगे तो इसका परिणाम क्या होगा? परस्पर का विश्वास समाप्त हो जायेगा और इस के कारण हमारा सामाजिक जीवन ही नष्ट हो जायेगा। यदि समाज के सभी व्यक्ति यौनाचार के सामाजिक अथवा नैतिक

वन्धनो को तोड देंगे तो क्या कुअपथ नही वन जायेगा ? क्या उस स्थिति मे परिवार की कल्पना की जा सकेगी ? सामाजिक सम्बन्धो की स्थापना हो सकेगी ? यदि सभी व्यक्ति असयमी, व्यभिचारी एव परिग्रही हो जावेंगे तो उस स्थिति मे क्या होगा ? प्रत्येक व्यक्ति कोई वस्तु दूसरे के पास देखेगा तो उसे विना सोचे-विचारे क्रूर से क्रूर साधनो के द्वारा छीनने का प्रयास करेगा ।

मन की कामनाओ को नियत्रित किये बिना समाज-रचना सम्भव नही है । सयम की लगाम लगाये विना मानव-जाति का अस्तित्व खतरे मे पड जायेगा । उपनिषद् साहित्य मे आत्मा को रथी, शरीर को रथ, वुद्धि को सारथी, मन को लगाम, विषयो को मार्ग एव इन्द्रियो को घोडो के रूप मे चित्रित किया गया है । घोडो को यदि लगाम न लगाई जाय तो वे जिस पथ पर उन्हे चलना चाहिये, उसे छोडकर स्वच्छन्द रूप मे किसी भी कुमार्ग की ओर भाग सकते है और उस स्थिति मे रथी, सारथी एव रथ सभी नष्ट हो सकते है ।

हमारी कामनाओ को नियत्रित करने की शक्ति या तो धर्म से है अथवा सरकार की शासन-व्यवस्था मे । धर्म का अनुशासन आत्मा का है जिसे आत्मानुशासन कहते हैं । जब यह अनुशासन समाप्त हो जाता है तो व्यवस्था वनाये रखने के लिये राज्य शक्ति निर्ममता के साथ दण्ड व्यवस्था के द्वारा शासन व्यवस्था स्थापित करती है । यदि मानवीय सत्ता, सामाजिक रचना एव शासन व्यवस्था कायम रखनी है तो सयम की लगाम लगाना आवश्यक है । धर्म के द्वारा व्यक्ति यह लगाम अपने आप अपने ऊपर लगाता है। शासन के द्वारा यह लगाम विधि-विधानो के द्वारा लगाई जाती है । जिस समाज के व्यक्ति धर्म की चेतना से प्रेरित होते है वहा शासन व्यवस्था की जकडन कमजोर हो जाती है और उस स्थिति मे व्यक्ति अधिक स्वतत्रता एव सद्भाव के साथ सामाजिक जीवन जीता है । जब समाज के जो धारण करने योग्य नही है, उन्हे अपनाने लगते हैं तब समाज मे राज्य-शक्ति व्यवस्था कायम करने के लिये अधिक उग्र कठोर और निर्मम हो जाती है । इस प्रकार धर्म हमारे सामाजिक जीवन की

स्वतन्त्रता तथा परस्पर प्रेम एव विश्वास के लिये एक अनिवार्य शर्त है ।

प्रश्न उठता है कि जीवन मे धारण करने योग्य क्या है ? ये कौन से मूल्य है जिनका हम पालन करे ? इस दृष्टि से उस उमास्वामी ने आत्मा के दस भाव बतलाये है जिनको उन्होने धर्म कहा है (मोक्ष शासत्र ६/३)

आचार्य कुदकुद ने भी कहा है कि धर्म की उत्तम, क्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य शौच सयम, तप, त्याग, अकिचन और बह्मचर्य ये दस, विधिया है (बारस अणवेक्खा ७०)

इन दो व्याख्याओ मे धर्म को दो दृष्टियो से देखा गया है। एक दृष्टि से "वस्तु का स्वभाव धर्म है" (धम्मो वत्थु सहावो कार्तिकेयानुप्रेक्ष-४७८)"

दूसरी दृष्टि से समता स्वभाव वाली आत्मा के विविध अग ही धर्म है जो सख्या मे बतलाये गये है । यह दूसरी दृष्टि धर्म के अगो को अलग-अलग विश्लेषित करके देखने की दृष्टि है । पहली दृष्टि धर्म को समग्र दृष्टि से देखने की अथवा सामूहिक दृष्टि से विचार करने की प्रक्रिया है । पहली दृष्टि मे आत्म-दर्शन, आत्म-रमण अथवा आत्म स्वभाव प्राप्ति की विश्लेषित विधिया है । दोनो मे से किसी भी दृष्टि से विचार करे, हम यह कह सकते है । कि धर्म कोई सम्प्रदाय नही है । मनुष्य और मनुष्य को विभाजित करने वाला सगठन नही है । यह आत्म-दर्शन का मार्ग है । यह एक ऐसा पवित्र अनुष्ठान है जिससे आत्मा का शुद्धिकरण होता है ।

(एगा धम्म पडिया, ज से आया पज्ज बजाए-स्थानाङग १. १. ४०)

धर्म इस दृष्टि से नैतिक नियमो से सवादित स्थायी एव अर्जित प्रवृत्ति है । यह समग्र आत्मा के उच्चतम शुभ के विचार के द्वारा चरित्र गुण है, अतस्थ चरित्र का प्रकाशन है ।

विश्व के सभी धर्म जिस धर्म के विविध पहलू अथवा प्रकाशन है, वह धर्म सार्वभौम चेतना का सत सकल्प है । आत्म-सवित् का पथ है, यही आध्यात्मिक दृष्टि का निचोड है ।

यहा यह उल्लेखनीय है कि भौतिकवादी दृष्टि आत्मा की सत्ता मे विश्वास नही करती । इस कारण जीवविज्ञानीय नियम के प्रतिपादको ने शक्ति-प्राप्ति को ही मनुष्य का धर्म बतलाया है । मार्क्स ने धर्म की ही अवहेलना की है तथा उसे सर्वहारा वर्ग की सिसकियो के रूप मे चित्रित किया है । मार्क्स की विचारधारा का कारण यह है कि वे भौतिकवादी विचारक हैं और इस कारण वे आत्मचेतना मे विश्वास नही करते ।

प्रश्न यह उठता है कि आत्मचेतना के अस्तित्व मे विश्वास करने की क्या आवश्यकता है ? इस दृष्टि से शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, अहकार, इन्द्रिया आदि सभी जड प्रकृति के विकार हैं किन्तु जड और चेतन मे अन्तर है । मनुष्य तथा अन्य जीव-प्राणी, लकडी, लोहा आदि पदार्थो की भाति केवल जड नही है अपितु उनमे चेतना शक्ति भी है । इसका सबसे बडा प्रमाण यह है कि वे जानते हैं कि वे है । जब कोई व्यक्ति यह कहता है कि मैं हू तो जिस शक्ति के कारण वह यह बात कह रहा है, वही चेतना शक्ति है, आत्मा है । कोयला, पानी आदि के विशेष परिणमन से शक्ति तो पैदा की जा सकती है, किन्तु चेतना नही । इसी दृष्टि से अरविन्द ने चैत्य पुरुष के मार्ग से अधिमानस और उसके भीतर से अति-मानस की ओर आरोहण करने की भावना क्रम बतलाया है । वास्तव मे कोई जडता एव भौतिकता मानव जाति के लिये अभिशाप है । चिन्मुख मानवतावाद ही आज के कुण्ठाग्रस्त मानव की समस्याओ का समाधान है । अन्य महापुरुषो की भाति गौतम बुद्ध ने भी इस सत्य को पहिचाना था । इसी कारण उन्होने केवल बुद्ध एव सघ की शरण मे जाने की ही बात नही कही अपितु बुद्ध तथा सघ के साथ-साथ धर्म की भी शरण मे जाने की बात का उपदेश दिया । इस प्रकार धर्म आत्मलोक की महायात्रा का महायान, मनुष्य को अपूर्णता से पूर्णता की ओर ले जाने

वाली एक सात्विक अन्तर-यात्रा, जड पर चेतन के विजय की साधन-परपरा और जीव एव पुद्गल के सबध-विच्छेद की सीढी, आत्मा का कर्मों से सबध विश्लेषण कराने की साधन-प्रक्रिया, आत्मा का अपने स्वरूप मे आवास कराने का अन्तर पथ तो है ही, वह सामाजिक शान्ति एव परस्पर सद्भाव एव प्रेमभाव उत्पन्न करने का महामत्र भी है।

प्राणी मात्र मे आत्म-शक्ति है। इसी कारण जीव मात्र मे उच्चतम विकास करने की सम्भावनाए विद्यमान है। ससार मे एक नही, अनन्त प्राणी हैं। प्रत्येक मे जीवात्मा है। कर्मबध के फल से वे जीवात्मायें जीवन की नाना दशाओं, नाना योनियो नाना प्रकार के शरीरो एव अवस्थाओं मे परिलक्षित है। सभी मे ज्ञानात्मक विकास के द्वारा विकास करने की असीम शक्तिया है और तत्त्वत. कोई किसी की प्रगति मे बाधक नही है। हम अपने ही राग-द्वेष के कारण किसी को अपना साधक तथा किसी को बाधक मानकर मित्र एव शत्रु भाव का निर्माण करते है। तत्वत आत्मदर्शन के लिये स्व-प्रयत्नो द्वारा की गयी तैयारी एव उसके लिये सम्यक् ज्ञान के आधार पर सम्यक् चारित्रय का पालन ही विकास की वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

इस विकासात्मक साधना के दो स्तर है—

(१) निवृत्ति प्रेरित साधना का साध्य मोक्ष है। यह मुनि धर्म है। दूसरे शब्दो मे लोक निरपेक्ष मोक्ष साधना का मार्ग कह सकते है। यह व्यक्तिगत साधना का चरम पथ है।

(२) साधना का दूसरा स्तर 'गृहस्थ साधना' का है जो समाज सापेक्ष्य एव समाज के व्यक्तियो की प्रवृत्तियो का उदात्तीकरण है। जैन दर्शन मे मुनि साधना के लिये महाव्रतो एव गृहस्थो के लिये अणुव्रतो का विधान है।

समाज में परस्पर सम्बन्धो के कारण व्यक्ति के मन मे राग और द्वेष की वृत्तिया उत्पन्न होती है जिसके कारण क्रोध, अभिमान, कुटिलता, लोभ, मलिनता, काम, मोह आदि अधार्मिक भाव, पनपते एवं विकसित होते है। इनके शमन के लिये तथा धार्मिक आचरण के

पालन के लिये जैन दर्शन मे दश लक्षणो का विधान किया गया है जिन्हे दस धर्मों के नाम से पुकारा जाता है। ये दस धर्म हैं। (१) क्षमा (२) मार्दव (३) आर्जव (४) सत्य (५) शौच (६) सयम (७) तप (८) त्याग (९) अकिंचन और (१०) ब्रह्मचर्य। वास्तव मे ये धर्म आत्मा के अपने गुण हैं। पर्युषण पर्व के अवसर पर हम इन्ही गुणो को स्मरण करते हैं तथा उनको अपने जीवन मे विकसित करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इनमे से कुछ गुण व्यक्ति के परिष्कार की, आत्मोदय की वे विविध सीढिया हैं जिनका पालन कोई व्यक्ति समाज से अलग रहकर इकाई के रूप मे भी कर सकता है। इस प्रकार के गुण या धर्म हैं, आर्जव, शौच, सयम, तप, आकिंचन्य, एव ब्रह्मचर्य। "आर्जव" के द्वारा व्यक्ति अपने कषायो के बन्धनो को ऋजु करता तथा मन, वचन, एव क्रिया की एक रूपता स्थापित करता है। कषायो के बधन ऋजु करने के उपरान्त भी लोभ के कारण व्यक्ति अपने पथ से विचलित हो सकता है। इस कारण व्यक्ति को यह सतत् प्रयास करते रहना चाहिये कि हमारे मन मे कोई मलिन भाव उत्पन्न न हो। अपनी आभ्यतर शुद्धि करते रहना ही शौच गुण हैं। मन की प्रवृत्ति होती है कि वह बार-बार इन्द्रियो के सुख की ओर उन्मुख होता है। इस कारण आभ्यतर शुद्धि के मार्ग मे इन्द्रियो की लोलुपात के अवरोध के लिये सयम आवश्यक हैं।

व्यक्ति को साधनापथ मे अनेक कष्टो का सामना करना पडता है। साधना पथ की जटिलताओ, एवं दुरूहताओ से घबराकर वह अपने पथ से विचलित न हो, इसके लिये तप का पालन आवश्यक है। तप के पश्चात् "आकिंचन्य" है जिसमे व्यक्ति समस्त भौतिक उपकरणो एव अ तत अपने शरीर के ममत्व का भी त्याग कर देता है। ब्रह्मचर्य अ तिम मजिल है जिसमे वह समस्त प्रकार के पापो का परित्याग कर अपने को आत्मब्रह्म मे लीन कर लेता है। इस प्रकार आर्जव, शौच, सयम, तप आकिंचन्य एव ब्रह्मचर्य व्यक्तिगत साधना के परस्पर बढते हुए चरण हैं।

क्षमा, मार्दव, सत्य और त्याग मे भी यद्यपि व्यक्तिगत साधना के गुण हैं किन्तु इनका पालन व्यक्ति मुख्य रूप से समाज मे

रहकर करता है। इस प्रकार ये सामाजिक व्यक्ति के गुण है। सामाजिक जीवन के ये अनिवार्य जीवन-मूल्य हैं। समाज के व्यक्तियो मे इनका जितना अधिक विकास होगा, समाज मे उतना ही अधिक परस्पर सद्भाव, विश्वास प्रेम एव अनुराग बढेगा तथा अहिंसात्मक पद्धति से पूजी का विकेन्द्रीकरण होगा। सत्य से समाज के छल एव कपटपूर्ण वातावरण का अत होता है। आज का व्यक्ति जिस मानसिक अशान्ति से पीडित है, उसका एक बहुत बडा कारण है कि वह जीवन मे झूठ बोलने को कला मान बैठा है इसका दुखद परिणाम यह है कि मित्रो के बीच भी अनस्था एव अविश्वास पनप रहा है। क्षमा, मार्दव एव त्याग, सामाजिक व्यक्ति की क्रमश विकासोन्मुख धार्मिक प्रवृत्तिया है क्षमा के कारण व्यक्ति अपने क्रोध का शमन करता है तथा अपने व्यवहार मे सहनशील, धैर्यवान तथा विनयशील होता है। मार्दव के के कारण व्यक्ति अपने अहकार का परित्याग करता है तथा दूसरों के प्रति मृदुता का व्यवहार करता है। इससे आगे बढकर जब व्यक्ति मे अपने पास से दूसरों को प्रदान करने की भावना का विकास होता है तो वह प्रवृत्ति त्याग है।

इस प्रकार से दस धर्म किसी सम्प्रदाय के स्वप्निल आदर्श न होकर वास्तविक जीवन मे व्यवहार के नैतिक विधान है। ये सार्वभौमिक एव सार्वकालिक है। कुछ विचारक इन धर्मों के पालन की व्यवहारिकता के सम्बन्ध मे प्रश्न उपस्थित करते हैं तथा कभी-बाहरी दृष्टि से देखने पर इन विविध धर्मों के पालन मे अ तर्विरोध की स्थितिया भी उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिये यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि यदि हमारे सत्य-भाषण करने से किसी नृशस हत्यारे द्वारा अन्य प्राणी की हत्या सभावित हो तो क्या उस स्थिति मे सत्य बोलना धर्म है ?

इस दृष्टि से शास्त्रो मे यह व्यवस्था है कि जो लघु धर्म महत् धर्म को बाधित करता है, वह धर्म नही है। यदि सत्य बोलने से निरपराधी प्राणी की हत्या हो तो उस स्थिति मे मौन रहना ही धर्म है।

इसी संदर्भ मे, मैं यह बात चाहूगा कि इन सभी धर्मों की व्यवस्था एव विवेचना का महत्त्व व्यक्ति की कलुषता मिटाना है तथा उसकी आत्म-चेतना का विकास करना है। इस दृष्टि से ये गुण एव धर्म व्यक्ति के चित्त को अ दर से बदलने की प्रक्रियाए हैं और इनका सम्बन्ध व्यक्ति की मानसिकता के साथ जुडा हुआ है। इसी पृष्ठ भूमि के साथ इन्हे समझना चाहिये तथा इनका पालन करना चाहिये। ०

– हिंदी प्रोफेसर, जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर

❀❀❀

-आचरण-

एक बार भगवान महावीर को एक चाण्डाल ने छू लिया तो उपस्थित जन-समूह चाण्डाल को गालिया देने लगा। इस पर महावीर ने कहा, "सज्जनो! जन्म से न कोई व्यक्ति ब्राह्मण है और न कोई चाण्डाल। मै तो उसी व्यक्ति को चाण्डाल समझता हू जो बुरे कर्म करता है भले ही वह का जाति ब्राह्मण क्यो न हो। जो अच्छा कार्य करता है, वही सच्चा ब्राह्मण है चाण्डाल या ब्राह्मण सभी मे एक आत्मा है। फिर घृणा कैसी?" और भगवान ने उस चाण्डाल को गले लगा लिया। ०

कल्पना आचलिया
११६ देवाली, उदयपुर (राज)

धर्म की अवधारणा

● श्री कृष्णदत्त शर्मा

★

"जिन्दगी खा-पीकर ऐश- आराम करने के लिए है, इससे अधिक उदात्त भावना का स्पर्श ही जिन्हे नही हो सकता, उनके लिए मुझे कुछ नही कहना है।" —किशोरलाल मशरूवाला

'धर्म' शब्द की व्युत्पत्ति कई प्रकार से की जाती है। यह शब्द 'धृधातु' और 'मन्' प्रत्यय के सयोग से सिद्ध होता है। 'ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोकं' आदि व्युत्पत्तिया इसके धारण करने के गुण और स्वभाव की ओर इंगित करती हैं।

मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु वृत्ति का है। वह प्रकृति पर विजय प्राप्त करना चाहता है, जब तक उसे विजय मिलती है वह प्रसन्न होता है, आत्मविश्वास से भरता है परन्तु जब परास्त होता है तो प्रकृति का ही पूजक बन जाता है। इसी क्रम मे उसे अलौकिकता का भान होता है। जितने अशो मे वह अलौकिक शान्ति पर विजय प्राप्त कर लेता है, वहा तक उसे चमत्कार-दर्शन होता है, वहा धर्म नही होता है, वहा जादू होता है। कल्पना द्वारा होने वाली दुःख निवृत्ति और सुखानुभव के अनुरूप मनुष्य के मन मे अलौकिक शक्ति के विषय मे प्रेम और कृतज्ञता के भाव पैदा होते है और इससे कल्पना का पर्यवसान भावना मे होकर ईश्वर-सम्बन्धी मूल कल्पना 'भावना' का रूप ले लेती है। मेरी दृष्टि मे धर्म को ईश्वर से अलग करके नही देखा जा सकता। इस प्रकार 'धारण' से सम्बद्ध दो स्तर धार्मिक विश्वास और भावना हमारे समक्ष आते है। ये दोनो आन्तरिक हैं। दृष्टि की सिद्धि होने तक टिकी रहने वाली दृढ और प्रबल भावना ही श्रद्धा है। श्रद्धा से उत्पन्न होने वाली समर्पण वृत्ति मे से भक्ति का उद्भव हुआ और कैसी भी विपरीत स्थिति मे विचलित न होने वाली श्रद्धा ही निष्ठा हुई। इन भावो की तृप्ति से ही धर्म,

नैतिकता और मानवता का विकास होता है ।

धर्म का आदिकालीन स्वरूप 'टोटम' मे है, जिसके अनुसार कुछ विश्वासो के आश्रित हो कुछ नैतिक नियमो का पालन किया जाता है तथा पशु-पक्षी अथवा प्रकृति को पूजा जाता है । टोटम व्यक्तियो के भी हो सकते है और किसी-किसी पूरी जाति के भी होते हैं । आदिवासी जातियो मे अभी ऐसे विश्वास जीवित हैं ।'टेबु' कुछ निषेधात्मक प्रतिक्रियाए हैं जिनका पालन होता है जैसे रजस्वला स्त्री का रसोईघर मे न जाना । ये भी विश्वास के अन्तर्गत ही है । इन विश्वासो का सम्बन्ध अलौकिक माना जाता है ।

धार्मिक भावना सतही नही होती है उसका वर्गीकरण नही किया जा सकता । धर्म इतना सूक्ष्म है कि इसे अपरिभाषित कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी । धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति अलौकिक शक्ति की अपनी कल्पना के अनुसार प्रार्थनाओ, गुणानुवादो, प्रशसाओ, आरतियो, स्त्रोतो, मन्त्रो आदि के रूप मे हुई । ससार के सभी धर्मों के इस रूप मे आश्चर्यजनक रूप मे साम्य है । धर्म का तीसरा रूप व्यवहार है । यह रूप अति विस्तृत, परिवर्तन या विकासशील है । सदाचार, समुदाचार, नैतिक नियम इसी के अन्तर्गत है । इस प्रकार धर्म तीनो भागो में विश्वास, भावना और व्यवहार के रूप मे हमारे समक्ष आता है । केवल वाह्याचारो से या अनुष्ठानो से या सकल्पो से धर्म का मूल्याकन नही किया जा सकता । फिर भी धर्म की परिभाषाए हुई है । महाभारतकार का कहना है—

" धारणात् धर्म इत्याहुधर्मो धारयते प्रजा" अर्थात् प्रजा जिसे सार्वजनीन रूप मे धारण करे तथा धारण कर ऐसी व्यवस्था करे जिससे दूसरो की तथा उसकी ऐहिक एव आत्यन्तिक सुख और कल्याण की प्राप्ति हो, वह धर्म है कणाद का कहना है-"यतोऽभ्युदयनि श्रेयस सिद्धि स धर्म ।" अभ्युदय नि. श्रेयस के लक्ष्य की पूर्ति जिससे हो, वही धर्म है विदुरनीति का कथन है-"एकोधर्म पर श्रेय" एक धर्म ही परम कल्याणकारी है गोस्वामी तुलसीदास भी इसी की घोषणा "परहित सरिस धर्म नही भाई," कहकर करते है ।

उपर्युक्त सभी विद्वान धर्म को कल्याण करने वाला तथा धारण करने से सम्बद्ध करते है । धर्म प्राणी की मूल प्रवृत्तियो आहार, निद्रा, भय, मैथुन, स्वाथपरता आदि से ऊपर है तथा इनका शास्ता है । विदुर-नीति धर्म के ८ मार्ग बताती है यज्ञ, अध्ययन दान, तप, सत्य, क्षमा, दान तथा अलोभ । धर्म दभ की वस्तु नही है । इनमे से प्रथम चार यज्ञ, अध्ययन, दान तथा तप दभ-प्रदर्शन की पूर्ति के लिए भी किए जा सकते है । यदि धर्म दभ होता है तो धर्म भीतरी तत्व न होकर बाह्य हो जाता है तथा आडम्बर की श्रेणी मे आकर धर्म ध्वसी रूपी हो जाता है । केवल बाह्याचार ही तो धर्म नही है । सत्य, क्षमा, दया तथा अलोभ व्यक्ति की अन्तर्धारा से सम्बद्ध है । जब तक व्यक्ति इन्हे अनुभव मे नही लाएगा, तब तक वा इनका व्यवहार भी नही कर सकता । इनमे भी विदुरनीति 'न असौ धर्म यत्र न सत्यमस्ति' कहकर एक रूप सत्य का पक्ष अधिक ऊचा करती है ।

श्रीमद् भागवत मे धर्म के चार चरणो के अन्तर्गत ३९ अप्राकृत गुण बताए गए है—सत्य, पवित्रता, दया, क्षमा, त्याग, सतोष, सरलता, शम, दम, तप, समता तितिक्षा, उपरति, शास्त्र विचार, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, वीरता, तेज, बल, स्मृति, स्वतन्त्रता, कौशल, कान्ति, धैर्य, कोमलता, निर्भीकता, विनय, शील, साहस, उत्साह, बल, सौभाग्य गभीरता, स्थिरता, आस्तिकता, कीर्ति, गौरव, निरहकारता ।

[श्लो २६-२८ अ १६ प्रथम स्कन्ध ।]

ये सब गुण जीवन, धर्म, व्यक्ति समाज, देश आदि के लिए समान रूप से उपयोगी है ।

धर्म समाज के कल्याण का, व्यक्ति के आध्यात्मिक उत्थान का, व मुक्ति का साध्य रहा है परन्तु आजकल तथाकथित स्वार्थी लागो ने धर्म का उल्लू सीधा करने का साधन बना लिया है । भारतीय सस्कृति के पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जिन्हे क्रमशः जीवन के जड, शाखा, पुष्प और फल कहा जाता है, का आज क्रम ही बदला हुआ लगता है । जड और पुष्प का लोग भूलकर शाखा और पुष्प के भ्रम मे ही घूम रहे है । भौतिकवादी सस्कृति के ये तमाशे

हम पहले भी देख चुके है । हिरण्यकशिपु अर्थात् धन और शैया का भोगवादी सस्कृति शाघ्र ही नष्ट हो जाती है । हिरण्यकशिपु का स्वय को विष्णु घोषित करना अर्थात् स्वर्ण की व्यापकता स्पष्ट करना, उसका परिणाम होलिका अर्थात् विनाश के रूप मे, हम सब के सामने है । व्यापक हिरण्य नही, धर्म ही है । इसलिए तो पहले स्थान पर धर्म रखा गया है । धर्म की व्यापकता को सिद्ध करने के लिए यम-यमी सवाद अथवा ब्राह्मण वरूथिनी सवाद ही पर्याप्त है । एकान्त, सुरम्य और गहन निर्जन वन प्रातर मे यम को यमी से परिरभण करने से कौन रोक रहा था ? निश्चय हो धर्म रोक रहा था । विदुर तो ऐसे लोगो को ही श्रेणी बद्ध कर देते हैं जो धर्म को नही जानते-नशे मे मतवाला, असावधान, पागल, थका हुआ, क्रोधी, भूखा, जल्दबाज लोभी, भयभीत, और कामी । नागसेन तो मिलिन्द को धार्मिक मत्रणा करने के स्थान तथा धार्मिक विषयो पर मत्रणा करने के अयोग्य व्यक्ति भी बता देते है । धर्म एक अनुशासन है जो व्यक्ति को दुर्गति से बचाता है । "दुर्गति प्रयत्त प्राणिधारणात् धर्म उच्यते ।"

जैन धर्म वस्तु के स्वभाव को धर्म तथा पूर्ण वीतराग होना परम धर्म मानता है । जैन ६ द्रव्य मानते हैं धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव । ये परस्पर परिणमन करते है । जिसे जानना चाहते है, वह मुख्य धर्म होता है, जिसे जानते हैं वह गौण रह जाता है । धर्म को जानने के लिए आगम को जानना आवश्यक है । व्यक्ति को धर्म मे लगाने के लिए उसे ससार की विचित्रता, पापपुण्य का फल, महन्त पुरुषो की प्रवृत्ति जीवो के कर्म व उनके द्वारा रचना, एक वस्तु के भिन्न-भिन्न गुणो का पर्याय व उनका निरूपण करना कार्यकारी ज्ञान अर्थात् बुद्धिगोचर धर्म का आचरण, दृष्टान्त, हेतु युक्ति और प्रमाण आदि के द्वारा धर्म की प्रतीति कराई जा सकती है परन्तु वे उपचार को धर्म नही मानते । उपचार या व्यवहार साधन है, साध्य उन्होने मुक्ति माना है जो बिना धर्म के सभव नही ।

नास्तिक भी समाज के स्थायित्व के लिए नैतिक नियमो की पालना पर जोर देते हैं । धर्म का भाव बने रहने समाज मे वैचारिक

बौद्धिक एकता बनी रहती है। इस प्रकार धर्म लोक का धारणकर्त्ता है। नैतिक, सदाचार के नियमो के पालन से कल्याणकारी है। इस प्रकार ससार मे धर्मविहीन व्यक्ति कोई हो नही सकता। सब अपने अपने विश्वास से जुडे रहते है। स्वेच्छाचार धर्म नही है। यह अच्छे से अच्छे धर्म को भी ले डूबता है। स्वेच्छाचारिता को मिटाने के लिए समय-समय पर नियम बनते है। इससे धर्म के अनुशासन का विकास होता रहता है। बौद्धो की तीन सगीतिया इसी बात का ज्वलन्त प्रमाण है। बहुत से मागलिक कार्य व्यक्ति अपने शुभ लाभ के लिए करता रहता है। परन्तु आवश्यक नही, वे धर्म के कार्य भी होते हो। धर्म जीवन का कर्त्तव्य भी है परन्तु कर्त्तव्य की कसौटी सद् होना आवश्यक है। अशोक ने एक स्तम्भ लेख मे खुदवाया "धर्म करना अच्छा है, पर धर्म क्या है ? धर्म यही है कि पाप से दूर रहे, बहुत से अच्छे कार्य करे, दया, दान, सत्य, शौच का पालन करे। मैंने अनेक प्रकार से लोगो को 'चक्खुदान' अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टि का दान दिया है।" इस प्रकार बौद्ध नैतिक, सामाजिक आचार को धर्म मानते है।

पौर्वात्य धर्म मे वैयक्तिक प्रधानता है जबकि पाश्चात्य धर्म मे सामाजिक। पौर्वात्य धर्म व्यक्ति की मुक्ति की ओर बढता है, पाश्चात्य धर्म सामाजिक कल्याण की ओर बढता है। इसलिए अस्पताल जैसे सेवा केन्द्रो की अवधारणा पाश्चात्य देन ही है व्यक्ति व्यक्त है, समाज अव्यक्त। व्यक्ति से समाज बनता है। यदि सिद्धान्त वैयक्तिक व्यवहारोन्मुखी हो तो आवश्यक नही कि सभी व्यक्ति बराबर उसे चरित्र मे उतार कर सामाजिक स्तर पर पहुच ही जायेगे। इसलिए सामाजिक जीवन के अस्तित्व के लिए नियमो, मूल्यो, आदर्शो, व प्रतिमानो का अनुपालन पारलौकिक नियन्त्रण, कर्मफल, स्वर्ग—नरक का भय, दण्ड आदि के भय से कराया जाता है। धर्म के बुनियादी स्वरूप का कोई विरोध यही करता परन्तु उनका प्रयोग भी युग पुरुष ही करता है। धर्म की रक्षा करने पर ही धर्म व्यक्ति या समाज की रक्षा करता है। यह वैसी ही बात है किसी स्त्री का शील ही स्त्री के शील की रक्षा करता है कोई सरक्षक या भाई आदि ऐसा दावा

करे तो झूठा है । कुछ धर्म विशिष्ट धर्म हो सकते हैं परन्तु वे सर्व-व्यापक नही हो सकते । वे अवसरानुकूल, सामयिक, परिस्थितिजन्य हो सकते हैं । व्यक्ति धर्म, स्त्री धर्म, परिवार धर्म, समाज धर्म, राष्ट्र धर्म आदि इसी प्रकार धर्म का वृत्त वढता जाता है । विभिन्नाशी धारणा शक्ति के कारण धर्म वैयक्तिक है । सामूहिक धर्म शासन के प्रावधान है ।

कुछ स्वास्थ्यकारी धर्म उपवास आदि भी हैं परन्तु यह रूढि और दुरुपयोग दोनो मे ही आ रहे हैं । भूखे पेट के लिए उपवास का कोई अर्थ नही । परन्तु अपनी शर्तें मनवाने के लिए भूख-हडताल पर वैठना धर्म कहा है ? वहा तो वह शस्त्र है । वाह्याचार खतरनाक वन गया । धर्म का मूल कारण आरोग्य तो है ही परन्तु उपवास यदि शस्त्र ही वन गया तो शरीर धर्म जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि से तो वच नही सकता ।

धर्म के मामले मे मार्क्स एक निराश व्यक्ति के रूप मे ही सामने आता है । धर्म जैसी वैचारिक एकता का वह दोहन नही कर सका । वह आस्थाहीन पलायनवादी है । वर्गहीन समाज की कल्पना क्या किसी स्वर्ग-नरक की कल्पना से कम है । पूर्ण स्वतन्त्रता जगल मे तो क्या समुद्र मे भी नही मिलती । धर्म हिंसा का कभी समर्थन नही करना जवकि मार्क्स क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए हिंसा का समर्थन करता है । उसने सामान्य जन से भय, आशा तथा घृणा का दोहन किया है । मार्क्सवादी प्रत्येक क्षण अपने सिद्धान्तो की घोपणा करता फिरता है । यह किसी सकीर्ण सम्प्रदाय से कम भयानक वात नही है । धर्म अफीम नही है । शासन धर्म ही पगु होगा तो वैयक्तिक आकाक्षाए ही उवरेंगी । भारत मे धर्म निरपेक्षता का ढिंढोरा पीटा जाता है । सविधान मे वर्जित निदेशक सिद्धान्त धर्म के मूल सिद्धान्तो से कहा खार खाते हैं ? क्या शासन धर्म कोई एक व्यक्ति का धर्म है । मैक्यावली तो कहता है कि आडम्वर के लिए ही सही, शासनाध्यक्ष को धर्म का आचरण करना चाहिए । पार्टियो के विश्वास वैयक्ति विश्वास को खाये जा रहे हैं । गाधीजी ने कहा है विना धर्म के

राजनीति नही हो सकती । भारत के तिरंगे मे भी तो २४ आरों वाला चक्र अशोक का धर्म चक्र ही है । फिर धर्म निरपेक्ष क्या चीज है ?

धर्म विज्ञान का विरोध नहीं करता । धर्म शाश्वत है तो विज्ञान प्रयोगधर्मी है । विज्ञान के सभी परिणाम अनतिम ही होते है। धर्म भावना प्रधान है, विज्ञान भावना रहित । धर्म, व्यक्तिगत, सामाजिक सदाचार पर जोर देता है । मूर्खों की तो कमी कही नही है परन्तु धर्म भाग्यवादी नही बनाता, न विज्ञान भाग्यवादी बनाता है । धर्म चेतना से सम्बद्ध है । विज्ञान उपयोग, दुरुपयोग पर कोई अकुश नही रखता । वह तो धर्म ही रखता है ।

एक द्रोणाचार्य द्वारा सदाचार का उल्लघन करने से समुदाचार का उल्लघन हुआ । इसी का परिणाम था महाभारत । आज भी विज्ञान को धर्म के अनुशासन की आवश्यकता है । निःशस्त्रीकरण की बात करना धर्म के अनुशासन में ही है । धर्म विनाशक नही है । आध्यात्मिकता का सम्पादन सबको दिखाकर नही किया जा सकता है । भौतिकता व्यक्ति को विश्वास व आस्था से दूर भले ही कर दे, नैतिक नियमो से दूर नही करती अन्यथा समाज का अस्तित्व ही कहा रहेगा ?

वैज्ञानिक विकासवाद का भी धर्म विरोध नही करता धर्म विचारक भी है । हिन्दू धर्म में माने जाने वाले अवतारो के क्रम में हम इसे भलीभाति देख सकते हैं । मत्स्य अवतार जलचर प्राणी है, कच्छप-जल-थल वाले कछुए जैसे प्राणियो का प्रतीक है । वराह ऐसे पशु का प्रतीक है जो भूमि पर रहते हैं परन्तु आवश्यता पडने पर जल में तैर भी जाते हैं, नृसिंह—मनुष्य और पशु के बीच की स्थिति है । वामन अपूर्ण मानव का प्रतीक है । परशुराम व्यक्ति का तो प्रतीक है परन्तु तामसी, राम पूर्ण सात्विक मनुष्य के प्रतीक हैं । कृष्ण सत, रज, तम तीनों गुणों से ऊपर योगीराज हैं । योग के बाद शक्ति आती है । ज्ञान होने पर बुद्ध भी अवतार माने गए । इस प्रकार ये

मील के पत्थर विकास के रास्ते को नापते हैं । भौतिकवादियो के पलायन का नमूना हिरण्यकशिपु (अर्थ+काम) है । जिस पर पहले विचार किया जा चका है ।

देशीय एकता के लिए प्राचीन तीर्थ-सस्कृति की रक्षा देशाटन द्वारा सम्भव है । देश यह शरीर है तथा स्कन्द पुराण मे सत्य, क्षमा, इन्द्रिय, निग्रह, सर्वभूत दया, सत्यवादिता, ज्ञान और तप को ही तीर्थ वताया गया है । आत्मनिरीक्षण करना ही देशाटन है ।

स्कूल, कॉलेजो मे दिन-दिन वढती अराजकता पर नैतिक नियम ही प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं इसलिए उनकी पाठ्यचर्या पर विचार किया जाना चाहिये । धर्म मानसिक तनाव व सवेग से मुक्ति दिलाता है । प्रार्थना करने के वाद शान्ति मिलती है, यह जानना जरूरी नही कि इनमे मनोविज्ञान का कौन-सा सिद्धान्त काम करता है । धर्म ही सामाजिक मूल्यो व मान्यताओ की रक्षा करता है । समाज मे नैतिकता वनाये रखने के लिए धर्म सहायक है । धार्मिक उत्सवो के माध्यम से सामाजिक एकता वनी रहती है । आचरण प्रधानधर्म परिवार आदि मे कर्त्तव्यवोध जगाता है । सस्कार उत्पन्न करता है । सामाजिक सन्तुलन वनाए रखता है ।

Flat No./12, *रिजर्व वैंक स्टाफ कालोनी*
गांधीनगर, जयपुर ३०२१५

卐

धर्म और जीवन

● डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया

★

संसार की प्राचीन धार्मिक मान्यताओ को दो वर्गों मे विभाजित किया गया है । यथा—

१—कृत
२—प्राकृत

कृतकारी धार्मिक मान्यता के अन्तर्गत वे सभी धर्म मत हैं जिनका कोई न कोई व्यक्ति अथवा विभु कर्त्ता है । ऐसी मान्यताओ मे धर्म का कर्त्ता सर्वोपरि सत्ता है । वैदिक, बौद्ध, इस्लाम तथा ईसाई आदि धर्म इसी वर्ग मे आते हैं । यहा भक्त अथवा अनुयायी सदा-सर्वदा उस कर्त्ता के अधीन रहता है । धार्मिक मान्यताओ का दूसरा भेद है प्राकृत जिसका कोई कर्त्ता नही । वह स्वयजात है । इस कोटि मे जैन धर्म आता है ।

गुणों के समूह का नाम द्रव्य है और द्रव्य-समूह का नाम है ससार । द्रव्य शाश्वत है । अविनाशी है । उनकी पर्याय नित्य-निरन्तर बनती-बिगडती रहती है । पर्याय परिवर्तन मे एक विशेष आकर्षण होता है । ससार इसी आकर्षण से जीवंत है ।

कृत-कारी धर्म में सत्ता की उपासना आवश्यक है, फलस्वरूप भक्त अथवा अनुयायी सर्वदा पराधीन रहता है जबकि प्राकृत धर्म मे व्यक्ति—सत्ता की अपेक्षा गुणों की वदना का विधान है । यहा मान्यता है कि प्रत्येक आत्मा मे अनन्त गुण समाहित हैं परन्तु कर्मों के आवरण से वे प्रच्छन्न रहते हैं, उन्हे निरावरण करना पुरुष का सच्चा और अच्छा पुरुषार्थ कहलाता है । संयम और तप-साधना से कर्म-कुल क्षय किए जाते हैं । कर्म क्षय होने पर अक्षय आत्मा प्रकट होता है ।

जीवन का लक्षण है जीना । जागतिक जीवन भी दो प्रकार से जिया जाता है । यथा—

१—मूर्च्छित जीवन जीना ।
२—जाग्रत जीवन जीना ।

ऐन्द्रिक-व्यापारो से लिप्त हो जाने पर प्राणी मूर्च्छित जीवन जीता है । इसी को प्रमाद भी कहा गया है । मूर्च्छित जीवन-चर्या सासारिक चक्रमण को गति प्रदान करता है जबकि जाग्रत जीवन-चर्या आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करती है ।

धर्म की परिभाषाए प्राय. दो प्रकार से स्थिर हुई है । यथा-

१–क्रियाजन्य
२–स्वभावजन्य

क्रियाजन्य परिभाषा मे 'धारयति धर्म' कहा गया है । प्रश्न है क्या धारण किया जाए ? जो हमारे लिए हमारे विकास के लिए उपयोगी हो उस चर्या तथा सिद्धान्त को धारण करना वस्तुत धर्म है । विचार करे कि उपयोगिता का क्या आधार है ? मूर्च्छित जीवन की उपयोगिता अथवा जाग्रत जीवन का सम्बल । आज जागतिक जीवन-उत्कर्ण को ही उपयोग माना जा रहा है । शुभ उपयोग और शुद्धोपयोग का प्रश्न ही नही उठता । इसका अर्थ यह है कि जागतिक जीवन के लिए धर्म की कोई आवश्यकता है ही नही । प्रत्येक-जीवन चर्या मे होश की परम आवश्यकता है । हमारी प्रत्येक चर्या होश के साथ सम्पन्न होना चाहिए । वेहोश जीवन चर्या का परिणाम मदहोश होगा जो सासारिक चक्रमण को चिरजीवी वनाता है, विवर्द्धित करता है ।

देखना–सुनना, सू घना-चखना तथा स्पर्श करना ये पाच प्रकार ऐन्द्रिक क्रिया के प्रक्रिया द्वारा है । यदि प्राणी किसी भी पदार्थ को देखने मे मात्र दृष्टा की भूमिका निर्वाह करता है तो उसका देखना सार्थक है और यदि इस दृष्टि मे राग-द्वेष का आधार है तो

वह देखना सम्यक् नही कहा जा सकता । इसी प्रकार अन्य क्रियाए है । विचार कीजिए कि जब हम जूते उतारते है तब सावधानी पूर्वक निर्णय ले कि क्या यह क्रिया जाग्रत अवस्था मे की गई है ? यदि की गई है तो जूते जहा उतारे गए है, उतारने से पूर्व उस स्थान विशेष को देखा गया है । ऐसा तो नही कि जूते उतारने के स्थान पर कही कोई कीट हो और वह हमारी लापरवाही से जूता पडने पर मर गया हो । इसी प्रकार जूते पहिनने मे हमे जूते और उसके चारो ओर देखना-पडताल करना चाहिए और तब जूता पहिनना वस्तुत जूता पहिनने की ऐसी क्रिया सार्थक कहलाएगी । इस प्रकार की जूता पहिनने और उतारने की क्रिया जाग्रत क्रिया कहलाएगी । और तब इस अवस्था अवधि की चर्या धार्मिक कहलाएगी । इस प्रकार की जीवन-चर्या हमे कालान्तर मे क्रियाजन्य धर्म से स्वभावजन्य धर्म को और अग्रसर किया करती है ।

कहते है 'वत्थु सहावो धम्मो' अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही धर्म है । प्रत्येक वस्तु मे अनन्त धर्म होते हैं और इन सभी धर्मों का जानना धार्मिक होता है । ज्ञान से मूर्च्छा का विसर्जन होता है । आज का जीवन मूर्च्छित जीवन है । इसीलिए प्राणी-प्राणी घोर-घनघोर सत्रास से भरा हुआ है । पीडित है । चलने मे अनेक दुर्घटनाए हो रही है । ईर्ष्या का हमे बोध नही है । इस प्रकार यदि हमे सुखी और समृद्ध जीवन जीना है तो हमारी जीवन चर्या धर्ममय होना चाहिए । जाग्रत-चर्या ही धार्मिक चर्या कहलाता है । इसीसे व्यक्ति, समूह, समुदाय और समाज सुखी और समृद्ध होता है ।

अधर्म को यदि कोई धर्म माने अथवा जाने तो यह उसकी जानकारी मिथ्या कहलाएगी और उसका परिणाम सर्वदा अशुभ होगा । अज्ञान आकुलता को जन्म देता है । अधार्मिक जीवन सदा आकुल-व्याकुल रहता है । अधर्मी के दर्शन कर प्राणी प्राय भय और आकुलता का अनुभव करता है । धार्मिक प्राणी के दर्शन करने से प्रमोद-मोद होता है । कहा—"गुणी जनो को देख हृदय मे मेरे प्रेम आवें ।" वह धार्मिक जीवन-चर्या के मगल दर्शन करने का सुपरिणाम है । धर्म हमारे जीवन मे समता का सचार करता है और ममता का विसर्जन । समभाव की उत्पत्ति भी इसी का परिणाम है । समभाव

और समत्व मे प्राणी मात्र के प्रति सौहार्द की भावना अन्तरग में उदय होती है फलस्वरूप समाज मे विरोध-क्रोध की अपेक्षा बोध—अनुरोध की उदात्त भावना प्रकट होती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि धार्मिक जीवन स्वय सुखी और समृद्ध होता है और दूसरो को सुखी समृद्ध होने का वातावरण जुटाता है। तब क्या हमे धार्मिक जीवन-चर्या जीने के लिए अग्रसर नही होना चाहिए ? ०

स चालक जैन, शोध अकादमी मगल कलश,
३६४, सर्वोदय नगर, आगरा रोड, अलीगढ (उ प्र)

卐

दयालुता

हजरत अयूब मुसलमानो के बहुत माने हुए वली हुए हैं। वे बड़े दयालु थे। एक बार उनके सीने मे जख्म हो गए थे। जख्मो मे कीड़े पड गए। एक रोज यह मदीने मे एक स्थान पर खड़े हुए थे कि चन्द कीड़े जख्म से निकल कर जमीन पर गिर पड़े। उन्होने उन कीडो को जमीन से उठाकर दुबारा अपने जख्म मे रख लिए। लोगो ने पूछा तो हजरत ने फरमाया –

"कुदरत ने इन कीडो की खुराक यही दी है। अलहदा होने पर मर जाएगे। जब हम किसी मे जान नही डाल सकते तब हमे उनकी जान लेने का क्या हक है ?"

—राज सोगानी
द्वारा पी. सी. सोगानी
स्टेशन रोड भवानी मन्डी (राज.)

जैनागमों मे श्रावक धर्म

● आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

स्वभाव च्युत आत्मा को जो पुनः स्वभाव-स्थित कर और गिरते हुए को स्वभाव मे धारण करे, वैसे आचार-विचार को शास्त्रीय भाषा मे धर्म कहते है । 'एगे धम्मे' अर्थात् धारण करने के स्वभाव से वह एक है । स्थिति भेद, क्षेत्रभेद और पात्र भेद की अपेक्षा मूल मे वह एक होकर भी जैसे पानी विविध नाम और रूपो से पहचाना जाता है, वैसे धर्म भी अधिकारी भेद और साधना भेद से अनेक प्रकार का कहा जाता है । 'स्थानाग–सूत्र' के दूसरे स्थान मे धर्म के श्रुतधर्म और चारित्रधर्य के रूप से दो प्रकार बतलाये है फिर चारित्र धर्म को भी आगारधर्म और अणगार धर्म के भेदसे विभक्त किया है। आगार का अर्थ है घर । घर के प्रपचमय वातावरण मे रहकर जो धर्म साधना की जाये उसे आगार धर्म और घर के सम्पूर्ण आरम्भ-परिग्रह से विरत होकर जो धर्म-साधना की जाय उसको अणगार धर्म कहा गया है । आगार धर्म का ही दूसरा नाम श्रावक धर्म है। त्यागी-श्रमणो की उपासना करने से गृहस्थ को श्रमणोपासक का उपासक भी कहा गया है । जैनागम और साहित्य मे प्राप्त श्रावक धर्म का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

दशाश्रुतस्कध मे सम्यग्दर्शनी गृहस्थ को व्रत-नियम के अभाव मे दर्शन श्रावक कहा है । आचार्य कहते है कि जो व्रत-नियम रहित होकर भी जिन शासन की उन्नति के लिये सदा तत्पर रहता है और चतुर्विध सघ की भक्ति करता है वह अविरत सम्यग् दृष्टि भी प्रभावक श्रावक होता है, जैसा कि कहा है—

> जो अविरओवि-संघे, भत्तितित्थुन्नई सया कुणई ।
> अविरय-सम्मदिट्टी प्रभावगो, सावगो सोऽवि ।।

जैनागमों में श्रावक धर्म

● आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

स्वभाव च्युत आत्मा को जो पुनः स्वभाव-स्थित कर और गिरते हुए को स्वभाव मे धारण करे, वैसे आचार-विचार को शास्त्रीय भाषा मे धर्म कहते है। 'एगे धम्मे' अर्थात् धारण करने के स्वभाव से वह एक है। स्थिति भेद, क्षेत्रभेद और पात्र भेद की अपेक्षा मूल मे वह एक होकर भी जैसे पानी विविध नाम और रूपो से पहचाना जाता है, वैसे धर्म भी अधिकारी भेद और साधना भेद से अनेक प्रकार का कहा जाता है। 'स्थानाग–सूत्र' के दूसरे स्थान मे धर्म के श्रुतधर्म और चारित्रधर्य के रूप से दो प्रकार बतलाये है फिर चारित्र धर्म को भी आगारधर्म और अणगार धर्म के भेद से विभक्त किया है। आगार का अर्थ है घर। घर के प्रपचमय वातावरण मे रहकर जो धर्म साधना की जाये उसे आगार धर्म और घर के सम्पूर्ण आरम्भ-परिग्रह से विरत होकर जो धर्म-साधना की जाय उसको अणगार धर्म कहा गया है। आगार धर्म का ही दूसरा नाम श्रावक धर्म है। त्यागी-श्रमणो की उपासना करने से गृहस्थ को श्रमणोपासक का उपासक भी कहा गया है। जैनागम और साहित्य मे प्राप्त श्रावक धर्म का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

दशाश्रुतस्कध मे सम्यग्दर्शनी गृहस्थ को व्रत-नियम के अभाव मे दर्शन श्रावक कहा है। आचार्य कहते है कि जो व्रत-नियम रहित होकर भी जिन शासन की उन्नति के लिये सदा तत्पर रहता है और चतुर्विध सघ की भक्ति करता है वह अविरत सम्यग् दृष्टि भी प्रभावक श्रावक होता है, जैसा कि कहा है—

> जो अविरओवि-संघे, भत्तितित्थुन्नई सया कुणई।
> अविरय-सम्मदिट्ठी प्रभावगो, सावगो सोऽवि ॥

आगमो मे प्राय बारहव्रतधारी श्रावको का ही निर्देश मिलता है । एक आदि व्रतधारी देशविरती होते हैं, पर आगमो मे वैसा कोई उदाहरण नही मिलता है । इस समय मे राज्य शासन के पालक चेटक और उदायी जैसे राजा और सुबाहु जैसे राजकुमारो के भी द्वादश व्रतो के धारण का उल्लेख आता है । परन्तु पूर्वाचार्यों ने श्रावक धर्म को भी जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट ऐसी तीन श्रेणिया निर्धारित की हैं ।

जघन्य श्रावक

जघन्य श्रावक के लिये तीन बातें आवश्यक बताई हैं, जो निम्न प्रकार हैं ।

१. मारने की भावना से प्रेरित होकर किसी त्रस जीव की हत्या नही करना । (२) मद्य-मास का त्यागी होना ।

(३) नमस्कार मन्त्र पर पूर्ण श्रद्धा करना (रखना)

कहा भी है—आउट्ठि थूल-हिसाई, मज्ज म साई-चाइओ ।
जहन्नओ सावगो होइ, जो नमुक्कार धारओ ।।

मध्यम श्रावक :

मध्यम श्रावक की विशेषताए इस प्रकार हैं :

देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा रखता हुआ जो बडी हिसा नही करता ।

२ मद्य, मास आदि अभक्ष्य पदार्थों का त्यागी होकर जो धर्म-योग्य लज्जालुता, दयालुता, गभीरता और सहिष्णुता आदि गुण युक्त हो ।

३. जो प्रतिदिन षट्कर्म का साधन करता है और द्वादश व्रतो का पालन करता हो । कहा गया है—

देवार्चा गुरु-शुश्रुषा स्वाध्याय सयमस्तपः ।
दान चतिगृहस्थाना षट् कर्माणि दिने दिने ।।

षट्कर्म। छह दैनिक कर्म इस प्रकार हैं—

१. देव भक्ति :

वीतराग और सर्वज्ञ देवाधिदेव अरिहत ही श्रावक के आराध्य देव हैं।

श्रावक की प्रतिज्ञा होती है—"अरिहतो महदेवो" अर्थात् अरिहत मेरे उपास्य देव हैं। उनके लिये कहा गया है—दसट्ठ दोसा न जस्स सो देवो" जिनमे दस और आठ (अठारह) दूषण नही हैं, वे ही लोकोत्तर पक्ष के आराध्यदेव है।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय इन चार कर्मों के क्षय से जिनमें अठारह दोष नही होते वे अरिहत कहलाते हैं। अठारह दोष निम्न प्रकार हैं—

१. अज्ञान २. निद्रा ३ मिथ्यात्व ४. अविरति ५. राग ६. द्वेष ७. हास्त्र ८. रति ९. अरति १० भय ११ शोक १२ जुगुप्सा १३ काम १४. दानान्तराय १५. लाभान्तराय १६ भोगान्तराय १७. उपभोगान्तराय और १८ वीर्यान्तराय।

कुछ आचार्य अठारह दोषों में 'कवलाहार' को एक मानकर केवली भगवान् के 'कवलाहार' नही मानते, पर आहार का संबंध शरीर से है। वह 'गमनागमन' और श्वास की तरह शरीर धर्म होने से आत्म गुण का घातक नही बनता अत: यहां उसका ग्रहण नही किया गया। इस प्रकार अठारह दोष-रहित, बारह गुण सहित अरिहत देव ही आराध्य हैं, देव, त्यागी, विरागी एव वीतराग है अत त्याग, विराग और वीतराग भाव की ओर बढना एव तदनुकूल करणी करना ही उनकी सच्ची भक्ति हो सकती है जैसा कि सन्तो ने कहा है:—

ध्यान धूप मनः पुष्प, पचेन्द्रिय-हुताशन ।
क्षमा जाप सतोष पूजा, पूजो देव निरजन ॥

२. गुरु सेवा :

दूसरा कर्म गुरूसेवा है । "जावज्जीव सुसाहुणो गुरूणो" के अनुसार श्रावक, आरभ-परिग्रह के त्यागी, सम्यक्ज्ञानी, मुनि एव महासतियो को ही गुरु मानता है । सच्चे सत छोटी-बडी किसी प्रकार की हिंसा करते नही, करवाते नही, करने वाले को भला भी समझते नही । इस प्रकार वे झूठ, चोरी कुशील, और परिग्रह के भी तीन करण, तीन योग से सर्वथा त्यागी होते हैं । श्रावक प्रतिदिन ऐसे गुरुजनो के दर्शन व वदन कर उपदेश ग्रहण करते हैं और उनके सयम गुण के रक्षण व पोषण हित वस्त्र, पात्र, आहार, औषध एव शास्त्रादि दान से सेवाभक्ति करते हैं ।

जैसा कि 'उपासकदशग' सूत्र में आनन्द श्रावक ने कहा, 'कप्पई मे समणे निग्गथे फासुय-एसणिज्जेण असण,पाण, खाइम, साइम, वत्थ पडिग्गह, कमल पायपुच्छणेण, पीढ, फलग, सिज्जा, सथारएण ओसहभेसजजेण पडिलाभेमाणस्स विहरितए अर्थात् मुझे श्रमण, निर्ग्रंथो को प्रासुक और निर्दोष अशनानिद चारो अहार, वस्त्र, पात्र, कवल पादपोछन, पीठ, फलक, शैय्या, सस्तारक और औषध-भेषज से प्रतिलाभ देते हुए विचरण करना योग्य है । अन्य तीर्थ के देव या अन्य तीर्थ-परिगृहीत चैत्य का वैदन नमस्कार करना योग्य नही, वैसे ही उनके पहले बिना बतलाये उनसे आलाप-सलाप करना तथा उनको अशनादि देना नही कल्पता ।

३. स्वाध्याय :

सद्गुण का सयोग सर्वदा नही मिलता और मिलने पर भी उनकी शिक्षा का लाभ विना स्वाध्याय के नही मिलता । अत गुरु-सेवा के पश्चात् स्वाध्याय कहा गया है । श्रावक-गुरु की वाणी सुनकर चिंतन, मनन और प्रश्नोत्तर द्वारा ज्ञान को हृदयगम करता है । शास्त्र मे वर्णित श्रावक के लिये निग्रन्थ प्रवचन का "कोविद" विशेषण दिया गया है । स्वाध्याय के द्वारा ही शास्त्र का कोविद पडित हो सकता है । अत प्रत्येक श्रावक-श्राविका को वाचना, पृच्छा,पर्यटना, अनुपेक्षा और धर्मकथा द्वारा धर्म शास्त्र का स्वाध्याय करना चाहिये । सद्गुरु की अनुपस्थिति मे उनके प्रवचनो का स्वाध्याय गुरू सेवा का आनन्द

प्रदान करता है । कहा भी है–"स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान बिना ।"

४. संयम

जितेनिन्द्रय, सयमशील पुरुष का ही स्वाध्याय शोभास्पद होता है । अत· स्वाध्याय के बाद चतुर्थ कर्म सयम बतलाया है । श्रावक को प्रतिदिन कुछ काल के लिये सयम का अभ्यास करना चाहिये । अभ्यास–बल से चिरकाल सचित भी काम, क्रोध और लोभ का प्र भाव कम होता है और उपशम भाव की वृद्धि होती है । अत. श्रावक को पाप से बचने के लिये प्रतिदिन सयम की साधना करनी चाहिये ।

५. तप

गृहस्थ को सयम की तरह प्रतिदिन कुछ न कुछ तप भी अवश्य करना चाहिये । तप-साधन से मनुष्य मे सहिष्णुता उत्पन्न होती है, अतः आत्म-शुद्धि के लिये अनशन, अणोदरी, रस परित्याग आदि मे से कोई भी तप करना आवश्यक है । तप से इन्द्रियो के विषय क्षीण होते हैं और पर दु ख मे समवेदना जागृत होती है । रात्रि-भोजन और व्यसन का त्याग भी तप का अंग है । आवश्यकताओ से दबा हुआ । गृहस्थ तप द्वारा शान्ति-लाभ प्राप्त करना है ।

६. दान

श्रावक-जीवन के मुख्य गुण दान और शील हैं । श्रावक तप की तरह अपने न्यायोपार्जित वित्त का प्रतिदिन दान करना भी आवश्यक मानता है । जैसे शरीर विभिन्न प्रकार के पक्कवान ग्रहण कर फिर मल रूप से कुछ विसर्जन करता है । स्वस्थ शरीर की तरह श्रावक भी प्रतिदिन प्राप्त द्रव्य का देश, काल एव पात्रानुसार उचित वितरण कर दान धर्म की अराधना करता है । पूणिया श्रावक के लिये कहा जाता है कि उसने धर्मी भाई को प्रीतिदान करने के लिये एकान्तर व्रत करना प्रारम्भ किया । पूणी के धन्धे मे तो घर का खर्च मात्र चलता था । अत वह तपस्या से अपना खाना बचा कर स्वधर्मी वन्धुओ की सेवा करता था ।

मध्यम श्रावक षट् कर्म की साधना के समान द्वादश व्रत का भी पालन करता है ।

द्वादश व्रत :

आनन्द श्रावक ने भगवान् महावीर का उपदेश श्रवण कर प्रार्थना की–प्रभो । जैसे आपके पास बहुत से राजा, ईश्वर, तलवर, माडवी, कोटुम्बी और सार्थवाह आदि मुण्डित होकर अणगार धर्म की प्रव्रज्या ग्रहण करते हैं । वैसे मैं अणगार धर्म ग्रहण करने मे समर्थ नही हू । मैं आपके पास पच अणुव्र, सात शिक्षा व्रत रूप द्वादशविध गृहस्थ धर्म को ग्रहण करूगा । मालूम होता है प्राचीन समय श्रावक आरम्भ से ही सम्यग्दर्शन पूर्वक बारह व्रत ग्रहण करते थे । वे बीच के जघन्य मार्ग मे अटके नही रहते थे । आनन्द ने जिन श्रावक व्रतो को स्वीकार किया था उनका सक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

१. स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत

इस व्रत के अनुसार गृहस्थ त्रस जीवो की सकल्प पूर्वक हिंसा करने व करवाने का दो करण, तीन योग से त्याग करता है । चलते फिरते जीवो की दुर्भावनावश हिंसा करनी नही, करवानी नही, जीवन भर मन, वचन, काय से ।

२. स्थूल मृषावाद विरमणव्रत :

इसके अनुसार श्रावक स्थूल झूठ का त्याग करता है । दूसरे का जानी माली नुकसान हो, ऐसा झूठ ज्ञानपूर्वक बोलना नही, बोलाना नही, मन, वचन, काय से । वडा झूठ पाच प्रकार का है, जैसे —१, कन्या २ गोआदि पशु सम्बन्धी ३ भूमि सम्बन्धी ४ जमा रकम या धरोहर दबाने सम्बन्धी तथा ५ झूठी साक्षी या मिथ्या लेख सम्बन्धी । श्रावक को इनका त्याग करना होता है । तभी वह समाज राष्ट्र और परिवार मे विश्वास पात्र माना जाता है ।

३. स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत :

इसके अनुसार श्रावक वड़ी चोरी का त्याग करता है । वह

स्वय चोरी नही करता । जानकर चोरी का माल नही लेता । एक देश का माल दूसरे देश मे बिना स्वीकृति नही भेजता । विना अनुमति के राज्य-सीमा का अतिक्रमण नही करता । कम ज्यादा तोल माप रखना और माल मे मिलावट कर ग्राहको को धोखा देना, श्रावक अपने अचौर्य व्रत का दूषण मानता है । इस तरह वह चोरी का दो करण, तीन योग से त्याग करता है । "जाइजो लाय रहीजो सास" के अनुसार वह इतना विश्वस्त होता है कि यदि राज-भडार मे भी चला जाय तो अविश्वास का कोई प्रश्न ही नही उठता । यही अचौर्यव्रत की महिमा है ।

४. स्वदार संतोष परदार विवर्जन व्रत :

इसके अनुसार गृहस्थ परस्त्री का त्यागी होता है । पाणि-गृहीत स्त्री पुरुष अपने क्षेत्र मे मर्यादाशील होते है । वह भोग को आत्मिक दुर्बलता समझकर शनै शनै अभ्यासबल से काम वासना पर विजय मिलाना चाहता है । वह यथाशक्य एव आहार, विहार और वातावरण मे रहना पसद करता है जहा वासना को प्रोत्साहन नही मिलता । हस्त मैथुन, अनग-क्रीडा, अश्लील नृत्य गान और नग्न चित्रपटो से रूचि रखना इस व्रत के दूषण माने गये है । श्रावक नसबदी जैसे कृत्रिम उपयोगो मे सतातिनिरोध को इष्ट नही मानता । वह इन्द्रिय-सयम द्वारा गर्भ निरोध को ही स्वपरहितकारी मानता है ।

५. इच्छा परिमाण व्रत

इस व्रत मे श्रावक हिरण्य-सुवर्ण्य-भूमि और पशुधन का परिमाण कर तृष्णा की बढती आग को घटाता है । वह धन को शरीर की भौतिक आवश्यकता पूर्ति का साधन मात्र मानता है । जीवन का साध्य धन नही, धर्म है । अत धनार्जन मे धर्म और नीति को भूलकर तन-मन से अस्वस्थ हो जाना बुद्धिमत्तापूर्ण नही कहा जाता । वृद्ध और दुर्बल को लाठी का तरह गृहस्थ को धन का सहारा है । लाठी चलने मे मदद के लिये है पर वह पैरो से टकराने लगे तो कुशल पथिक उसे वही छोड़ देगा । श्रावक इसी भावना से परिग्रह

का परिणाम करता है । आनन्द ने भगवान महावीर के पास हिरण्य सुवर्ण, चतुस्पद और भूमि का परिणाम किया था । वर्तमान मे जो सम्पदा थी उन्होने उसको सीमित कर इच्छा पर नियत्रण किया । परिणाम स्वरूप करोडो की सपदा होकर भी उनका मन शात था । समय पाकर उन्होने प्राप्त सम्पदा से किनारा कर एकान्त साधन किया और निराकुल भाव से अवधिज्ञान की ज्योति प्राप्त की । इस प्रकार परिग्रह का परिमाण करता इस व्रत का लक्ष्य है ।

६. दिग्व्रत :

अहिंसादि मूल व्रतो की रक्षा एव पुष्टि के लिये दिग्व्रत, भोगोपभोग परिमाण और सामायिक आदि शिक्षाव्रतो की आवश्यकता होती है । जितना जिसका देश-देशान्तर मे भ्रमण होगा उतना ही उसका आरम्भ परिग्रह भी बढता रहेगा । अत इस व्रत मे गृहस्थ के भ्रमण को सीमित किया गया है । सारभी गृहस्थ जहा भी पहुचेगा आरभ का क्षेत्र भी उतना ही विस्तृत होगा । अत श्रावक को पूर्व आदि छहो दिशा मे आवश्यकतानुसार क्षेत्र रखकर आगे का भ्रमण छोडना हे । इस प्रकार दिशा-परिणाम लालसाओ को कम करने का प्राथमिक प्रयोग है ।

७. उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत ·

मनुष्य हिंसा, असत्य आदि पाप आवश्यकतानुसार और भोग्य सामग्री के लिये ही करता है । जब तक शारीरिक आवश्यकता पर अकुश नही किया जाता, अहिंसा एव अपरिग्रह का पालन सभव नही अत इस व्रत मे खान पान-स्नान-यानादि सामग्रियो को सीमित करना आवश्यक बतलाया है । श्रावक आनन्द ने दातुन से लेकर द्रव्य तक २६ बोलो की मर्यादा की और महारभ के १५ खरकर्म-हिंसक धधो का भी त्याग किया था । आवश्यकता वृद्धि के साथ मनुष्य का खर्च बढेगा और उसकी पूर्ति के लिये उसे आरभ-परिग्रह भी बढाना होगा । अत कहा गया कि भोगोपभोग के पदार्थों की मर्यादा करो । मर्यादा करने से जीवन हल्का होगा और आरम्भ-परिग्रह भी सीमित रहेगा ।

८. अनर्थदंड विरमण व्रत :

हिसादि पापो को घटाने के लिये जैसे आवश्यकताओ का परिमाण करना आवश्यक है, वैसे व्यर्थ—बिना खास प्रयोजन के होने वाले दोषो से बचना भी आवश्यक है । अज्ञानी मानव कितने ही पाप ना-समझी से करता रहता है । शास्त्र मे अनर्थ दण्ड के चार कारण बताये हैं । (१) अपध्याय (२) प्रमाद (३) हिस्रप्रदान और (४) मिथ्याउपदेश । बिना प्रयोजन आर्त-रोद्र के बुरे विचार करना, द्रोह करना, भविष्य की व्यर्थ चिन्ता करना, नाच, सरकस एव नशा से प्रमाद बढाना, हिंसाकारी अस्त्र-वस्त्र अग्नि विष आदि अज्ञात व्यक्ति को देना, पापकारी आदेश देना मेढे तीतर आदि लडाके खुश होना, तेल, पानी आदि खुले रखना, बिना प्रयोजन हरी तोडना या दूब आदि पर चलना, अनर्थ दड है । श्रमणोपासक को बिना प्रयोजन की हिंसादि प्रवृत्ति से बचना नितात आवश्यक है ।

९. सामायिक व्रत :

अनर्थ के कारणभूत राग, द्वेष एव प्रमाद का घटाने के लिये समता की साधना आवश्यक है । सामायिक मे सम्पूर्ण पापो को त्याग कर समभाव को प्राप्त करने की साधना की जाती है । सामायिक के समय श्रावक श्रमण की तरह निष्पाप जीवन वाला होता है । उस समय आरम्भ-परिग्रह का सम्पूर्ण त्याग हो जाता है । अत गृहस्थ को बार-बार सामायिक का अभ्यास करना चाहिये जैसा कि कहा है—

सामाइयम्मिउकए समणो, इव सावओ हवई जम्हा ।
एएण कारणेण बहुसो, सामाइय कुज्ज [वि आ]

प्रतिदिन प्रात काल गृहस्थ को द्रव्य, क्षेत्रकाल और भाव-शुद्धि के साथ सम्पूर्ण पापो का परित्याग कर स्थिर आसन से मुहूर्त भर सामायिक का अभ्यास अवश्य करना चाहिये । इससे तन, मन वाणी मे स्थिरता प्राप्त होती है ।

१०. देशावकाशिकव्रत :

जीवन मे आरम्भ-परिग्रह का सकोच करने और पूर्वगृहीत

व्रतो को परिपुष्ट करने के लिये दैनिक व्रत ग्रहण को देशावकाशिक कहते है। इसमे गृहस्थ हिंसादि आश्रवो का द्रव्य क्षेत्र, काल की मर्यादा से प्रतिदिन सकोच करता है। प्रतिदिन अभ्यास करने से जीवन सयत और नियमित बनता है और वृत्तिया स्वाधीन बनती है।

११. पौषधोपवास व्रत :

दैनिक अभ्यास को अधिक बलवान बनाने के लिये गृहस्थ पर्वतिथि मे पौषधोपवास की साधना करता है। इसमे आहार-त्याग के साथ शरीर, सत्कार और हिंसादि पाप कार्यो का भी अहोरात्र के लिये दो करण, तीन योग से त्याग होता है। पौषधव्रती, हिंसादि पाप कर्मो को मन, वाणी और काय से स्वय करता नही और करवाता नही। इस दिन ज्ञान-ध्यान से आत्मा को पुष्ट करना मुख्य लक्ष्य होता है। प्राचीन काल के श्रावक अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा को प्रतिपूर्ण पौषध का सम्यक् पालन करते थे। जैसा कि 'भगवती सूत्र' के प्रकरण मे कहा है-चाददसट्ठ मुदिट्ठ पुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणु पालेमाणा विहरन्ति श्रावक चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या और पूर्णिमा मे प्रतिपूर्ण पौषध का सम्यक् पालन करने विचरते हैं। दिन रात आरभ-परिग्रह मे फसा रहने वाला गृहस्थ जब पूरे दिन-रात हिंसा, झूठ, परिग्रह से बचकर चल लेता है तो उसे विश्वास हो जाता है कि हिंसा, झूठ, कुशील और क्रोध आदि को छोडकर जीवन शान्ति से चलाया जा सकता है। पौषधोपवास श्रमण-जीवन की साधना का पूर्व रूप है। श्रावक को अनुकूलतानुसार हर माह मे पौषध व्रत की साधना अवश्य करनी चाहिये।

१२. अतिथि सविभाग व्रत :

इस व्रत के द्वारा श्रावक भोजन के समय श्रमण निर्ग्रन्थो का सविभाग करता है। शास्त्र मे उसके लिये "असिमफलिहा अवगुय दुवारे" कहा है, अर्थात् उसके द्वार की आगल उठी रहती है। श्रावक के गृहद्वार खुले रहते हैं। साधु-साध्वी का सयोग मिलने पर निर्दोष आहार-पानी, वस्त्र-पात्र और औषध आदि से उनको प्रतिलाभ देना

श्रावक अपना आवश्यक कर्तव्य समझता है । वह मन, वचन काय की शुद्धि से विधिपूर्वक विशुद्ध आहारादि प्रतिलाभित कर अपने आपको कृतकृत्य मानता है ।

साधु के अभाव में देशविरति श्रावक और सम्यक्दृष्टि भी सत्पात्र माना गया है । दान गृहस्थ का दैनिक कर्म है। वह यथायोग्य गृहागत हरएक का सत्कार करता है । 'भगवती सूत्र' विच्छड्डिया पउर भत्तपाणे' विशेषण से गृहस्थ के यहा दीन-हीन, भूखे-प्यासे-पशु-पक्षी और मानव, को प्रचुर भात-पानी डाला जाना कहा गया है । वह अनुकम्पा दान को पुण्यजनक मानता है ।

उत्कृष्ट श्रावक :

वैदिक परम्परा में जैसे गृहस्थाश्रम के पश्चात् वानप्रस्थ का विधान है । जैन परम्परा मे ऐसा ही व्रती जीवन के बाद पडिमाधारी साधक का उल्लेख है । यह श्रावक जीवन की उत्कृष्ट साधना है । पडिमाओ का वर्णन दशाश्रुतस्कंध सूत्र की छट्टी दशा मे विस्तार से किया गया है । इस विषय पर लेखको ने स्वतन्त्र विचार भी किया है, अत· यहा सक्षिप्त परिचय मात्र ही प्रस्तुत किया जाता है ।

अभिग्रह विशेष को पडिमा या प्रतिमा कहते है । श्रावक की ११ और साधु के लिये मुख्य १२ पडिमाए कही गयी है । श्रावक की ग्यारह पडिमाए निम्न प्रकार हैं··

१. दर्शन पडिमा : निर्दोष सम्यग्दर्शन का पालन करना ।

२. व्रत पडिमा : निरतिचार सम्यक्रूप से श्रावक व्रतो की अराधना करना ।

३. सामायिक पडिमा : त्रिकाल सामायिक का अभ्यास करना ।

४. पौषध पडिमा : प्रतिमास पर्वतिथि के छ पौषध करना ।

५. एक रात्रिक पडिमा : इसमे अस्नान आदि प.च वोलो का पालन करते हुए जघन्य एक दो तीन दिन, उत्कृट पाच मास तक विचरता है ।

६. **ब्रह्मचर्य पडिमा :** पूर्वोक्त नियमो के साथ इसमे दिनरात पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है। इसका उत्कृष्ट काल ६ मास का ।

७. **सचित आहार वर्जन पडिमा :** पूर्व पडिमा के नियमो का पालन करते हुए सचित्ताहार का त्याग रखना । इसका उत्कृष्ट काल ७ मास का है।

८. **आरभ त्याग पडिमा :** इसमे स्वय आरभ करने का त्याग होता है। इसका उत्कृष्ट काल ८ मास है।

९. **आरम्भ त्याग पडिमा .** इसमे पडिमाधारी दूसरे से आरम्भ करवाने का त्याग रखता है। इसका उत्कृष्ट काल नव मास का कहा गया है।

१०. **उद्दिष्ट त्याग पडिमा :** इस पडिमा मे अपने उद्देश्य से किये हुए आरभ का त्याग करता है। शिर पर शिखा रखता या क्षुरमुंडन करता है। इसका उत्कृष्ट काल दस मास का है।

श्रमणभूत पडिया : इसमे श्रमण निर्ग्रन्थो के धर्म का पालन किया जाता है। वह साधु वेष मे रखकर अपनी शान्ति के कुल मे भिक्षाचर्या लेकर विचरता है। पूछने पर अपना परिचय श्रमणोपासक रूप से 'देता है इसका काल ११ मास का है।

जघन्य हर प्रतिमा का एक दिन, दो दिन या तीन दिन का साधन काल माना गया है। तप आदि का विशेष वर्णन मूल सूत्र मे उपलब्ध नही होता। पडिमा-साधन से साधु जीव मे प्रवेश सरलता से हो सकता है।

इस प्रकार जीवन-सुधार के पश्चात् श्रावक मरण-सुधार का लक्ष्य रखता और उसके लिये अपच्छिम मारणातिक सलेखना द्वारा जीवन, निरपेक्ष होकर पूर्ण समाधि के साथ देह-विसर्जन करता है। यही श्रावक धर्म की साधना का सक्षिप्त परिचय है

श्रावक प्रथम महारम्भी-अल्प परिग्रही होकर अनारभ-अपरिग्रही जीवन की साधना मे अग्रसर होता हुआ आत्म शक्ति का अधिकारी वनता है। श्रमण की तरह उसका लक्ष्य भी आरम्भ-परिग्रह से अलग होकर शुद्ध, वुद्ध, निज स्वरूप को प्राप्त करता है। ०

जैन दर्शन में वीरभाव की अवधारणा

● डॉ० नरेन्द्र भानावत

✽

जैन दर्शन अहिंसा प्रधान दर्शन है। अहिंसा को न मारने तक सीमित करके लोगो ने उसे निष्क्रियता और कायरता समझने की भ्रामक कल्पनाए की है। तथाकथित आलोचको ने अहिंसा धर्म को पराधीनता के लिए जिम्मेदार भी ठहराया। महात्मा गांधी ने वर्तमान युग मे अहिंसा की तेजस्विता को प्रकट कर यह सिद्ध कर दिया है कि अहिंसा वीरो का धर्म है, कायरो का नहीं। इस सन्दर्भ मे सोचने पर सचमुच लगता है कि अहिंसा धर्म के मूल मे वीरता का भाव रहा हुआ है।

वीरभाव का स्वरूप :

काव्य-शास्त्रियों ने नवरसों की विवेचना करते हुए उसमें वीररस को एक प्रमुख रस माना है। वीर रस का स्थायी भाव उत्तम प्राकृतिक उत्साह कहा गया है। किसी कार्य को सम्पन्न करने हेतु हमारे मानस मे एक विशेष प्रकार की सत्वर क्रिया सजग रहती है, वही उत्साह है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उत्साह मे प्रयत्न और आनन्द की मिलीजुली वृत्ति को महत्व दिया है। उनके शब्दो मे "साहसपूर्ण आनन्द की उमग का नाम उत्साह है।" मनोविज्ञान की दृष्टि से वीरभाव का एक स्थायी भाव (Sentiment) है जो स्नेह, करूणा, धैर्य, गौरवानुभूति, तप, त्याग, रक्षा, आत्मविश्वास, आक्रोश, प्रभुता आदि सवेगो (Emotion) के सम्मिलित प्रभाव का प्रतिफल है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'वीर' शब्द मे मूल धातु 'वृ' है जिसका अर्थ है छाटना, चयन करना, वरण करना, अर्थात् जो वरण करता है, वह वीर है। इसी अर्थ मे वर का अर्थ 'दूल्हा' होता है क्योकि वह वधु का वरण करता है, वरण कर लेने पर ही वह वीर बनता है।

इसमे श्रेष्ठता का भाव भी अनुस्यूत है। इस दृष्टि से वीरभाव एक आदर्श भाव है। जिसमे श्रेष्ठ समझे जाने वाले मानवीय भावो का समुच्चय रहता है।

वीरभाव और आत्म स्वातन्त्र्य :

वीर भावना के मूल मे जिस उत्साह की स्थिति है वह पुरुषार्थ प्रधान है। पुरुषार्थ की प्रधानता व्यक्ति को स्वतन्त्र और आत्म-निर्भर बनाती है। वह अपने सुख-दु ख, हानि-लाभ, जीवन-मरण आदि मे किसी दूसरे पर निर्भर नही रहता। आत्मकर्तृत्व का यह भाव जैन दर्शन का मूल आधार है :—

अप्पा, कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित च, दुपट्ठिअ सुप्पट्ठिओ ।। १

अर्थात आत्मा ही सुख-दुख करने वाली तथा उनका नाश करने वाली है। सत् प्रवृत्ति मे लगी हुई आत्मा ही मित्र रूप है जबकि दुष्प्रवृत्ति मे लगी हुई आत्मा ही शत्रु रूप है।

इस वीर भावना का आत्म स्वातन्त्र्य से गहरा सम्बन्ध है। जैन मान्यता के अनुसार जीव अथवा आत्मा स्वतन्त्र अस्तित्व वाला द्रव्य है। अपने अस्तित्व के लिए न तो यह किसी दूसरे द्रव्य पर आश्रित है और न इस पर आश्रित कोई अन्य द्रव्य है। इस दृष्टि से जीव को अपना स्वामी स्वय कहा गया है। उसकी स्वाधीनता और पराधीनता उसके स्वय के कर्मों के अधीन है। रागद्वेष के कारण जब उसकी आत्मिक-शक्तिया आवृत्त हो जाती हैं तब पह पराधीन हो जाती है। अपने सम्यक्ज्ञान-सम्यक् दर्शन, सम्यक्चारित्र और तप द्वारा जब वह ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्मों का नाश कर देता है तव उसकी आत्मशक्तिया पूर्ण रूप से विकसित हो जाती है और वह जीवन मुक्त अर्थात् अरिहन्त वन जाता है। अपनी शक्तियो को प्रस्फुटित करने मे किसी की कृपा या दया कारण-भूत नही वनती। स्वय उसका पुरुपार्थ या वीरत्व ही सहायक वनता

१ उत्तराध्ययन २०/३७

है । अपने वीरत्व और पुरुषार्थ के बल पर साधक अपने कर्म-फल मे परिवतन ला सकता है । कर्म–परिवर्तन के निम्नलिखित चार सिद्धान्त इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है .—

१ उदीरणा– नियत अवधि से पहले कर्म का उदय मे आना ।

२. उद्वर्तन –कर्म की अवधि और फल देने की शक्ति मे अभिवृद्धि होना ।

३. अपवर्तन–कर्म की अवधि और फल देने की शक्ति मे कमी होना ।

४. सक्रमण– एक कर्म प्रकृति का दूसरी कर्म प्रकृति मे सक्रमण होना ।

उक्त सिद्धान्त के आधार पर साधक अपने पुरुषार्थ के बल से बन्धे हुए कर्मों की अवधि को घटा-बढा सकता है और कर्मफल की शक्ति मन्द अथवा तीव्र कर सकता है । यही नही, नियत अवधि से पहले कर्म को भोगा जा सकता है और उनकी प्रकृति को बदला जा सकता है ।

वीरता के प्रकार:

वीर भावना का स्वातन्त्र्य भाव से गहरा सम्बन्ध है । वीर अपने पर किसी का नियन्त्रण और शासन नही चाहता । मानव सभ्यता का इतिहास स्वतन्त्र भावना की रक्षा के लिए लडे जाने वाले युद्धो का इतिहास है । इन युद्धो के मूल मे साम्राज्य-विस्तार, सत्ता-विस्तार, यशोलिप्सा, और लौकिक समृद्धि की प्राप्ति ही मुख्य कारण रहे है । इन बाहरी भौतिक पदार्थों और राज्यो पर विजय प्राप्त करने वाले वीरो के लिए ही कहा गया है–'वीर भोग्या वसुन्धरा ।'

ये वीर शारीरिक और साम्पत्तिक बल मे अद्वितीय होते हैं। जैन मान्यता के अनुसार चक्रवती और वासुदेव इस क्षेत्र मे आदर्श वीर माने गये है। चक्रवती चौदह रत्नो के धारक और छह खण्ड पृथ्वी के स्वामी होते है। वासुदेव भरत क्षेत्र के तीन खण्डो और सात रत्नो के स्वामी होते हैं। इनका अतिशय बतलाते हुए कहा गया है कि वासुदेव अतुल बली होता है। कुए के तट पर बैठे हुए वासुदेव को जजीर से बाध कर हाथी, घोडे, रथ और पदाति रूप चतुरगिणी सेना सहित सोलह हजार राजा भी खीचने लगें तो वे उसे नही खीच सकते। किन्तु उसी जजीर को बाये हाथ से पकडकर वासुदेव अपनी तरफ बडी आसानी से खीच सकता है। वासुदेव का जो बल बतलाया गया है उससे दुगुना बल चक्रवर्ती मे होता है। तीर्थंकर चक्रवर्ती से भी अधिक बलशाली होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वीरता के दो प्रकार है—एक बहिर्मुखी वीरता और दूसरी अन्तर्मुखी वीरता। वहिर्मुखी वीरता की अपनी सीमा है। जैन दर्शन मे उसके कीर्तिमान माने गये हैं। चक्रवर्ती जो भरत क्षेत्र के छः खण्डो पर विजय प्राप्त करते हैं। लौकिक महाकाव्यो—रामायण, महाभारत, पृथ्वीराज रासो आदि मे वहिर्मुखी वीरो के अतिरजनापूर्ण यशोगान भरे पडे हैं। जैन साहित्य मे भी ऐसे वीरो का उल्लेख और वर्णन आता है पर उनकी यह वीरता जीवन का ध्येय या आदर्श नही मानी गई है। जैन इतिहास मे ऐसे सैकडो वीर राजा हो गये हैं पर वे वन्दनीय, पुजनीय नही हैं। वे वन्दनीय पूजनीय तब बनते हैं जब उनकी बहिर्मुखी वीरता अन्तर्मुखी बनती है। इन अन्तर्मुखी वीरो मे तीर्थंकर, केवली, श्रमण, श्रमणिया आदि आते हैं। वहिर्मुखी वीरता के अन्तर्मुखी वीरता मे रूपान्तरित होने का आदर्श उदाहरण भरत-वाहुवली का है। भरत चक्रवर्ती वाहुवली पर विजय प्राप्त करने के लिए विराट् सेना लेकर कूच करते हैं। दोनो सेनाओ मे परस्पर युद्ध होता है। अन्तत भयकर जन-सहार से बचने के लिए दोनो भाई मिलकर निर्णायक द्वन्द्व-युद्ध करने के लिए सहमत होते है। दोनो मे दृष्टि युद्ध, वाक् युद्ध, वाहु-युद्ध होता है और इन सब मे भरत पराजित हो जाते हैं। तब

भरत सोचते हैं क्या बाहुबली चक्रवर्ती है जिससे कि मैं कमजोर पड रहा हू ? इस विचार के साथ ही वे आवेश मे आकर बाहुबली के सिरच्छेदन के लिए चक्ररतन से उस पर वार करते हैं। वाहुवली प्रतिक्रिया स्वरूप क्रुद्ध हो चक्र को पकडने का प्रयत्न करते हुए मुष्टि उठाकर सोचते है—मुझे धर्म छोड़कर भ्रातृवध का दुष्कर्म नही करना चाहिये। ऋषभ की सन्तानो की परम्परा हिंसा की नही, अपितु अहिंसा की है। प्रेम ही मेरी कुल परम्परा है। किन्तु यह उठा हुआ हाथ खाली कैसे जाये ? उन्होने विवेक से काम लिया, अपने उठे हुए हाथ को अपने ही सिर पर दे मारा और बालो का लुचन करके वे श्रमण बन गये। उन्होने ऋषभदेव के चरणो मे वही से भावपूर्वक नमन किया, और कृत अपराध के लिए क्षमा प्रार्थना की और उग्र तपस्या कर अह का विसर्जन कर, मुक्ति रूपी वधु का वरण किया।

भगवान ऋषभ, अरिष्टनेमी, महावीर आदि अन्तर्मुखी वीरता के सर्वोपरि आदर्श हैं। भगवान महावीर के समय मे वर्ण व्यवस्था विकृत हो गई थी। ब्राह्मणो और क्षत्रियो का आदर्श अत्यन्त सकीर्ण हो गया था। ब्राह्मण यज्ञ के नाम पर पशु-बलि को महत्व दे रहे थे तो क्षत्रिय देश-रक्षा के नाम पर युद्धजनित हिंसा सौर सत्ता लिप्सा को बढावा दे रहे थे। महावीर स्वय क्षत्रिय कुल मे पैदा हुए थे। उन्होने क्षत्रियत्व के मूल आदर्श रक्षा-भाव को पहचाना और विचार किया कि रक्षा के नाम पर दूसरो की कितनी हिंसा हो रही है, पीडा मुक्ति के नाम पर दूसरो को कितनी पीडा दी जा रही है। सच्चा क्षत्रियत्व दूसरे को जीतने मे नही, स्वय अपने को जीतने मे है। पर-नियन्त्रण नही स्वनियन्त्रण ही सच्ची विजय है। उन्होने सम्पूर्ण राज्य-वैभव और शासनसत्ता का परित्याग कर आत्म-विजय के लिए प्रयाण किया। वे सन्यस्त होकर कठोर ध्यान-साधना और उग्र तपस्या मे लीन हो गये। साढे बारह वर्षों तक वे आन्तरिक विकारो शत्रुओ पर विजय प्राप्त करने के लिए सघर्ष करते रहे। अन्तत वे आत्मविजयी बने और अपने महावीर नाम को सार्थक किया। सच्चे क्षत्रियत्व और सच्चे वीर को परिभाषित करते हुए उन्होने कहा—"एस वीरे प्रससिए, जे बद्धे पडिमोयए।" अर्थात् वह वीर प्रशसनीय है जो

स्वय बन्धनमुक्त तो है ही, दूसरो को भी बन्धन मुक्त करता है। वीर वह है, जो स्वय तो पूर्णत स्वतन्त्र है ही, दूसरो को भी स्वतन्त्र करता है। वीर वह है जो दूसरो को भयभीत नही करता अपनी सत्ता से, बल्कि उनको सत्ता के भय से ही सदा के लिए मुक्त कर देता है, चाहे वह सत्ता किसी की भी हो, कैसी भी हो।

वीर का व्यवहार और मनःस्थिति :

वीरता के स्वरूप पर ही वीर का व्यवहार और उसकी मन स्थिति निर्भर है। वहिर्मुखी वीर की वृत्ति आक्रामक और दूसरो को परास्त कर अपने अधीन बनाने की रहती है। दूसरो पर प्रभुत्व कायम करने और लौकिक समृद्धि प्राप्त करने की इच्छा का कोई अन्त नही। ज्यो-ज्यो इस ओर इन्द्रिया और मन प्रवृत्त होते हैं त्यो-त्यो इनकी लालसा वढती जाती है, हिंसा प्रतिहिंसा मे बदलती है क्रोध वर का रूप धारण करता है और युद्ध पर युद्ध होते चलते हैं। युद्ध और सत्ता मे विश्वास करने वाला वीर प्रतिक्रियाशील होता है, क्रूर और भयकर होता है। दूसरो को दु ख, पीडा, और यन्त्रणा देने मे उसे आनन्द आता है। वाहरी साधनो—सेना, अस्त्र-शस्त्र, राजदरवार, राजकोष आदि को बढाने मे वह अपनी शौर्यवृत्ति का प्रदर्शन करता है। इसकी वीरता का मापदण्ड रहता है दूसरो को मारना न कि वचाना, दूसरो को गुलाम वनाना, न कि गुलामी से मुक्त करना, दूसरो को दवाना, न कि उवारना। ऐसा वीर आवेश-शील होने के कारण अधीर और व्याकुल होता है। वह अपने पर किसी क्रिया के प्रभाव को झेल नही पाता और भीतर ही भीतर सतप्त और त्रस्त वना रहता है। मनोविज्ञान की दृष्टि से ऐसा वीर सचमुच कायर होता है, कातर होता है, क्रोध, मान, माया और लोभ की आग मे निरन्तर दग्ध वना रहता है। वाहरी वैभव और विलास मे जीवित रहते हुए भी आन्तरिक चेतना और सवेदना की दृष्टि से वह मृतप्राय होता है। उसके चित्त के सस्कार कुन्ठित और सवेदना रहित वन जाते हैं।

जैन दर्शन मे वहिर्मुखी वीर भाव को आत्मा का स्वभाव

न मानकर मन का विकार और विभाव माना जाता है। अन्तर्मुखी वीर ही उसकी दृष्टि मे सच्चा वीर है। यह वीर बाहरी उत्तेजनाओ के प्रति प्रतिक्रियाशील नही होता। विषम परिस्थितियो के बीच भी वह प्रसन्नचित्त बना रहता है। वह सकटो का सामना दूसरो को दबाकर नही करता। उसकी दृष्टि मे सुख-दु:ख, सम्पत्ति-विपत्ति का कारण कही बाहर नही, उसके भीतर है। वह शरीर से सम्बन्धित उपसर्गों व परिषहो को समभाव पूर्वक सहन करता है। उसके मन मे किसी के प्रति घृणा, द्वेष और प्रतिहिसा का भाव नही होता। वह दूसरो का दमन करने के बजाय आत्म-दमन करने लगता है। यह आत्मदमन और आत्मसयम ही सच्चा वीरत्व है।

भगवान् महावीर ने कहा है :—

अप्पाणमेव जुज्झहि, किं ते जुज्झेण बज्जओ।
अप्पाणमेव अप्पाण, जइता सुहमेइए ॥[1]

आत्मा के साथ ही युद्ध कर, बाहरी दुश्मनो के साथ युद्ध करने से तुझे क्या लाभ ? आत्मा को आत्मा के द्वारा ही जीतकर मनुष्य सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है।

जिन वीरो ने मानवीय रक्त बहाकर विजय यात्रा आरम्भ की, अन्त मे उन्हे मिला क्या ? सिकन्दर जैसे महान् योद्धा भी खाली हाथ चले गये। वस्तुत कोई किसी का स्वामी या नाथ नही है। 'उत्तराध्ययन सूत्र' के 'महानिर्ग्रन्थीय' नामक २०वे अध्ययन मे अनाथी मुनि और राजा श्रेणिक के बीच हुए वार्तालाप मे अनाथता का प्रेरक वर्णन किया गया है। राजा श्रेणिक मुनि से कहते है—मेरे पास हाथी, घोडे, मनुष्य, नगर, अन्त पुर तथा पर्याप्त द्रव्यादि समृद्धि है। सब प्रकार के कामभोगो को मैं भोगता हू और सब पर मेरी आज्ञा चलती है, फिर मैं अनाथ कैसे ? इस पर मुनि उत्तर देते है—सब प्रकार की बाह्य भौतिक सामग्री, मनुष्य को रोगो और दुखो से नही बचा सकती। क्षमावान और इन्द्रियनिग्रही, व्यक्ति ही दुखो और रोगो से

१. उत्तराध्ययन ९ ३५

मुक्त हो सकता है । आत्मजयी व्यक्ति ही अपना और दूसरो का नाथ है—

जो सहस्स सहस्साण, सगामे दुज्जय जिणे ।
एग जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ ॥[1]

जो पुरुप दुर्जय सग्राम मे दस लाख सुभटो पर विजय प्राप्त करता है और एक महात्मा अपनी आत्मा को जीतता है । इन दोनो मे उस महात्मा की श्रेष्ठ विजय है ।

आदर्श वीरता का उदाहरण क्षमावीर है । क्षमा पृथ्वी को भी कहते हैं । जिस प्रकार पृथ्वी बाहरी हलचल और भीतरी उद्वेग को समभाव पूर्वक सहन करता है, उसी प्रकार सच्चावीर शरीर और आत्मा को अलग अलग समझता हुआ सब प्रकार के दुखो और कष्टो को समभाव पूर्वक सहन करता है । सच तो यह है कि उसकी चेतना का स्तर इतना अधिक उन्नत हो जाता है कि उसके लिए वस्तु, व्यक्ति और घटना का प्रत्यक्षीकरण ही बदल जाता है । तब उसे दु ख दु ख नही लगता, सुख-सुख नही लगता । वह सुख-दु ख से परे अक्षय अव्याबाध, अनन्त-आनन्द मे रमण करने लगता है । वह क्रोध को क्षमा से, मान को मृदुता से, माया को सरलता से और लोभ को सन्तोप से जीत लेता है —

उवसमेण हणे कोह, माण मद्दवया जिणे ।
माय चज्ज्व भावेण, लोभ सतोसओ जिणे ।[2]

यह कपाय-विजय ही श्रेष्ठ विजय है । क्षमावीर निर्भीक और अहिंसक होता है । प्रतिशोध लेने की क्षमता होते हुए भी वह किसी से प्रतिशोध नही लेता । क्षमाधारण करने से ही अहिंसा वीरो का धर्म बनती है । 'उत्तराध्ययन' सूत्र के २९वें 'सम्यक्त्व पराक्रम' अध्ययन मे गौतम स्वामी भगवान् महावीर से पूछते हैं—खमावणयाए णं भते ! जीवे किं जणायई ?

१. उत्तराध्ययन, ९/३४
२ दशवैकालिक, ८/३९

हे भगवन् ! अपने अपराध की क्षमा मागने से जीव को किन गुणो की प्राप्ति होती है ?

उत्तर मे भगवान् फरमाते है–

खमावणयाए एां पल्हायणभाव जणयइ, पल्हायण भावमुवगए य सव्वश्राणमूय जीव सत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ, मित्ती भावमुवगए पावि जीवे भावविसोहिं काऊरण णिब्भए भवई ।।१७।।

अर्थात् क्षमा मागने से चित्त मे आह्लाद भाव का सचार होता है, अर्थात् मन प्रसन्न होता है । प्रसन्नचित्त वाला जीव सब प्राणी, भूत, जीव और तत्वो के साथ मैत्रीभाव स्थापित करता है, समस्त प्राणियो के साथ मैत्रीभाव को प्राप्त हुआ जीव अपने भावो को विशुद्ध बनाकर निर्भय हो जाता है ।

निर्भीकता का यह भाव वीरता की कसौटी है । बाहरी वीरता मे शत्रु से हमेशा भय बना रहता है । उसके प्रति शासक और शासित, जीत और हार, स्वामी और सेवक का भाव रहने से मन मे सकल्प-विकल्प उठते रहते हैं । इस बात का भय और आशका बराबर बनी रहती है कि कब शासित और सेवक विद्रोह कर बैठे । जब तक यह भय बना रहता है तब तक मन बैचेनी और व्याकुलता से घिरा रहता है । पर सच्चा वीर निराकुल और निर्वैर होता है । उसे न किसी पर विजय प्राप्त करना शेप रहता है और न उस पर कोई विजय प्राप्त कर सकता है । वह सदा समताभाव–वीतरागभाव मे विचरण करता है । उसे अपनी वीरता को प्रकट करने के लिए किन्ही बाहरी साधनो का आश्रय नही लेना पडता । अपने तप और सयम द्वारा ही वीरत्व का वरण करता है ।

जैन धर्म वीरों का धर्म :

जैन धर्म के लिए आगम ग्रन्थो मे जो नाम आये हैं, उनमे

मुख्य हैं—जिन धर्म अर्हत् धर्म और श्रमण धर्म । ये सभी नाम वीर भावना के परिचायक हैं 'जिन' वह है जिसने अपने आन्तरिक विकारो पर विजय प्राप्त कर ली है । 'जिन' के अनुयायी जैन कहलाते हैं । 'अर्हंत' धर्म पूर्ण योग्यता को प्राप्त करने का धर्म है । अपनी योग्यता को प्रकटाने के लिए आत्मा पर लगे हुए कर्म पुद्गलो को नष्ट करना पडता है । ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना द्वारा । 'निर्ग्रन्थ' धर्म वह धर्म है जिसमे कषाय भावो से बन्धी गाठो को खोलने-नष्ट करने के लिए आत्मा के क्षमा मार्दव, आर्जव, त्याग, सयम, ब्रह्मचर्य जैसे गुणो को जाग्रत करना होता है । 'श्रमण धर्म' वह धर्म है जिसमे अपने ही पुरुपार्थ को जाग्रत कर विषम भावो को नष्ट कर, चित्त की विकृतियो को उपशात कर समताभाव मे आना होता है ।

स्पष्ट कि इन सभी साधनाओ की प्रक्रिया मे साधक का आन्तरिक पराक्रम ही मुख्य आधार है । आत्मा से परे किसी अन्य परोक्ष शक्ति की कृपा पर यह विजय आत्मजय आधारित नही है । भगवान् महावीर की महावीरता बाहरी युद्धो की विजय पर नही, अपने आन्तरिक विकारो की विजय पर ही निर्भर है । अत यह वीरता युद्धवीर की वीरता नही, क्षमावीर की वीरता है ।

सी २३५ ए तिलक नगर
जयपुर ३०२००४

सन्देश

● कल्पना आचलिया

सत राबिया बसरी ने एक सूफी सन्त के पास तीन चीजे भेजी—मोम, सूई और बाल । साथ मे यह सन्देश भी. 'मोम की तरह दूसरो को रोशनी दो । 'सूई खुद नगी रहती है, मगर दूसरो को कपडे सीकर पहनाती है । उसी तरह तुम भी जनता की नि स्वार्थ सेवा करो ।

'तब तुम बाल की तरह लचीले, हलीम और बेखतरा हो जाओगे ।'

धर्म के प्रति अनास्था :
कारण और उसे दूर करने के उपाय

○ श्री सुन्दरलाल बी. मल्हारा

★

अनास्था व्यापक है :

वैसे तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अनास्था का बोलबाला है। फिर भी धर्म के क्षेत्र मे आज जो अनास्था दिखाई दे रही है, वह बहुत ही ज्यादा गहरी है। व्यापार, व्यवसाय, सर्विस अथवा उत्पादन क्षेत्र मे भी यह सत्य है कि आस्था कम दिखाई देती है। फिर भी निश्चित रूप से इन क्षेत्रो मे कुछ अशो मे आस्था दिखाई देती है। इसके कुछ कारण हैं। इन सभी का मनुष्य की रोजी, रोटी तथा उसके जीवन के लिए आवश्यक अन्य सुविधाओ के साथ सीधा सम्बन्ध है। दूसरे शब्दो मे मनुष्य का पूरा व्यवहारिक जीवन इन्ही पर टिका हुआ है। अत कुछ न कुछ मात्रा मे मनुष्य को इन क्षेत्रो मे आस्था दिखानी ही पडती है अन्यथा उस पर भूखे मरने की नौबत आ पडेगी।

धार्मिक अनास्था गहरी है :

जब हम धर्म के सम्बन्ध मे विचार करते है तो हमे ज्ञात होता है कि इसका सम्बन्ध हमारी आत्मा से है। धर्म आत्मा के विकास का साधन है। पर पारम्परिक रूप मे धर्म का सम्बन्ध परलोक से जोड दिया गया है अर्थात् इस जन्म मे अगर हमने पुण्य किया तो उसका फल हमे अगले जन्म मे मिलेगा। मनुष्य ने न तो अपनी आत्मा का कभी साक्षात्कार किया है और न ही परलोक को देखा है। ऐसी अवस्था मे यदि वह इनसे स्वयम् को अलग कर दे तो कोई आश्चर्य नही। यही कारण है कि आज हमे चारो ओर धर्म के प्रति बहुत ज्यादा अनास्था दिखाई दे रही है। यह अनास्था बडी गहरी है।

यह अनास्था क्यों ?

धर्म के प्रति इस गहरी अनास्था पर विचार करना जरूरी है । क्योकि इस अनास्था के गम्भीर मूल्य मनुष्य को चुकाने पडे हैं । ऊपर-ऊपर से मनुष्य भले ही हमे कुछ सतुष्ट, कुछ सुखी दिखाई दे पर वह अन्दर ही अन्दर से खोखला हो गया है । उसकी जडें सूख गई है । यही कारण है कि उसके जीवन मे कितनी निराशा, कितना दुख और कितनी परेशानिया हैं । धर्म से मु ह मोडकर मनुष्य ने अपने पैरो पर कुल्हाडी चलाई है । उसने अपने ही हाथो अपने विनाश के वीज वो दिये है । जिसके कारण विषवृक्ष चारो ओर उभर रहे है और मनुष्य के जीवन को विषाक्त किये जा रहे हैं । इसलिए मनुष्य को यदि एक सुन्दर जीवन चाहिये या उसे समग्र जीवन की आवश्यकता महसूस हो तो उसे फिर से धर्म को अपनाना होगा ।

धर्म का फूल खिलना सम्भव है :

धर्म के प्रति जो अनास्था हमे चारो ओर दिखाई दे रही है उसके कुछ ठोस कारण हैं । यदि इन कारणो को गहराई से समझा जाए और उन्हे दूर किया जाए तो मनुष्य फिर धर्म से सहज जुड सकता है । धर्म तो मनुष्य का सहज स्वभाव है । वह आरोपित नही है । वह तो मनुष्य के स्वभाव मे ही समाया हुआ है । इसलिए अगर हमने उन कारणो को दूर कर दिया, जो आस्था को मटयामेट किये जा रहे हैं तो निश्चित ही धर्म का फूल मनुष्य के जीवन मे खिल सकता है । अव हम उन कारणो पर विचार करें जो इस अनास्था के जिम्मेदार हैं ।

भौतिकतावादी विचारधारा :

सबसे पहला कारण यह है कि आज का मनुष्य ज्यादा से ज्यादा भौतिकता से सम्बन्धित हो गया है । इसी जीवन को उसने सब कुछ मान लिया है । इसलिए इस जीवन को वनाये रखने और

उसे अधिकाधिक सुविधामय बनाने मे मनुष्य लगा हुआ है । यदि मनुष्य यह समझ सके कि आज वह जो कुछ है वह उसके पूर्व कर्मो का फल है और आज के उसके कार्यों मे उसका भविष्य छिपा है और यह समझना बहुत कठिन भी नही है । इसीलिए यह जरूरी है कि मनुष्य को इस कार्य कारण परम्परा के विज्ञान से सही ढग से परिचित कराया जाय । यदि वह अपने भूत तथा भविष्य के समय से जुड सका तो उसके जीवन मे एक धार्मिक क्रान्ति हो सकती है और यही क्रान्ति उसके जीवन मे धर्म के प्रति आस्था पैदा कर सकती है ।

विज्ञान का परिणाम :

विज्ञान का ज्यो-ज्यो विकास होता जा रहा है त्यो-त्यो मनुष्य के मानसिक जगत् मे एक महान क्रान्ति घटित हो रही है । इस क्रान्ति का परिणाम यह हुआ कि मनुष्य प्रत्येक कार्य का कारण जानना चाहता है । वह प्रत्येक परम्परा और प्रत्येक रुढि के हेतु को ढूढना चाहता है । वह प्रत्येक बात को विज्ञान की कसौटी पर कसना चाहता है । जो बात विज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है उसे वह स्वीकार करता है और दूसरी बातो को अस्वीकार । यह तो हमे मानना होगा कि शास्त्रो मे वर्णित बहुत सी बाते विज्ञान की कसौटी पर खरी नही उतरती है । इसलिए आज का युवक यदि उन बातो को अस्वीकार कर दे तो आश्चर्य नही है । अत यह जरूरी हो गया है कि वैज्ञानिक दृष्टि से इन शास्त्रो का अध्ययन किया जाए तथा शास्त्रीय सिद्धान्तो को वैज्ञानिक आधार दिये जाए ।

यह निश्चित है कि महावीर जैसे केवल ज्ञानी जो कुछ कहेगे वह सच होगा ही, वैज्ञानिक होगा ही परन्तु काल के प्रवाह मे कई प्रक्षिप्त अश भी यदि शास्त्रो मे जुड़ जाये तो कोई आश्चर्य नही

सत्य का सतत अनुसन्धान जरूरी है :

यह सत्य है कि जैन धर्म के प्रचार और प्रसार के शिए

काफी प्रयत्न किये जा रहे हैं । हजारो सत, विद्वान इस कार्य मे लगे हुए है । कई सस्थाए इस प्रयत्न मे हैं कि यह वीर की वाणी सही-सही रूप मे सर्वसाधारण तक पहुचे । फिर भी यह निश्चित कहा जा सकता हे कि जरूर इस प्रचार-व्यवस्शा मे बहुत कुछ कमिया हैं अन्यथा इतने प्रचार के माध्यमो के होते हुए भी आज धर्म की व्यापक स्थिति नही बनी है । ऐसा लगता है कि पूरे जैन जगत् मे स्वतन्त्र चिन्तन की प्रक्रिया का ह्रास हो रहा है । उपदेशक शास्त्रो के वचनो को विना स्वयम् समझे और हृदयगम किये दूसरो को समझाते चले जा रहे हे । श्रोता भी जो कुछ कहा जा रहा हे उसे मात्र कर्तव्य समझकर चुपचाप सुनते चले जा रहे हैं । चितन का श्रम करने के लिए कोई तैयार नही । सत्य कोई रेडिमेड वस्तु नही है कि एक वार कहा गया कि हमेशा के लिए वन गया । उसे बार-वार खोजना पडता है । उसका पुन पुन अनुसन्धान करना पडता हे । वार-बार खोजा गया सत्य ही सत्य होता है । 'रेडिमेड' स्वीकार किया गया सत्य कालान्तर मे असत्य सिद्ध हो सकता है । सत्य केवल वही नही है जो शास्त्रो मे सकलित है । हा, यदि हम अपने अनुभवो और प्रयोगो के आधार पर उसे सत्य सिद्ध कर दें तो वह हमारे लिए सत्य हो सकता हे । अत सतत चिंतन और अनुसन्धान की प्रक्रिया जरूरी है।

धर्म और हमारा दैनिक जीवन :

धार्मिक अनास्था का एक बहुत बडा कारण यह है कि धर्म हमारे व्यवहारिक जीवन से अलग हो गया है । हमारा रोजाना का जीवन अत्यन्त महत्वपूर्ण है । क्योकि यही हमारा वास्तविक प्रत्यक्ष जीवन है । लेकिन ऐसा लगता है कि धर्म का इस जीवन से कोई सरोकार नही रहा । वह तो स्वर्ग-नरक, लोकपरलोक और पापपुण्य से ही पूर्णतया सम्वन्धित हैं ।ऐसी अवस्था मे यदि व्यक्ति की आस्था कमपड जाए तो आश्चर्य नही । व्यक्ति के लिए तो उसका जीता-जागता स्थूल जीवन ही महत्वपूर्ण हे । धर्म को चाहिये कि मनुष्य के इस जीते—जागते जीवन को सुन्दर और सुसस्कृत वनाए । जव हमारा

जीवन सुन्दर होगा तो हम धार्मिक भी हो सकेंगे और हमारी आस्था भी गहरी हुए बिना न रहेगी। इसलिए यह बहुत जरूरी हो गया है कि धर्म हमारे दैनिक जीवन को सुन्दर बनाने मे सहयोगी बने। यदि धर्म यह कर पाया तो निश्चित यह मनुस्य के लिए परम श्रद्धा का विषय बन सकेगा।

धर्म का प्रयोगात्मक पहलू :

धर्म के दो पहलू है। एक सैद्धान्तिक, दूसरा प्रयोगात्मक दोनो ही पहलुओ का समान महत्व है। धर्म मे यदि सिद्धान्तो की भरमार रही तो धीरे-धीरे वह कालान्तर मे मृत हो जाता है। धर्म के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है। अधिकाशतया हम सब सिद्धान्तो के पटन-पाठन मे उपदेश देने मे लग गये और यह उपदेश का दौर दिन-ब-बढता जा रहा है। उपदेशको की बाढ सी आ गई है। कोई उपदेश देना अपना कर्त्तव्य समझता है तो कोई उपदेश सुनने मे जीवन की सार्थकता समझते है। सैद्धान्तिक पहलू के साथ-साथ प्रयोगात्मक पहलू पर भी बल रहे तब विसगति पैदा नही होती। पर आज प्रयोगात्मक पहलू पीछे छूट गया है। होना तो यह चाहिए था कि धर्म के सिद्धान्तो का हम अपने जीवन मे एक वैज्ञानिक की तरह प्रयोग करते। प्रयोग के बिना धर्म लगडा है। यह अत्यन्त आवश्यक है कि धर्म के प्रयोगात्मक पहलू का वैज्ञानिक दृष्टि से अनुसन्धान किया जाए। हमारे देश मे कुछ धार्मिक पुरुष इस प्रयोग मे लगे हुए है। यह आनन्द की बात है।

आवश्यकता है प्रयोग की :

धर्म के वैज्ञानिक पहलू के विकास के ही उद्देश्य से हमने कई धार्मिक अनुष्ठान पुराने समय से शुरु किये जो आज केवल रूढि मात्र बनकर रह गये हैं। जैसे प्रतिक्रमण, सामायिक, व्रत, उपवास आदि। मूलत ये सब धर्म के प्रयोगात्मक पहलू के अलग–अलग रूप है। परन्तु हमने इनके मूल को बिसार दिया अत यह सब अपनी गरिमा

से गिर पडे । इसलिए यह बहुत जरूरी है कि या तो इन अनुष्ठानो को पुनर्जीवित किया जाये या ध्यान अथवा कायोत्सर्ग के नये टेकनिक्स का अनुसन्धान किया जाए । यदि ऐसा नही किया गया तो यह धार्मिक अनास्था और भी बढेगी । प्रयोगो से हमे तत्काल सत्य का अनुभव होता है और यह अनुभव हममे आस्था पैदा करता है । वृक्ष की परीक्षा उसके फलो से होती है । किसी धर्म की परीक्षा उसके मानने वालो से होती है । भगवान् महावीर ने अपरिग्रह का उपदेश दिया था जो अपने आप मे अत्यन्त कीमती है । परन्तु जैन मतावलम्बी परिग्रह के विस्तार मे लग गये । महावीर ने समता का सन्देश दिया और लोग मनुष्य की कीमत उसके धन से करने लगे । हमारे सारे व्यवहार धन-सम्पत्ति की सीमाओ मे होने लगे । हम धन और सम्पत्ति के लोभ मे फस गये और साथ-साथ महावीर और जैन धर्म की दुहाई भी देने लगे । हमारे व्यवहार और धर्म मे जमीन-आसमान का फर्क पड गया । ऐसी अवस्था मे युवको की धर्म के प्रति आस्था कम होनी ही है । यदि सही अर्थों मे हम धार्मिक हो तो आस्था कम होने का प्रश्न ही नही उठता ।

यांत्रिकता व अनास्था :

आज यान्त्रिकता का बोलबाला है । यन्त्रो से पूरा विश्व सचालित हो रहा है । और इस यन्त्र युग मे मनुष्य भी एक यन्त्र बन कर रह गया है । यह आज का यान्त्रिक मनुष्य यन्त्र की तरह ही भाग-दौड मे लगा हुआ है ।वह अत्यधिक व्यस्त है । अपनी अनेको समस्याओ से परेशान है । वह इस छोटे से जीवन मे बहुत कुछ कर लेना चाहता है । उसकी महत्त्वाकाक्षा अनन्त है । धर्म के लिए समय निकालना उसके लिए कठिन है । ऐसी अवस्था मे वह कैसे अपनी आस्था बनाये रखे ? यह एक बडा सवाल है । इसके लिए तो एक महान् वैचारिक क्रान्ति की आवश्यकता है । यदि मनुष्य ने अपनी इस यांत्रिकता की जबरदस्त गुलामी को गहराई से महसूस किया और सृजन के आनन्द को समझने की कोशिश की तो वह यान्त्रिकता की काराओ से मुक्त हो सकता है । यान्त्रिकता धर्म की प्रबल शत्रु है ।

धर्म एक महान् सृजन है ।

मनुष्य को मनुष्य बनाने का कार्य एक मात्र धर्म कर सकता है । एक ऐसा धर्म जो विज्ञान पर आधारित हो, एक ऐसा धर्म जो मनुष्य के दैनिक जीवन से सम्पृक्त हो-एक ऐसा धर्म जो प्रयोग को प्रधानता दे-एक ऐसा धर्म जो हमारी दैनिक समस्याओ के प्रति हमे सजग करे, जो हममे प्रेम और करुणा के बीजो को अकुरित करे, जो हममे सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के प्रति आदर पैदा करे । केवल ऐसा ही धर्म हमे सही अर्थों मे आनन्दित कर सकता है । हमारे इस लोक और परलोक को सुन्दर बना सकता है । धर्म का ऐसा रूप भला किसे पसन्द न होगा ? किसकी आस्था ऐसे धर्म के प्रति वलवती न होगी ? कौन ऐसे धर्म को अपनी आत्मा से न चाहेगा ? जिस प्रकार स्वभाव हमारा अविभाज्य अग है, उसी प्रकार धर्म भी तो हमारा एक मात्र सहारा है, एक मात्र प्रदीप है । उसके प्रकाश मे ही हम गति कर सकते हैं । वह हमारी सहज भूख है । जैन धर्म ने वस्तु के स्वभाव को धर्म कहा है । यह एकदम सही है । धर्म मनुष्य को गरिमा प्रदान करता है । धर्म उसकी आत्मा का अलकार है ।

—६४, जिल्हापेठ, जलगाव-४२५००२

सन्त

⊛ श्री रमेश 'मयंक'

जिसके
मन मे
हो जाता है
सासारिक तृष्णाओ का
अन्त
वही है—सन्त ।

—बी. ८, मीरानगर, चित्तौडगढ

धर्म : व्यक्ति और समाज के सन्दर्भ मे

● डॉ० भागचन्द्र जैन

☆

धर्म सार्वजनीन और चिरन्तनशीलता को अपने पवित्र अक मे समाहित किये व्यष्टि और समष्टि के कल्याण मे रत रहने वाला एक आध्यात्मिक तत्त्व है । उसकी व्यापकता और असीमितता उसकी प्रकृति को स्पष्ट करती हुई नजर आती है । जीवन और समाज के हर कोने को अपनी सुवास से सुगन्वित कर वह अपने मानवता गुण को उजागर करने वाला एक लैंप-पोस्ट है जिसका अवलम्बन लेकर दर-दर भटकने वाला व्यक्तित्व भी प्रशस्त पथ पा जाता है ।

धर्म की गहनता और रहस्यात्मकता ने उसे विविध परिभापाओ मे वाध रखा है । उसकी मीमासा भी वहुआयामी रही है । विवादग्रस्त भी इसीलिए रहा है और इसीलिए धर्म और सम्प्रदाय खडे होते रहे हैं । विवादग्रस्तता व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित और स्वार्थपरक वना देती है । सघर्प के मूल मे ऐसे ही तत्त्व काम करते हैं ।

धर्म को सक्षेप मे दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है- एक व्यक्ति या वस्तुपरक और दूसरा समाजपरक । तीसरा प्रकार यह भी हो सकता है कि जो व्यक्ति परक भी हो और समाजपरक भी । सारी परिभापाए इन तीनो परिभापाओ के आसपास मडराती रहती हे । मार्क्सवादी परिभाषा विरोवात्मक स्वर लिए हुए अवश्य है पर समाजपरक ही है ।

१. व्यक्ति या वस्तु परक धर्म :

वस्तु या व्यक्ति का धर्म उसके मूल स्वभाव पर अवलम्बित है । धर्म की इस परिभापा को विस्तार से निम्नलिखित गाथा मे देखा जा सकता है—

वत्तु सहावो धम्मो, खन्ती पभु हो दसविहो धम्मो ।
जीवाण रक्खण धम्मो, रचनाय च धम्मो ।।

—जैन सिद्धान्त बोल सग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ १४

इस गाथा मे धर्म के चार स्वरूप दिये है– (१) वस्तु के स्वभाव को धर्म कहते है, (२) क्षमा आदि दस लक्षण रूप धर्म है, (३) जीवो का सरक्षण करना धर्म है, और (४) सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यगचरित्र रूप रत्नत्रय धर्म है। इसी को स्वामी कार्तिकेय ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

धम्मो वत्थु सहाओ, खमादिभावो दसविहो धम्मो ।
रयणनय च धम्मो, जीवाण रक्खय धम्मो ।।[1]

'दशवैकालिक' सूत्र मे अहिसा, सयम, और तप को धर्म कहा है और इसी को उत्कृष्ट मगल अर्थात् कल्याणकारी बताया है ।[2] आचार्य कुन्दकुन्द ने आगमज्ञान, तत्त्वार्थश्रद्धान और सयम इन तीन तत्त्वो को निर्वाण प्राप्ति मे कारण माना है ।[3] 'दशवैकालिक' के कर्त्ता शय्यभव और कुन्दकुन्द के विचारो मे कोई अन्तर नही । मात्र कथन के प्रकार मे अन्तर है । अहिसा और तप एव आगमज्ञान एव तत्त्वार्थश्रद्धान एक दूसरे के परिपूरक है । जैन धर्म का समूचा–आचार-विचार इन तत्त्वो पर आधारित है । इन तीनो तत्त्वो का सम्यग्ज्ञान और सम्यक् आचरण भी आत्मज्ञान और भेदविज्ञान की प्राप्ति मे मूल कारण बनते हैं ।

प्रत्येक वस्तु का अपना एक स्वभाव होता है और वह स्व-

१ कत्तिगेयाणुवेक्खा गाथा ४७६
२ धम्मा मगल मुक्किट्ठ ,अहिसा, सजमो, तवो-अध्ययने, गाथा १
३. ण हि आगमेण सिज्झदि, सद्दहण जदि ण अत्थि अत्थेसु सद्दहमाणे अत्थे असजदो वा ण णिव्वादि ।। प्रवचन सार ३. ३७.

भाव सदैव अपरिवर्तनीय होता है । यदि परिवर्तन आता भी है तो वह अस्थिर होता है । जल का स्वभाव शीतल है । पर पदार्थ अग्नि आदि के सयोग से उसमे जो उष्णता आती है, वह यथासमय दूर हो जाती है । मानव का स्वभाव मानवता है । राग द्वेषादि कारणो से वह अभिभूत अवश्य हो जाती है पर तिरोहित नही होती । अत आत्मा अथवा जीव का मूल स्वभाव रागादिक विकार नही है । उसका स्वभाव तो समभाव मे स्थिर रहना और स्व स्वरूप मे रमण करना है । मोह-क्षोभ से विरहित आत्मा का यही परिणाम समत्व भाव कहलाता है ।

चारित्त खलु धम्मो यो धम्मो जो सो समो त्ति णिहिहो ।
मोहक्खोहविहीणो परिणामो अप्पणो हि समो ।।[४]

आम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सयम, तप, त्याग, आकिञ्चन्य, और ब्रह्मचर्य ये देशधर्म जीव किवा अनन्य के विधेयात्मक तत्त्व हैं, जिनका आचरण कर वह शाश्वत सुख की ओर अपने चरण बढाता है ।

साधना की सफलता के लिए जैन धर्म मे तीन कारणो का निर्देश किया हे– सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र । इन तीनो तत्वो को 'त्रिरत्न' कहा जाता हे । दर्शन का अर्थ श्रद्धा अथवा व्यावहारिक परिभाषा मे आत्मानुभूति कह सकते है । श्रद्धा और आत्मानुभूति पूर्वक ज्ञान और चारित्र का सम्यग् योग ही मोक्ष रूप साधना की सफलता मे मूलभूत कारण हे । मात्र ज्ञान अथवा मात्र चारित्र से मुक्ति प्राप्त नही हो सकती । इसलिए इन तीनो की समन्वित अवस्था को ही मोक्षमार्ग कहा गया है ।[१] जैन ग्रन्थो मे इस विषय पर गहन तत्व चर्चा हुई है ।

जीवो का सरक्षण करना रूप अहिसा धर्म यद्यपि सामाजिक धर्म

४ प्रवचनसार १ ७

१ सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग —तत्वार्थ सूत्र १ १

की परिधि मे आता है पर अहिसा जब तक सभव नही जब तक व्यक्ति करुणाद्र न हो, हिसक भावो से मुक्त न हो। प्रमाद और कपाय के वशीभूत होकर व्यक्ति हिसक बनता है। कपायादिक की तीव्रता के फलस्वरूप उसके आत्मघात रूप द्रव्य प्राणो का भी हनन सभव है। इसके अतिरिक्त दूसरे को मर्मान्तक वेदनादान अथवा परद्रव्यव्यपरोपण भी इन्ही भावो का कारण है[२]। द्रव्य–भाव हिंसा से मुक्त हो जाने पर स्वभावत: अहिसा भाव जाग्रत हो जाता है। दूसरे शब्दो मे समस्त प्राणियो के प्रति सयम भाव ही अहिसा है—"अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूयेसु सजमो"[३] अहिसा और सयम की ही पृष्ठभूमि मे सुख–प्राप्ति के साधन जुटाये जाने चाहिए।

अहिंसा के एक देश का पालन गृहस्थ वर्ग करता है और सर्व देश का पालन मुनि वर्ग करता है। उसीको जैन शास्त्रीय परिभाषा मे क्रमश. अणुव्रत और महाव्रत कहा गया है। सकल चारित्र और विकल चारित्र इसी के पर्यायार्थक शब्द है। गृहस्थ वर्ग सकल्पी आरभी उद्योगी और विरोधी रूप स्थूल हिसा का त्यागी नही रहता जब कि मुनि वर्ग सूक्ष्म और स्थूल, दोनो प्रकार की हिसा से दूर रहता है।

मन, वचन और काय से सयमी व्यक्ति स्व-पर का रक्षक तथा मानवीय गुणो का आगार होता है। शील सयमादि गुणो से आपूर व्यक्ति ही सत्पुरुष है। जिसका चित्त मलीन पापो से दूषित रहता है वह अहिसा का पुजारी कभी नही हो सकता। जिस प्रकार घिसना, छेदना, तपाना और ताडना इन चार उपायो से स्वर्ण की परीक्षा की जाती है, उसी प्रकार श्रुत, शील, तप और दया रूप गुणो के द्वारा धर्म एव व्यक्ति की परीक्षा की जाती है।

जीवन का सर्वांगीण विकास करना सयम का परम उद्देश्य रहता है। 'सूत्रकृताग' मे इस उद्देश्य को एक रूप के माध्यम से सम-

२. पुरुषार्थ सिद्धनुपाय, ४३
३. दशवैकालिक, ६, ८,

झाने का प्रयत्न किया गया है । वहा[1] यह वताया गया है कि जिस प्रकार कछुआ निर्भय स्थान पर निर्भीक होकर चलता फिरता है किन्तु भय की आशका होने पर शीघ्र ही अपने अ ग–प्रत्यग प्रच्छन्न कर लेता और भय–विमुक्त हो जाने पर पुन अ ग–प्रत्यग फैलाकर चलता फिरना प्रारभ कर देता है, उसी प्रकार सयमी व्यक्ति अपने साधना मार्ग पर वडी सतर्कता पूर्वक चलता है । सयम की विराधना का भय उपस्थित हो जाने पर पचेन्द्रियो व मन को आत्म-ज्ञान–अ तर मे ही गोपन कर लेता है ।[2]

धर्म की ये व्याख्याए आत्मपरक, व्यक्तिपरक और वस्तुपरक हैं । यहा व्यक्ति या वस्तु को केन्द्र मे रखकर धर्म के मर्म को समझाया गया है । यही निश्चय धर्म है ।

२. समाज परक धर्म.

समाजपरक धर्म की व्याख्या व्यक्ति परक धर्म की व्याख्या से असवद्ध नही है । यह धर्म अपेक्षाकृत अधिक व्यापक और व्यावहारिक हे । मैत्री, प्रमोद, कापाय और माध्यस्थ्य भाव मूलक धर्म को समाजपरक धर्म कहा जा सकता है । सभी सुखी रहे, निरोग रहें, किसी को किसी भी प्रकार का कप्ट न हो, ऐसा प्रयत्न करें[3] । इसमें साधक कल्याण मित्र वन जाता है ।

विशिप्ट ज्ञानी 'और तपस्वियो के शम, दम, धैर्य, गाभीर्य आदि गुणो मे पक्षपात करना अर्थात् वन्दना, विनय, स्तुति आदि द्वारा आन्तरिक हर्प व्यक्त करना प्रमोद भावना है।[4] इस भावना का मूल साधन विनय है । जिस प्रकार मूल के विना स्कध, शाखाए पत्ते, पुप्प, फल आदि नही हो सकते । उसी प्रकार विनय के विना धर्म व

---

१ प्रेस पाहुड गाथा १४३ की टीका
२ सूत्रकृताग, १, ८, १६
३ यशस्तिलक चम्पू, उत्तरार्ध
४ योगशास्त्र, ४, ११

प्रमोद भावना में स्थैर्य नही रह सकता ।[१]

कारुण्य अहिंसा भावना का केन्द्र है । उसके विना अहिंसा जीवित नही रह सकती । समस्त प्राणियो पर अनुग्रह करना इसकी मूल भावना है । हैयोपादेय ज्ञान से शून्य दीन पुरुपो पर, विविध सासारिक दु खो से पीडित पुरुपो पर, स्वय के जीवन-याचक जीव जन्तुओ पर, अपराधियो पर, अनाथ, बाल, वृद्ध, सेवक आदि पर तथा दु ख पीडित प्राणीयो पर प्रतीकात्मक बुद्धि से उनके उद्धार की भावना ही कारुण्य भावना है ।

माध्यस्थ्य भावना के पीछे तटस्थ बुद्धि निहित है । नि शंक होकर क्रूरकर्मकारियो पर, देव, धर्म, गुरू के निंदको पर तथा आत्म-प्रशसको पर उपेक्षा भाव रखने को माध्यस्थ्य भावना कहा गया है ।[२] इसको समभाव भी कहा है । समभावी व्यक्ति निर्मोही, निरहकारी, निस्परिग्री और समद्ष्टा होता है । समभावी व्यक्ति ही मर्यादाओ व नियमो का प्रतिष्ठापक होता है । यही उसकी समाचारिता है ।[३] अनेकान्त-वादी और स्याद्वादी का होना भी इस सदर्भ मे उल्लेखनीय है । जीवन की वास्तविकता, धर्म की अन्तस्तलता तथा अहिंसा की सत्यता को इन्ही भावनाओ के आचरण से पाया जा सकता है ।

जीवन मे प्रदोष, निह्नव, मात्सर्य, अन्तराय, आसादन, उपघान आदि दोषो से वचकर, मन-वचन-काय मे सामजस्य रखना, मद्य-मासादि से दूर रहकर, विशुद्ध भोजन करना बध, बधन, भारारोपण, कुशील, परिग्रह आदि से मुक्त रहकर सामाजिक धर्म का पालन किया जा सकता है ।

जीवन की यथार्थता प्रमाणिकता से परे होकर नही हो पाती ।

---

१. दशवैकालिक. ३—७.

२. योगाशास्त्र, ४, १२१, ३, दशवैकालिक, ५, १३, मूलाचार १२३ मज्झिम, २, ५, ३.

३. दशवैकालिक, ५, १३, ५. मूलाचार गाथा १२३.

आज प्राय हर क्षेत्र मे व्यक्ति अप्रामाणिकता के कैसर से इतना ग्रस्त और त्रस्त हो गया है कि वह प्रामाणिकता किंवा सचाई की बात भी नही सोच पाता । उसे प्रामाणिकता मे भी अप्रामाणिकता की गध आती रहती हे । अप्रामाणिकता का उत्स गरीबी है, यह साधारणत मान लिया जाता हे । पर विडबना यह है कि आज गरीब समाज अपेक्षाकृत अधिक ईमानदार है और धनिकवर्ग शोपण के माध्यम से अहर्निश और धनिक बनता चला जाता है । लोभ और तृष्णा को शात करने के लिए वह सभी तरह के पाप करता है और फिर यह आशा करता है कि उसे मानसिक शान्ति मिले । पैसे से पैसा बढता है, यह सत्य है । पर यह भी सत्य है कि साध्य के साथ साधनो की भी पवित्रता आवश्यक है । साधन यदि पवित्र और विशुद्ध नही होगे, बीज यदि सही नहीहोगे तो उससे उत्पन्न होने वाले फल मीठे कैसे हो सकते है ? आश्चर्य यह है कि व्यक्ति भौतिकवाद की चकाचौध मे जीवन के यथार्थ स्वरूप को अपने ज्ञान चक्षुओ से ओझल कर देता है । स्वार्थ की मिठास से, आकर्पित होकर मानवता को भी अपने क्रूर प्रहार से पद दलित करने मे सकोच नही करता है । फिर भी समाजवादी होने का दावा करता है, समाज के अभ्युत्थानी करण मे अपने को अत्यादमग्न बताता है । पर वास्तविक तथ्य-सत्य कोसो दूर ही रहता है । वह अपनी वृत्ति से राजनीतिक लाभ लेकर प्रच्छन्न रूप मे घनघोर अप्रामाणिक जीवन व्यतीत करता है, स्मगलिग करता हे, कृतघ्नता पूर्वक अनाचार और अत्याचार करता है, शोपण करता है, फिर भी पैसे और शक्ति के बल पर समाज और राजनीति के महत्वपूर्ण पदो पर अपने शिकारी हाथ रखे रहता हे । यही उसके बचाव के उपाय हे जिन्हे वह किसी भी कीमत पर नही छोडना चाहता ।

जीवन और धर्म की सत्यता / तथ्यता इस स्वाग से परे है । धोखा, प्रवचना जैसे असामाजिक तत्वो का उसके साथ कोई सामजस्य नही । धर्म और है भी क्या ? धर्म का वास्तविक सबध खान-पान और दकियानूसी विचार धारा से जुडे रहने से नही है । वह तो ऐसी विचार क्रान्ति से सबद्ध है जिसमे मानवता और सत्य का स्वरूप कूट-कूटकर भरा है ।

प्रमोद भावना में स्थैर्य नही रह सकता ।[1]

कारुण्य अहिंसा भावना का केन्द्र है । उसके विना अहिंसा जीवित नही रह सकती । समस्त प्राणियो पर अनुग्रह करना इसकी मूल भावना है । हैयोपादेय ज्ञान से शून्य दीन पुरुषो पर, विविध सासारिक दु खो से पीडित पुरुषो पर, स्वय के जीवन-याचक जीव जन्तुओ पर, अपराधियो पर, अनाथ, वाल, वृद्ध, सेवक आदि पर तथा दु ख पीडित प्राणीयो पर प्रतीकात्मक वुद्धि से उनके उद्धार की भावना ही कारुण्य भावना है ।

माध्यस्थ्य भावना के पीछे तटस्थ वुद्धि निहित है । नि शंक होकर क्रूरकर्मकारियो पर, देव, धर्म, गुरू के निंदको पर तथा आत्म-प्रशसको पर उपेक्षा भाव रखने को माध्यस्थ्य भावना कहा गया है ।[2] इसको समभाव भी कहा है । समभावी व्यक्ति निर्मोही, निरहकारी, निस्परिग्री और समद्ष्टा होता है । समभावी व्यक्ति ही मर्यादाओ व नियमो का प्रतिष्ठापक होता है । यही उसकी समाचारिता है ।[3] अनेकान्त-वादी और स्याद्वादी का होना भी इस सदर्भ मे उल्लेखनीय है । जीवन की वास्तविकता, धर्म की अन्तस्तलता तथा अहिंसा की सत्यता को इन्ही भावनाओ के आचरण से पाया जा सकता है ।

जीवन मे प्रदोष, निह्नव, मात्सर्य, अन्तराय, आसादन, उपधान आदि दोषो से वचकर, मन-वचन-काय मे सामजस्य रखना, मद्य-मासादि से दूर रहकर, विशुद्ध भोजन करना वध, वधन, भारारोपण, कुशील, परिग्रह आदि से मुक्त रहकर सामाजिक धर्म का पालन किया जा सकता है ।

जीवन की यथार्थता प्रमाणिकता से परे होकर नही हो पाती ।

१ दशवैवालिक. ३—७.
२. योगाशास्त्र, ४, १२१, ३, दशवैकालिक, ५, १३, मूलाचार १२३ मज्झिम, २, ५, ३.
३. दशवैकालिक, ५, १३, ५. मूलाचार गाथा १२३.

आज प्राय हर क्षेत्र मे व्यक्ति अप्रामाणिकता के कैंसर से इतना ग्रस्त और त्रस्त हो गया है कि वह प्रामाणिकता किंवा सचाई की बात भी नही सोच पाता । उसे प्रामाणिकता मे भी अप्रामाणिकता की गध आती रहती हे । अप्रामाणिकता का उत्स गरीबी है, यह साधारणत मान लिया जाता है । पर विडबना यह है कि आज गरीब समाज अपेक्षाकृत अधिक ईमानदार है और धनिकवर्ग शोषण के माध्यम से अहर्निश और धनिक वनता चला जाता है । लोभ और तृष्णा को शात करने के लिए वह सभी तरह के पाप करता है और फिर यह आशा करता है कि उसे मानसिक शान्ति मिले । पैसे से पैसा बढता है, यह सत्य है । पर यह भी सत्य है कि साध्य के साथ साधनो की भी पवित्रता आवश्यक है । साधन यदि पवित्र और विशुद्ध नही होंगे, बीज यदि सही नहीहोगे तो उससे उत्पन्न होने वाले फल मीठे कैसे हो सकते हैं ? आश्चर्य यह है कि व्यक्ति भौतिकवाद की चकाचौंध मे जीवन के यथार्थ स्वरूप को अपने ज्ञान चक्षुओ से ओझल कर देता है । स्वार्थ की मिठास से, आकर्षित होकर मानवता को भी अपने क्रूर प्रहार से पद दलित करने मे सकोच नही करता है । फिर भी समाजवादी होने का दावा करता है, समाज के अभ्युत्थानी करण मे अपने को अत्यादमग्न वताता है । पर वास्तविक तथ्य-सत्य कोसो दूर ही रहता है । वह अपनी वृत्ति से राजनीतिक लाभ लेकर प्रच्छन्न रूप मे घनघोर अप्रामाणिक जीवन व्यतीत करता है, स्मगलिंग करता है, कृतघ्नता पूर्वक अनाचार और अत्याचार करता है, शोपण करता है, फिर भी पैसे और शक्ति के वल पर समाज और राजनीति के महत्वपूर्ण पदो पर अपने शिकारी हाथ रखे रहता है । यही उसके वचाव के उपाय हैं जिन्हे वह किसी भी कीमत पर नही छोडना चाहता ।

जीवन और धर्म की सत्यता / तथ्यता इस स्वाग से परे है । धोखा, प्रवचना जैसे असामाजिक तत्त्वो का उसके साथ कोई सामजस्य नही । धर्म और है भी क्या ? धर्म का वास्तविक सबध खान-पान और दकियानूसी विचार धारा से जुडे रहने से नही है । वह तो ऐसी विचार क्रान्ति से सवद्ध है जिसमे मानवता और सत्य का स्वरूप कूट-कूटकर भरा है ।

आत्मविकास और राष्ट्रविकास के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति जीवन के महत्त्व को समझे और अधिक से अधिक प्रामाणिक बने, नैतिक बने, सत्यानुगामी बने। अन्यथा मृत्यु की भयकर छाया हमेशा सिर पर भटकती रहेगी। हम जानते है, दवाओ और खाद्य वस्तुओ मे मिश्रण के कारण कितने लोग काल के कराल गाल मे समा-जाते है। सीमेट मे रेत, पत्थर आदि मिलाने से बडे-बडे मकान ध्वस्त हो जाते है, बाध फट जाते है, पुल गिर जाते है फिर भी तृष्णा के उदर से डकार भी नही आती।

इस विकट परिस्थिति का लेखा-जोखा करना इसलिए आवश्यक हो गया है कि आज धर्म किंवा शाश्वत सत्य की पहिचान से व्यक्ति दूर हटता चला जा रहा है और अनुशासन हीनता इतनी अधिक बढती चली जा रही है कि एक दूसरे के प्रति एक दूसरे की आखो मे घृणा, भय, क्रोध आदि भाव उबाल ले रहे हैं। चेहरे पर मनहूसी थकावट, आखो मे निराशा, मन मे अविश्वसनीयता इतनी अधिक घर कर गई है कि दो वर्गों के बीच बनी हुई खाई और गहरी हो गई है।

अत समाज और राजनीति के इस दूषित स्वरूप को स्वच्छ और विशुद्ध करने का उत्तरदायित्व निश्चित ही बुद्धि-निष्ठ धार्मिक समुदाय पर आ गया है। वह यदि वैयक्तिक और सामाजिक धर्म का सही ढग से पालन करे, कर्त्तव्य निष्ठ और क्रियानिष्ठ हो जाये तो ये दोनो क्षेत्र आमूल परिवर्तित किये जा सकते है। उनमे एक नयी जिन्दगी और नये प्राण फूके जा सकते है। ऐसा धर्म उन्हे कायर बना देगा, यह सोचना बिलकुल गलत होगा। वह तो इन सभी वर्गों मे एक सामुदायिक चेतना को जाग्रत करेगा और नैतिक गुणो का विकास करेगा।

निदेशक, जैन अनुशीलन केन्द्र,
राजस्थान, विश्वविद्यालय, जयपुर—३०२००४

वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य और धर्म की अर्थवत्ता

• डॉ. वीरेन्द्रसिंह

☆

विज्ञान और धर्म, मानवीय ज्ञान के दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं जो अपने-अपने तरीके से सत्य और यथार्थ का अनुभव प्राप्त करते हैं। दोनो के केन्द्र मे 'मानव' है जिसने इन दोनो ज्ञान-क्षेत्रो को निरन्तर विकसित किया है। विज्ञान एक प्रकार का तार्किक एव व्यवस्थित ज्ञान है, जिससे धर्म की अनेक मान्यताओ एवं प्रत्ययो को वैज्ञानिक दृष्टि के द्वारा नयी अर्थवत्ता ही नही प्राप्त होती है, पर उन धार्मिक विश्वासो और प्रतीको को आधुनिक सदर्भ भी प्राप्त होता है। बर्ट्रेन्ड रसेल ने विज्ञान के दो पक्ष माने हैं—एक उसका 'शक्ति' मूल्य जो उसका तकनीकी पक्ष है, और दूसरा उसका प्रेम या ज्ञान मूल्य[1] जो वैचारिकता के आयामो को गतिशील करता है। यदि गहराई से देखा जाए तो धर्म की आधुनिक अर्थवत्ता प्राचीन प्रत्ययो एव अवधारणाओ की वैज्ञानिक दृष्टि से, पुनर्व्याख्या है और इस स्तर पर धर्म और विज्ञान दो विरोधी अनुशासन न होकर एक दूसरे के पूरक हैं उदाहरण के तौर पर त्रिमूर्ति की कल्पना एक वैज्ञानिक तथ्य को प्रकट करता है कि प्रकृति मे सृजन, स्थिति एव विलय की शक्तिया निरन्तर गतिशील रहती हैं जिसे ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश के प्रतीकार्थ के द्वारा सकेतित किया गया है। जैन-दशन मे द्रव्य की धारणा को वैज्ञानिक पदार्थ (मैटर) की धारणा से समानता प्राप्त होती है।[2] इसी प्रकार 'अवतार' की भावना को विकासवाद की सापेक्षता मे नया अर्थ प्रदान होता हे जो जैविक-विकास के क्रमिक सोपानो का ऊर्ध्वगामी आरोहण हैं।

---

१ वैज्ञानिक अतर्दृष्टि, बर्ट्रेन्ड रसेल पृ ३२

२—देखें मेरा लेख "आधुनिक विज्ञान और द्रव्य विपयक जैन धारणाए" पृ २से३ भगवान् महावीर—आधुनिक सदर्भ मे, स० डॉ. नरेन्द्र भानावत ॥

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक प्रतीक और प्रत्यय जहा अनुभव की परिधि को स्पर्श करते है वही वे प्रातिभ-ज्ञान (इन्टयूशन) के द्वारा तत्त्व चिंतन की पृष्ठभूमि भी प्रस्तुत करते है। अत 'दृश्य' जगत से 'अदृश्य' जगत् तक का एक क्रमागत सम्बध है जिसमे भौतिक, नैतिक, आध्यात्मिक एव मानसिक अनुभवो सापेक्ष सम्बध है। 'दृष्य' का यहा पर नकार नही है, पर उसका सार्थक समाहार है। 'सत्य' का स्वरूप इन दोनो क्षेत्रो का सापेक्ष रूप है और उसकी प्रतिष्ठा विश्वास तथा 'आस्था' पर ही सम्भव है। यह आस्था उसी समय आ सकती है जब हम उसके प्रति पूर्णरूप से प्रतिबद्ध हो। यह प्रतिबद्धता ही हमारे कार्यों की सत्यता है। यह प्रतिबद्धता ही मानवीय उत्तरदायित्व की सबसे प्रवल भूमिका है।

कामू का अस्तित्ववादी दर्शन इसी प्रतिबद्धता पर सबसे अधिक बल देता है जो एक व्यापक अर्थ मे 'आस्था' का ही रूप है। यह विश्वास या आस्था अन्तर्दृष्टि का विषय है। इसी आत्मज्ञान का विस्तार समस्त विश्व को अपने अन्दर समेटे हुए है और समस्त विश्व उसी ज्ञान से प्रकाशित हो रहा है—

सर्गाणामादिस्तश्च मध्य चैवाहमर्जुन ।
आध्यात्माविद्या विद्यानां वाद प्रवदतामहम् ॥[1]

अर्थात् हे अर्जुन! मैं ही समस्त सृष्टि का आदि, मध्य और अन्त हू, समस्त विद्याओ मे मैं आत्म या आध्यात्मिक विद्या हू; शब्दो के द्वारा जो सिद्धान्त बनाये जाते है, मैं ही वह सिद्धान्त हू जो सत्य का प्रतिपादन करते है।

सत्य की यही खोज धर्म का ध्येय है (और ज्ञानो का भी यही लक्ष्य है) और यहा पर हम धर्म के सही रूप को प्राप्त करते है जो ज्ञान-पारक है। ज्ञान का यह विस्तृत स्वरूप निरपेक्ष न होकर सापेक्ष है, वास्तव मे यह विभिन्न आयामो को अपने अन्दर समाविष्ट करता है। धर्म का ज्ञान भी निरपेक्ष नही है, उसकी मान्यताए भी

१—श्रीमद्भगवद्गीता, विभूति योग, पृ. ३३५

नवीन ज्ञान के परिप्रेक्ष्य मे परीक्षित होती हैं । आज के नित्य नये विकसित होते हुए ज्ञान-क्षेत्रो के सन्दर्भ मे हम धर्म को केवल उसकी परम्परागत धारणा की प्राचीरो से आबद्ध नही कर सकते हैं ।

ससार के सभी धर्मों मे उपासना का कोई न कोई रूप अवश्य प्राप्त होता है, और यह उपासना धर्म की धारणा का एक अ ग है । यहा पर इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है कि जिस प्रकार सौन्दर्य कला की बपौती नही है, उसी प्रकार 'उपासना' का सम्बन्ध केवल धर्म से नही जोडा जा सकता, क्योकि उपासना तो सभी ज्ञान-क्षेत्रो का एक आवश्यक तत्त्व है ।

उपासना एक ऐसी 'मनोदशा' है[1] जो आन्तरिक प्रकाश को प्रकट करती है जिसमे व्यक्ति अपनी 'अस्मिता' को पहचानता है । उपासना एक ऐसी तल्लीनता है जो 'ज्ञान' के रहस्यो का उद्‌घाटन व 'अस्मिता' का साक्षात्कार कराती है । यही कारण है कि हिन्दु धर्म मे इस 'अस्मिता' के प्रति सबसे अधिक बल दिया गया है और आत्म-ज्ञान के साक्षात्कार को अस्मिता का ही साक्षात्कार कहा गया है । धर्म का चाहे और कोई महत्त्व हो या न हो, पर अस्मिता के साक्षात्कार का वह एक सबल माध्यम है । धर्म का इतिहास मानव-मन के इसी अभियान का इतिहास है । धर्म के प्रतीक और धारणाये इसी आत्म-साक्षात्कार के माध्यम हैं और जहा तक प्रतीक का सबन्ध है, वह धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान और अन्य ज्ञान-क्षेत्रो का एक अभिन्न अ ग है ।

प्रतीक का इतिहास ज्ञान के विकास का इतिहास है और ज्ञान का नित्य विकास प्रतीको का सृजन एव विस्तार ही है । यहा पर यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि आदिमानव दशा मे भी प्रतीको का एक देश या स्थान मे प्रव्रजन की प्रक्रिया (माइग्रेशन) ऐसा सत्य है जो मानवीय इतिहास से अभिन्न रूप से जुडा हुआ है ।

१—मार्टिन जॉनसन, आर्टएण्ड दि साइन्टिफिक थॉट, पृ. १२०

स्वस्तिक, क्रास, त्रिशूल और अनेक पूजा-प्रतीको का इतना गहरा सम्बन्ध है कि विद्वानो ने इसके अस्तित्व को एक देशीय न मानकर अन्तर्देशीय माना है।[२] इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि धर्म, दर्शन विज्ञान, कला, साहित्य और समाज शास्त्र आदि के प्रतीको का प्रयोग किसी एक ज्ञान-क्षेत्र से ही सम्बन्धित नही है, वैसे उनका प्रयोग अनेक क्षेत्रो मे होता आया है और आज भी होता जारहा है। वह एक ऐसा क्षेत्र है जो विज्ञान, धर्म और कला के आपसी सवादो को एक निश्चयात्मक भावी सम्भावना के रूप मे प्रस्तुत करता है। अत: इस सत्य को ध्यान मे रखकर जब हम यह देखते है कि प्रतीको को लेकर हम आपस मे लडते एव द्वन्द्व करते है, तो यह सघर्ष कितना बेमानी होजाता है। धर्म के प्रतीको को लेकर यह सघर्ष इतना प्रबल रहा है कि इतिहास के पन्ने इसकी प्रत्यक्ष गवाही देते है। अत. धार्मिक प्रतीकोपासना का अर्थ उसका सघर्ष नही है।

आज सदर्भ मे धर्म का स्वरूप 'वस्तुसापेक्ष' है। यह सम्बध अत्यत प्राचीन है जब यातु (मैजिक) का सम्बध धर्म और विज्ञान दोनो से किसी न किसी रूप मे था। यह तथ्य को प्रकट करता है कि धर्म मानव और उसके परिवेश की क्रिया-प्रतिक्रिया का फल है। इस प्रकार, धर्म (मिथक भी) की अर्थवत्ता मानव जीवन सापेक्ष है जो यथार्थ की कठोर भूमि पर धर्म को लाकर खड़ा करता है। यह यथार्थ मानवीय आस्था से प्रतिबद्ध है और यह आस्था, आज के वैज्ञानिक युग मे क्रमशः कम होती जा रही, जो धर्म को पुनर्जीवित कर सकती है। आस्था मात्र अंधआस्था नही हो सकती है, उसे तार्किकता से पुष्ट करना होगा। यही कारण है कि धर्म की आस्थाए, जब नवीन ज्ञान के साथ नही चल पाती हैं, तो वे स्थिर हो जाती है। उनकी गत्यात्मकता समाप्त होने लगती है। जैन-दर्शन और वेदात-दर्शन की अनेक आस्थाए एव विचार इसी गतिशीलता को व्यक्त करते है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि धर्म एक प्रमुख मानवीय

२—पूरे विवेचन के लिए देखे डॉ जगदीश गुप्त की पुस्तक प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ. ४००-४००

क्रिया है, और वह इस आस्था को गति देता है जो आज के मानव की आवश्यकता है। डॉ राधाकृष्णनन् ने इसी आस्था को पुनर्जीवित करने पर बल दिया है जो सस्कृति का प्रेरक तत्त्व है।[१] अत धर्म एक समाज एव मानव सापेक्ष क्रिया है, और इस अर्थ मे वह मात्र पारलौकिक स्तरो तक ही सीमित नही है। वह एक प्रकार से परोक्ष एव प्रत्यक्ष मतव्यो की समरसता है। मानव जहा एक ओर सामाजिक एव भौतिक प्राणी है, वही वह एक मानसिक-आत्मिक प्राणी है जो रहस्य और आध्यात्म की ओर भी प्रेरित करता है। मानव का सारा व्यक्तित्व एक जैविक व्यक्तित्व है, वह एकागी नही है। विज्ञान के ब्रह्माडीय एव भौतिक अन्वेषण इस तथ्य की ओर सकेत करते हैं कि कोई न कोई ब्रह्माडीय सत्ता है चाहे हम उसका 'कुछ' भी नाम क्यो न दे। धर्म और दर्शन व्यक्ति की इस माग को किसी न किसी रूप मे पूरा करते है। ०

५ भ्क १५, जवाहरनगर जयपुर-४

१—रिकवरी ऑफ फेथ, डॉ राधाकृष्णन्, पृ २४

शाकाहार

ललकश्वानवतउदरभर, क्योखातेपशुकामास ?
दु ख-द्वद्व से युद्ध रच, करें जनसख्या का नाश।
करें जन सख्या का नाश, जगत मे फैले महामारी,
विनाशलीला रचा रहे, मासवृत्ति के भक्षाचारी।
वेर्नार्डशाह की यह अपील, सुनोराजनीति के मठधारी,
जीवित पशु पर दया करो, विश्व वने शाकाहारी ॥

[हिन्दी अनुवाद अग्रेजी से]

—सौभाग्यमल जैन, वकील
६६, घासवाजार रतलाम

जैन धर्म और धर्मपाल

◎ पं. कन्हैयालाल दक,

★

ससार के समस्त धर्मो और विचार धाराओ मे जैन धर्म एक श्रेष्ठ और उच्च कोटि की विचार धारा वाला धर्म माना जाता है, क्योकि इस धर्म मे प्रत्येक तत्त्व का चिन्तन अत्यन्त सूक्ष्मता और गम्भीरता से किया गया है। जीवन मे आचार को प्रधानता दी गई है और विचारो मे सन्तुलन बनाये रखना, सबके साथ सामजस्य स्थापित करके समन्वय करना, इस धर्म की एक विशेषता है।

मनुष्य के जीवन मे धर्म का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। धर्म से मनुष्य 'जीने की कला' सीखता है। विद्या, तप, दान, सयम ब्रह्मचर्य और अहिसा आदि विषयो का चिन्तन मनुष्य तभी कर सकता है, जब धर्म के सस्कार आत्मा मे हो। देव-दुर्लभ मनुष्य का जीवन मिलना बहुत कठिन है, ऐसा हमारे धर्म शास्त्र बतलाते है, लेकिन मानव शरीर के प्राप्त होने पर भी 'मानवता' के साक्षात् दर्शन होना अति दुष्कर है। जहा क्षमा, दया, प्रेम, सहानुभूति क्षमता आदि गुणो का सहज सद्भाव हो, वही मानवता के दर्शन हो सकते है और वही मानव जीवन की सफलता व सार्थकता का अनुमान लगाया जा सकता है।

वर्तमान युग मे धर्म सस्कारो के अभाव मे 'सच्ची मानवता' तो दूर, सामान्य नैतिकता व प्रमाणिकता का भी अभाव होता जा रहा है। धर्म के नाम पर दम्भ, आडम्बर और प्रदर्शन ज्यादा किये जा रहे है। सारा बाह्य परिवेश, वातावरण और चर्चा धर्म की होती है और अन्दर पाखण्ड, अनीति और अनाचार का आचरण होता है। यह सब देखकर सर्व साधारण जन समूह दिड्मूढ बन जाता है कि धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है ? धर्म के दर्शन कहा सभव है ? कौन से धर्म का आचरण करने से आत्म-शान्ति प्राप्त हो सकती है। वास्तव मे धर्म स्वान्तः सुखाय होता है।

हमारे परम उपकारी सन्त मुनिराज, आचार्य प्रवर और विद्वान् चारित्र सम्पन्न महात्मा धर्म व सदाचार का स्वरूप नित्य नये तरीके से, अपनी विलक्षण शैली से, अनेक अचक उपमाओ व दृष्टान्तो के द्वारा सार्वजनिक रूप से समझाते है, जिसका प्रभाव भव्य व सरल आत्माओ के निर्मल हृदय पर पडता है। प्रतिदिन दिया जाने वाला यह कार्यो-पदेश स्वाति नक्षत्र के पानी की बून्द के समान कभी-कभी निमित्त पाकर एक अनमोल मोती बन जाता है और ससार के समक्ष एक अनूठे उदाहरण का काम करता है।

ऐसा ही एक उदाहरण हमारे समक्ष वर्तमान 'धर्मपाल' बन्धुओ का है। लगभग २० वर्षों पूर्व श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी म सा जब जावरा तथा नागदा के आसपास के क्षेत्रो मे विचरण कर रहे थे और अपने सामाजिक व धार्मिक प्रवचनो के माध्यम से जीवन जीने की कला के व्यावहारिक पक्ष पर प्रकाश डाल रहे थे, तब कुछ अनु-सूचित जाति के लोग भी उन उपदेशो से प्रभावित हुए। उन उपदेशो ने उनके अन्तस्तल को स्पर्श किया, अपने स्वय के प्रति आत्म ग्लानी के भाव जागृत हुए और जीवन मे आमूल चूल परिवर्तन करने की भावना बलवती हो गई। उपदेश का एक बिन्दु भी अमृत का काम कर गया। ये अनुसूचित जाति के लोग मालवा की प्रचलित भाषा मे 'बलाई' नाम से सम्बोधित होते थे। मरे हुए पशुओ का चमडा उता-रना और उसे बेचना, यह उनका आमतौर पर व्यवसाय था। उसके साथ कृषि व पशुपालन भी करते थे। शिक्षा से सर्वथा शून्य थे, सस्कार नाम की कोई वस्तु नही थी, लेकिन ऐसे अज्ञानी और ज्ञान शून्य लोगो मे भी एक सद्गुण विद्यमान था 'सरलता'। बस इसी गुण ने इनमे यह अहसास पैदा किया कि 'हमे अपने जीवन को बदलना चाहिये, दुर्व्यवसनो का त्याग करना चाहिये, अच्छे पुरुषो की सगति करनी चाहिए, महात्माओ के उपदेशो का आचरण अपने जीवन मे करना चाहिए'। बस, इस एक छोटी सी विचार की चिनगारी ने 'क्रान्ति' की ज्वाला का रूप धारण कर लिया।

एक बहुत बडा 'मिशन' हमारे सामने आया। जीवन परिवर्तन की तमन्ना रखने वाले समाज के लिए एक नया नाम करण करना

हुआ और आज वह जाना जाता है 'धर्मपाल' नाम से । आज हमारे समक्ष 'धर्मपाल' हमारी एक धार्मिक व सामाजिक प्रवृत्ति बन गई है । धर्मपालो ने अपनी हार्दिक सरलता और सात्विकता का परिचय दे दिया है या यो कहे कि वे अपने धार्मिक व सामाजिक जीवन की दृष्टि से हमारी शरण मे आये हैं, अब हमें अपनी जिम्मेदारी को समझना है, उनके प्रति अपने कर्तव्य का पालन पूर्ण निष्ठा व सचाई से करना है, अन्यथा कालान्तर मे यह एक 'खतरा' बन जावेगा ।

हमारे यहां शरण मे आने और शरण में लेने का बहुत बडा महत्त्व है । जो हमारी शरण ग्रहण करता है, उसके लिए हमे सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहिये । स्वय भूखे रह कर उन्हे हार्दिक प्रेम, भाईचारा व बन्धुत्व भाव देकर गले लगाना है । उनकी शिक्षा दीक्षा का प्रवन्ध करना है, उनके धार्मिक जीवन मे उनका सहयोगी बनना है, सामाजिक जीवन मे सतत मार्ग दर्शन करना है, उनकी बीमारी मे, सुख दु ख मे, हर समय उन्हे सहकार करके उनका स्वाभिमान बढाना है । जैन धर्म की सारी विशेषताओ से उन्हे परिचित कराके हर महत्त्वपूर्ण धार्मिक व सामाजिक पर्व को मनाने की सच्ची और सात्विक विधि उन्हे वतानी है । उनकी महिलाओ के साथ हमारी महिलाओ को उनके घर मे नि सकोच प्रवेश करके उनके खान–पान व प्रतिदिन के आचार–विचार के तरीको मे किस प्रकार से परिवर्तन आवे और किस प्रकार से वे धर्मपाल वहिने और उनके बालक, उनकी भावी सन्ताने सुसस्कारी वने इसका सतत ध्यान रखना सारे जैन समाज का कार्य है । उनके पैतृक सम्कारो मे मदिरा, मास, वीडी, होटले, सिनेमा आदि का समावेश है हमे इन सव दुर्गुणो से उन्हे मुक्त कराके हमारे परम्परागत सात्विक जीवन की तरफ आकर्षित करके एक सच्चे धर्म बन्धु का परिचय देना है । यही जैन धर्म की 'स्व धर्म वात्सल्यता' है ।

हमारे यहा तीर्थंकर नाम कर्म को उपार्जन करने के वीस कारण वतलाये गये है, उनमे 'स्वधर्म वत्सलता' भी एक कारण माना गया है । हमारा हार्दिक प्रेम और आत्मीय भाव पाकर वे गद्गद् हो जावेंगे, उनकी सुपुप्त चेतना अवश्य जागृत होगी और हमारे सहयोग

और सहवास से वे अपने आपको धन्य भाग समझेंगे और उनका 'जैन धर्म' को स्वीकार करना अक्षरश सार्थक होगा ।

किसी भी जाति को शिक्षा और सस्कारो की दृष्टि से नये साचे मे ढालने मे एक पीढी जितना अर्थात् ५० से ६० साल जितना समय लगना स्वाभाविक है । उनके अपने पुराने अन्ध विश्वासो व रीति रिवाजो को मिटा देना सरल काम नही है । जीवन के नये मूल्य उन्हे सिखाने मे, उनके प्रति दृढ आस्था पैदा करने मे एक लम्बे समय व धैर्य की आवश्यकता है । यह कार्य एक व्यक्ति, एक धर्माचार्य या एक श्रीमन्त व्यक्ति का नही है । यह सारे मानव समाज का कार्य है । जो भी प्रबुद्ध साधक, जैन धर्मानुयायी, साधु–सन्त, धर्मोपदेशक, व्यापारी विद्वान् और श्रीमत यह समझता है कि यह एक श्रेष्ठ कार्य है । उनमे से प्रत्येक को आगे आकर इस कार्य मे तन, मन व धन से सहयोग करना चाहिये, बिना किसी प्रकार के प्रतिफल या यश की भावना के एक नई पीढी को बनाने का, नये समाज की रचना करने का दायित्व हमने मोल लिया है । हमे अपने खुद के आचार विचार खान पान, रहन, सहन, तथा जीवन को इतना सादा और सात्विक रखना चाहिये कि वे अनायास हमारा अनुकरण करके अपने जीवन को अनुकरण शील बना सके ।

हमारे महामत्र नवकार मत्र का महत्त्व उन्हे समझाया जाना चाहिये । हमारे व्रत और आचार उन्हे सरल भाषा मे सीखाए जाने चाहिये, जिससे 'जैन' कहलाने की सामान्य योग्यता या पात्रता उनमे आ जावे । उनके रग रग मे मानवता के सस्कार इस प्रकार से व्याप्त हो जावे कि वे जैन धर्म को ग्रहण करने मे अपने आपको सौभाग्यशाली माने और उनमे निम्न गुणो का क्रमिक विकास सभव हो सके –

(१) उच्च विचार (२) रूपवत्ता (३) प्रकृति सौम्य, (४) लोकप्रियता (५) सहृदयता (६) पाप भीरूता (७) निष्कपटता (८) दाक्षिण्य कुशलता, (९) लज्जावान्, (१०) दयालुता (११) मध्यस्थभाव समता, (१२) सौम्य दृष्टि, (१३) गुणानुरागी, (१४) सत्यवादी (१५) दीर्घ दर्शिता (१६) विशेषज्ञता (१७) विनीतता (१८)

कृतज्ञता (१६) परोपकारी वृत्ति (२०) लक्ष्य सिद्धि और (२१) धर्मानुयायी ।

जैन धर्म जैसे श्रेष्ठ विचार धारा वाले धर्म को ग्रहण करने के पश्चात, सदगुरुओ का सान्निध्य व उपदेश प्राप्त करने के पश्चात तथा परम्परागत जैन धर्मानुयायियो का सब प्रकार का सहयोग व सरक्षण प्राप्त करने के पश्चात 'धर्मपाल' नाम धारी नये जैन बन्धुओ मे उपर्युक्ता सर्व साधारण मे पाये जाने योग्य २१ गुणो का विकास हो तो वे 'श्रावक' की कोटि मे आ सकेगे और उनके जैनत्व के सस्कार इतने दृढ और स्वाभाविक हो जावेगे कि उनको दिया गया 'धर्मपाल' नाम भी सार्थक होगा और उनका जैन धर्म को धारण करना कालान्तर मे एक ऐतिहासिक सत्य सिद्ध हो जावेगा । उनके पीछे व्यय की जाने वाली जैन समाज की शक्ति श्रम और धन तो सार्थक सिद्ध होगे ही यह निर्विवाद सत्य है ।

—श्री महावीर जैन रत्न ग्रंथालय, जलगांव—४२५००१

△

कोई मनुष्य ऐसा हो नही सकता जिससे घृणा की जाय या जिसे छूने से छूत लगती हो । सभी प्राणियो की आत्मा परमात्मा के समान है और शरीर की बनावट के लिहाज से मनुष्य मनुष्य मे कोई अन्तर नही है ।

जो गन्दगी फैलाता है वह दोषी नही और जो हरिजन गदगी साफ करता है वह दोषी कहलाये– नीच गिना जाय, यह कहा का अनोखा न्याय है ?

—श्रीमद् जवाहराचार्य

शराब या यमदूत ?

☐ अनुवादक-श्री काशीनाथ त्रिवेदी

▽

शराब की बोतल मे मौत की परछाई दीख पडती है। उसकी एक-एक घूट मे रौरव नरक के कीडे बिल-बिलाते है। आप उसे जरा चखिए भर, बस, वह आपको चोरी करना सिखायेगी, आपसे लूट-पाट करायेगी, व्यभिचार का पाठ पढायेगी और खून करना बतलायेगी। एक बार अपने घर मे शराब को आने भर दीजिये, आपकी स्त्री के चेहरे की प्रसन्नता उड जायेगी। एक बार शराब को अपने घर मे घुसने दिया कि आपके बालक आनन्द से नाचते-कूदते है, उसी क्षण से रोने-चिल्लाने लगेंगे। मनुष्य का यह सत्यानाश करती है, स्त्री को चार आसू रुलाती है और आपके बालको की कब्र तैयार करती है।

मारकाट मे मरने वालो और रण-क्षेत्र मे तलवार-बरछे से कटने वालो की अपेक्षा कितनी अधिक जाने एक शराब के प्याले से नष्ट होती होगी ? भगवान ही जाने। शराब के एक ही प्याले ने लाखो–करोडो को जमीदोज किया है, और करोडो का सत्यानाश। हरे-भरे खेत उजड गये शराब के प्रताप से, बडे-बडे महल जमीदोज हो गये शराब के शाप से। और शहशाह-बादशाह के राज्य जमीन की सतह से उखड गये शराब के प्रभाव से पागलो के अस्पताल, बदमाशो और गुण्डो के अखाडे, वेश्याओ के नरकालय ये सब शराब की ही देन है। आज अपने कमाऊ बेटे को देख कर प्रसन्न होने वाला बाप कल शराब पीता और बेटे पर कुल्हाडी तानता है। आज चाद और सूरज की साक्षी मे पत्नी को जिदगी-भर पालने की प्रतिज्ञा करने वाला पति, कल शराब पीकर, पत्नी को मार डालता है। आज अपने नन्हे बालक को चूम-चूम कर खिलाने वाला पिता कल शराब पीता है और बालक को उसकी मा की गोद से छीन कर जमीन पर पछाड

देता है । अभी कल ही इस आदमी की आखो मे करुणा का सागर लहरे ले रहा था, आज वह ऐसा हत्यारा क्यो बन गया ?

शराब की एक-एक बूद मे मनुष्यता के आसू भरे हैं । उसमे पत्नी की आहे है, बालक की चीखे है और है माता के हृदय को चीरने वाला रुदन । जो उसे छूता है, वह मौत को गले लगाता है । दुख और मौत ही उसके वरदान है ।

उस शराब की दुकान पर कोई फटेहाल आदमी आ रहा है । उसके गाल पिचक गये है आखे गहरी धसी हुई है, कमर झुक गई है । उसका चेहरा डरावना-सा लगता है । सास लेता, धीमे कदम, लडखडाता आ रहा है । एक धक्का मारा कि गिर जाय इतना कमजोर है । वह आता है । इसी दुकान पर दूसरे दो नौजवान तन कर खडे है, वह भी उधर ही जाता है । नौजवान उसके मुंह की ओर देख कर हसते हैं और शराब की बोतल की तरफ अपने हाथ बढाते है । वह कुबडा शराबी नौजवानो की हसी सह नही सकता । गुस्से-भरी चौंकाने वाली आवाज से कहता है :—

भाइयो ! तुम मेरी हसी क्यो करते हो ? मैं कुबडा हू, इसलिए ? मै भी पहले तुम्हारी ही तरह सीना तान कर चलता था और धरती कपाता था । मेरा यह चेहरा भी तुम्हारी तरह हसमुख था । गालो के ये गड्ढे भी पहले भरे थे, और चेहरा भी तुम्हारी तरह लाल सुर्ख था । मेरे भी घर था, बार था, रिश्तेदार थे, परी सी सुन्दर स्त्री थी और थे खूबसूरत बालक भी । लेकिन इस शराबी बाप की आखो के सामने ही वे बालक कुम्हला गये, मर गये । इस शराबी पिता ने क्या कम देखा है ? जिस घर मे किसी समय हम सब प्रेम-पूर्वक अपना जीवन बिताते थे । आह ! उस घर मे मैंने शराब की बोतलो की कुश्ती करवाई । जिस घर मे अमृत के घडे भरे थे, उस घर मे हलाहल-पोखरे भरवाये । आज मरने के बजाय मौत ने फासी लगाने जैसी, ओफ ! मेरी हालत है । औरत मर चुकी बालक गुजर चुके, मकान जमींदोज हो चुका ! इस दुनिया मे, मौत का छोडकर, अब मेरा कोई रखवाला नहीं रहा । यह क्यो ? केवल

बार, एक दोस्त के आग्रह से, मैंने एक प्याली शराब पी और साथ ही दु ख सर्वनाश और मौत को भी अपने घर बुला लिया ।

उसकी जबान रुक गई । हाथ-पैर जकड गये और वह ऊपर ओर टकुर-मुकुर देखने लगा । वे दो नौजवान और भीड के लोग उसे एक-टक देखते ही रहे लेकिन वह कुछ बोल न सका । वे कुछ पूछें, इसके पहले तो वह न जाने कहा गायब हो गया ।

ऐसी घटनाए तो कलवरिया के पीपो के सामने अनगिनत होती है । आखवाले देख सकते हैं, आपके आखें हैं ?

एक दिन एक पेशेदार आदमी कलवरिया पर आ धमका । दुकान मे घुसकर उसने एक पाव शराब मागी । पीपे की नली घमाते हुए कलवार ने कहा —क्यो भाई, अकेले क्यो ? अपने किसी यार-दोस्त को ले आओ न ? वह बोला—मैं रोज नही पीता । मेरे घर-बार है । चार अक्षर पढा हू । मेरे भी नाक है । यह सुन कर कलवार जरा रौब के साथ, तिरस्कार पूर्वक बोला—राम, राम ! देखता हू, ६ महीने बाद तुम कैसे रहते हो ?

एक बरस बीत चका है । अब तो वह पक्का शराबी है । उसके कपडे फट गये हैं । घर-बार नही रहा । वैसे ही भटका करता है जैसे दूसरे शराबी । कलवरिया के नजदीक बैठ कर भीख मागता है । एक दिन उसे देख कर कलवार ने कहा—क्योरे, अपने दोस्त को लेकर आया है न ? लेकिन फिर दया दिखला कर कहने लगा—आ भाई, एक प्याली पी जा । लेकिन इतने मे तो उस शराबी की आखें चमक उठती हैं और थोडी खुमारी आ जाती है । उसे अपनी पहली दशा याद आती है, घर-बार की स्मृति ताजी होती है, और वह एक लम्बी सास लेता है । फिर वह अपने बदन पर पहने कपडो को देखता है, अपना गिरवी रक्खा हुआ खेत उसे याद आता है, और घर पर बार-बार तकाजे के लिए आनेवाली साहूकारो की टोली उसकी नजर के सामने खडी हो जाती है । उसकी आखे खुल जाती हैं । इतने मे उसके हाथो मे शराब की प्याली आ पडती है । वह चौंक कर चिल्ला

उठता है—शराब ! शराब ! तू ने ही मेरा सत्यानाश किया है और प्याले को जमीन पर फेंक देता है, दुकान से बाहर निकल जाता है और मुट्ठी बाध कर भाग निकलता है । उस दिन के बाद उसने कलवार का फिर मुंह नही देखा ।

लोग कहते हैं कि लडाई भयानक चीज होती है । उसके कारण लाखो आदमी लगडे हो जाते हैं लाखो असहाय विधवाएं बहाती है आसू और लाखो बालक अनाथ बन कर दर-दर भूखे भटकते हैं यह सच है । लेकिन भगवान जानते है, कि शराब की लत के कारण लडाई की अपेक्षा कही अधिक आदमी घुल-घुल कर बेमौत मरते होगे । अनाथो और अपगो को, लूलो-लगडो को फटे-टूटे चीथडे पहने घूमने वालो को गली, मोहल्ले, हाट और बाजार मे मागने वालो और हृदय-भेदी रूदन करने वाले स्त्री-पुरुषो से पूछो, तो कहेगे कि शराब के एक प्याले ने हमारी दुर्दशा की है । इसके मुकाबले लडाई मामूली दिखाई देती है । लेकिन शराब के प्रताप से घर नष्ट होते हैं, शील लुटता है, गरीबी जड जमाती है, पापाचार बढता है और खून की तो हद ही नही रहती ।

अकाल पडने पर हम काप उठते है । लेकिन शराब तो वह अकाल है, जो जमीन को ऊजड बनाती है, धन को बरबाद करती है और रोग-शोक को बुलाती है । अकाल तो सिर्फ हड्डी और चमडे पर ही असर करता है, पर यह शराब तो बरसो तक लाखो आदमियो के जीवन मे आग लगाती और उन्हे धन-जन से विहीन करके जिन्दा श्मसान मे सुलाती है ।

कहा जाता है, इससे सरकार को आमदनी होती है लेकिन आमदनी कैसी ? आमदनी करने वालो को तो यह निगल जाती है । तो यह कहो न कि शराब से आमदनी नही होती, वह तो खून चूस कर धन बढाती है और आमदनी किससे होती है । शराब नया धन थोडे ही पैदा करती है । शराब की इस आमदनी मे तो शराबी के बे-मौत मरने से जो लाखो करोडो विधवाए और अनाथ गरीबी की चक्की मे पिसकर सारा

जीवन दु ख और भूख की तप मे बिताते हैं, उनकी गरम आहे है। इसे आमदनी कहे ? शराब की आमदनी खून का पैसा है जो शराब की आमदनी पर जीना चाहता है, वह खून से अपना पेट भरता है।

आपके गाव मे आकर किसी ने शराब की दुकान खोली। एक-दो दिन तो आपने कुतूहल की नजर से उसे देखा। फिर आपके नौजवान उस कलवार से बातें करने लगे। एक-दो दिन उन्हे मुफ्त शराब पिलाई गई बस, उन्हे शराब का चस्का लग गया फिर पूछना ही क्या था ? आप जिन्हे सब गुणो के आगर और नागर मानते थे, वे गुण्डे और बदमाश बन गये। आप जिन्हे देव-दूत समझते थे, वे अब शैतान के चौबदार बन गये इसकी वजह ? जिस दिन उस कलवार ने आपके गाव मे शराब की दुकान की नीव डाली उसी दिन उसने आपके धन-दौलत की नीव को हिला दिया, इतने मे तो एकाएक आपका जवान-जोधा बेटा गायब हो गया। दूसरे दिन गाव के किनारे उसकी लाश आपको मिली, उधर आपके घर की अ धेरी कोठरी से उसका लिखा एक पत्र भी हाथ लगा। उस पत्र मे उसने अपनी वसीयत लिखी थी। यह रहा उसका वसीयतनामा —

१. समाज को अपनी ये भ्रष्ट आदतें विरासत मे दे जाता हूं।

२. शराब के पीछे मैंने जो धन उडाया, उसका कर्ज विरासत मे मा-बाप को सौपे जाता हू।

३ अपने भाइयो और बहनो को शराब की बदबू से भरे हुए अपने जीवन की याद सौपे जाता हू।

४ अपनी स्त्री को, जीवनभर रोने और मेहनत मजदूरी करके पेट भरना, विरासत मे दिये जाता हू।

५ अपनी सतान को, यह सदेश विरासत मे दिये जाता हू, कि शराबी बाप के घर पैदा होकर अब तुम अपना जीवन दर-दर भटकते हुए बिताना।

अपने सगे-सम्बन्धियो के लिए कितनी कीमती विरासत

छोडकर वह नौजवान यम के दरबार मे पहुचा । शराब ! बलिहारी है तेरी !!

जाच से पता चलता है, जेलखानों में, पागलों के अस्पताल में शराबियों की संख्या बहुत ज्यादा होती है । तीन सौ आदमियो के एक जेलखाने की जांच करने से पता चला कि उसमे २८१ पूरे पियक्कड थे । एक जल्लाद कहता था—मैंने सात सौ कैदियों को फासी दी है, लेकिन उनमें से एक भी ऐसा न था जो शराबी न हो ।

उस दिन एक बाबा जी रास्ते से जा रहे थे । एक नन्हा लंगडा बालक दौडता-दौडता उनके पास पहुंचा और पैर छ कर कहने लगा—दादा, आप हमारे यहां नही चलियेगा ? मेरे पिता को पीले कोट वाले ले गये हैं । उस बाबाजी ने धीरे से पूछा—बेटा, ऐसे कोई ले भी जा सकता है क्या ? तेरे घर और कौन-कौन हैं ? पत्थर को भी रुलाने वाली करुण आवाज मे बालक ने कहा—क्या कहू, मुझे कुछ सूझ ही नही पडता । घर पर मेरे दो छोटे भाई हैं, एक बहन है । घर मे खाने को कुछ भी नही है । हमारी मा आज मर गई । इसलिए मेरे पिताजी को पकड कर ले गये हैं । साधू कुछ तो समझा लेकिन, यह नहीं समझ सका कि पकडे क्यो गये ? इसलिए फिर पूछा—तेरे पिता को पकड क्यो ले गये ? क्या आज कुछ हुआ था ? लडके की आख मे आसू उमड आये और सिसकियां लेकर बोला—दादा ! मैं इतना ही जानता हू कि मेरे पिताजी लाल-लाल आखें करके घर आये, मेरी मा कुछ कहने लगी, तो पिताजी उस पर टूट पडे, एक दो लाते मारी, मेरी मा मर गई । मैं अखबार बेचता हू । और दो-चार पैसे कमा लेता हूं । जज कहता था, मेरे पिता को वे लोग कल लौटा देंगे और सो भी कहते हैं, सूली पर चढाने के बाद । आप चलो न ।

साधू बच्चे के पीछे-पीछे जाता है । उस खूनी आदमी के पास जाकर धर्म की दो बाते कहता है । उससे कहता है—भाई, भगवान ने शिला की अहिल्या बनाई । गणिका तारी, गीद्ध को तारा और कीचड मे फसे हुए एक हाथी को भी उबारा, उसी भगवान को याद

कर वही निर्वलो का वल है । खूनी एकाएक रोने लगता है और रुक-रुक कर कहता है—बाबाजी, कानून का क्या कसूर मेरे अनाथ बच्चो का क्या होगा ? शराब के नशे मे मुझसे ऐसा काम हो गया । भगवान सबको सद्‌बुद्धि दे कि कोई शराब की दुकान न खोले । इसके बाद साधू बच्चो के पास आया । कुछ देर बाद जब वह घर लौटने लगा तो पीछे से गाडी दौडती हुई आई । गाडी आकर आगन मे ठहर गई । जाकर देखा तो उस हत्यारे की लाश थी । साधू ने स्वय उसकी लाश को उतार लिया । इतने मे बच्चे आ पहुचे । वे तो हक्के-बक्के से अपने बाप की लाश को देखते ही रहे । वह लगडा बालक तो बुरी तरह चीख उठा और दूसरे बालक भी घबरा कर रोने लगे । यह देख कर उस साधू को बहुत दु ख हुआ । वह समझ गया, शराब अज्ञानी और गरीब आदमियो का कैसा सत्यानाश करती है । उसकी आखे खुल गई । मुर्दे के सामने झुक कर जलते दिल से करुणा निधान ईश्वर को साक्षी रक्खा और वही बैठे-बैठे प्रतिज्ञा की कि इस शराब को जडमूल से नष्ट करने मे अपनी जान लडा दू गा । प्राणो को निचोड डालू गा । चाहे जैसी आफतें आयें, लेकिन मैं बच्चो को मातृहीन और पितृहीन होने से बचाऊ गा, स्त्रियो को विधवा होने से रोकू गा, जनता की जनता की दौलत को बरबाद होने से बचाऊ गा, पृथ्वी पर होने वाले पापो को रोकू गा और सदा प्रार्थना करू गा कि ईश्वर का आशीर्वाद इस दुनिया पर बरसे । वे बच्चे साधू की सेवा मे रहे और उनकी कुम्हलाती हुई हसी फिरसे खिलने लगी ।

गुण्डों, चोरो, लफगो, सूख कर लकडी बने हुए कवालियो, जुआखोरो, कलवारो और भडरियो के घर जा-जाकर मैं उनसे मिलता हू और हाथ जोड कर उनसे प्रार्थना करता हू कि शराब छोडो । उस एक जर्जर झोपडी मे एक स्त्री बैठी है । उसके सिर मे उसके पति ने गहरा घाव कर दिया है । वह बेचारी फूट-फूट कर रो रही है । खाने को अनाज नहीं है । आहे भर रही है। उसकी शपथ दिला कर तुम्हारे हाथ जोडता हू और कहता हू कि शराब छोडो । कल उस घर मे एक आदमी पीकर आया । लोहे के दरवाजे से उसका सिर टकराया सिर फूट गया, वह मर गया । आज उसकी भूखी-प्यासी

स्त्री नन्हे से सुकुमार बालक को छाती से लगाये बैठी है, लेकिन भूखी माता के स्तनो मे दूध सूख गया है और बालक मारे भूख के तडप-तडप कर मर रहा है। इस माता के करुण-रुदन के नाम पर और इस बालक की अन्त समय की चीखो के नाम पर मैं तुमसे फिर हाथ जोड कर, घुटने टेक कर प्रार्थना करता हू कि शराब छोडो, छोडो, छोडो।

*हरिजन-सेवा वर्ष १३ अंक ५ जुलाई १९६४ से साभार उद्धृत। सकलनकर्ता . रामचन्द्र नन्दवाना

धर्म

महात्मा गाधी रोगियो की सेवा करना अपना धर्म समझते थे। एक बार वो रोगियो की सेवा कर रहे थे कि उनसे मिलने एक अमरीकी मिशनरी आ गया। गांधी जी को एक रोगी की सेवा करते दख उसने व्यंग्य से कहा, "आपका धर्म क्या है?"

गांधी जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मेरा धर्म रोगियों की सेवा करना है।"

यह सुनकर वह मिशनरी शर्मिंदा सा हो गया :

□ श्री मनोज आंचलिया
११६ देवाली, उदयपुर (राज०)

मानव-आहार : शाकाहार । मांसाहार · महान् पापाचार

● श्री अशोक श्रीश्रीमाल

★

शाकाहारी जीवन की महत्ता का सशक्त अनुमोदन करते हुए पाश्चात्य वैज्ञानिक श्री जी ए ब्राइट रासायनिक विश्लेपण के आधार पर लिखते हे, 'आप क्या भोजन करते है, जो भोजन करते है उसे कैसे प्राप्त करते हैं, इसी पर आपकी सतति एव मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है ।'

भारतीय सस्कृति ने इसी चितन को एक छोटी-सी सूची मे यो आवद्ध किया है

'यादृश भक्षयेदन्न वुद्धिर्भवति तादृशी'

आइए, शाकाहार की महत्ता को प्रतिपादित करने वाले विश्व धर्मों और उनके प्रवर्तको का उद्घोप सुने ।

जैनधर्म मे शाकाहार :

महाश्रमण भगवान् महावीर ने कहा 'सव्वेसि जीविय पिय नाइवाएज्ज कवण' अर्थात् किसी भी प्राणी की हिसा न करो क्योकि ससार मे सभी को जान प्यारी है, मरना कोई नही चाहता !

कलिकाल मर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र सूरि ने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'योग-शास्त्र' मे लिखा हे—

सद्य संभूधितानन्त जन्तु सन्तान दूषित्म ।
नरकाह व निपाधेय, कोंशनीयात् पिशित् सुधी'

अर्थात् जीव को वध करने के तुरत पश्चात् उसके मास मे असख्य जीवो की उत्पत्ति हो जाती है । अत घोर हिसा के कारण मास

भक्षण नरक का कारण है ।

यही बात आचार्य अमृत चन्द ने 'पुरुषार्थ सिद्धयुपाय' मे बतई है । और बाईसवे तीर्थंकर दयामूर्ति नेमिनाथ ने तो मासाहारी राजाओ के लिए एकत्रित पशुओ के वध को रोकने के लिए तोरण द्वार छोडकर प्रवज्या ग्रहण कर ली थी ।

बौद्ध धर्म में शाकाहार :

तथागत महात्मा बुद्ध ने कहा था–'पाणातिपात्र वैरमणी कुसल (सम्माद्दिद्धि सुत) किसी प्राणी की हिसा मत करो ।

हे महामते मैं यह आशाकर चुका हू कि पूर्व ऋषि प्रणीत भोजन मे गेहू, जौ, चावल, मू ग, उडद, घी, तेल, दूध, शक्कर, खाड, मिश्री ही लेने योग्य है । मास भक्षण से कौढ जैसे भयकर रोग उत्पन्न होते है ।

'अंगुतर निकाय' ५–१७७ मे बताया गया है कि बौद्ध उपासको को मास, मदिरा, विष एव सजीव प्राणियो का व्यापार नही करना चाहिये ।

सनातन धर्म, वैदिक धर्म में मांसाहार निषेध :

भगवान श्री कृष्ण ने कहा है :

सर्वे वेदा न तत्कुर्य, सर्वे यक्षाश्व भारत
सर्वे तीर्था भिषेकाश्च, यत्कुर्यात प्राणणिना दया ।

अर्थात् प्राणीयो पर दया करने से शुभ फल प्राप्त होता है ।

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रय विक्रयी ।
सस्कुर्ता चोपहर्ता च, खादकश्चेशि घातका ।।
(मनुस्मृति ५/४५।)

अर्थात् मारने का परामर्श देने वाला, बेचने वाला पकाने वाला परोसनेवाला, और खानेवाला ये सब पापी और दुष्ट है । जिसका

मास मैं यहा खाता हू (मा) मुझको (स) वह भी अगले जन्म मे काट–काट कर खाएगा ! (मनुस्मृति ५/६५)

'हे अग्नि ! मास खाने वालो को अपने मुख मे रख' (ऋग्वेद १०–८७–२)

मास का प्रचार करने वाले सब राक्षस के समान हैं । वेदो मे मास खाने का कही भी उल्लेख नही ।

(सत्यथार्थ प्रकाश, समुल्लास, पृष्ठ ५४५)

शरावी और मासाहारी के हाथ का खाने पीने मे भी घोर पाप है (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास, पृष्ठ १०/३५४)

'जो लोग अ डे मास खाते हैं, मैं उन दुष्टो का नाश करता हू । (अथर्व वेद काड ८, वर्ग ६, मत्र १३)

सिक्ख धर्म मे मांसाहार निषेध :

सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक ने कहा—मेरे शिष्यो ! तुम मास और शराव का सेवन मत करना ।

'मोहसिन फानी दविस्तान ए मजाहिव' भाग २ पृष्ठ २४८
मास खाने वाले सब राक्षस हैं । (नानक प्रकाश, पूर्वाद्ध अध्याय ५५)

जो रत लगे कपड, जामा होवे पलीत ।
जो रत पीवे मानुषा, तिन क्यो निमल चित्त ॥

(गुरु ग्रन्थ साव वार माझ, महल्ला १, पृष्ठ १४०)

इस्लाम धर्म मे मासाहार विरोध

'कुरान' के प्रारम्भ मे लिखा है—

'विस्मिल्लाहिर रहमानीर्रहीम–यहा खुदा का विशेप रहीम अर्थात् सब पर रहम करने वाला दिया है ।

पैगम्बर मोहम्मद साहब ने पणित्र ग्रन्थ 'हदीस' मे अपना कलाम फरमाया है 'दूरहमु मनफिल अर्द यरहम कुमुर्रहमामु'

(अर्थात् दुनियावालो पर तुम रहम करो। क्योकि खुदा ने तुम पर बडी मेहरबानी की है।)

'कुरान शरीफ मे सुरा हज जिकर' मे फरमाया है—'लई यना लल्लाह लुह मुहा वला दिया हो वला की यना लुहत तक्वा।'

(अर्थात् अल्लाहताला को तुम्हारी कुर्बानियो के गोश्त और खून से कोई वास्ता नही। उसे केवल तुम्हारे विश्वास की जरूरत है।)

ईसाई धर्म मे शाकाहार का महत्त्व :

, यह सोचते हुए कि अभी तो दूर जाना है, यह भेड का बच्चा थक गया होगा। उसे कधे पर उठा लेने वाले दया के अवतार ईसा-मसीह ने कहा था—

'शाकाहार सबसे उत्तम भोजन है।'

(जेनीस चेप्टर १ पृष्ठ २९७)

किसी भी प्राणी की हिसा मत करो। (१० वी मे ५ वी आज्ञा)

'मेरे शिष्यो, जीव-हिसा और मास भक्षण से सदैव दूर रहना और हमेशा शाकाहार भोजन ही करना।' (चेप्टर ३३-६१-१)

ससार के छोटे-बड सभी जीव बराबर है। अत सुख-दु ख का अनुभव करके जीना चाहते है। किसी को दुख मत दो। (महान् सत सेट फ्रासीस)

'मासाहारियो के पेट चलते फिरते कब्रिस्तान है।' जार्ज बर्नाड शा

पारसी धर्म और जीवदया

यकीनन दोजख की आग पछतावा उनके लिए हर वक्त तैयार है, जो अपनी ख्वाहिशात बुझाने के लिये और दिल्लगी के लिए बेजु-

वान जानवरो को सताते और तकलीफ देते हैं—जिंदा वस्ता ।

परमात्मा की आज्ञा जीवहिंसा करने वालो और कराने वालो को मौत की सजा है। (इजरने की ३२ वें हाय)

शाकाहार के समर्थन मे महान् मनीषियों का चिंतन :

१ मासाहार से पाशविक वृत्तियो मे वृद्धि हो मानव व्याभिचार एव मदिरापान की ओर प्रवृत्त हो पतन के गर्त से गिर जाता है।
(टालस्टाय)

२ मासाहार से परहेज सैकडो यज्ञो मे आहुति से वढकर है
(सन्त तिरुवल्कर)

३ परहित सरिस धर्म नहिं भाई,
पर पीडा सम नही अधमाई ।
(सन्त तुलसीदास)

४ जीव हत्या न कर वावरे, सव जीव एक समान ।
हत्या कभी छूटे नही, कोटिक सुनो पुराण ।।
(सत कवीर)

५ अपने जीवन मे मैं पूर्ण शाकाहारी रहा हू और इस आहर मे मेरी पूर्ण आस्था और विश्वास है - (भारत रत्न एम विश्वश्वरैया)

६ मास को किसी भी रूप मे जीवन के लिए आवश्यक मानना निरी मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नही
(डॉ अल्वर्ट सितजर नोवल पुरस्कार विजेता)

शाकाहार का पूर्ण समर्थन करते हुए मैं मानता हू कि मानव के मनो भावी को यह आहार भौतिक रूप से प्रभावित करता है और इसी आहार मे मानव का कल्याण निहित है–
(डॉ अल्वर्ट आइस्टीन, नोवल पुरस्कार विजेता)

८ मास और शराव मानवता के शत्रु हैं ।
(पाइथोगोरस)

९. मासाहार मानव शरीर की रचना के सर्वथा विपरित तथा खतरनाक है । (डॉ. जे एच. किलाग एम. डी)

शाकाहार की शक्ति :

अतीत मे अमेरिका के देल विश्वविद्यालय मे प्रो फिशन ने ४९ शाकाहारी और ४९ मासाहारी समवयस्क पुरुपो का परीक्षण किया, तो यह तथ्य उभर कर सामने आया कि हाथ की पकड मे मासाहारी मात्र २२ मिनट और शाकाहारी १६० से २०० मिनट तक टिके रहे : मासाहारी मात्र ३८२ बैठक लगा सका, जबकि शाकाहारी ७३१ वैठके लगाने मे सफल हुए ।

ऐसे ही शाकाहारी सघ की मत्री कु एक्स. ई. निकलसन ने छ माह तक शाकाहार और मासाहार पर आश्रित १०-१० हजार बालको का परीक्षण किया तो हड्डिया त्वचा व पट्ठे तथा वजन मे मासाहारी बालको से शाकाहारी बालक बढकर निकले ।

अन्त मे एक मनोवैज्ञानिक घटना ! प्रसिद्ध उपन्यासकार वड-लेड काहलर सन् १९४६ मे पूज्य बापू की अहिसा पर लिखी गई एक रचना पढते-पढते गहन चिन्तन मे डूब गये कि उन्होने अपनी जीवन, सहचरी को वह रचना सुनाई । फिर उन्होने तत्क्षण यह निर्णय लिया कि वे जिदगी भर मासाहार नही करेंगे । बाद मे यह दम्पति भारत आए ! काहलर की धर्मपत्नी ने अहिसा की विशद जानकारी के लिए जैन साहित्य के प्रति लगाव दर्शाया और साहित्य के साए उनका चितन इतना अहिसक हो गया कि उन्होने सर्पो तक से मित्रता कर ली । उनका कथन था कि प्रेम-स्नेह के साये से प्राणी मात्र मानव का मित्र बन सकता है ।

कामना है, भावना है कि मासाहारियो का मानस बदले, उनके सोचने का दृष्टिकोण बदले, एक नई सृष्टि का निर्माण हो ! सत्य, सयम अहिसा, सेवा और समर्पण के साये मानव प्राणी मात्र के प्रति शुभ भावना रखे और जियो और जिने दो की पावन सस्कृति का अभयुदय हो । कोई किसी से न डरे ! सब सुखी रहे, जन, जन मिल-कर इस नई सृष्टि का सप्रयास निर्माण करे ।

—भवानी मंडी (राज.)

श्री भवरलाल कोठारी

खंड २

धर्मपाल-प्रवृत्ति उद्भव, विकास और सम्भावनाएं

अनुक्रम

धम्मे हरए बम्मे सान्तितित्थे,
अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो-विसुद्धो,
सुसीइभूओ पजहामि दोषं ।।

उत्तराध्ययन १२/६

धर्म मेरा जलाशय है, ब्रह्मचर्य शान्ति तीर्थ है, और कलुष भाव-रहित आत्मा प्रसन्नलेश्या है, जो मेरा निर्मल घाट है, जहा पर आत्मा स्नान कर कर्म-रज से मुक्त होती है ।

हम धरमपाल मतवाले हैं !

□ डा० इन्द्रराज बैद

△

भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ।

(१)

मोहान्ध हुए अज्ञानी—से,
हम भटक रहे थे गली-गली,
प्रभु तुमने आकर जगा दिया,
नव राह दिखा दी है उजली ;

अब मगल पथ के पथी हम, उन्मुक्त विचरने वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(२)

पारस को छू कर लोहा ज्यो,
सोना बन जाया करता है;
प्रभु नाम तुम्हारा लेकर नर,
सागर तिर जाया करता है;

गुरुदेव असंभव को भी हम, अब सभव करने वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले है ।।

(३)

हम छोड चुके दुर्व्यसनो को,
है त्याग चुके सब पापो को;
अब हमने जीना सीख लिया,

है शात कर दिया तापों को;

हम नही स्वय ही सीखे हैं, औरो को सिखाने वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही हम धरमपाल मतवाले हैं ॥

(४)

कुछ ऐसा हुआ उजियाला कि
जीवन की काया पलट गयी,
हिंसा, झूठ, दुराचारो की
कट काली छाया उलट गयी,

हम वने वीर के आराधक, जिन धर्म दिपाने वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ॥

(५)

नवकार मन्त्र को धारा है,
सामायिक के हम पात्र वने;
गुरु नाना की अनुकम्पा से,
आध्यात्म ज्ञान के छात्र वने;

हैं अग नये समता कुल के, हम जैन सुकर्मों वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ॥

(६)

प्रभु दरस तुम्हारे होते ही,
सम्पूर्ण विपमता शात हुई,
गुरुदेव तुम्हारी वाणी से,
मति सबकी ही निर्भ्रांत हुई,

हम मुक्ति-वरण के इच्छुक हैं, हम दूल्हे वडे निराले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ॥

(७)

गुरुदेव हमारी चाह यही,
हम सदा धर्म के पथ चले;
हम बढें उधर ही वीरव्रती,
जिस ओर हमारे सत चलें;

जिन ध्वज फहराने वाले हैं, हम अलख जगाने वाले है।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(८)

जो धार चुके व्रत जीवन मे,
वह व्यर्थ न जाने पायेगा;
ये प्राण भले ही जाय निकल,
पर धर्म न जाने पायेगा ;

जिस धर्म ने रक्षा की अपनी, हम उसके अब रखवाले है।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले है ।।

कार्यक्रम अधिकारी,
आकाशवाणी, पटना—८००००१

उद्भव

समता दर्शन प्रणेता, जिन शासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिवोधक, चारित्र चूडामणि, वाल ब्रह्मचारी परमपूज्य आचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म. सा संवत् २०२० मे रतलाम चातुर्मास पूर्ण कर मालवा के मन्दसौर, उज्जैन, इन्दौर, देवास, शाजापुर, आदि क्षेत्रो के वन-बीहडो मे, दुर्गम पहाडी और सपाट मैदानी क्षेत्रो मे अपनी पीयूष वर्षिणी वाणी से जिन धर्म के उदात्त और शाश्वत मानवीय मूल्यो को प्रसारित–प्रचारित करते हुए, असह्य परिषहो को सहते हुए विहार कर रहे थे। आचार्यत्व के पावन पथ पर आरूढ होने के पश्चात् गुरु गणेशाचार्य के उत्तराधिकारी पट्ट—शिष्य, धीर–वीर–गम्भीर गुणो के सागर आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा का प्रथम चातुर्मासोपरान्त यह भव्य विचरण देश भर मे फैले उनके प्रति अगाध श्रद्धा से युक्त शिष्य वृन्द, श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका हेतु विशेष आकर्षण का कारण था। अत आचार्य प्रवर जहा भी विचरते श्रमणोपासक उनके श्रीचरणो के दर्शन और पवित्र जिनवाणी के श्रवण हेतु क्रम-क्रम से पहुचते रहते थे।

आचार्य श्री के प्रशान्त मुखमण्डल, सवल देहयष्टि, और अगाध ज्ञान को सहज वोधगम्य, जनकल्याणकारी अभिव्यक्ति छोटे से कालखड मे मालव के विस्तीर्ण भूभाग मे आदर सहित चर्चित हो रही थी। विषम प्रसगो की सरल निष्पत्ति, निर्णय की दृढता और सर्वोपरि अविचल मन के सिद्धान्त निष्ठ व्यवहार और श्रमणाचारी के शुद्ध श्रद्धान पर अच्युत रह कर आचार्य प्रवर अपने अनुयायी वृन्द को भी आदर्श जिनोपासक के रूप मे जीवन साधने का मार्मिक उपदेश और जीवन्त प्रेरणा देने मे अहर्निश सलग्न थे। व्यक्ति और राष्ट्र का विवेचन, समाज और व्यक्ति के जटिल एकात्म सम्बन्धो का विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण के साथ युगधर्म के अनुपालन की अजस्र चेतना जागृत करते हुए बढते रहे आचार्य धरती का डगर अपने डग-डग पादविहार से मापते हुए।

हुआ और आज वह जाना जाता है 'धर्मपाल' नाम से । आज हमारे समक्ष 'धर्मपाल' हमारी एक धार्मिक व सामाजिक प्रवृत्ति बन गई है । धर्मपालो ने अपनी हार्दिक सरलता और सात्विकता का परिचय दे दिया है या यो कहे कि वे अपने धार्मिक व सामाजिक जीवन की दृष्टि से हमारी शरण मे आये हैं, अब हमे अपनी जिम्मेदारी को समझना है, उनके प्रति अपने कर्तव्य का पालन पूर्ण निष्ठा व सचाई से करना है, अन्यथा कालान्तर मे यह एक 'खतरा' बन जावेगा ।'

हमारे यहां शरण मे आने और शरण में लेने का बहुत बडा महत्त्व है । जो हमारी शरण ग्रहण करता है, उसके लिए हमे सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहिये । स्वय भूखे रह कर उन्हे हार्दिक प्रेम, भाईचारा व बन्धुत्व भाव देकर गले लगाना है । उनकी शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध करना है, उनके धार्मिक जीवन मे उनका सहयोगी बनना है, सामाजिक जीवन मे सतत मार्ग दर्शन करना है, उनकी बीमारी मे, सुख दु ख मे, हर समय उन्हे सहकार करके उनका स्वाभिमान बढाना है । जैन धर्म की सारी विशेषताओ से उन्हे परिचित कराके हर महत्त्वपूर्ण धार्मिक व सामाजिक पर्व को मनाने की सच्ची और सात्विक विधि उन्हे बतानी है । उनकी महिलाओ के साथ हमारी महिलाओ को उनके घर मे नि सकोच प्रवेश करके उनके खान–पान व प्रतिदिन के आचार–विचार के तरीको मे किस प्रकार से परिवर्तन आवे और किस प्रकार से वे धर्मपाल बहिने और उनके बालक, उनकी भावी सन्ताने सुसस्कारी बने इसका सतत ध्यान रखना सारे जैन समाज का कार्य है । उनके पैतृक सस्कारो मे मदिरा, मास, बीडी, होटले, सिनेमा आदि का समावेश है हमे इन सब दुर्गुणो से उन्हे मुक्त कराके हमारे परम्परागत सात्विक जीवन की तरफ आकर्षित करके एक सच्चे धर्म बन्धु का परिचय देना है । यही जैन धर्म की 'स्व धर्म वात्सल्यता' है ।

हमारे यहा तीर्थंकर नाम कर्म को उपार्जन करने के बीस कारण बतलाये गये है, उनमे 'स्वधर्म वत्सलता' भी एक कारण माना गया है । हमारा हार्दिक प्रेम और आत्मीय भाव पाकर वे गद्गद् हो जावेंगे, उनकी सुषुप्त चेतना अवश्य जागृत होगी और हमारे सहयोग

और सहवास से वे अपने आपको धन्य भाग समझेंगे और उनका 'जैन धर्म' को स्वीकार करना अक्षरश सार्थक होगा ।

किसी भी जाति को शिक्षा और सस्कारो की दृष्टि से नये साचे मे ढालने मे एक पीढी जितना अर्थात् ५० से ६० साल जितना समय लगना स्वाभाविक है । उनके अपने पुराने अन्ध विश्वासो व रीति रिवाजो को मिटा देना सरल काम नही है । जीवन के नये मूल्य उन्हे सिखाने मे, उनके प्रति दृढ आस्था पैदा करने मे एक लम्बे समय व धैर्य की आवश्यकता है । यह कार्य एक व्यक्ति, एक धर्माचार्य या एक श्रीमन्त व्यक्ति का नही है । यह सारे मानव समाज का कार्य है । जो भी प्रबुद्ध साधक, जैन धर्मानुयायी, साधु-सन्त, धर्मोपदेशक, व्यापारी विद्वान् और श्रीमत यह समझता है कि यह एक श्रेष्ठ कार्य है । उनमे से प्रत्येक को आगे आकर इस कार्य मे तन, मन व धन से सहयोग करना चाहिये, बिना किसी प्रकार के प्रतिफल या यश की भावना के एक नई पीढी को बनाने का, नये समाज की रचना करने का दायित्व हमने मोल लिया है । हमे अपने खुद के आचार विचार खान पान, रहन, सहन, तथा जीवन को इतना सादा और सात्विक रखना चाहिये कि वे अनायास हमारा अनुकरण करके अपने जीवन को अनुकरण शील बना सकें ।

हमारे महामत्र नवकार मत्र का महत्त्व उन्हे समझाया जाना चाहिये । हमारे व्रत और आचार उन्हे सरल भापा मे सीखाए जाने चाहिये, जिससे 'जैन' कहलाने की सामान्य योग्यता या पात्रता उनमे आ जावे । उनके रग रग मे मानवता के सस्कार इस प्रकार से व्याप्त हो जावे कि वे जैन धर्म को ग्रहण करने मे अपने आपको सौभाग्यशाली माने और उनमे निम्न गुणो का क्रमिक विकास सभव हो सके —

(१) उच्च विचार (२) रूपवत्ता (३) प्रकृति सौम्य, (४) लोकप्रियता (५) सहृदयता (६) पाप भीरूता (७) निष्कपटता (८) दाक्षिण्य कुशलता, (९) लज्जावान्, (२०) दयालुता (११) मध्य स्थभाव समता, (१२) सौम्य दृष्टि, (१३) गुणानुरागी, (१४) सत्य-वादी (१५) दीर्घ दर्शिता (१६) विशेषज्ञता (१७) विनीतता (१८)

कृतज्ञता (१९) परोपकारी वृत्ति (२०) लक्ष्य सिद्धि और (२१) धर्मानुयायी ।

जैन धर्म जैसे श्रेष्ठ विचार धारा वाले धर्म को ग्रहण करने के पश्चात, सदगुरुओ का सान्निध्य व उपदेश प्राप्त करने के पश्चात तथा परम्परागत जैन धर्मानुयायियो का सब प्रकार का सहयोग व सरक्षण प्राप्त करने के पश्चात 'धर्मपाल' नाम धारी नये जैन बन्धुओ मे उर्पयुक्ता सर्व साधारण मे पाये जाने योग्य २१ गुणो का विकास हो तो वे 'श्रावक' की कोटि मे आ सकेंगे और उनके जैनत्व के सस्कार इतने दृढ और स्वाभाविक हो जावेगे कि उनको दिया गया 'धर्मपाल' नाम भी सार्थक होगा और उनका जैन धर्म को धारण करना कालायान्तर मे एक ऐतिहासिक सत्य सिद्ध हो जावेगा । उनके पीछे व्यय की जाने वाली जैन समाज की शक्ति श्रम और धन तो सार्थक सिद्ध होगे ही यह निर्विवाद सत्य है ।

—श्री महावीर जैन रत्न ग्रंथालय, जलगांव—४२५००१

△

कोई मनुष्य ऐसा हो नही सकता जिससे घृणा की जाय या जिसे छूने से छूत लगती हो । सभी प्राणियो की आत्मा परमात्मा के समान है और शरीर की बनावट के लिहाज से मनुष्य मनुष्य मे कोई अन्तर नही है ।

जो गन्दगी फैलाता है वह दोषी नही और जो हरिजन गदगी साफ करता है वह दोषी कहलाये- नीच गिना जाय, यह कहा का अनोखा न्याय है ?

—श्रीमद् जवाहराचार्य

शराब या यमदूत ?

☐ अनुवादक-श्री काशीनाथ त्रिवेदी

▽

शराब की बोतल मे मौत की परछाई दीख पडती है। उसकी एक-एक घूट मे रौरव नरक के कीडे बिल-बिलाते है। आप उसे जरा चखिए भर, बस, वह आपको चोरी करना सिखायेगी, आपसे लूट-पाट करायेगी, व्यभिचार का पाठ पढायेगी और खून करना बतलायेगी। एक बार अपने घर मे शराब को आने भर दीजिये, आपकी स्त्री के चेहरे की प्रसन्नता उड जायेगी। एक बार शराब को अपने घर मे घुसने दिया कि आपके बालक आनन्द से नाचते-कूदते है, उसी क्षण से रोने-चिल्लाने लगेंगे। मनुष्य का यह सत्यानाश करती है, स्त्री को चार आसू रुलाती है और आपके बालको की कब्र तैयार करती है।

मारकाट मे मरने वालो और रण-क्षेत्र मे तलवार-बरछे से कटने वालो की अपेक्षा कितनी अधिक जानें एक शराब के प्याले से नष्ट होती होगी ? भगवान ही जाने। शराब के एक ही प्याले ने लाखो–करोडो को जमीदोज किया है, और करोडो का सत्यानाश। हरे-भरे खेत उजड गये शराब के प्रताप से, बडे-बडे महल जमीदोज हो गये शराब के शाप से। और शहशाह-बादशाह के राज्य जमीन की सतह से उखड गये शराब के प्रभाव से पागलो के अस्पताल, बदमाशो और गुण्डो के अखाडे, वेश्याओ के नरकालय ये सब शराब की ही देन है। आज अपने कमाऊ बेटे को देख कर प्रसन्न होने वाला बाप कल शराब पीता और बेटे पर कुल्हाडी तानता है। आज चाद और सूरज की साक्षी मे पत्नी को जिदगी-भर पालने की प्रतिज्ञा करने वाला पति, कल शराब पीकर, पत्नी को मार डालता है। आज अपने नन्हे बालक को चूम-चूम कर खिलाने वाला पिता कल शराब पीता है और बालक को उसकी मा की गोद से छीन कर जमीन पर पछाड

देता है। अभी कल ही इस आदमी की आंखो मे करुणा का सागर लहरे ले रहा था, आज वह ऐसा हत्यारा क्यो बन गया ?

शराव की एक-एक बूद मे मनुष्यता के आसू भरे है। उसमे पत्नी की आहे है, बालक की चीखे है और है माता के हृदय को चीरने वाला रुदन। जो उसे छूता है, वह मौत को गले लगाता है। दुख और मौत ही उसके वरदान है।

उस शराव की दुकान पर कोई फटेहाल आदमी आ रहा है। उसके गाल पिचक गये है आखे गहरी धसी हुई है, कमर झुक गई है। उसका चेहरा डरावना-सा लगता है। सास लेता, धीमे कदम, लडखडाता आ रहा है। एक धक्का मारा कि गिर जाय इतना कमजोर है। वह आता है। इसी दुकान पर दूसरे दो नौजवान तन कर खडे है, वह भी उधर ही जाता है। नौजवान उसके मुह की ओर देख कर हसते है और शराव की वोतल की तरफ अपने हाथ वढाते है। वह कुवडा शरावी नौजवानो की हसी सह नही सकता। गुस्से-भरी चौंकाने वाली आवाज से कहता है :—

भाइयो! तुम मेरी हसी क्यो करते हो? मैं कुवडा हू, इसलिए? मै भी पहले तुम्हारी ही तरह सीना तान कर चलता था और धरती कपाता था। मेरा यह चेहरा भी तुम्हारी तरह हसमुख था। गालो के ये गड्ढे भी पहले भरे थे, और चेहरा भी तुम्हारी तरह लाल सुर्ख था। मेरे भी घर था, वार था, रिश्तेदार थे, परी सी सुन्दर स्त्री थी और थे खूवसूरत वालक भी। लेकिन इस शरावी वाप की आखो के सामने ही वे वालक कुम्हला गये, मर गये। इस शरावी पिता ने क्या कम देखा है? जिस घर मे किसी समय हम सब प्रेम-पूर्वक अपना जीवन विताते थे। आह! उस घर मे मैंने शराब की बोतलों की कुश्ती करवाई। जिस घर मे अमृत के घडे भरे थे, उस घर मे हलाहल-पोखरें भरवाये। आज मरने के वजाय जीने मे फासी लगाने जैसी, ओफ! मेरी हालत है। औरत मर चुकी बालक गुजर चुके, मकान जमींदोज हो चुका! इस दुनिया मे, मौत को छोडकर, अब मेरा कोई रखवाला नहीं रहा। यह क्यो? केवल

बार, एक दोस्त के आग्रह से, मैंने एक प्याली शराब पी और साथ ही दुःख सर्वनाश और मौत को भी अपने घर बुला लिया।

उसकी जबान रुक गई। हाथ-पैर जकड गये और वह ऊपर ओर टकुर-मुकुर देखने लगा। वे दो नौजवान और भीड के लोग उसे एक-टक देखते ही रहे लेकिन वह कुछ बोल न सका। वे कुछ पूछें, इसके पहले तो वह न जाने कहा गायब हो गया।

ऐसी घटनाए तो कलवरिया के पीपो के सामने अनगिनत होती है। आखवाले देख सकते हैं, आपके आखें हैं?

एक दिन एक पेशेदार आदमी कलवरिया पर आ धमका। दुकान मे घुसकर उसने एक पाव शराब मागी। पीपे की नली घमाते हुए कलवार ने कहा—क्यो भाई, अकेले क्यो? अपने किसी यार-दोस्त को ले आओ न? वह बोला—मैं रोज नही पीता। मेरे घर-बार है। चार अक्षर पढा हू। मेरे भी नाक है। यह सुन कर कलवार जरा रौब के साथ, तिरस्कार पूर्वक बोला—राम, राम! देखता हू, ६ महीने बाद तुम कैसे रहते हो?

एक बरस बीत चका है। अब तो वह पक्का शराबी है। उसके कपडे फट गये है। घर-बार नही रहा। वैसे ही भटका करता है जैसे दूसरे शराबी। कलवरिया के नजदीक बैठ कर भीख मागता है। एक दिन उसे देख कर कलवार ने कहा—क्योरे, अपने दोस्त को लेकर आया है न? लेकिन फिर दया दिखला कर कहने लगा—आ भाई, एक प्याली पी जा। लेकिन इतने मे तो उस शराबी की आखें चमक उठती हैं और थोडी खुमारी आ जाती है। उसे अपनी पहली दशा याद आती है, घर-बार की स्मृति ताजी होती है, और वह एक लम्बी सास लेता है। फिर वह अपने बदन पर पहने कपडो को देखता है, अपना गिरवी रक्खा हुआ खेत उसे याद आता है, और घर पर बार-बार तकाजे के लिए आनेवाली साहूकारो की टोली उसकी नजर के सामने खडी हो जाती है। उसकी आखे खुल जाती हैं। इतने मे उसके हाथो मे शराब की प्याली आ पडती है। वह चौंक कर चिल्ला

उठता है—शराब ! शराब ! तू ने ही मेरा सत्यानाश किया है और प्याले को जमीन पर फेक देता है, दुकान से बाहर निकल जाता है और मुट्ठी बाध कर भाग निकलता है । उस दिन के बाद उसने कलवार का फिर मुंह नही देखा ।

लोग कहते हैं कि लडाई भयानक चीज होती है । उसके कारण लाखो आदमी लगडे हो जाते है लाखो असहाय विधवाएं वहाती है आसू और लाखों बालक अनाथ बन कर दर-दर भूखे भटकते हैं यह सच है । लेकिन भगवान जानते हैं, कि शराब की लत के कारण लडाई की अपेक्षा कही अधिक आदमी घुल-घुल कर बेमौत मरते होगे । अनाथो और अपगो को, लूलो-लगडों को फटे-टूटे चीथडे पहने घूमने वालो को गली, मोहल्ले, हाट और बाजार मे मागने वालों और हृदय-भेदी रूदन करने वाले स्त्री-पुरुषो से पूछो, तो कहेगे कि शराब के एक प्याले ने हमारी दुंदशा की है । इसके मुकाबले लडाई मामूली दिखाई देती है । लेकिन शराब के प्रताप से घर नष्ट होते हैं, शील लुटता हे, गरीबी जड जमाती है, पापाचार बढता है और खून की तो हद ही नही रहती ।

अकाल पडने पर हम काप उठते है । लेकिन शराब तो वह अकाल है, जो जमीन को ऊजड बनाती है, धन को बरबाद करती है और रोग-शोक को बुलाती है । अकाल तो सिर्फ हड्डी और चमडे पर ही असर करता है, पर यह शराब तो वरसो तक लाखो आदमियों के जीवन मे आग लगाती और उन्हे धन-जन से विहीन करके जिन्दा श्मशान मे सुलाती है ।

कहा जाता है, इससे सरकार को आमदनी होती है लेकिन आमदनी कैसी ? आमदनी करने वालो को तो यह निगल जाती है । तो यह कहो न कि शराब से आमदनी नही होती, वह तो खून चूस कर धन बढाती है और आमदनी किससे होती है । शराब नया धन थोडे ही पैदा करती है ! शराब की इस आमदनी मे तो शराबी के बे-मौत मरने से जो लाखों करोडो विधवाएं और अनाथ गरीबी की चक्की मे पिसकर सारा

जीवन दु:ख और भूख की तप मे बिताते हैं, उनकी गरम आहे है। इसे आमदनी कहे ? शराब की आमदनी खून का पैसा है जो शराब की आमदनी पर जीना चाहता है, वह खून से अपना पेट भरता है।

आपके गाव मे आकर किसी ने शराब की दुकान खोली। एक-दो दिन तो आपने कुतूहल की नजर से उसे देखा। फिर आपके नौजवान उस कलवार से बातें करने लगे। एक-दो दिन उन्हे मुफ्त शराब पिलाई गई बस, उन्हे शराब का चस्का लग गया फिर पूछना ही क्या था ? आप जिन्हे सब गुणो के आगर और नागर मानते थे, वे गुण्डे और बदमाश बन गये। आप जिन्हे देव-दूत समझते थे, वे अब शैतान के चौबदार बन गये इसकी वजह ? जिस दिन उस कलवार ने आपके गाव मे शराब की दुकान की नीव डाली उसी दिन उसने आपके धन-दौलत की नीव को हिला दिया, इतने मे तो एकाएक आपका जवान-जोधा बेटा गायब हो गया। दूसरे दिन गाव के किनारे उसकी लाश आपको मिली, उधर आपके घर की अंधेरी कोठरी से उसका लिखा एक पत्र भी हाथ लगा। उस पत्र मे उसने अपनी वसीयत लिखी थी। यह रहा उसका वसीयतनामा —

१. समाज को अपनी ये भ्रष्ट आदतें विरासत मे दे जाता हूं।

२ शराब के पीछे मैंने जो धन उडाया, उसका कर्ज विरासत मे मा-बाप को सौपे जाता हू।

३ अपने भाइयो और बहनो को शराब की बदबू से भरे हुए अपने जीवन की याद सौंपे जाता हू।

४ अपनी स्त्री को, जीवनभर रोने और मेहनत मजदूरी करके पेट भरना, विरासत मे दिये जाता हू।

५ अपनी सतान को, यह सदेश विरासत मे दिये जाता हू, कि शराबी बाप के घर पैदा होकर अब तुम अपना जीवन दर-दर भटकते हुए बिताना।

अपने सगे-सम्बन्धियो के लिए कितनी कीमती विरासत

छोड़कर वह नौजवान यम के दरबार मे पहुंचा । शराव ! बलिहारी है तेरी !!

जांच से पता चलता है, जेलखानों में, पागलों के अस्पताल मे शराबियो की संख्या बहुत ज्यादा होती है । तीन सौ आदमियों के एक जेलखाने की जाच करने से पता चला कि उसमें २८१ पूरे पियक्कड थे । एक जल्लाद कहता था—मैंने सात सौ कैदियों को फासी दी है, लेकिन उनमें से एक भी ऐसा न था जो शराबी न हो ।

उस दिन एक बाबा जी रास्ते से जा रहे थे । एक नन्हा लंगडा बालक दौडता-दौडता उनके पास पहुंचा और पैर छ कर कहने लगा—दादा, आप हमारे यहां नही चलियेगा ? मेरे पिता को पीले कोट वाले ले गये हैं । उस बाबाजी ने धीरे से पूछा—बेटा, ऐसे कोई ले भी जा सकता है क्या ? तेरे घर और कौन-कौन हैं ? पत्थर को भी रुलाने वाली करुण आवाज मे बालक ने कहा—क्या कहूं, मुझे कुछ सूझ ही नही पडता । घर पर मेरे दो छोटे भाई है, एक बहन है । घर मे खाने को कुछ भी नही है । हमारी मा आज मर गई । इसलिए मेरे पिताजी को पकड कर ले गये हैं । साधू कुछ तो समझा लेकिन, यह नहीं समझ सका कि पकडे क्यों गये ? इसलिए फिर पूछा—तेरे पिता को पकड क्यों ले गये ? क्या आज कुछ हुआ था ? लडके की आख मे आसू उमड आये और सिसकियां लेकर बोला—दादा ! मैं इतना ही जानता हू कि मेरे पिताजी लाल-लाल आखें करके घर आये, मेरी मा कुछ कहने लगी, तो पिताजी उस पर टूट पडे, एक दो लाते मारी, मेरी मा मर गई । मैं अखबार बेचता हू । और दो-चार पैसे कमा लेता हूं । जज कहता था, मेरे पिता को वे लोग कल लौटा देंगे और सो भी कहते है, सूली पर चढाने के बाद । आप चलो न ।

साधू बच्चे के पीछे-पीछे जाता है । उस खूनी आदमी के पास जाकर धर्म की दो बाते कहता है । उससे कहता है—भाई, भगवान ने शिला की अहिल्या बनाई । गणिका तारी, गीद्ध को तारा और कीचड़ मे फसे हुए एक हाथी को भी उबारा, उसी भगवान को याद

कर वही निर्बलो का बल है । खूनी एकाएक रोने लगता है और रुक-रुक कर कहता है—बाबाजी, कानून का क्या कसूर मेरे अनाथ बच्चो का क्या होगा ? शराब के नशे मे मुझसे ऐसा काम हो गया । भगवान सबको सद्बुद्धि दे कि कोई शराब की दुकान न खोले । इसके बाद साधू बच्चो के पास आया । कुछ देर बाद जब वह घर लौटने लगा तो पीछे से गाडी दौडती हुई आई । गाडी आकर आगन मे ठहर गई । जाकर देखा तो उस हत्यारे की लाश थी । साधू ने स्वय उसकी लाश को उतार लिया । इतने मे बच्चे आ पहुचे । वे तो हक्के-बक्के से अपने बाप की लाश को देखते ही रहे । वह लगडा बालक तो बुरी तरह चीख उठा और दूसरे बालक भी घबरा कर रोने लगे । यह देख कर उस साधू को बहुत दु ख हुआ । वह समझ गया, शराब अज्ञानी और गरीब आदमियो का कैसा सत्यानाश करती है । उसकी आखे खुल गई । मुर्दे के सामने झुक कर जलते दिल से करुणा निधान ईश्वर को साक्षी रक्खा और वही बैठे-बैठे प्रतिज्ञा की कि इस शराब को जडमूल से नष्ट करने मे अपनी जान लडा दू गा । प्राणो को निचोड डालू गा । चाहे जैसी आफतें आये, लेकिन मैं बच्चो को मातृहीन और पितृहीन होने से बचाऊ गा, स्त्रियो को विधवा होने से रोकू गा, जनता की जनता की दौलत को बरबाद होने से बचाऊ गा, पृथ्वी पर होने वाले पापो को रोकू गा और सदा प्रार्थना करू गा कि ईश्वर का आशीर्वाद इस दुनिया पर बरसे । वे बच्चे साधू की सेवा मे रहे और उनकी कुम्हलाती हुई हसी फिरसे खिलने लगी ।

गुण्डो, चोरो, लफगो, सूख कर लकडी बने हुए कवालियो, जुआखोरो, कलवारो और मडरियो के घर जा-जाकर मैं उनसे मिलता हू और हाथ जोड कर उनसे प्रार्थना करता हू कि शराब छोडो । उस एक जर्जर झोपडी मे एक स्त्री बैठी है । उसके सिर मे उसके पति ने गहरा घाव कर दिया है । वह बेचारी फूट-फूट कर रो रही है । खाने को अनाज नहीं है । आहे भर रही है । उसकी शपथ दिला कर तुम्हारे हाथ जोडता हू और कहता हू कि शराब छोडो । कल उस घर मे एक आदमी पीकर आया । लोहे के दरवाजे से उसका सिर टकराया सिर फूट गया, वह मर गया । आज उसकी भूखी-प्यासी

स्त्री नन्हे से सुकुमार बालक को छाती से लगाये बैठी है, लेकिन भूखी माता के स्तनो मे दूध सूख गया है और बालक मारे भूख के तडप-तडप कर मर रहा है । इस माता के करुण-रुदन के नाम पर और इस बालक की अन्त समय की चीखो के नाम पर मैं तुमसे फिर हाथ जोड कर, घुटने टेक कर प्रार्थना करता हू कि शराब छोडो, छोडो, छोडो ।

❀हरिजन-सेवा वर्ष १३ अंक ५ जुलाई १९६४ से साभार उद्धृत । सकलनकर्ता : रामचन्द्र नन्दवाना

धर्म

महात्मा गांधी रोगियों की सेवा करना अपना धर्म समझते थे । एक बार वो रोगियों की सेवा कर रहे थे कि उनसे मिलने एक अमरीकी मिशनरी आ गया । गांधी जी को एक रोगी की सेवा करते देख उसने व्यंग्य से कहा, "आपका धर्म क्या है ?"

गाधी जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मेरा धर्म रोगियों की सेवा करना है ।"

यह सुनकर वह मिशनरी शर्मिदा सा हो गया :

□ श्री मनोज आंचलिया
११६ देवाली, उदयपुर (राज०)

मानव-आहार : शाकाहार ।
मांसाहार · महान् पापाचार

● श्री अशोक श्रीश्रीमाल

★

शाकाहारी जीवन की महत्ता का सशक्त अनुमोदन करते हुए पाश्चात्य वैज्ञानिक श्री जी ए व्राइट रासायनिक विश्लेषण के आधार पर लिखते है, 'आप क्या भोजन करते हैं, जो भोजन करते है उसे कैसे प्राप्त करते हैं, इसी पर आपकी सतति एव मानव जाति का भवि ष्य निर्भर करता है ।'

भारतीय सस्कृति ने इसी चितन को एक छोटी-सी सूची मे यो आवद्ध किया है

'यादृश भक्षयेदन्न वुद्धिर्भवति तादृशी'

आइए, शाकाहार की महत्ता को प्रतिपादित करने वाले विश्व धर्मो और उनके प्रवर्तको का उद्घोप सुनें ।

जैनधर्म मे शाकाहार :

महाश्रमण भगवान् महावीर ने कहा 'सव्वेसि जीविय पिय नाइवाएज्ज कवण' अर्थात् किसी भी प्राणी की हिसा न करो क्योकि ससार मे सभी को जान प्यारी है, मरना कोई नही चाहता !

कलिकाल मर्वत्र आचार्य हेमचन्द्र सूरि ने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'योग-शास्त्र' मे लिखा है—

सद्य संभृघितानन्त जन्तु सन्तान दूपित्म ।
नरकाह व निषाघेय, कांशनीयात् पिशित् सुधी'

अर्थात् जीव को वध करने के तुरत पश्चात् उसके मास मे असख्य जीवो की उत्पत्ति हो जाती है । अत घोर हिसा के कारण मास

भक्षण नरक का कारण है ।

यही बात आचार्य अमृत चन्द ने 'पुरुषार्थ सिद्धयुपाय' मे बतई है । और बाईसवे तीर्थकर दयामूर्ति नेमिनाथ ने तो मासाहारी राजाओ के लिए एकत्रित पशुओ के वध को रोकने के लिए तोरण द्वार छोडकर प्रवज्या ग्रहण कर ली थी ।

बौद्ध धर्म में शाकाहार :

तथागत महात्मा बुद्ध ने कहा था–'पाणातिपात्र वैरमणी कुसल (सम्माद्विद्धि सुत) किसी प्राणी की हिंसा मत करो ।

हे महामते मैं यह आशाकर चुका हू कि पूर्व ऋषि प्रणीत भोजन मे गेहू, जौ, चावल, मू ग, उडद, घी, तेल, दूध, शक्कर, खाड, मिश्री ही लेने योग्य है । मास भक्षण से कौढ जैसे भयकर रोग उत्पन्न होते है ।

'अ गुतर निकाय' ५–१७७ मे बताया गया है कि बौद्ध उपासको को मास, मदिरा, विष एव सजीव प्राणियो का व्यापार नही करना चाहिये ।

सनातन धर्म, वैदिक धर्म में मांसाहार निषेध :

भगवान श्री कृष्ण ने कहा है :

सर्वे वेदा न तस्कुर्यं, सर्वे यक्षाश्व भारत
सर्वे तीर्था भिषेकाश्च, यत्कुर्यात प्राणणिना दया ।

अर्थात् प्राणीयो पर दया करने से शुभ फल प्राप्त होता है।

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता कृय विकृयी ।
सस्कृर्ता चोपहर्ता च, खादकश्चेशि घातका ।।
(मनुस्मृति ५/४५।)

अर्थात् मारने का परामर्श देने वाला, बेचने वाला पकाने वाला परोसनेवाला, और खानेवाला ये सब पापी और दुष्ट है । जिसका

मास मैं यहा खाता हू (मा) मुझको (स) वह भी अगले जन्म मे काट–काट कर खाएगा । (मनुस्मृति ५/६५)

'हे अग्नि । मास खाने वालो को अपने मुख मे रख' (ऋग्वेद १०–८७–२)

मास का प्रचार करने वाले सव राक्षस के समान हैं । वेदो मे मास खाने का कही भी उल्लेख नही ।

(सत्यथार्थ प्रकाश, समुल्लास, पृष्ठ ५४५)

शरावी और मासाहारी के हाथ का खाने पीने मे भी घोर पाप है (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास, पृष्ठ १०/३५४)

'जो लोग अडे मास खाते हैं, मैं उन दुष्टो का नाश करता हू । (अथर्व वेद काड ८, वर्ग ६, मत्र १३)

सिक्ख धर्म में मांसाहार निषेध:

सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक ने कहा—मेरे शिष्यो ! तुम मास और शराव का सेवन मत करना ।

'मोहसिन फानी दविस्तान ए मजाहिव' भाग २ पृष्ठ २४८
मास खाने वाले सव राक्षस हैं । (नानक प्रकाश, पूर्वाद्ध अध्याय ५५)

जो रत लगे कपड, जामा होवे पलीत ।
जो रत पीवे मानुपा, तिन क्यो निमल चित्त ॥

(गुरु ग्रन्थ साव वार माझ, महल्ला १, पृष्ठ १४०)

इस्लाम धर्म मे मासाहार विरोध ·

'कुरान' के प्रारम्भ मे लिखा है—

'विस्मिल्लाहिर रहमानीर्रहीम–यहा खुदा का विशेप रहीम अर्थात् सव पर रहम करने वाला दिया है ।

पैगम्बर मोहम्मद साहब ने पणित्र ग्रन्थ 'हदीस' मे अपना कलाम फरमाया है 'दूरहमु मनफिल अर्द यरहम कुमुर्रहमामु'

(अर्थात् दुनियावालो पर तुम रहम करो। क्योकि खुदा ने तुम पर बडी मेहरबानी की है।)

'कुरान शरीफ मे सुरा हज जिकर' मे फरमाया है—'लई यना लल्लाह लुह मुहा वला दिया हो वला की यना लुहत तक्वा।'

(अर्थात् अल्लाहताला को तुम्हारी कुर्बानियो के गोश्त और खून से कोई वास्ता नही। उसे केवल तुम्हारे विश्वास की जरूरत है।)

ईसाई धर्म मे शाकाहार का महत्त्व :

यह सोचते हुए कि अभी तो दूर जाना है, यह भेड का बच्चा थक गया होगा। उसे कधे पर उठा लेने वाले दया के अवतार ईसा-मसीह ने कहा था—

'शाकाहार सबसे उत्तम भोजन है।'

(जेनीस चेप्टर १ पृष्ठ २६७)

किसी भी प्राणी की हिसा मत करो। (१० वी मे ५ वी आज्ञा)

'मेरे शिष्यो, जीव-हिसा और मास भक्षण से सदैव दूर रहना और हमेशा शाकाहार भोजन ही करना।' (चेप्टर ३३-६१-१)

ससार के छोटे-बड़े सभी जीव बराबर है। अत सुख-दु ख का अनुभव करके जीना चाहते है। किसी को दुख मत दो। (महान् सत सेट फ्रासीस)

'मासाहारियो के पेट चलते फिरते कब्रिस्तान है।' जार्ज बर्नाड शा

पारसी धर्म और जीवदया

यकीनन दोजख की आग पछतावा उनके लिए हर वक्त तैयार है, जो अपनी ख्वाहिशात बुझाने के लिये और दिल्लगी के लिए बेजु-

वान जानवरो को सताते और तकलीफ देते है—जिदा वस्ता ।

परमात्मा की आज्ञा जीवहिंसा करने वालो और कराने वालो को मौत की मजा है। (इजरने की ३२ वें हाय)

शाकाहार के समर्थन मे महान् मनीषियों का चिंतन :

१ मासाहार से पाशविक वृत्तियो मे वृद्धि हो मानव व्याभिचार एव मदिरापान की ओर प्रवृत्त हो पतन के गर्त से गिर जाता है। (टालस्टाय)

२ मासाहार से परहेज सैकडो यज्ञो मे आहुति से वढकर है (सन्त तिरुवल्कर)

३ परहित सरिस धर्म नहि भाई,
पर पीडा सम नही अघमाई ।
(सन्त तुलसीदास)

४ जीव हत्या न कर वावरे, सव जीव एक समान ।
हत्या कभी छूटे नही, कोटिक सुनो पुराण ॥
(सत कवीर)

५ अपने जीवन मे मैं पूर्ण शाकाहारी रहा हू और इस आहर मे मेरी पूर्ण आस्था और विश्वास है - (भारत रत्न एम विश्वश्वरैया)

६ मास को किसी भी रूप मे जीवन के लिए आवश्यक मानना निरी मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नही
(डॉ अल्वर्ट सितजर नोवल पुरस्कार विजेता)

शाकाहार का पूर्ण समर्थन करते हुए मैं मानता हू कि मानव के मनो भावी को यह आहार भौतिक रूप से प्रभावित करता है और इसी आहार मे मानव का कल्याण निहित हैं—
(डॉ अल्वर्ट आइस्टीन, नोवल पुरस्कार विजेता)

८ मास और शराव मानवता के शत्रु हैं ।
(पाइथोगोरस)

९. मासाहार मानव शरीर की रचना के सर्वथा विपरित तथा खतरनाक है । (डॉ. जे. एच. किलाग एम. डी)

शाकाहार की शक्ति :

अतीत मे अमेरिका के देल विश्वविद्यालय मे प्रो फिशन ने ४९ शाकाहारी और ४९ मासाहारी समवयस्क पुरुषो का परीक्षण किया, तो यह तथ्य उभर कर सामने आया कि हाथ की पकड मे मासाहारी मात्र २२ मिनट और शाकाहारी १६० से २०० मिनट तक टिके रहे : मासाहारी मात्र ३८२ बैठक लगा सका, जबकि शाकाहारी ७३१ वैठके लगाने मे सफल हुए ।

ऐसे ही शाकाहारी सघ की मत्री कु एक्स ई. निकलसन ने छ माह तक शाकाहार और मासाहार पर आश्रित १०-१० हजार बालको का परीक्षण किया तो हड्डियां त्वचा व पट्ठे तथा वजन मे मासाहारी बालको से शाकाहारी बालक बढकर निकले ।

अन्त मे एक मनोवैज्ञानिक घटना ! प्रसिद्ध उपन्यासकार वड-लेड काहलर सन् १९४६ मे पूज्य बापू की अहिसा पर लिखी गई एक रचना पढते-पढते गहन चिन्तन मे डूब गये कि उन्होने अपनी जीवन, सहचरी को वह रचना सुनाई ! फिर उन्होने तत्क्षण यह निर्णय लिया कि वे जिदगी भर मासाहार नही करेंगे । बाद मे यह दम्पति भारत आए ! काहलर की धर्मपत्नी ने अहिसा की विशद जानकारी के लिए जैन साहित्य के प्रति लगाव दर्शाया और साहित्य के साए उनका चितन इतना अहिसक हो गया कि उन्होने सर्पो तक से मित्रता कर ली । उनका कथन था कि प्रेम-स्नेह के साये से प्राणी मात्र मानव का मित्र बन सकता है ।

कामना है, भावना है कि मासाहारियो का मानस बदले, उनके सोचने का दृष्टिकोण बदले, एक नई सृष्टि का निर्माण हो ! सत्य, सयम अहिसा, सेवा और समर्पण के साये मानव प्राणी मात्र के प्रति शुभ भावना रखे और जियो और जिने दो की पावन सस्कृति का अभयुदय हो ! कोई किसी से न डरे ! सब सुखी रहे, जन, जन मिल-कर इस नई सृष्टि का सप्रयास निर्माण करे ।

—भवानी मंडी (राज.)

श्री भवरलाल कोठारी

खंड २

धर्मपाल-प्रवृत्ति उद्भव, विकास और सम्भावनाएं

अनुक्रम

धम्मे हरए बम्भे सान्तितित्थे,
अणाविले अन्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो-विसुद्धो,
सुसीइभूओ पजहामि दोषं ।।

उत्तराध्ययन १२/६

धर्म मेरा जलाशय है, ब्रह्मचर्य शान्ति तीर्थ है, और कलुष भाव-रहित आत्मा प्रसन्नलेश्या है, जो मेरा निर्मल घाट है, जहा पर आत्मा स्नान कर कर्म-रज से मुक्त होती है ।

हम धरमपाल मतवाले हैं !

□ डा० इन्द्रराज बैद

△

भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ।

(१)

मोहान्ध हुए अज्ञानी—से,
हम भटक रहे थे गली-गली;
प्रभु तुमने आकर जगा दिया,
नव राह दिखा दी है उजली ;

अब मगल पथ के पथी हम, उन्मुक्त विचरने वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(२)

पारस को छू कर लोहा ज्यो,
सोना बन जाया करता है;
प्रभु नाम तुम्हारा लेकर नर,
सागर तिर जाया करता है;

गुरुदेव असंभव को भी हम, अब सभव करने वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले है ।।

(३)

हम छोड चुके दुर्व्यसनो को,
हैं त्याग चुके सब पापो को;
अब हमने जीना सीख लिया,

है शांत कर दिया तापों को;

हम नही स्वय ही सीखे हैं, औरो को सिखाने वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(४)

कुछ ऐसा हुआ उजियाला कि
जीवन की काया पलट गयी,
हिंसा, झूठ, दुराचारो की
कट काली छाया उलट गयी;

हम वने वीर के आराधक, जिन धर्म दिपाने वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(५)

नवकार मन्त्र को धारा है,
सामायिक के हम पात्र वने,
गुरु नाना की अनुकम्पा से,
आध्यात्म ज्ञान के छात्र वनें;

हैं अग नये समता कुल के, हम जैन सुकर्मों वाले हैं ।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(६)

प्रभु दरस तुम्हारे होते ही,
सम्पूर्ण विषमता शात हुई,
गुरुदेव तुम्हारी वाणी से,
मति सवकी ही निर्भ्रात हुई,

हम मुक्ति-वरण के इच्छुक हैं, हम दूल्हे वडे निराले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(७)

गुरुदेव हमारी चाह यही,
हम सदा धर्म के पथ चलें;
हम बढें उधर ही वीरव्रती,
जिस ओर हमारे सत चलें;

जिन ध्वज फहराने वाले हैं, हम अलख जगाने वाले है।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले हैं॥

(८)

जो धार चुके व्रत जीवन में,
वह व्यर्थ न जाने पायेगा;
ये प्राण भले ही जाय निकल,
पर धर्म न जाने पायेगा ,

जिस धर्म ने रक्षा की अपनी, हम उसके अब रखवाले हैं।
भूपाल नही, धनपाल नही, हम धरमपाल मतवाले है॥

कार्यक्रम अधिकारी,
आकाशवाणी, पटना—८००००
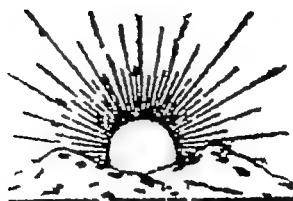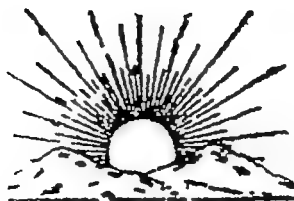
उद्‌भव

समता दर्शन प्रणेता, जिन शासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिवोधक, चारित्र चूडामणि, वाल ब्रह्मचारी परमपूज्य आचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म सा सवत् २०२० मे रतलाम चातुर्मास पूर्ण कर मालवा के मन्दसौर, उज्जैन, इन्दौर, देवास, शाजापुर, आदि क्षेत्रो के वन-वीहडो मे, दुर्गम पहाडी और सपाट मैदानी क्षेत्रो मे अपनी पीयूष वर्षिणी वाणी से जिन धर्म के उदात्त और शाश्वत मानवीय मूल्यो को प्रसारित–प्रचारित करते हुए, असह्य परिषहो को सहते हुए विहार कर रहे थे । आचार्यत्व के पावन पथ पर आरूढ होने के पश्चात् गुरु गणेशाचार्य के उत्तराधिकारी पट्ट—शिष्य, धीर–वीर–गम्भीर गुणो के सागर आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा का प्रथम चातुर्मासोपरान्त यह भव्य विचरण देश भर मे फैले उनके प्रति अगाध श्रद्धा से युक्त शिष्य वृन्द, श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका हेतु विशेष आकर्षण का कारण था । अत आचार्य प्रवर जहा भी विचरते श्रमणोपासक उनके श्रीचरणो के दर्शन और पवित्र जिनवाणी के श्रवण हेतु क्रम-क्रम से पहुचते रहते थे ।

आचार्य श्री के प्रशान्त मुखमण्डल, सवल देहयष्टि, और अगाध ज्ञान को सहज वोधगम्य, जनकल्याणकारी अभिव्यक्ति छोटे से कालखड मे मालव के विस्तीर्ण भूभाग मे आदर सहित चर्चित हो रही थी । विषम प्रसगो की सरल निष्पत्ति, निर्णय की दृढता और सर्वोपरि अविचल मन के सिद्धान्त निष्ठ व्यवहार और श्रमणाचारी के शुद्ध श्रद्धान पर अच्युत रह कर आचार्य प्रवर अपने अनुयायी वृन्द को भी आदर्श जिनोपासक के रूप मे जीवन साधने का मार्मिक उपदेश और जीवन्त प्रेरणा देने मे अहर्निश नलग्न थे । व्यक्ति और राष्ट्र का विवेचन, समाज और व्यक्ति के जटिल एकात्म सम्बन्धो का विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण के साथ युगधर्म के अनुपालन की अजस्र चेतना जागृत करते हुए वढते रहे आचार्य धरती का डगर अपने डग-डग पादविहार से मापते हुए ।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात :

ऐसे ही एक पुनीत दिवस को इन्दौर से नागदा की ओर अपनी शिष्य मण्डली सहित बढते हुए आचार्य प्रवर से मार्गवर्ती गांव में वयोवृद्ध सुश्रावक, परम पूज्य आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा. की परम्परा के दृढ उपासक, समर्थक तथा श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के स्तम्भ स्वरूप श्री नाथूलाल जी सेठिया ने भेंट की। श्री सेठिया जी के मुख से भावी के गर्भ ज्ञान का आभास देने वाले महत्वपूर्ण शब्द सहज ही उच्चरित हुए और उन्होंने कहा कि 'हे आचार्य प्रवर! आपके द्वारा निकट भविष्य में सामाजिक उत्क्रान्ति का कोई अतिमहत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होने वाला है। श्री सेठिया जी की इस श्रद्धा-विश्वास युक्त निष्छल और सहज पूर्व घोषणा पर यद्यपि आचार्य प्रवर ने उस समय यही कहा कि 'आपकी भावना प्रशस्त है' किन्तु उनके निर्विकार हृदयाकाश मे कही यह विचार प्रवाह विद्युत प्रकाश—सा जगमगा उठा कि अवश्य ही कुछ होने जा रहा है। बहुधा ऐसा होता है कि जो लोग समाज-जीवन के उन्नयन हेतु समर्पित हो जाते हैं, उनकी समाज जीवन के सुख-दुःख, भूत-भविष्य और वर्तमान से ऐसी एकात्मकता हो जाती है कि वे अपनी प्रखर सवेदना से भावी के गर्भ में झाककर देख लेते हैं, अनुभव कर लेते हैं, और उसे अभिव्यक्त कर देते हैं। श्री सेठिया जी के एकात्म समाज जीवन और आचार्य श्री के समाज, राष्ट्र और जिनधर्म समर्पित जीवन को लगभग एक ही समय घटना का पूर्वाभास हुआ, किन्तु तब दोनो को ही यह अनुमान नही था कि वह युगान्तरकारी महत्व की उत्क्रान्ति इतनी सन्निकट है। शीघ्र ही आचार्य श्री जी दि. १६ मार्च १९६४ को नागदा पधार गए।

नागदा, तब आज से २० वर्ष पूर्व इतना विशाल और जन-सकुल नही था। आचार्यश्री जी यहा ५ दिन विराजे और अपनी व्यस्त दिनचर्या के अनुसार प्रात. से साय तक अनवरत जिज्ञासु जनो को मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। उनकी वाणी का आकर्षण जैन के साथ ही जैनेत्तर जनो को भी अधिकाधिक सख्या मे प्रवचन स्थल पर

आकृष्ट करने लगी। नागदा मे नीच और अछूत समझी जाने वाली वलाई जाति के लोभ भी प्रचुर सख्या मे रहते थे। यद्यपि इनमे से अधिकाश ने अपने पूर्व व्यवसाय को छोड दिया था। अनेक निजी व्यवसाय चलाते थे और उनके वहुविध शासकीय व निजी सेवाओ मे कार्यरत हो गये थे, किन्तु समाज उन्हे सम्मान और समता नही दे सका था। समता की अमर और अतृप्त प्यास, और अपमान की दग्ध कर देने वाली अन्तरज्वालाए वलाई समाज के समझदार लोगो को चैन नही लेने देती थी। इन वलाई वान्धवो मे से ही एक निपुण व्यवसायी श्री सीतारामजी राठौड, एक दिन अपने कुछ साथियो के साथ स्थानीय जनो श्री मायाचन्द जी काठेड आदि के आग्रह पर सकोच सहित प्रवचन स्थल पर पहुचे। एक ही जाजम पर जव उन्हे वैठने का अवसर दिया गया तो उनके मन की वाछें खिल गयी। दत्त-चित्त होकर प्रवचन सुना और उन्हे ऐसा लगा मानो मु हमागी मुराद मिल गई हो।

उत्साह और उमग भरे हृदय से श्री सीताराम जी ने प्रवचन के महान् प्रभाव को अनुभव किया और मध्याह्न होते होते पुन अपने साथियो के साथ आचार्य चरण मे आ पहुचे। अपने मस्तक से अपने मान की प्रतीक टोपी उतार कर आचार्य श्री के पदकमल मे रखते हुए भावभरे हृदय से सीताराम जी ने निवेदन किया कि मालव प्रान्त के उज्जैन, शाजापुर, इन्दौर, देवास, रतलाम व मन्दसौर आदि जिलो के सैकडो गावो मे वसी हमारी वलाई जाति उत्तम कृषि कर्म करती है, मान-मर्यादा से जीवनयापन करती है किन्तु उसके भाल पर काल चिन्ह–सा अछूत का कराल काला तिलक लगा हुआ है। हमे इस अछूत के कलक से वचावे।

कम्मुणा वम्भुणोहोई :

इस आर्त्त हृदय की गुहार ने करुणा मूर्ति आचार्य प्रवर के नवनीत सम कोमल मानस को उद्वेलित कर दिया। वे आश्वासन के स्वरो मे वोल पडे कि जो स्वय उठने को तत्पर है, उसे प्रकृति हजार

हाथो से उठाने को लालायित रहती है । आप अपने आचरण को वादातीत बना लीजिये । सप्त कुव्यसनो का परित्याग कर दीजिए । आपका यह त्याग आपको स्वय ही उठाकर सम्मान और प्रतिष्ठा के उच्चासन पर आरूढ कर देगा । दिनाक २० मार्च को आचार्यश्री जी ने उन्हे जैन धर्म का सरल ज्ञान देते हुए कहा कि जैन धर्म वर्ण व्यवस्था को नही मानता, जाति–पाति का नही मानता । जैन धर्म की स्पष्ट घोषणा है—

कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होई खत्तिओ ।
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवई कम्मुणा ।।
(उत्तराध्ययन सूत्र २५ ३३)

अर्थात् व्यक्ति अपने कर्म और आचरण से ही समाज मे अपनी स्थिति को निर्धारित करता है । कर्म से ही वह ब्राह्मण, कर्म से ही क्षत्रिय, कर्म से ही वैश्य और कर्म से ही शुद्र बनता है । भगवान महावीर के शासन मे ऊच-नीच और छुआछूत को कोई स्थान नही है । आप पूर्णत: कुव्यसन मुक्त और सत्संकल्प से सकल्पित हो जाइए । जिनधर्म की शरण मे आकर सम्यक्त्व अगीकार कर लीजिये । स्वत आपके कलुष धुल जाएगे और निष्कलुष जीवन का सम्मान एक कालातीत, ध्रुव सत्य है ।

प्रेरकवाणी के तप:पूत और मत्रसिद्ध ये शब्द, शुद्ध हृदय, जिज्ञासु और उन्नति की अदम्य कामना वाले बलाइयो के मनो मे घर कर गए । उन्होने सप्त कुव्यसनो १. जुआ २. मास ३. शराब ४. चोरी ५ पर स्त्री गमन ६. वेश्यागमन और ७ शिकार के परित्याग कराने और सम्यक्त्व का मन्त्र प्रदान करने हेतु आचार्यश्री जी से करबद्ध निवेदन किया ।

स्वय अपनी मगलवाणी से मगलपाठ पूर्वक आचार्य प्रवर ने उन्हे समकित ग्रहण कराई ।

सीताराम जी के नेतृत्व मे नवदीक्षित धर्म दीवाने बलाई

नागदा स्थित अपने बान्धवो के बीच गए उन्हें समझाया और केवल १।। घन्टे मे समझा-बुझा कर ३० लोगो को ले आये । उन सभी ने भी आचार्यश्री जी से सम्यक्त्व ग्रहण किया और जीवन परिवर्तन का एक चक्र प्रवर्तित हो गया ।

नागदा के उसी प्रवचन स्थल पर दूसरे दिन प्रात नव समकित बलाई बन्धुओ के अतिरिक्त कुछ अन्य बलाई भी उपस्थित थे । इन बान्धवो को श्री सीताराम जी समीपस्थ गुराडिया ग्राम से लेकर आये थे । निर्धारित क्रम मे प्रवचन के माध्यम से जीवन उत्थान का मन्त्र सुना तो अपने त्राता के प्रति श्रद्धा और विनय से मन भर गया । गुराडिया से आये प्रमुखो धूलजी आदि और श्री सीताराम जी ने वन्दनपूर्वक निवेदन किया कि हमारे गाव मे गोवाजी की सुपुत्री एव थावर जी की बहिन लीलाबाई का विवाह सवत् २०२१ की चैत्र शुक्ला नवमी को है । ये दोनो महानुभाव बलाई समाज मे अग्रगण्य हैं । अत इस विवाह के अवसर पर ७० गावो के लोग आयगे । गुराडिया मे भी बलाई जाति के ४०-५० घर हैं । इस सुअवसर पर आप २ दिन के लिए पधारें तो हमारा उद्धार हो जाएगा । समाज मे एक सामूहिक सद्विचार की क्रान्ति हो जायेगी ।

आचार्यश्री जी ने परिषह पूर्ण पथ का भाव जीवन के लिए अणगार बनते ही समय ही मुस्करा कर वरण कर लिया था । अत उन्होने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति दे दी । दूसरे दिन ही मध्याह्न मे आचार्य प्रवर ने अपनी शिष्य मण्डली सहित गुराडिया की ओर विहार कर दिया । नागदा से ४ मील दूर बनवना गाव के हनुमान मन्दिर मे रात्रि विश्राम किया । यहा २ जैन घर तथा कुछ ब्राह्मण और कुन्म्बी परिवार के लोग रहते हैं । गुराडिया मे आहार-पानी की स्थिति नही थी । अत बनवना को ही आधार शिविर बनाने का निश्चय किया गया । गुराडिया से बनवना ३ मील की दूरी पर है ।

सवत् २०२१ चैत्र शुक्ला अष्टमी दि २२ मार्च ६४ को प्रात काल आचार्य प्रवर गुराडिया पहुचे । उन्होने अपनी सुबोध शैली मे

आत्मीयतापूर्वक उपस्थित बलाईयो व अन्य जनो को सम्बोधित किया। सभा के मध्य मे विचार-विमर्श की हल्की–सी थरथरी फैली। और ८२ वीर उठ खडे हुए जो वीरत्व के पथ पर अग्रसर होने को तत्पर थे। आचार्यश्री जी ने उन्हे सप्त कुव्यसन त्याग कराया और फिर समकित का मन्त्र दान कर उन्हे विशाल जैन समाज के अंगीभूत बना दिया।

प्रवचन के समापन के पश्चात् आचार्य प्रवर वापस बनबना की ओर लौट आए।

स्वर्णिम विहान :

चैत्र शुक्ला नवमी सवत् २०२१ तदनुसार दि. २३ मार्च १९६४ को पूर्व क्षितिज पर जो प्रखर भास्कर उदित हुआ, उसने तम की चादर को विदीर्ण कर सर्वत्र शुभ्र वितान तान दिया। आज रवि कुल ने जिस स्वर्णिम विहान को जन्म दिया वह आचार्य श्री की यश पताका को निरभ्र गगनाकाश मे फहरा कर सार्थक हुआ। आचार्य प्रवर बन-बना से गुराडिया की ओर बढ चले थे। ग्राम के चौक मे कच्चे छप्पर के बराडे मे अपने शिष्य समुदाय सहित प्रसन्नानन आचार्य प्रवर विराजमान थे। और सामने कुछ धर्म जिज्ञासु बैठे हुए चर्चा कर रहे थे। धीरे-धीरे लोग आते रहे। देखते-देखते गुराडिया का विस्तीर्ण ताल धर्म पिपासु स्त्री-पुरुषो से भरने लगा और फिर आचार्यश्री जी ने अपना प्रवचन प्रारम्भ किया।

वही धीरोदात्त स्वर ! वही अभयदान ! वही शास्त्र मीमासा ! वही सुबोध वाणी। दलितो के प्रति अपार सवेदना, पिछडो के प्रति अथाह सहयोग और भटकते हुओ के प्रति निर्मल पथ–प्रदर्शन के उदात्त भावो से भरी, हृदय के मर्मस्थल को स्पर्श करती हुई आचार्य प्रवर की वाणी पीडित मनो पर सुखद-सलेपन बन कर बरसी। उन्होने सप्त कुव्यसनो से होने वाली हानियो का मार्मिक चित्रण किया जैनत्व के सस्कारो का विस्तार से विवेचन किया कर्म और पुरु-

पार्थ का जीवन मे महत्व समझाया ।

श्रोता बैठे थे अविचल, अपलक । जैसे ही प्रवचन समाप्त हुआ पारस्परिक विचार-विमर्श की एक तरग से जन सागर तरगायित हुआ और ७० गावो की पचायतो से आए हुए ५३३ परिवारो के सदस्यो, प्रमुखो व २०० अन्य जन हड-हड कर उठ बैठे । सम्पूर्ण सभा आवेशित हो उठी जन-जन जीवन को सर्वांग सुन्दर बनाने को मचल उठा । उक्त सभी ने आचार्यश्री जी से समकित ग्रहण की । जैन धर्म और भगवान महावीर स्वामी की जय के घोष ग्राम परिधि से पार होकर दिग्दिगन्त को गु जायमान करने प्रस्तुत हो गए ।

आनन्द की लहर के शीर्ष पर चढकर विनयावनत श्री सीताराम जी ने पुन अपने मन की कसक, अन्तर की वेदना आचार्यश्री जी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा—हे उद्धारक ! आपने हमे समकित का मन्त्र देकर जैन बना दिया किन्तु उससे हमारा बलाई का कलकित जातीय तिलक नही मिटा । कोई ऐसा उपाय करिये जिससे हमारे माथो से अछूत जाति का यह काला टीका मिट जाय ।

स्वर्ण तिलक :

आचार्यश्री जी से सरल भाव से कहा कि मैंने आज का प्रवचन भगवान धर्मनाथ की प्रार्थना से प्रारम्भ किया था । आप सभी लोग भी धर्म की उपासना और पालना के लिए सन्नद्ध हुए हैं । अतः आज से आप स्वय को बलाई न कहकर 'धर्मपाल' शब्द से अभिव्यक्त करिए । धर्मपाल एक गुण निष्पन्न शब्द है । यह धर्म के दृढ व्रत की पालना के सकल्प का परिचायक है । आप स्वय को 'धर्मपाल—जैन' सम्बोधित करे तथा तदनुसार ही उच्च-उज्जवल आचरण करें ।

समस्त उपस्थित बलाई बन्धु हर्ष से सराबोर हो उठे । गुराडिया के धन्नजी भाई व अन्य प्रमुख हाथो मे लबालब भरी कु कुम की थालियो से अपने समाज बान्धवो के गौरवोन्नत भालो पर धर्मपाल का

स्वर्ण तिलक अंकित कर रहे थे । 'जैनाचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की जय' नवदीक्षित धर्मपालो के रोम-रोम से ध्वनित हो रही थी । पूर्व दिशा मे प्रदीप्त सूर्य को और फिर अपने मुक्तिदाता के चमकते चेहरे को वे देख रहे थे । घोष गूंजा '"लाल" चमकते भानु समाना' और सभी दुहरा उठे । 'गूंजती रही गूंज और अनुगूंज' ।

आचार्यश्री जी के व्यक्तित्व का चमत्कारिक प्रभाव नागदा और गुराडिया से निकल कर पूरे मालव प्रान्त में चर्चित हो उठा । धर्मपालो की धर्मज्योति जगमगा उठी । आचार्य श्री जी अपनी साधु-चर्या के अनुसार भ्रमण करते रहे और मार्ग के गावो मे औसर-मौसर के प्रसगो से एकत्र होने वाले बलाईयो को उद्‌बोधित करते रहे ।

वे गुराडिया से बनबना होकर फिर नागदा पधारे । जहां से बडखेडा, बडावदा होकर लोद पधारे । आचार्यश्री जी के पहुचने से पूर्व उनके धवल की यश सुवास पहुच जाया करती थी । लोद में आचार्य-चरण का पदार्पण हुआ है यह जानकर रात्रि में समीपस्थ लिम्बोदिया व गुजरवाडिया के बलाई आ उपस्थित हुए तथा अपने-अपने ग्राम पधारने का आग्रह करने लगे । लिम्बोदिया की विहार की स्वीकृति मिलने पर गूजरवाडिया के बन्धु-बहिने भी वहा पहुच गये । प्रातः लिम्बोदिया में दोनो गावों के १०० से अधिक बलाई समंकित होकर धर्मपाल बन गये । यहां से आचार्यश्री जी 'ताल' पधारे ।

आक्या में सामूहिक संकल्प :

कहाकि ताल मे आक्या ग्राम के बलाई विनंती करने आ पहुचे । उन्होने आने वाले कल के दिन हमारे गाव मे एक वृहत मृत्युभोज के प्रसग पर सहस्त्रो बलाई स्त्री-पुरुष एकत्र होगे । आप अपना पवित्र उपदेश सुनाने के लिए पधारें । दोपहर मे ही आचार्यश्री जी आक्या जा पहुचे वहा वैष्णव मन्दिर मे रात्रि विश्राम किया । प्रातः कालीन प्रवचन मे जैन धर्म के पवित्र अराधक बनने का आचार्य प्रवर के आह्वान का सकारात्मक और सत्वर उत्तर देने के लिए ८१ ग्रामो के

७६३ परिवारो के प्रमुखो सहित सैकडो लोगो ने 'धर्मपाल जैन' की उपाधि धारण कर सम्यक्त्व अगीकार किया । इस सामूहिक सकल्प के साथ ही वलाई जाति मे सामूहिक व्यसन मुक्ति और सामाजिक सुधारो का अप्रतिहत ज्वार उमड पडा । इस सैलाव ने देखते ही देखते ३०० वर्गमील क्षेत्र मे फैले वलाई जाति के सहस्त्रो जनो के समूह को आप्लावित कर लिया ।

विहार और धर्म जागरण :

आक्या मे पीयूष वर्षण के पश्चात् आचार्यश्री जी पुन ताल से उज्जैन की ओर अग्रसर हुए । मार्ग मे आलोट, महिदपुर, डेलची, वोरखेडा, रानी, पीपलिया, रठडा, घमाहेडा, आदि गावो मे शत-शत विकल हृदयो मे अभिनव आशा और विश्वास जगाते हुए आचार्य प्रवर वरखेडा पधारे । यहा पूनाजी नन्दराम जी वलाई के यहा मृत्युभोज मे सम्मिलित होने के लिए ५० गावो से प्रतिनिधि एकत्र हुए थे । वर-खेडा के चौक मे ६०० नर-नारियो को सम्बोधित करते हुए अपने ५० मिनट के धारा प्रवाही प्रवचन मे आचार्य प्रवर ने व्रती जीवन का महत्व समझाया तथा सीताराम जी के अनुरोध पर सभी को गुरु मत्र प्रदान कर पावन वनाया ।

धर्मपालो के संस्कार हेतु इन्दौर चातुर्मास :

इस प्रकार सम्पूर्ण यात्रा मार्ग मे दलितोद्धार और धर्मजाग-रण की लहर प्रस्तुत करते हुए आचार्यश्री जी उज्जैन पधारे । यहा सम्वत् २०२१ के चातुर्मास हेतु विभिन्न सघो की ओर से पुरजोर विनतिया की गई । जिनमे से इन्दौर सघ ने विनती के समय एक मर्म-स्पर्शी वात कही । विनतियो का कार्यक्रम श्री माणकचन्द जी नाहर के सयोजन मे चल रहा था तव इन्दौर श्री सघ की ओर से श्री वख्तावरमल जी साड व श्री लाभचन्द जी काठेड ने निववेदन किया कि आपने पिछले १ माह मे ५००० वलाईयो को समकित दिलाकर धर्मपाल वनाया है । इन नवदीक्षित धर्म वान्धवो के सस्कारो को स्था-

यित्व प्रदान करने के लिए आप इन्दौर को चातुर्मास प्रदान करने की कृपा करे ।

आचार्य प्रवर ने इस निवेदन के अन्तर में छिपे सत्य को दिन के प्रकाश की भाति देखा—अनुभव किया और धर्मपालो के जीवन निर्माण मे सहायक होने की दृष्टि से सभी आगारो सहित स. २०२१ का वर्षावास इन्दौर को प्रदान करने की स्वीकृति दे दी ।

महावीर जयन्ती और नागझिरी सम्मेलन :

उज्जैन मे महावीर जयन्ती के पुनीत पर्व पर देश भर से श्रावक और संघ प्रमुख एकत्रित हुए थे । इस प्रवचन में प्रभूत संख्या मे धर्मपाल बन्धु भी उपस्थित थे । बाहर से आये हुए संघ प्रमुखों को वापस जाने की जल्दी रहती ही है । अत वे जाने से पूर्व आचार्य प्रवर से चर्चा-विचारणा हेतु समय चाहते थे । प्रवचन समाप्त होते ही सभी सभागत जैन आचार्य श्री की कृपा दृष्टि को प्राप्त करने को आगे बढे । श्री सीताराम जी भी आगे बढे और पाटे के समीप पहुच आचार्य प्रवर से निवेदन करने लगे कि आप तो श्रीमतों से घिरे हैं । आप तक हम कैसे पहुचे ? सस्मित आचार्यश्री जी ने पूछा—कहो ! बात क्या है ? इस पर श्री सीताराम जी ने कहा कि कल यहां से ५-७ मील पर स्थित नागझिरी गांव मे प्रसगवश बलाईयों का विशाल एकत्रीकरण है । उक्त सुअवसर पर आप पधारें ।

आचार्यश्री जी ने हठी निवेदन के पीछे छिपी विनीत धर्म प्रभावना के भाव को हृदयगम किया और दोपहर मे ही शिष्यवृन्द सहित नागझिरी प्रस्थान कर दिया । रात्रि विश्राम बलाईयो के कुलदेवता के मन्दिर के समक्ष किया और वही अनौपचारिक चर्चा की । प्रात प्रवचन भी मन्दिर के सामने प्रागण मे हुआ । प्रवचन प्रारम्भ होते तक उज्जैन से संघ प्रमुख भी पहुचने लगे । सर्वश्री मोतीलाल जी बरडिया सरदारशहर, सुन्दर लाल जी नातेड बीकानेर एव प श्री लालचन्द जी मुणोत के शुभागमन पर बलाई उन्हे दरी

पर बिठाने के लिए खुद जमीन पर बैठने लगे । इस पर इन तीनो ने कहा कि ऊपर उठने का सकल्प आप लोग ले रहे हैं, अत ऊपर बैठने के अधिकारी आप हैं । आचार्यश्री जी की कृपादृष्टि से श्रावको का व्यवहार भी कैसा स्नेह और आत्मीयता युक्त बन गया है, यह अनुभव कर बलाई हर्ष गद्गद् हो गए ।

श्रावको की यह प्रशस्त भावना और यह स्नेहपूर्ण व्यवहार धर्मपाल समाजोन्नति के लिए नीव की मजबूती बनता चला गया । नागझिरी के इस सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए 'थली के शेर' श्री मोतीलाल जी बरडिया ने कहा कि धर्मपालो के शील और सदाचार को देखकर मेरा मन हर्ष से गद्गद् हो गया है ।

आचार्यश्री जी के ओजस्वी प्रवचन की समाप्ति के बाद इस सम्मेलन मे आए हुए ७० गावो के मुखियाओ ने खडे होकर विश्वास दिलाया कि हमारे ७५० परिवारो के ४५०० व्यक्ति धर्मपाल बनेगे । आचार्य प्रवर यहा से वापस १०-११ बजे तक उज्जैन पधार गये । उज्जैन मे श्री माणीलाल जी सूर्या की अनन्य सेवा ने धर्मपालो के उत्साह को शतगुणा कर दिया ।

घोर-परिषह की ओर :

कर्मठ सेवाभावी श्री इन्द्रमुनि जी म सा के पास अध्ययन-रत कुछ सतो को उज्जैन मे ही छोडकर आचार्यश्री जी धर्म-प्रचार के लिए घोर-परिषह के विकट मार्ग पर बढ चले । उन्होने प्रारम्भ मे अपने साथ श्री कंवरचन्द जी म सा, श्री सेवन्तकुमार जी म सा एव श्री अमरमुनि जी म सा को लिया किन्तु बाद मे नावर गाव को [illegible] जब वे अत्यन्त दुर्गम पथ मे प्रविष्ट हुए तो साथ मे मात्र श्री [illegible]चन्द जी म सा को लेकर विहार [illegible] । [illegible] दोनो ही मुनि [illegible] भोजी [illegible] थे । अत [illegible] आहार-पानी [illegible] बहुधा [illegible] पर [illegible], कष्टो की पीर को पीते हुए, [illegible] पथ मे भी रहे अज्ञानी जनो को जिनत्व की

यित्व प्रदान करने के लिए आप इन्दौर को चातुर्मास प्रदान करने की कृपा करें ।

आचार्य प्रवर ने इस निवेदन के अन्तर में छिपे सत्य को दिन के प्रकाश की भाति देखा—अनुभव किया और धर्मपालो के जीवन निर्माण मे सहायक होने की दृष्टि से सभी आगारो सहित स. २०२१ का वर्षावास इन्दौर को प्रदान करने की स्वीकृति दे दी ।

महावीर जयन्ती और नागझिरी सम्मेलन :

उज्जैन मे महावीर जयन्ती के पुनीत पर्व पर देश भर से श्रावक और सघ प्रमुख एकत्रित हुए थे । इस प्रवचन मे प्रभूत सख्या में धर्मपाल बन्धु भी उपस्थित थे । बाहर से आये हुए संघ प्रमुखो को वापस जाने की जल्दी रहती ही है । अत. वे जाने से पूर्व आचार्य प्रवर से चर्चा-विचारणा हेतु समय चाहते थे । प्रवचन समाप्त होते ही सभी सभागत जैन आचार्य श्री की कृपा दृष्टि को प्राप्त करने को आगे बढे । श्री सीताराम जी भी आगे बढे और पाटे के समीप पहुच आचार्य प्रवर से निवेदन करने लगे कि आप तो श्रीमंतो से घिरे हैं । आप तक हम कैसे पहुचें ? सस्मित आचार्यश्री जी ने पूछा—कहो ! बात क्या है ? इस पर श्री सीताराम जी ने कहा कि कल यहा से ५-७ मील पर स्थित नागझिरी गांव में प्रसंगवश बलाईयो का विशाल एकत्रीकरण है । उक्त सुअवसर पर आप पधारें ।

आचार्यश्री जी ने हठी निवेदन के पीछे छिपी विनीत धर्म प्रभावना के भाव को हृदयगम किया और दोपहर में ही शिष्यवृन्द सहित नागझिरी प्रस्थान कर दिया । रात्रि विश्राम बलाईयो के कुलदेवता के मन्दिर के समक्ष किया और वहीं अनौपचारिक चर्चा की । प्रात प्रवचन भी मन्दिर के सामने प्रागण मे हुआ । प्रवचन प्रारम्भ होने तक उज्जैन से संघ प्रमुख भी पहुचने लगे । सर्वश्री मोतीलाल जी बरडिया सरदारशहर, सुन्दर लाल जी तातेड बीकानेर एव प श्री लालचन्द जी मुणोत के शुभागमन पर बलाई उन्हे दरी

पर विठाने के लिए खुद जमीन पर बैठने लगे । इस पर इन तीनो ने कहा कि ऊपर उठने का सकल्प आप लोग ले रहे है, अत ऊपर बैठने के अधिकारी आप हैं । आचार्यश्री जी की कृपादृष्टि से श्रावको का व्यवहार भी कैसा स्नेह और आत्मीयता युक्त बन गया है, यह अनुभव कर वलाई हर्ष गद्गद् हो गए ।

श्रावको की यह प्रशस्त भावना और यह स्नेहपूर्ण व्यवहार धर्मपाल समाजोन्नति के लिए नीव की मजबूती बनता चला गया । नागझिरी के इस सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए 'थली के शेर' श्री मोतीलाल जी बरडिया ने कहा कि धर्मपालो के शील और सदाचार को देखकर मेरा मन हर्ष से गद्गद् हो गया है ।

आचार्यश्री जी के ओजस्वी प्रवचन की समाप्ति के वाद इस सम्मेलन मे आए हुए ७० गावो के मुखियाओ ने खडे होकर विश्वास दिलाया कि हमारे ७५० परिवारो के ४५०० व्यक्ति धर्मपाल बनेगे । आचार्य प्रवर यहा से वापस १०–११ बजे तक उज्जैन पधार गये । उज्जैन मे श्री मागीलाल जी सूर्या की अनन्य सेवा ने धर्मपालो के उत्साह को शतगुणा कर दिया ।

घोर-परिषह की ओर :

कर्मठ सेवाभावी श्री इन्द्रमुनि जी म सा के पास अध्ययन-रत कुछ सतो को उज्जैन मे ही छोडकर आचार्यश्री जी धर्म-प्रचार के लिए घोर-परिषह के विकट मार्ग पर बढ चले । उन्होने प्रारम्भ मे अपने साथ श्री कवरचन्द जी म सा, श्री सेवन्तकुमार जी म सा एव श्री अमरमुनि जी म सा को लिया किन्तु वाद मे सावर गाव को आधार शिविर बनाकर जब वे अत्यन्त दुर्गम पथ मे प्रविष्ट हुए तो साथ मे मात्र श्री कवरचन्द जी म सा को लेकर विहार को चल पडे । समीपस्थ क्षेत्रो मे अति नगण्य निरामिष भोजी जन थे । अत अल्पतम आहार-पानी और बहुधालघन पर रहकर, कष्टो की पीर को पीते हुए, पशुत्व के पाप पक मे जी रहे अज्ञानी जनो को जिनत्व की

सुधा पिलाते हुए, उन्हे गरिमापूर्ण मानवीय जीवन की ओर उन्मुख करते हुए आचार्यश्री जी एव कवरचन्द जी म. सा विचरण करते रहे ।

इस काल मे लक्ष्मणखेडी मे १७ परिवारो के १५० व्यक्ति धर्मपाल बने । इस गाव के बलाई मुखिया श्री भैराजी पटेल पूरे क्षेत्र मे प्रतिष्ठित है । अत उनका अनुगमन करते हुए पूरा क्षेत्र ही धर्मपाल बन गया । इस प्रकार लक्ष्मणखेडी का यह विकट प्रवास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा । इसके बाद कजवाना मे सभी ७० व्यक्ति, कायस्थखेडी मे ८०, मालीखेड़ी मे १००, गुराज मे २६ और जामोदो मे ७६ लोग धर्मपाल बनकर हिसक से अहिसक बन गये ।

इस काल मे आचार्यश्री जी व श्री कवरचन्द जी म सा आश्रय के अभाव मे कभी केवल आम्रवृक्षो की छाया मे और कभी हनुमान के चबूतरे के जीर्ण शीर्ण विश्रामालय मे रात्रि बिताते रहे । यहा से फिर सावेर आकर श्री सेवन्तमुनि जी म. सा और श्री अमरमुनि जी म सा को भी साथ लेकर आचार्यश्री जी म सा, ठाणा ४ अक्षय तृतीया हेतु उज्जैन की ओर बढे । मार्ग के सिलोदा व महाना गाव मे क्रमश २२६ व १५० बलाईयो ने जैनत्व स्वीकारा ।

गौभक्षक-गौरक्षक :

उज्जैन मे अक्षय तृतीया के अवसर तक आचार्यश्री जी के दलितोद्धार के भागीरथ प्रयास ने सम्पूर्ण क्षेत्र मे उनको मान-मर्यादा को चार चाद लगा दिये थे । हवा के पखो पर तैर कर उनके यश को सुवास सम्पूर्ण मालव क्षेत्र मे व्याप्त हो चुकी थी । अत उनसे मिलने के लिए वे बलाई आए जो पूर्व मे हिन्दू थे पर अस्पृश्य व्यव्हार से व्यथित होकर अब इसाई, बहाउल्ला या मुसलमान बन चुके थे । इन पर धर्म अगीकर्त्ताओ ने अपनी व्यथा आचार्य चरण मे प्रस्तुत करते हुए कहा कि सैकडो पीढियो से सभी अपमानो के बावजूद हिन्दूत्व के विरुद को सीने से चिपटाये हम लोग गोरक्षक थे पर अब

अपमान की आग असह्य हो जाने पर विधर्मी और गोभक्षक बन गये है। गोरक्षक से गोभक्षक बन जाना हमारे मनो मे प्रतिक्षण शूल सा खटकता है। आपने अनेक पीडित जनो को राहत पहुचाई है। क्या आप हमारा भी उद्धार करेंगे।

करुणा निर्झर झर-झर बहने लगा। आचार्यश्री जी ने ऐसे सभी समागतो को उपदेश देकर 'धर्मपाल जैन' बनाया। वे प्रमुदित हो उठे।

वरदान :

इन घटनाओ ने सम्पूर्ण समाज मे हलचल मचा दी। उज्जैन आर्यसमाज के प्रमुख नेताओ ने आचार्यश्री से भेट करके कहा कि आपने भारतीय सस्कृति की महान् सेवा की है। इस क्षेत्र मे इसाई, बहाउल्ला, व मुसलमानो की प्रचार गाडियो की गति हमारे हृदयो पर हथौडो की भाति प्रहारक लगती थी। आर्यसमाज ने अपने सीमित प्रचार साधनो से इस धर्म परिवर्तन को रोकने का प्रयास भी किया पर प्रचुर साधन बल के समक्ष हम सफल नही हो सके। आपश्री ने सर्वथा साधनहीन और पादविहरो होकर भी विधर्मी बने जनो को पुन साधर्मी बनाकर तथा दलितो को गले लगाकर जो महान् कार्य किया है। उससे यह पुन सिद्ध होता है कि क्रिया सिद्धि, सत्वे भवति, महता नोपकरणे' अर्थात कार्य की सिद्धि उपकरणो के आधिक्य पर नही, सत्व से होती है। आप हिन्दुत्व के लिए वरदान स्वरूप हैं। हमे भी सस्कृति की सेवा का अवसर दें।

निरभिमान प्रत्युत्तर :

आचार्यश्री जी ने अपने गुणानुवाद को दुर्लक्ष्य करते हुए अपने निरभिमान प्रत्युत्तर मे कहा कि यह सब मात्र एक सहज सयोग है। प्रत्येक भारतीय का जीवन उच्चादर्शो से अनुप्राणित हो, सुसस्कारी हो, अहिंसक हो, मात्र यही मेरी कामना है। आपके सद्भाव के अनुरूप सहयोग स्नेह धर्मपालो को प्रदान करके आप भी

समाजोन्नति मे सहभागी बने ।

इस प्रकार रतलाम वर्षावास के समापन्न और अक्षय तृतीया के अवसर पर उज्जैन पदार्पण के बीच १४१ दिनो मे ८७ गावो का भ्रमण कर सहस्त्रो जनो के हृदयो से व्यसन का कलुष मिटा, सदाचार की प्राण-प्रतिष्ठा करते हुए आचार्यश्री जी ने जनजागृति का अद्भुत अपूर्व शखनाद किया ।

चीकली सम्मेलन :

इन्दौर पहुचने से पूर्व धर्मपाल समाज की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी । यह था उज्जैन से १३ किलोमीटर दूर ग्राम मे चीकली मे वृहत भोज के अवसर पर ७० गावो से ११०० गणमान्य बलाई प्रतिनिधियो का ऐतिहासिक सम्मेलन । आचार्य प्रवर आमन्त्रण प्राप्त कर उस सम्मेलन मे पधारे और उनके अन्त करण से निकले शब्दो ने उत्सुक व जिज्ञासु बलाईयो के भावुक हृदयो पर जादू-सा प्रभाव डाला । इस सम्मेलन मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि—

"इस चीकली गाव मे उपस्थित होने वाले ७० गावो के करीब ११०० प्रतिनिधि लोग मास, मदिरा, शिकार आदि कुव्यसनो का परित्याग करते हैं और साथ ही यह भी घोषणा करते है कि हमारी इस जाति (बलाई) मे जो भी इन अभक्ष वस्तुओ का सेवन करेगा, 'जाति का अपराधी' माना जावेगा ।

शाजापुर और देवास मे धर्म जागरण करते हुए 'मक्सी' पधारे। इस तीर्थ स्थल पर अनेक बलाईयो ने धर्मपाल बन, जैनत्व स्वीकारा और यह मक्सी आज भी धर्मपाल की तपो भूमि के रूप मे समादृत है।

इन्दौर में महत्वपूर्ण प्रसंग :

चातुमासार्थ नगर प्रवेश के समय वैष्णव, सिख, सिंघी व मुसलमान आदि सभी वर्णों और धर्मों के जैनेत्तर जनो की प्रभूत उपस्थिति ने आचार्यश्री जी के सर्वधर्मसमभाव मूलक चरित्र को उजागर किया। प्रतिदिन प्रवचन मे उनकी सात्विक वाणी उनके व्यक्तित्व को निखारती गई। इस वर्षावास मे धर्मपालो की दृष्टि से कुछ महत्वपूर्ण प्रसग उपस्थित हुए। दलितोद्धार की इस योजना के सरस परिणामो की ओर आकृष्ट होकर मध्यप्रदेश शासन के खाद्य मन्त्री श्री गौतम शर्मा, योजनामन्त्री श्री मिश्रीलाल गगवाल और यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के मन्त्रिमडलीय सदस्य इस्पात व खान उपमन्त्री (वर्तमान मे गृहमन्त्री, भारत सरकार) श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने आचार्यश्री जी से भेंट की और इस प्रयास हेतु अपने आभार को प्रदर्शित किया।

प्रथम धर्मपाल सम्मेलन ८ अक्टूबर ६४ :

वैसे तो पूरे चातुर्मास काल मे धर्मपालो का आवागमन बना रहा। पर सघ अधिवेशन के अवसर पर दि ८-१०-६४ को आयोजित प्रथम धर्मपाल सम्मेलन प्रवृत्ति के उद्भव काल का एक महत्वपूर्ण सीमा चिन्ह सिद्ध हुआ। इस सम्मेलन को सम्बोधित करने के लिए मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री पारस्कर स्वय पधारे। उन्होने धर्मपाल की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए कहा कि जो कार्य शासन नही कर पाता उसी असम्भव को सन्त सम्भव बना देते हैं।

इस सम्मेलन से धर्मपालो की स्थिति और स्वरूप के निर्धारण मे भी महत्वपूर्ण दिशा सकेत प्राप्त हुए। इसी समय धर्मपाल

प्रवृत्ति को व्यवस्थित करने के प्रयत्न प्रारम्भ हुए ।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता कलकत्ता के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री दीचन्द जी काकरिया ने की । सम्मेलन के पश्चात् राज्यपाल श्री पास्कर जी की आचार्यश्री जी से २० मिनट की अन्तरग चर्चा हुई, जिसमे शुद्ध सस्कारो के बीजारोपण हेतु आचार्यश्री की प्रशसा की । इस पर आचार्य प्रवर ने कहा कि यह तो मेरा सात्विक कर्त्तव्य था । बीजारोपण तो हो गया है अब इसके प्रवर्धन मे आपका, शासन व सम्पूर्ण समाज का सहयोग अपेक्षित है, जिससे ये नवदीक्षित १५००० धर्मपाल अपने को सुदृढ बना सकें ।

इसी वर्षावास में धर्मपालो ने जिस उत्साह, जागरुकता और अदम्य धर्म भावना का प्रदर्शन किया और कार्य ने जैसा व्यापक स्वरूप तब तक धारण कर लिया था उसका अनुमान आप श्री पचान गुजराती बलाईयान द्वारा जारी निम्न सूचना से सहज ही लगा सकते हैं

आदरणीय समस्त गुजराती बलाई भाईयों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि पूजनीय महात्मा गांधी की प्रेरणा से हमारे रहन सहन और खान-पान मे कुछ तबदीली आकर सुधार हुआ, लेकिन फिर भी हम ग्रामीण भाईयो को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है यह दुःख की बात है । लेकिन विशेष हर्ष की बात यह है कि हमारे भाग्योदय से आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म सा जब नागदा पधारे और नागदा से गुराडिया पधारे तब यहा के गुजराती बलाई भाईयो ने आचार्य श्री जी के चरणो मे प्रार्थना की, हमारा गुजराती बलाई समाज पिछडा हुआ माना जाता है । आपश्री इसका उद्धार करे ।

"आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आप मास, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, आत्महत्या आदि बुरे व्यसनो को प्राणप्रण से पूर्णरुपेण त्याग करे, तो उन्नति हो सकती है । हमने आचार्य प्रवर की आज्ञा के मुताबिक चलने की प्रतिज्ञा ली । साथ ही साथ ही आपश्री से गुरु-दीक्षा लेकर

जैन धर्म स्वीकार किया और यह निश्चय किया कि हमारा समाज अब तक गुजराती बलाई कहलाता था, वह अब "धर्मपाल जैन" के नाम से कहा जावेगा। इसके बाद आचार्य प्रवर गुराडिया से आक्या, ताल, लीबो, दया, डेमचो, नारायण, खेडो, बोरखेडा, धुमहेडा, बरखेडा, मक्सी आदि इन्दौर, उज्जैन व रतलाम जिले के ग्रामो मे विचरते हुए अनेक गुजराती बलाई भाईयो के दुर्व्यसनो को छुडा कर उनको जैन बनाते हुए इन्दौर पधार गये हैं और चौमासे के चार महीनो तक इन्दौर ही बिराजेंगे।

"गुजराती बलाइयान अनेक गावो मे रहते हैं और उनकी सख्या करीब एक लाख से ऊपर है। उन सबकी सेवा मे हम नीचे दस्तखत करने वाले धर्मपाल जैन (गुजरात बलाई) प्रार्थना करते हैं कि आप भी मास-मदिरा आदि कुव्यसनो को त्याग कर धर्मपाल जैन बने। इससे हमारे समाज की हर तरह से उन्नति होगी और हम सम्मामे की दृष्टि से देखे जावेंगे।

जिला उज्जैन :

धुलजीरामजी, पालखेडी। शकरलालजी, गनपतजी, उमरना। नन्दरामजी, रूनखेडा। कवरलालजी जीवाजी, उज्जैन। भागीरथजी हीराजी, बोरखेडा। धुलाजी, केवलजी, थावरजी, धन्नाजी गुराडिया। गगारामजी, सीतारामजी, नागदा। पुनाजी, गगारामजी, रारणखेडी। रामजी, भूवानजी, ग्राम ढेलची। काजूजी, पीराजी, लक्ष्मीनारायणजी, लेकोडा। हरजी, लसुडिया। नगजीरामजी, कमटाना। गम्भीरजी, गनपतजी, नाथाजी, लिमवास। शोभारामजी, झलारिया। नानूरामजी, रूगनाथजी, रामाजी, सोनेडा। हीरालालजी, अनोपजी, भटेरा। भूवानजी, आकिया। किशनजी, झरादा। भेराजी, गनपतजी, हीडो। राधुजी, जागीरपुर नानूरामजी, खेडा माजगामडनी, नाथाजी उ कारलालजी, पूनाजी, सडोदा। मागीलालजी, आर्डेसिगा। भैरूलालजी, वालोदा। मेराजी, गोपालजी, वालारामजी, नायन। सुखरामजी, पिपलौदा। दयारामजी, धुलजो, आकिया। वादीरामजी, नन्दरामजी, वरखेडा।

लालाजी, हलाणा । बाबरुजी, बुचाखेडी । धुलजी, रामजी, पालखेडी । गगारामजी, शकरजी, मताना । देवाजी, नागझिरी । किसनजी, मुन्नालालजी, सालारखेडी । अमराजी, कु वरजी, पुवारिया । वगडीरामजी, शकरजी, बमलाबद । शकरलालजी, कानाजी, पलदुना । गोपालजी, चन्देसरा । घासीरामजी, सकरवासा । आकिया धुलाजीनन्दरामजी, नलवा । भूवानजी, झोकरा । गगारामजी, रावजी, पीपलिया । पीराजी, रूघनाथजी, टावा । हीडूजी, सावजी, पीपलिया । रूपाजी, सालोदा । नागजीरामजी, डनालडा । हरीवजी, नाथूजी, मोरना । अमरजी, भीमपूरा । धुलाजी, नानाखेडी । धुलाजी, सेमलिया । कालूजी, भेसला । गनपतजी, पासेलोड । धनाजी, जोड़मा ।

जिला रतलाम :

घासीरामजी, करमदी । फकीरचन्दजी, धराड । नन्दरामजी, बीबडोद । नारायणजी, नन्दाजी, डेलनपुर । हरिरामजी, गुडखेडा । भवपनजी, नाथाजी, वेराखेडी । मेराजी, गनवानिया । नरसिंगजी, मोतीजी, रोहल । रजला, रामचन्दजी, धुलाजी, नानखेडा । उंकारलालजी, मन्नालालजी, हीरालालजी, पीपलौदा । उमाजी, जैठाना । रूपाजी, मोतीजी, कवरजी, लिम्बोदिया । नाथाजी, हसराजजी, गअरबाडिया । नागुजी, ताजखेडा । अमराजी, तालखजुरिया । कनीरामजी, सरूपजी, नागु जी, लोगरजी, कडाई, अरनिया । गगारामजी, किसना जी, गुराडिया । बीसनजी, पालखेडा ।

जिला इन्दौर देवास :

पटेल पुनाजी, मेराजी, लखमनखेडी । जामुदी, मोहनलालजी, सीधाजी, सोलसदा । रूगनाथजी, सकासीरामजी, जेरामजी, पीराजी, बीसाखेडी । कालूरामजी, सरूज । हीरालालजी, सालोदा । धुलजीरामजी, पानोड । धुलजी, हथुनिया । नाथूलालजी, गनपतजी, दयाखेडा । गोरधनलालजी, कालियाखेडा । सीधाजी, कु वरजी हसाखेडी । शकरलालजी, खामेदा । परतावजी, रामजी, कासीरामजी, बरखेडी । पटेल धुलाजी, दीलाजी,

लसुडिया। पखतजी, सोबाजी, बोलावली । नगाजी, पनालालजी, खातीखेडी । भुवानजी, कालूरामजी टीगोरिया । कचनजी, बलबनजी, सिघनाजी, परतावजी, बिलाणा । गनपतजी, बडोहिया । छोगालालजी, केलोद । धनालालजी, धनखेडी । दोलाजी, वेरागर । पणवलालजी, कालूरामजी, धन्नाजी, जाख्या । हीराजी, हरसिगजी, आमलीखेडा । पीराजी, बावला-जागीर । सेवारामजी, मोडकी ।

जिला मन्दसौर, धार, बड़नगर :

तुलसीरामजी, भैरूलालजी, मोडीरामजी, गोविन्दजी, मन्दसौर । देवीलालजी, कन्हैयालालजी, तुलसीरामजी, सीतारामजी, सेरूलालजी, लूघना । भगवानजी, राकोदापलूदना । शकरलालजी, भागीरथजी, सोभाखेडी । सीतारामजी, धुलाजी, सेमलाया । कालूजी, भेसला । गनपतजी, पासलोद । नानुरामजी, सोगड । रामाजी, ढबाला । नागुजी जेलेखेडी । नगुजी, मनीरामजी, कन्हैयालालजी, भैरूलालजी, देवची । हमीजी, भील, नागदा । शकरलालजी, रोजेटा-सडला । डूगाजी, कुडावन । सालरामजी, कालूरामजी, जावरा ।

जिला शाजापुर :

नन्दरामजी, कचरुजी, रूगनाथजी, मक्सी । थावरजी, कासीरामजी, कठासीया । भागीरथजी, करज । गनपतजी, वणजारी । हमीरजी, गनपतजी, रुडकी, नन्दरामजी, सीघनाथजी, सीरोलिया । हरचन्दजी, भमरी । नानूरामजी, मागीलालजी चोसला । अमरसिहजी, हीरालालजी, घार । चम्पालालजी, मोतीलालजी, राजगढ ।
नोट — आचार्य श्री जी म सा इन्दौर–राजमोहल्ला मे स्थित खालसा कन्या-माध्यमिक विद्यालय मे विराजते है ।

गीता-भवन

इन्दौर के गीता भवन मे बावा बालमुकुन्द जी (अवस्वर्गीय)

के आग्रह पर आचार्यश्री जी के कुछ प्रवचन हुए । इस काल मे बाबाजी और गीता भवन के साथ स्थापित आचार्यश्री के मधुर सम्बन्धो ने आने वाले समय मे धर्मपालो को सर्वप्रथम चल चिकित्सालय की सुविधा सुलभ कराई तथा एक श्रेष्ठ जनाधार प्रदान किया ।

हाट-पीपलिया :

चातुर्मास के पश्चात् वर्ती विहार मे भी स्थान-स्थान पर जैन-जैनेत्तर जनो ने धर्मपाल उद्धारक के रूप मे आचार्यश्री जी का स्वागत किया । हाट-पीपलिया मे तत्कालीन राजनीतिक पार्टियो की ओर से स्थानीय जनसघ के अध्यक्ष श्री बस्तीरामजी माली ने दलितोद्धार के इस कार्य मे सर्व भावेन का सहयोग का विश्वास दिलाया ।

इस प्रकार धर्मपाल प्रवृत्ति का सुपुनीत उद्भव सम्पूर्ण समाज के आत्मिक सहयोग के बीच लगभग १ वर्ष के आचार्यश्री जी के इस मालव विहार मे सुसम्पादित हुआ । इस अत्यन्त कठिन कार्य मे सभी का सहयोग प्राप्त हो जाना आचार्यश्री नानालाल जी म. सा. के अप्रतिम सगठन कौशल और मानवीय करुणा व सवेदना के सच्ची एकात्म का चमत्कारिक परिणाम था । आचार्यत्व के उषा काल मे इस महान् कार्य के बीजारोपण ने जन-जन को उनके असाधारण कृतित्व का विश्वास दिलाया है ।

विकेन्द्रित व्यवस्था का चमत्कारिक परिणाम :

△

कार्य क्षेत्र और कार्य को ५ भागो मे विभाजित करने और पाचो विभागो की क्षेत्रीय धर्मपाल प्रचार-प्रसार समितियो के निर्माण से कार्यकर्त्ताओ को एक विशाल टोली शीर्षोन्मुख पिरामिड की भाति आकार ग्रहण करने लगी और अत्यल्प काल मे ही भव्य कार्यक्रमो ने विकेन्द्रीकरण के निर्णय की दूरदर्शिता को प्रमाणित कर दिया। केन्द्रीय कार्यालय से सघ मन्त्री द्वारा निर्देशित ५ सूत्री योजना १ सर्वेक्षण २ शिक्षण ३ प्रशिक्षण ४ निरीक्षण और परीक्षण को साकार रूप प्रदान करने मे क्षेत्रीय सयोजक जुट गये। सघ अध्यक्ष, धर्मपाल समिति अध्यक्ष एव अन्य प्रमुखो के एक व्यापक प्रवास कार्यक्रम का दि २७ से २६ दिसम्वर तक आयोजन करने और उससे पूर्व क्षेत्रीय सयोजको द्वारा अपने क्षेत्र का प्रवास पूर्ण कर लेने के निश्चय ने कार्यकर्त्ताओ की अभिमता का जो आह्वान किया था, उसका सकारात्मक उत्तर मालव अचल मे फैले सघ निष्ठ सुश्रावको एव व्रती धर्मपाल बन्धुओ ने दिया।

बहुविध कार्यक्रमों की धूम

१७ अगस्त ७५ को बदनावर मे पद्मश्री (स्व) डॉ नन्दलालजी वोरदिया की पहल पर निदान, परीक्षण औषध दान हेतु आयोजित चिकित्सा शिविर से १०२ रोगियो ने लाभ उठाया। इससे पूर्व दिनाक २ अगस्त को बिलपाक गाव मे रतलाम क्षेत्रीय समिति के ११ सदस्यो ने सामूहिक प्रवास किया।

इन्दौर मे मक्सी क्षेत्रीय धर्मपालो को प्रशिक्षित करने हेतु दि १ अगस्त से ८ अगस्त तक पडित रत्न श्री सम्पत मुनिजी म सा.

के सान्निध्य मे आयोजित शिविर ने धर्म प्रभावना की आशातीत अभिवृद्धि की ।

रतलाम के श्री चम्पालाल जी पिरोदिया और उनकी धर्म-पत्नी श्रीमती धूरी बहिन पिरोदिया ने दि १० जुलाई से ९ अगस्त तक पूरे एक माह तक धर्मपालो के ४८ गावो मे पदयात्रा कर ५०० धर्मपालो सहित १०३४ लोगो को व्यसन मुक्त बनाया । इस पदयात्रा का महत्व इसी बात से आका जा सकता है कि यात्रा समापन समा-रोह मधुर व्याख्यानी श्री कवरचन्द जी म. सा. के सान्निध्य मे सम्पन्न हुआ ।

मन्दसौर क्षेत्र के सीतामऊ, नितरोदा, धमनार व दलौदा तथा खाचरोद क्षेत्र के उमरना, चौकी और बुडावन मे नई पाठशालाए खोली गईं ।

इन्दौर मे अध्यक्ष श्री गणपतराज जी बोहरा की अध्यक्षता मे दि ३१-८ को समिति बैठक आहूत की गई जिसे पडित रत्न श्री सम्पत मुनिजी म. सा. के अनुभूत सुझावो का भी लाभ प्राप्त हुआ । केन्द्रीय कार्यालय से सघमन्त्री भवरलाल कोठारी के अतिरिक्त सर्वश्री गोकुलचन्द जी सूर्या, श्री पी. सी. चौपड़ा, हीरालाल जी नादेचा, समीरमल जी काठेड,समाजसेवी मानवमुनि जी, वीरेन्द्र जी कोठारी, उज्जैन, झमकलाल जी घोटा और श्रीमती कमला चौपड़ा ने बैठक मे भाग लिया । इस बैठक मे प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए श्री समीरमल जी काठेड ने रतलाम क्षेत्र के कार्य को प्रेरक व आदर्श बताया । उन्होने मक्सी क्षेत्र के ५० धर्मपाल शिक्षको को इन्दौर मे प्रशिक्षित करने का सुझाव रखा, जिसे स्वीकारा गया ।

सघ मन्त्री भवरलाल जी कोठारी ने इस वर्ष पर्यूषण काल धर्मपालो के बीच बिताया इससे धर्मपालों मे सस्कारो को उत्प्रेरण मिला और प्रवृत्ति मे सक्रियता की सजीव रूपरेखा उभर कर सामने आई ।

खाचरोद क्षेत्रीय समिति :

दि ५ सितम्बर को मन्त्री भंवरलाल कोठारी के सान्निध्य में सेठ श्री हीरालाल जी नादेचा के सयोजकत्व में सर्वश्री सूरजमल जी बरखेडावाले, मानकलाल जी बुपक्या, चादमल जी कोठारी, प्रकाशचन्द्र जी बरखेडा, पारसमल जी भटेवरा व हस्तीमल जी दलाल को सदस्य मनोनीत कर क्षेत्रीय समिति का निर्माण पूर्ण किया ।

रतलाम मे श्री पी सी. चौपडा की अध्यक्षता मे समिति बैठक मे यह निश्चय किया गया कि जिस-जिस गाव मे धर्मपाल पाठशाला चलती है, एक-एक प्रमुख सदस्य सम्हालने की जिम्मेवारी ले । बैठक के पश्चात् श्री कवरचन्द जी म सा का आशीर्वाद ले प्रमुख गण मालव से थार तक समिति गतिविधियो की जानकारी देने निकल पडे ।

इन्दौर मे निर्धारित योजनानुसार दि. २१-६ से २८-६ तक जावरा, मक्सी, मन्दसौर व रतलाम के धर्मपाल शिक्षको का प्रशिक्षण शिविर पडित रत्न श्री सम्पत मुनि जी म. सा के सान्निध्य मे आयोजित किया गया, जिसमे ४५ शिक्षको ने भाग लिया । शिविर को मध्यप्रदेश के राजनेता श्री मिश्रीलाल जी गगवाल, गोकुलचन्द जो सूर्या, हीरालाल जी नादेचा, समीरमल जी काठेड व अनेक धर्मपालो ने सम्बोधित किया । श्रीमती यशोदा देवी बोहरा ने शिविरार्थियो से परीक्षात्मक प्रश्न पूछे । श्री गणपतराज जी बोहरा ने श्री सम्पत मुनि जी म सा के सक्षम मार्गदर्शन एव अथक परिश्रम के प्रति श्रद्धावनत आभार प्रकट किया ।

जावरा क्षेत्र के धर्मपालो ने तत्कालीन मुख्यमन्त्री मध्यप्रदेश श्री प्रकाशचन्द्र सेठी के प्रवास मे 'धर्मपाल स्वागत' के माध्यम से उन्हे प्रवृत्ति से परिचित कराया ।

संघ प्रमुखो के प्रवास की पूर्व तैयारियां .

सघ के लिए यह गर्व और आत्मिक सन्तोष का हेतु है कि प्रधान कार्यालय द्वारा निर्मित योजनाओ को ज्यो का त्यो लागू करने के लिए मालव क्षेत्र मे प्रवृत्ति कार्यकर्त्ताओ ने अहर्निश कार्य किया । दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह मे आयोजित प्रवास को सफल बनाने के लिए ३०० वर्ग मील क्षेत्र मे विस्तीर्ण भूभाग को कार्यकर्ताओ ने समुद्रमथन की भाति मथना प्रारम्भ कर दिया ।

मन्दसौर के क्षेत्रीय सयोजक श्री कन्हैयालाल जी मेहता, समाजसेवी श्री मानवमुनि जी व श्री अजीत काठेड ने सीतामऊ, डिगाव, बिल्लांभी आदि का और खाचरोद क्षेत्र में बोरखेडा आदि का वयोवृद्ध सेठ श्री हीरालाल जी नादेचा (सघ के भूतपूर्व अध्यक्ष) मयाचन्द जी काठेड व मानव मुनिजी ने तथा नई बस्ती, पिपलोदा, सेजावता, व भूनेडा, लुहारी व काबुलखेडी का प्रवास जावरा क्षेत्र मे मानवमुनि जी, श्री काठेड व श्री कर्णावट ने पूरा किया । सभी स्थानों पर शाला निरीक्षण व काबुलखेडी मे अमृतलाल जी धर्मपाल के यहा मोसर के प्रसग से सम्मेलन किया गया, जिसमे २५ गावो के ५०० धर्मपालो ने भाग लिया । भगन अबाराम जी व कानीराम जी घामडी आदि ने अपने विचार रखे । श्री काठेड ने साथियो सहित ४ दिसबर को पुन गरखी, उकेडिया व केरवासा आदि का प्रवास किया ।

देशनोक धर्मपाल सम्मेलन :

अगस्त से प्रारम्भ हुए कार्यक्रमो मे एक प्रेरक आयाम जोडा परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा के सान्निध्य मे सम्पन्न हुए देशनोक धर्मपाल सम्मेलन ने । सम्मेलन तक क्षेत्र की ६० शालाओ मे २००० विद्यार्थी पढने व धर्मज्ञान सीखने लग गए थे । १२ धर्मपाल छात्र [illegible] मे पढने लगे थे व धर्मपालो से प्रेरित हो गुर्जर समाज ने भगवान देवनारायण के समक्ष १८ नियमो की शपथ ले चुका था । [illegible] के साथ आयोजित सम्मेलन मे गुगाडिया की बहनो ने [illegible] भजनो 'गुरुजी आप बेगा पधारो म्हारा मालवा' आदि द्वारा [illegible] [illegible] की चाह को आचार्य श्री के चरणों मे निवेदित किया ।

इस अवसर पर अत्यत प्रभावित हो उडीसा सघ ने प्रवृत्ति को ११०० रु भेंट किए ।

गौरवशाली क्षेत्रीय सम्मेलन :

चिर प्रतीक्षित वर्षान्त आ पहुचा और दि २६ से २६ दिसबर तक के धर्मपाल क्षेत्रीय प्रवास हेतु सघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया, प्रवृत्ति अध्यक्ष श्री बोहरा, सघमत्री **भंवरलाल कोठारी** आदि आ पहुचे । केरवासा मे परिचर्चा कर दि २७ १२ को प्रवासी दल **सरसी के क्षेत्रीय** सम्मेलन मे आ पहुचा । शासकीय माध्यमिक शाला के प्रागण मे विशाल मच पर रतलाम जिले के जिलाधीश श्री ए वी श्री वास्तव, जिला शिक्षाधिकारी शिवशकर शर्मा, अल्प बचत निदेशक व उपनिदेशक, जावरा खड अधिकारी सहित जिलास्तरीय प्रमुख शासकीय अधिकारी विराजमान थे। जिलाधीश श्री श्री वास्तव ने सम्मेलन को सामाजिक चेतना के जागरण हेतु बधाई दी । सघ-प्रमुखो ने भी अपने विचार रखे ।

इस गौरवशाली सम्मेलन से प्रवृत्ति की गति को पख लग गये पडित रत्न श्री सम्पत मुनि जी म सा ने धर्मपालो को अपना मगल आशीर्वाद प्रदान किया । श्री समीरमल जी काठेड का ओजस्वी सयोजन देखते ही बनता था । ऐसे विशाल आयोजनो की सार्थकता के लिए आयोजको को कितना श्रम करना पडता है, कल्पना की जा सकती है । शाला शिक्षक श्री गोवर्धन शर्मा का सहयोग उल्लेखनीय रहा ।

बोरखेडा मे दि २८ १२ को नागदा खाचरोद क्षेत्र का क्षेत्रीय सम्मेलन सयोजक श्री हीरालाल जी नादेचा के अथक प्रयत्नो को मूर्त्तिमान रूप था । स्वागत द्वारो, वदनवारो से प्रवासियो की अगवानी की गई । धर्मपालो सर्व श्री शकर जी उमरना, कन्नीराम जी गिनवानिया, पन्नालाल जी डेलनपुर, वालाराम जी नायन, अमराजी भीमपुरा हीरालाल मकवाना, रामलाल आदि ने स्वागत व गीत आदि

प्रस्तुत किए । क्षेत्रीय समितियां बन जाने के बाद पुराने सभी कार्य-कर्त्ता पहली बार एक स्थान पर परस्पर मिले थे । अत: स्वागत करते समय श्री घलजी जैन की आंखें छलछला आई उन्होंने कठिन यात्रा मार्ग को लक्ष्य कर कहा 'आवा में सकट आयो, अणी बदले क्षमा चावूं ।' श्री वीरन्द्र कोठारी उज्जैन ने अन्य शेष जनों को भी धर्मपाल बनाने हेतु हाथों से प्याली और छुरी छुडाने का आह्वान किया । साधुजीवन जय-२, जैन धर्म जय-जय' गीत और मानवमुनिजी के प्रेरक प्रवचन हुए ।

श्री समीरमल जी कांठेड नें भावुक स्वरों मे नागदा क्षेत्र को धर्मपाल की आत्मा और तीर्थभूमि बताते हुए कहा कि यहां कि एक-एक झोपडी से प्यार की आवाज आती है । यहा धर्मपाल सुश्रावको की अटट शृ खला है । सारा भारत यहां मस्तक झुकाता रहेगा ।

श्री गोकुल चंद जी सूर्या नें कहा कि धर्म में जाति बंधन नही होता । आने वाली पीढीयां आजके धर्मपालों को आदर्श रूप में याद करेगी । हर्ष के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ । सीतामऊ में मे तीसरे क्षेत्रीय सम्मेलन के लिए पहुंचने से पूर्व संघ व धर्मपाल प्रमुखो ने मार्ग मे प. र श्री सम्पत मुनि जी म. सा. के दर्शन किए और घमनार, धु घडका और डिगाव मे जन सम्पर्क किया । सीतामऊ पहुचने पर इस एतिहासिक नगर के मार्गों पर शोभायात्रा निकाली गई । श्री केवलचद जी मूथा रायपुर की अध्यक्षता मे सम्मे-लन प्रारम्भ हुआ । 'फैलादो जग मे जैन धर्म नानागुरु का फरमाना है' एव 'कदी म्हानै तारोगा' गीतो के बीच श्री बोहरा जी ने कहा कि कर्त्तव्य ही धर्म है आप भी अपने कर्त्तव्य का पालन करें । सर्व श्री कन्हैयालाल जी मेहता, अशोक नलवाया, श्रीमती कंचन देवी मेहता एव श्रीमती भवरी देवी मूथा रायपुर ने भी अपने विचार रखे । श्रीमती यशोदा देवी बोहरा, श्रीमती शाता देवी मेहता, श्री रुघनाथ व अन्य धर्मपालो ने अपने अनुभव सुनाए ।

प्रयासों की अन्तहीन शृंखला :

प्रवृति कार्य वेग पकड कर प्रगति के पथ पर सरपट दौडने लगा था और कार्यकर्त्ताओ का उत्साह इस कदर बढ चुका था कि इन व्यापक स्तरीय आयोजनो के बाद भी प्रवासो की झडी लगी रही। अनेक प्रकार के शुभ कार्य होते रहे। कार्यकर्त्ता प्रवृत्ति क्षेत्र की छोटी से छोटी घटना मे सहभागी बनने और उसके माध्यम से प्रवृत्ति की नीव को मजबूत बनाने के लिए कमर कस कर जुट गए। उन्होने मौसर को 'श्रद्धाजलि सभा' व औसर को 'स्नेह–सम्मेलन', विवाह को 'आशीर्वाद-समारोह' के रूप मे परिवर्तित कर उत्तम सस्कार निर्माण के स्वप्न को साकार बनाना प्रारम्भ कर दिया।

इन्ही निमित्तो से ३१-१२-७५ को बडावदा मे ५० गावो के बन्धु-भगिनी, ७-१-७६ को घामेडी व रूलकी की शाला का निरीक्षण, १२-१ को सरसी, १६-१ को खोखरा व १८-१ को शिवपुर-रामपुरिया मे धर्मपालो के स्नेह सम्मेलन हुए।

७ मार्च ७६ को शीला–भवन रतलाम मे समिति बैठक आगामी धर्म जागरण, जीवन साधना और सस्कार निर्माण पदयात्रा की सफलता हेतु आयोजित की गई जिसमे समिति अध्यक्ष श्री बोहरा जी सघ-प्रमुख श्री सरदारमल जी काकरिया सहित समिति प्रमुख व धर्म-पाल बन्धु उपस्थित थे।

मार्च मे ही रुघनाथगढ मे ४ विवाहो के मौके पर आशीर्वाद समारोह आयोजित किये गये

९ मार्च को श्री वल्लभ कुवर जी म सा एव श्री हर्ष-कवर जी म. सा. ने सेजावता गाव से धर्मपालो को धर्मलाभ देने का क्रम प्रारम्भ किया जो एक सप्ताह तक चला।

पदयात्रा :

इसी माह में १९ गावो जावरा, सेजावता, भूतेड़ा, केडिड़या,

केरवासा, डोडियाणा, ररसी, रुघनाथगढ, गुणावद, सेमलिया, नामली, पचेड, पलसोडा एव डेलनपुर होती हुई पदयात्रा रतलाम पहुची। यात्रा को सर्वश्री गुमानमल जी चोरडिया, गणपतराज जी वोहरा, सघ मन्त्री भवरलाल कोठारी, प्रमुखगण सर्वश्री सरदारमल जी काकरिया, जयपुर के रत्न व्यवसायी व शास्त्रज्ञाता सरलमना श्री श्रीचन्द जी गोलछा, मानव मुनिजी, समीरमल जी काठेड, पी सी चौपडा, महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती फूलकुमारी काकरिया व मन्त्री श्रीमती शाता मेहता ने नेतृत्व और मार्गदर्शन प्रदान किया ।

यात्रा मे डा० बोरदिया जी ने सर्व श्री डा० प्रकाश, डा० सोनी बिरमावल व शातिलाल जी मूणत की सहायता से १००० रोगियो की चिकित्सा की ।

रतलाम क्षेत्रीय समिति :

यात्राकाल मे ही रतलाम क्षेत्रीय समिति के चुनाव सम्पन्न हुए तथा श्री पी. सी. चौपडा को सयोजक, श्री झमकलाल घोटा को सहकोपाध्यक्ष, श्री चन्दनमल जी पटवा को मन्त्री, श्री आनन्दीलाल जी भुरार को सहमन्त्री व सर्वश्री उमरावमल लोढा, रखबचन्द कटारिया, शातिलाल जी सीयार, हस्तीमल मुणत, कन्हैयालाल बोथरा, कोमलबाई मूणत, कान्ता कटारिया, जसु बाई घोटा व चन्द्र बाई मुणत को सदस्य मनोनीत किया गया ।

महावीर जयन्ती व अक्षय तृतीया सन् ७६ :

महावीर जयन्ती पर खाचरोद-नागदा के कार्यकर्त्ताओ ने मडावदा, घाडी, सोनेडा, पलसाडाका एव मक्षी क्षेत्र का ३ भिन्न दलो मे विभक्त होकर क्रमश श्री वीरेन्द्र कोठारी, श्री प्रकाशचन्द्र सूर्या और श्री कातिलाल सूर्या के नेतृत्व मे ताजपुर भैसोदा, बरखेडा, दत्तोतर, मक्षी, कायथा, नाहरखेडी, लसूलडी, बिछरोद, भीमपुरा, रूलकी, चौसला व सरोलिया आदि का व्यापक प्रवास किया गया।

श्री प्रकाश सूर्या ने ताजपुर मे कूप निर्माण और श्री काति-लाल सूर्या ने रूलकी मे समता-भवन निर्माण पर विचार-विमर्श किया ।

दशपुर मे अक्षय तृतीया के अवसर पर :

श्री कवर पडित रत्न श्री प्रेम मुनि जी म सा, विदुषी महासती श्री मगलाकवर जी व महासती श्री चचलकवर जी द्वारा धर्मपालो को प्रबोधित किया गया । इसी सुअवसर पर क्षेत्रीय समिति सयोजक श्री कन्हैयालाल जी मेहता ने १५ मई से मन्दसौर मे धर्म-पाल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर लगाने के निश्चय की घोषणा की व श्री अशोक नलवाया ने व्यवस्था परक विचार किया ।

इन्ही दिनो बोहरा दम्पत्ति ने जावरा क्षेत्रीय स्नेह सम्मेलनो मे अपने सात्विक उद्बोधनो द्वारा धर्मपालो को अनमोल प्रेरणा दी ।

९ मई को मक्षी के धर्मपाल मोहल्ले मे गीता-भवन इन्दौर के सहयोग से स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमे सभी समाजो के ९०० स्त्री-पुरुषो के स्वास्थ्य की जाच की गई ।

फिर व्यापक क्षेत्रीय प्रवास :

मात्र ६ माह के अतराल से अर्थात् २७, २८ व २९ दिस-म्बर ७५ के बाद १०, ११, १२, व १३ जून ७६ की तिथियो मे फिर से सघ-प्रमुखो के व्यापक प्रवास व क्षेत्रीय सम्मेलनो के आयोजनो की घोषणा कर दी गई । घोषणा को क्रियान्वित करने निर्धारित समय पर सघ प्रमुख कर्मभूमि धर्मपाल क्षेत्र मे आ पहुचे ।

मूसलाधार वर्षा मे क्षेत्रीय सम्मेलन :

दि. १० व ११ जून की तिथिया नागदा क्षेत्रीय ग्रामो के

प्रवास हेतु निर्धारित थी । इस क्षेत्र का क्षेत्रीय सम्मेलन दि १०-१
को धर्मपाल की उद्भव स्थली गुराडिया मे आयोजित होना था किन्तु
निरन्तर मूसलाधार वर्षा से गुराडिया पहुचने का कोई मार्ग शेष न
रहा । अत. गुराडिया के स्थान पर नागदा मे आयोजन हुआ । यह
देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि भारी वर्षा के बीच भी ५० से अधिक
गावों के धर्मपाल बन्धु सम्मेलन मे आ पहुचे । केवल धर्मपाल ही
बरसात मे नही पहुचे, प्रवृत्ति अध्यक्ष श्री गणपतराज जी बोहरा भी
वर्षा मे गिर पडे । हाथ मे नौ टाके आये पर निश्चित समय अपनी
प्रशात व सौम्यमुद्रा मे मच पर उन्हें बैठा पाकर सभा के हर्ष का पार
नही रहा ।

कवि मन गा उठा :

आधी क्या है तूफान मिले, चाहे जितने व्यवधान मिले
बढना ही अपना काम है, बढना ही अपना काम है—

इन भावनाओ के आधार पर प्रतिष्ठित होने से ही प्रवृत्ति
का भविष्य उज्जवल है ।

सर्वप्रथम अशोककुमार जी दलाल खाचरोद व बापूलाल जी
चोरडिया नागदा, हीरालाल जी नादेचा, समीरमल जी काठेड, मया
चन्द जी काठेड, मनोहरलाल जी काठेड, विमल चौधरी, धर्मपाल
बन्धु सर्वश्री रमेश गुराडिया, दूधा जी लसूडिया, पूनाजी पालकी
ओकार जी नेतवास, शकर जी, धूलजी बोरखेडा, धुल्लाजी अतरालिय
व अम्बाराम जी नागझिरी आदि ने स्वागत किया । श्री धूलजी भा
जैन साहब ने स्वागत करते हुए कहा कि अन्धेरे मे सूर्य के प्रका
की भाति हमे आचार्य श्री जी प्राप्त हुए और अब आप जान जोख
मे डालकर भी हमसे मिलने व हमे सम्हालने आते हैं । हम पर
सौभाग्यशाली है ।

श्री समीरमल जी काठेड़ ने कहा कि 'जल मे रहकर भ

मछली प्यासी है' अर्थात् समाज मे रहकर भी आपको सम्मान नही मिला। धर्मपाल प्रवृत्ति आपकी सम्मान, समता, व आर्थिक विकास की प्यास मिटायेगी। श्रीमती यशोदा देवी बोहरा ने कहा धर्म कोई नही छीन सकता। श्री बोहरा जी ने कार्यकर्त्ताओ व धर्मपालो के महान् सहयोग को सराहा। यहा १५० व्यक्तियो ने व्यसन मुक्ति की शपथ-ग्रहण की।

पांसलोद, बलेड़ी :

यहा से प्रवासी दल ने पांसलोद व बलेडी का प्रवास किया। बलेडी समाजसेवी श्री मानवमुनि जी की जन्मस्थली है। यहा सघ मन्त्री भवरलाल कोठारी, डा० सागरमल जी जैन व श्री गुमानमल जी चोरडिया सघ अध्यक्ष ने अपने विचार रखे। श्री शकर जी राठौड ने स्वागत किया।

ताजापुर गाड़ोली :

दि १२-६ को ताजापुर ग्राम प्रवेश के समय प्रवासी दल का धर्मपाला शाला बालको दिलीप, मगला, कमला, व दिनेश ने तिलक व मगल गीत पूर्वक स्वागत किया। बालको की गुरुवन्दना, इच्छाकारेण व २४ तीर्थंकरो की नामावली आदि सुन सभी को उनके ज्ञान पर हर्ष हुआ।

सेठी जी का शुभागमन :

श्री बाबूलाल जी सोलकी ने कहा कि केन्द्रीय मन्त्री श्री श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी इसी स्थान पर हम लोगो के बीच पधारे थे। उनका शुभागमन धर्मपाल एकता व शक्ति का प्रमाण है।

श्री सोलकी ने कहा कि पडित रत्न श्री सम्पत मुनिजी म सा का शुभागमन हमारे लिए अविस्मरणीय है।

यहा से प्रवासी दल गाडोली पहुचा जहा के धर्मपालो

की स्थिति को श्री बोहरा जी ने 'आदर्श प्रयत्न कहकर सम्मानित किया। यहां के शिक्षक श्री छीतरमल जी की सभी ने भूरि-भूरि प्रशसा की।

प्रवृत्ति इतिहास का नया अध्याय- 'समता-भवन'

दि. १३ जून को मक्षी में श्री बोहरा जी के सहयोग से निर्मित राजमार्ग पर स्थित 'समता-भवन' धर्मपालो को समर्पित किया गया। श्री राजेन्द्रलाल जी दलाल के निवास स्थान से समता-भवन तक शोभायात्रा निकाली गई जो वहा पहुंच कर सभा में बदल गई। भवन का उद्घाटन संघ-अध्यक्ष श्री चोरडिया जी, मन्त्री कोठारी जी व पचासो स्वधर्मी व धर्मपाल बान्धवों के सामूहिक भक्तामर आदि पाठ व सामायिक पूर्वक हुआ। इस क्रियात्मक अद्भुत उद्घाटन पर धर्मपाल हर्ष से नाच उठे।

सर्वश्री बोहराजी, पी. सी चौपडा, समीरमल जी कांठेड, चम्पालाल जी सुराणा (अब स्वर्गीय), हीरालाल जी नादेचा (अब हमारे बीच नहीं रहे), राजमल जी कांठेड जावरा, रोशनलाल जी खाबिया, शातिलाल जी ललवाणी इन्दौर, (स्व) श्री गेदालाल जी खाबिया, श्रीमती रोशन देवी खाबिया, वीरेन्द्र जी कोठारी, श्रीमती रसकुंवर जी सूर्या व कमलाबाई कोठारी आदि शोभायात्रा मे शामिल थे।

क्षेत्रीय सम्मेलन के प्रमुख अतिथि श्री सरदारमल जी कांक-रिया एव अध्यक्ष श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा थी। ज्ञान मन्त्री श्री मोहनलाल जी मूथा ने मंगला चरण किया। सर्वश्री रुघनाथ जी, कालूजो, शकर जो, छीतरमल जी धर्मपाल व रामसिंह जी गूजर ने अपने विचार रखे।

मन्त्री कोठारी ने समता-भवन को स्वाध्याय व धार्मिक क्रियाओ का जीवन्त केन्द्र बताते हुए कहा कि इस निर्माण व समर्पण

के साथ ही अब धर्मपाल प्रवृत्ति व्यसनमुक्ति के बाद विकार मुक्ति के दौर मे प्रवृष्ट हो रही है । विकार मुक्ति के लिए सामायिक, सम भाव की साधना आवश्यक है । इस साधना हेतु यह समता भवन है । अब हम व्यक्ति सुधार के क्षेत्र मे प्रवेश हो रहे हैं । अत हमारा उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया है ।

श्री व श्रीमती बोहरा ने आत्म चिंतन व बाल शिक्षण पर बल देते हुए धर्मपालो के समुत्कर्षपूर्ण जीवन की कामना की ।

धर्मपाल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर मन्दसौर :

मन्सौर मे दि १६ मई से ३० मई ७६ तक यह शिविर पडितरत्न श्री प्रेममुनि जी म सा के सानिध्य एव पडितरत्न श्री सरदारमुनिजी म सा. के मार्गदर्शन मे सपन्न हुआ ।

प श्री बसती लाल जी नलवाया की अध्यक्षता और श्री धनसुखलाल जी भाचावत विधायक की विधि तथा क्षेत्रीय सयोजक सर्व श्री पी. सी चौपडा, हीरालाल जी नादेचा, कन्हैयालाल जी मेहता मानवमुनी जी, वीरेन्द्र जी कोठारी, चम्पालाल जी पीरोदिया, कन्हैया लाल जी बोथरा आदि की उपस्थिति मे शुभारम्भ हुआ ।

रमेश गुराडिया, लोकेन्द्रतारापुना के गीत, शिविराधिपति श्री चेतनमलजी नागौरी कनोड ने प्रतिवेदन मे श्री जानकी नारायण श्रीमाली के शिक्षण को सराहा । श्री कालूराम जी शिक्षक घराड सर्वप्रथम रहे ।

समापन समारोह मे श्री यू एन भाचावत ने शिविर को 'असाप्रदायिकता का दर्शन', डॉ बोरदिया जी ने बच्चो मे अच्छी आदतें डालने श्रीमती हीराबेन बोरदिया व ए सी दिवाकर व मदसौर की महिलाओ ने भी विचार रखे । सघमत्री श्री कोठारी का नारा 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा' लोकप्रिय रहा ।

जावरा समिति :

इन्ही दिनों मे जावरा क्षेत्रीय ध. प्र प्र. समिति का श्री समीरमलजी काठेड के मार्गदर्शन मे निम्न प्रकार पुर्नगठन किया गया। श्री राजमल काठेड, सयोजक एव सदस्य गण सर्व श्री समीरमल जी कर्णावट, सुरेशकुमार जी काठेड (सचिव), राजमल जी पगारिया व चादमल जी जैन पीपलोदा। इस समय इस क्षेत्र में सरसी, के खासा, डोडीयाणा, घिनौदा, भूतेडा, उकेडिया, ऐजावता, लौहारी, राकौदा, रोजाना, रीगनोद, जेठाना, भडका, असावरी, नई आबादी और मांडवी की शालाए चलती है। जिनमे से अनेक का श्री राजमल काठौड ने निरीक्षण किया।

संघ का नोखा अधिवेशन–चिकित्सा सेवा :

२५ सितम्बर ७६ को नोखामंडी मे श्री अ.भा. सा जैन संघ के १४ वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर श्री गणपतराज जी बोहरा द्वारा अपने अनुज स्व श्री सम्पतराज जी बोहरा की स्मृति में श्रीमद् जवाहाराचार्य शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक औषध व सुविधायुक्त चल चिकित्सालय वाहन धर्मपाल क्षेत्रो को भेट किया। वाहन की उपयोगिता व योजना पर डॉ. श्री नदलाल जी बोरदिया ने प्रकाश डाला।

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री दादा भाई श्री केशरी लाल जी बोर-दिया ने चे. चि वाहन का उद्घाटन किया। श्री बोहरा जी ने धर्मपालो हेतु चल रही प्रवृत्तियो मे सघ सदस्यो के प्रभूत सहकार को सराहनीय बताया।

अधिवेशन पर चिकित्सालय संचालन हेतु प्रस्तुत सघमंत्री भवरलाल कोठारी के सुभावो को सर्व श्री चोरडिया, बोहरा जी डॉ. बोरदिया चौपडा जी काकरियाजी, मानवमुनिजी एवं सघ उपाध्यक्ष श्री केशरीचद जी सेठिया मद्रास की समिति ने अंतिम रूप देकर निम्न प्रकार सचालन समिति बनाई.-

सर्व श्री चोरडिया जी, बोहरा जी, काकरियाजी, चौपडा जी, केशरीचदजी सेठिया मद्रास, भवरलाल जी बैद, हीरालाल जी नादेचा, गोकुलचद जी सूर्या, समीरमल जी काठेड, मानवमुनि जी, श्रीमती यशोदा देवी बोहरा, फूलकवर जी काकरिया, एव शान्ता मेहता। प्रधान डॉ बोरदिया जी व सयोजक भवरलाल कोठारी।

५० हजार वार्षिक बजट व राशि एकत्रित करने को ५००-पाचसौ रुपयो के कूपन की योजना मजूर की गई। विशेष उल्लेखनीय है कि तीन धर्मपालो ने तत्काल ये कूपन खरीदे।

धर्मपाल-सम्मेलन :

दि २४ ९ को सम्पन्न धर्मपाल सम्मेलन की विशेषता यह थी कि स्वय धर्मपाल वक्ता अधिक थे जिनमे सर्व श्री शकरलाल जी मुखिया, भैरूलाल जी घमनार, मानसिह जी, नानूराम जी बरबोदना आदि नई प्रविष्टी थे। सम्मेलन ने आज आचार्य श्री जी द्वारा प्रदत्त स्वालबन के मत्र को वर्ष का ध्येय वाक्य ग्रहण किया। सम्मेलन भव्य और विशाल था। यहा बताया गया कि रतलाम के १११ गावो मे ६२५० धर्मपाल है। १२ पाठशालाओ मे २३५ विद्यार्थी पढ रहे हैं। जावरा क्षेत्र मे ६५०० धर्मपाल हैं।

नागदा खाचरोद क्षेत्रीय समिति का पुर्नगठन :

निम्न प्रकार किया गया—सयोजक श्री मयाचद काठेड, सहसयोजक-सूरजमल जी बरखेडावाले, मत्री मनोहरलाल जी सदस्य सर्व श्री घूलजी भाई जैन गुरडिया, आनदीलाल जी कठेड, श्रेणिक लाल जी और शान्तिलाल जी नाहटा और चौथमल जी नकदावाले।

बढ़ते-चरण :

पयूर्षणपर्व प्रवृत्ति सचालित सभी शालाओ मे मानाया गया। जावरा मे वृतादिक, बागरोद, घोसवास मे अभयदान व चिकित्सा सेवा की। नवबर माह मे चलचिकित्सालय द्वारा २५० रोगी देखे गए।

जावरा क्षेत्रीय सयोजक राजमल जी काठेड, ने सहयोगियो के साथ रोझाना, झालवा व १२ नवबर को रिगनोद अनन्तर केरवासा, पीपलादो भडका, जेठाना व धमानार आदि शालाओ का निरीक्षण किया गया।

श्री अ भा सा. जैन महिला समिति ने पर्यूषण पर्व पर धर्मपाल क्षेत्रो मे पूरे ७ दिन विविध कार्यक्रम मत्री शान्ता मेहता व मामी जी द्वारा आयोजित किए समिति ने ३० ११. ७६ को मक्सी मे धर्मपाल बहिनो के स्वावलबन हेतु सिलाई केन्द्र स्थापित किया, जिसका शुभारभ श्री बाहरा जी ने किया।

दि. १२. ६. ७६ रिंगनोद मे अ. भा. श्री नानेशाचार्य धर्मपाल जैन महिला मडल की स्थापना की गई जिसमे पदाधिकारी का चुनाव किया गया।

२६ ११ को कलालिया मे प. रत्न श्री प्रेममुनि जी म. सा. का प्रेरक प्रवचन हुआ।

दि. २ व ४ दिसबर को मन्दसौर क्षेत्र के डिगाव, बिलात्री, तुमडा, दलौदा, साखतशी घमनार व धु धडका का प्रवास श्री मेहता ने किया।

श्री धर्मपाल प्र. प्र. समिति बैठक के महत्त्वपूर्ण निर्णय :

रतलाम मे दि २७. ११. ७६ को अध्यक्ष श्री बोहरा जी की अध्यक्षता मे चौपडा जी के निवास स्थान 'शील-भवन' मे मानव मुनि जी के सयोजन मे सम्पन्न बैठक मे क्षेत्रीय सयोजको सहित ३३ उत्साही कार्यकर्त्ता ने महत्वपूर्ण निर्णय लिए तीसरी पदयात्रा का मार्ग निर्धारण मानवमुनि जी के प्रतिवेदन के अनुसार किया जावेगा।

धर्मपाल शालाओ मे सहायक शिक्षण सामग्री वितरित की जावे।

रतलाम मे १ मई से २६ मई ७७ तक सभी क्षेत्रो के धर्म पाल शिक्षको का शिक्षण शिविर आयोजित किया जावे ।

कार्य विस्तार पर सन्तोष व प्रसन्नता अनुभव करते हुए ५ के स्थान पर ७ क्षेत्रो मे प्रवृत्ति का पुर्न विकेन्द्रीकरण किया गया । नए क्षेत्र क्रमश नागदा एव मक्सी निर्धारित किए गए ।

सघ अधिवेशन के समय धर्मपाल युवको का सम्मेलन आयोजित किया जाय ।

प्रवास :

समिति बैठक से प्राप्त उत्साह को सजोए प्रवास व सम्मेलनो की नवीन धूम मचादी गई । परथाजी धर्मपाल के आमन्त्रण पर जावरा क्षेत्र के ठीकरिया ग्राम मे श्री समीरमलजी व रामकरण जी लढा के सान्निघ्य मे विशाल सम्मेलन हुआ ।

रतलाम समिति ने श्री पी सी चौपडा, मानवमुनिजी, एव मामा-मामी के नेतृत्व मे ३ पृथक दलो मे सगठित होकर नवबर मे डेलनपुर, सेजावता, शिवपुर, वडोदिया, घोसवास व बागरोद आदि गावो का प्रयास किया । अनेक नई पाठशालाए प्रारभ की गई ।

डॉ प्रकाश के नेतृत्व मे चल चि द्वारा चिकित्सा सेवा जारी थी ही ।

दिसंवर १७-१८ को चौपडा जी, मुनि जी, धूलजी व देवजी धर्मपाल सहित यात्रा के पडावो का देर रात तक प्रवास किया गया, जिससे सवद्ध गावो मे उत्साह की नई लहर छा गई ।

दि १४-१५-१६ दिसवर को ही नव नियुक्त सयोजक श्री भयाचद जी काठेड ने मुनिजी, धुल्लाजी आदि के साथ गुराडिया, लेकोडा, घूमापेडा, मऊ, वोरखेडा, आक्या व सोनेडा का प्रयास सपन्न किया, जिसमे गुराडिया के समता-भवन निर्माण को शीघ्र पूरा करने,

शाला निरीक्षण व ग्रामसभाए की गई ।

चिकित्सालय की उपलब्धियां :

श्रीमद् जवाहराचार्य चल चिकित्सालय का शुभ प्रारंभ एक एक युगान्तरकारी कार्य रहा । चिकित्सालय ने अपने कार्यकाल के प्रथम पक्ष मे ही रतलाम-जावरा के १८०७ किलोमीटर क्षेत्र के १६ गावो के ३६२ पुरुषो, २१८ स्त्रियो एव २७५ बालको की चिकित्सा की गई । प्रभारी डॉ. प्रकाश व सहयोगियो ने ४० तरह के रोगो का निदान किया । डॉ. बोरदिया ने इसका २०.१२ को निरीक्षण कर सन्तोष व्यक्त किया ।

मक्षी में नव उत्साह की लहर :

मक्षी मे नव नियुक्त सयोजक श्री राजेन्द्रलाल जी दलाल, समाज सेवी श्री मानत्रमुनिजी के नेतृत्व मे दि १६. १. ७९ को स्थानीय कार्यकर्त्ताओ की बैठक सम्पन्न हुई । कार्यकर्त्ता प्रमुख सर्व श्री रुघनाथ जी, हीरालाल जी मकवाना, बाबूलाल व रामलाल जी मौजूद थे । बन्द सिलाई केन्द्र, धर्मपाल शाला व समता-भवन मे नव जीवन प्रारभ करने का निर्णय किया गया । मक्षी क्षेत्र की सभी शालाओ के शिक्षको की कठिनाइयो के निराकरण पर भी विचार किया गया ।

इसी दिन ग्राम बण्डवा का प्रवास किसा गया जहा के सर-पच श्री रामलाल ने बताया कि १ वर्ष पूर्व इस गाव मे शराब की २० भट्टिया थी आज उसका नामोनिशान मिट गया । गाव सामली के प्रवास मे श्री कामली खा भी सामिल थे । श्री हीरालाल जी मकवाना और नानालालजी मठ्ठाने गडौली, भोकर, सरोलिया, चौसला रूलकी, बल्लिया, लालपुर, पातनाखेडी, ताजपुर, मक्सी व शाजापुर का प्रवास पैदल, रेल व बस मे पूरा किया ।

इन्ही दिनो ताजपुर मे श्री मोतीलाल जी पडा के पिता श्री

भीकाराम जी ८५ वर्ष के निधन पर समीपस्थ क्षेत्रो के धर्मपालो ने श्रद्धाजलि सभा आयोजित की । स्व श्री भीकाराम जी ने नोखा सघ अधिवेशन के अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा. से शीलव्रत अगीकार किया था।

इस क्षेत्र मे चिकित्सालय ने ३१ जनवरी से १५ फरवरी ७७ तक रानी, हरसोदन, नैनावद सहित अनेक गावो मे जन सेवा की ।

मक्षी की नवगठित समिति निम्न प्रकार है—मुख्य सयोजक श्री गोकुलचदजी सूर्या, सयोजक श्री राजेन्द्रलाल जी दलाल, सदस्य सर्व श्री वीरेन्द्र कोठारी, हुकमसिंह पटेल, सरपच, नदराम भावसार, रामसिंह गूजर, रघुनाथ, रामलाल, हीरालाल, इन्द्रमल जैन व घल जी भाई भावसार ।

जावरा क्षेत्र मे ६ से १० जनवरी तक शालाओं का निरीक्षण, दरी पट्टी आदि वितरण व ग्राम सभाए की गई । १५० विद्यार्थियो मे से ११२ परीक्षा मे उत्तीर्ण हुए । नागदा क्षेत्र की गुराडिया शाला आदर्श घोषित की गई । जहा ४५ छात्रो मे से २१ सामायिक व प्रतिक्रमण सीख चुके हैं, शेष की भी प्रगति सतोष जनक है । गाव के सभी ४७ परिवार सामायिक के प्रति विशेष सचेष्ट हैं । शिक्षक श्री रमेश चद्र के प्रयास प्रशसनीय है । रठडा के नानेश समता मडल मे श्री मोतीलाल जी अध्यक्ष, श्री दयाराम जी मत्री, श्री घूल जी कोषाध्यक्ष व सर्व श्री पन्नालाल जी, नाथूलाल जी, नरसिंहलाल जी, अम्बाराम जी, कालूराम जी व भैरा जी (सभी धर्मपाल) सदस्य निर्वाचित हुए। शाला मे १६ वालक हैं, अध्ययन प्रशसनीय । इस क्षेत्र की अन्य शालाए भी सस्कार क्षम हैं ।

श्री मत्राचद जी साथियो सहित वरावर प्रवास कर रहे हैं । गुराडिया मे महासती श्री शायर कुवर जी म. सा. ठा ३ के पधारने पर धर्म गगा प्रवाहित हो उठी ।

खाचरौद क्षेत्र में भी नव नियुक्त संयोजक श्री सूरजमल जी ने भी केशरिया, दीवेल, भु वासा, बेठावास व मडावदा आदि का प्रवास किया। वयोवृद्ध सेठ श्री हीरालाल जी नादेचा स्वय अपनी केशरिया पगडी से सुशोभित गौरव से दीप्त मुखमडल से प्रेरणा प्रदान करते हुए कडकडाती शीत मे भी चिकित्सा वाहन के साथ जनसेवा प्रवास मे पधारे।

रतलाम क्षेत्र में भी जागरण का यह शंख गूंज रहा था। डेलनपुर, पलसोडा पचेड व नामली शाला बालको के शिक्षण व धर्म-ज्ञान को देख दातो तले अ गुली दबानी पडती थी। रिगनोद शाला छात्रो के सस्कार निर्माण की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए श्री शैतान मल मन्नालाल जी बरडिया ने ४८ स्लेटे वितरित की। मानवमुनि जी ने सभी को आर्शीवाद दिया।

समिति बैठक श्री बोहरा जी की अध्यक्षता में २८ फरवरी को श्री समीरमल जी काठेड़ के निवास स्थान पर हुई।

धर्मपाल नवयुवक रैली : पाच दिवसीय रैली का समापन शाजापुर मे महासती श्री रमणीक कवर जी म. सा. के सान्निध्य में हुआ। महासती ने धर्मपालों की चेतना, श्रद्धा, उत्साह व सयोग की भूरि-भूरि प्रशसा की। श्री बोहरा जी ने कहा कि नि स्वार्थ भाव से रात-दिन जुटे हुए प्रवृत्ति के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं को इस प्रगति का श्रेय है। सघ अध्यक्ष श्री चोरडिया जी ने इसे जैन धर्म का उद्योत बताते हुए धर्मपालो का अभिनन्दन किया। श्री चुन्नीलाल जी ललवानी जयपुर व शाजापुर सघ अध्यक्ष श्री केशरीचद जी बैद सहित अनेक वक्ताओ ने अपने विचार रखे।

१०० धर्मपाल युवकों की यह रैली दि. २७ १० ७६ को रणथभवर से प्रारभ होकर बोरछा मडी, तिलावद, लिजामडी, खोरिया, विकलाखेडी, आला उमरोद, होते हुए ३०-१० को शाजापुर मे प्रवेश किया। शिक्षक रूप मे श्री जानकीनारायण श्रीमाली बीकानेर का

सान्निध्य प्रेरक रहा । रैली को मध्य प्रदेश के मत्री श्री शेखर जी ने 'एक महान यज्ञ' कहकर पुकारा ।

बढते-चरण : अनवरत प्रवासो से कार्य चला गया । १३ फरवरी को रूनखेडा मे ४० गावो का सम्मेलन व १ मार्च रिंगनोद मे सिलाई केन्द्र का उद्घाटन यशोदा माता ने किया । २० मार्च को माण्डवी मे बोहरा जी के सान्निध्य मे धर्मसभा हुई । इस बीच सभी क्षेत्रो मे प्रवास जारी थे ही । ग्राम पचेड मे भी महिला समिति सहयोग से सिलाई केन्द्र व पुस्तकालय प्रारभ किये गए जिनकी सचालन समिति मे श्री मोहन लाल धर्मपाल व यूसुफ खा को सामिल किया ।

संघ प्रमुखो का त्रिदिवसीय प्रवास :

लगभग ६ माह के अतराल से धर्मपाल क्षेत्रो को सम्हालने के लिए आयोजित होने वाले सघ प्रमुखो के दि. ६ से ८ मई के प्रवास ने फिर से प्रवृत्ति गौरव मे वृद्धि की । ६ मई ७७ को प्रात खाचरौद मे श्री नादेचा जी के यहा समाज बैठक, दोपहर मे उमरना मे १० गावो के धर्मपालो का श्री शकरलाल जी धर्मपाल के आतिथ्य मे सम्मेलन, रात्रि को विरला ग्राम नागदा की दादा बाडी मे समाज सभा हुई । दि ७ को प्रात मक्षी मे धर्मपालो से चर्चा, दोपहर को गूजर समाज प्रतिनिधि-सम्मेलन व रुलकी मे समता-भवन का मुहुर्त्त व सभा, तिलावद मे पाठशाला खोलने की घोषणा के बाद प्रवासी दल सिरोल्या पहुचा ।

दि ८ मई को प्रात उज्जैन मे श्री महेन्द्र मुनि जी का प्रवचन सुना व दोपहर मे श्री गोकुलचद जी सूर्या के निवास पर समिति बैठक की गई । रिंगनोद प्रवास का नेतृत्व श्री चोरडिया जी व श्री बोहरा जी ने किया । बैठक मे दि २९ सितवर से १४ अक्तूवर तक भीनासर मे धर्मपाल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर परम पूज्य आचार्य श्री जी म सा के सान्निध्य मे आयोजित करने का निश्चय किया गया ।

इस प्रवास से पूर्व महावीर-जयंती पर जावरा, के खासा, कलालिया, रिंगनोद, धमनार, नगरी आदि का प्रवास भी श्री बोहरा, श्री चोरडिया, कोठारी व धर्मपाल प्रमुखो ने पूर्ण किया तथा नगरी मे श्री कचरमल जैन व सरपच भैरू लाल जी (भारत स्तर पर पुरस्कृत किसान) सहित ७ सदस्यो की धर्मपाल समिति बनाई गई। चार दिनों का यह प्रवास सघ और धर्मपाल समन्वय की दिशा मे महत्वपूर्ण रहा ।

२० मई ७७ को संघ प्रमुख श्री सरदारमल जी कांकरिया ने धर्मपाल क्षेत्रो का प्रवास किया । सभी क्षेत्रीय प्रमुखो ने मासिक प्रवास पूर्ण किए ।

१९ जून ७७ को पूना मे आयोजित आम सभा मे सघ कार्य समिति बैठक के अवसर पर धर्मपाल प्रवृत्ति पर चर्चा मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही ।

जावरा में १४ अगस्त को तपस्वी श्री सौभागमल जी म. सा. के ३१ की तपस्या के पूर पर सेवावती के अमरा जी ने ४ व ३ की तपस्या की व सजोडे शीलव्रत लिया । अनेक ने पडिपूण पौषध किया । पडित रत्न श्री प्रेम मुनि जी म.सा. ठाणा ३ के सान्निध्य मे धर्मपालो ने पर्यूषण किया ।

६६ दिन का प्रवास : मामाजी श्री चम्पालाल जी पिरोदिया एवं मामी जी श्रीमती घूरी देवीजी ने धर्मपालो के बीच ६६ दिन का प्रवास किया धर्म जागरण और सस्कार निर्माण के इतिहास मे यात्राए सदैव याद की जावेगी ।

चल चिकित्सालय के डॉ दीक्षित जी ने इन दिनों मे २८९ पुरुष, १६८ महिलाओ व ३२९ वालको की चिकित्सा की ।

संघ अधिवेशन पर गगाशहर-भीनासर मे धर्मपाल पाठशा-

-लाओ के एक वर्ष का व्यय और चल चिकित्सालय के कूपन खरीदने की व्यापक घोषणाए करके सघ-सदस्यो ने प्रवृत्ति के प्रति अपने प्रेम को प्रमाणित किया। उनके श्रावकाचार को सम्मानित किया।

इसी वर्ष मक्षी मे नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। ३१ जनवरी ७८ से १२ फरवरी ७८ तक मामा-मामी ने फिर पदयात्रा की जिसका समापन सघ अध्यक्ष श्री पी सी चौपडा की अध्यक्षता मे हुआ। इस पदयात्रा मे ५०० ने व्यसनमुक्ति स्वीकार की। मई मे तीर्थंकर के सम्पादक श्री नेमीचद जी जैन ने मानवमुनि जी के साथ रुलकी आदि का प्रवासकर धर्मपालो से प्रत्यक्ष चर्चा की।

तृतीय धर्म जागरण पदयात्रा :

अप्रैल ७८ मे तृतीय धर्म जागरण पदयात्रा दलौदा से प्रारभ होकर घुघडका, धमनार, आविाय, नगरी, पेटलावद, धतरावदा, माडवी नेतावली, रिंगनोद, वनबाडा, नन्दावता, रोजाना होते हुए जावरा पहुची। यात्रा अब तक विचार यात्रा के क्षेत्र मे प्रविष्ट हो चुकी थी। □

卐

आचार्य श्री के द्वारा धर्मपाल प्रवृत्ति का जो महान् क्रातिकारी कार्य प्रारभ हुआ है, वह भगवान महावीर का सच्चा काम है पतित दलित वर्गो को धार्मिक वोध देकर उन्हे मानव वनाकर सुसस्कारी वनाना व उन्हे आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक उन्नति की विचारधारा से प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य है। इस प्रवृत्ति के प्रति मेरा पूर्ण आशीर्वाद है।

—उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि जी म सा, वीरायतन
श्रमणोपासक २० फरवरी ७५ से साभार

विकास

श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति की स्थापना

□

परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के पुनीत उपदेशो से प्रादुर्भूत धर्मपाल प्रवृत्ति के विकास का गुरुतर उत्तरदायित्व श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ ने सहर्ष ग्रहण किया । सघ ने इस कार्य को गुरु कृपा के रूप मे शिरोधार्य किया । आज से २० वर्ष पूर्व सन् १९६४ के अक्तूबर माह मे आयोजित हमारे नवोदित सघ के द्वितीय वार्षिक अधिवेशन की कार्यवाही पर एक दृष्टि डालने मात्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे सघ के तत्कालीन नेताओ ने प्रवृत्ति कार्य के महत्व को भली भान्ति समझ लिया था । तभी तो छगनलाल जी बैद की अध्यक्षता और श्री जुगराज जी सेठिया के मन्त्रीत्व मे सघ ने सत्वर निर्णय लेकर श्री सरदारमल जी कांकरिया और श्री नाथूलाल जी सेठिया के प्रस्ताव पर धमपाल प्रवृत्ति के कार्य विस्तार और गुणात्मक निखार के लिए श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति की स्थापना की । समिति के लिए ५ हजार रूपये के प्रारभिक बजट की स्वीकृति दी गई ।

इस गौरवशाली प्रवृत्ति के प्रथम संयोजक पद पर शास्त्रज्ञाता, श्रद्धालु व आदर्श सुश्रावक, गूढ विषयो के सरस, सरल व्याख्याकार और उज्जैन मे सघ के आधार स्तम्भ श्री गोकुलचन्द जी सूर्या आसीन किए गए । श्री सूर्या जी के साथ सर्वश्री हीरालाल जी नादेचा, खाचरोद, कमलाबेन इन्दौर, शान्तिलाल छाजेड इन्दौर, सीताराम जी धर्मपाल जैन नागदा, मयाचन्द जी काठेड नागदा एव एव श्री कुन्दनमल जी काठेड उज्जैन को सदस्य मनोनीत किया गया ।

शुभस्य शीघ्रम

प्रवृत्ति हेतु पृथक से समिति निर्माण के पूर्व भी श्राचार्य श्री जी के विहार काल मे घटित हो रहे तेजस्वी घटनाक्रम पर सघ की दृष्टि थी श्रौर बीकानेर मे सघ की साधारण सभा की दि २१ ५ ६४ को सम्पन्न बैठक मे सर्वप्रथम धर्मपालो को सुसस्कारी बनाने श्रौर उन्ही मे से नवयुवको का चयन कर उन्हे कार्य प्रसार का दायित्व सौपने पर विचार किया गया था । साधारण सभा की इसी बैठक मे यह भी निश्चय किया गया था कि धर्मपाल बन्धुश्रो को धार्मिक शिक्षण देना अनिवार्य है, जिससे वे प्राप्त सस्कारो का सरक्षण और सवर्धन कर सकें ।

इस समिति की स्थापना से पूर्व ही बीकानेर मे किये गए विचार-विमर्श की तत्पर क्रियान्विती हेतु धर्मपालो को धार्मिक शिक्षण प्रदान करने वाली प्रथम पाठशाला ८ श्रगस्त १९६४ को नागदा मे खोली गई । तुरन्त पश्चात् ही दि १८ अगस्त, ६४ को मक्सी मे भी पाठशाला प्रारम्भ कर दी गई ।

शिक्षण के महत्व सर्वविदित है, विशेषकर बलाई समाज जैसे पिछडे, अशिक्षित व सस्कार शून्यवत समाज की उन्नति के सन्दर्भ मे तो यह श्रपरिहार्य श्रावश्यकता है । अत. धर्मपाल समिति के गतिशील होने से पूर्व ही मालव अचल के श्रीसघो ने श्रपने स्तर पर स्वेच्छया सस्कार निर्माण के इस दायित्व को स्वीकारते हुए श्रासावती, राजीगाव, रियावती श्रादि मे धार्मिक शिक्षा शालाए प्रारभ करदी । छात्रो का धर्माभ्यास एव परीक्षा तथा पुरस्कार की योजनाए भी साथ–साथ चलती रही ।

लगभग इसी काल मे अगस्त ६५ मे धर्मपाल क्षेत्र मे कार्य विस्तार को दृढता प्रदान करने और प्रचार को गति देने के लिए प्रचारक रखे गये जिनसे कार्य विस्तार तथा दृढीकरण मे काफी सह–योग मिला ।

वृहत धर्मपाल सम्मेलनों का जलजला :

नवनिर्मित धर्मपाल-समिति अपना कार्य सुचारू रीति से प्रारम्भ कर चुकी थी। कार्य मे सतत प्रगति हो रही थी। इसी बीच धर्मपाल सम्मेलनो के आयोजन द्वारा सामूहिक सस्कार प्रदान व शक्ति और विश्वास जागरण का निश्चय किया गया। दि १०८६५ को पिपलोदा मे आयोजित एक वृहत धर्मपाल सम्मेलन मे ३० गावों के १००० धर्मपाल बन्धुओ-बहिनो ने भाग लिया, जिन्हे सर्वश्री गेन्दालाल जी नाहर, फकीरचन्द जी पामेचा, मागीलाल जी चौपडा एव सीताराम जी धर्मपाल नागदा आदि ने सम्बोधित किया।

इसी प्रकार के सम्मेलन दि २२.८.६५ को मन्दसौर मे एव ५ ९.६५ को सीतामऊ मे आयोजित किये गए। इन सम्मेलनो ने धर्मपाल प्रवृत्ति की नीव को मजबूत किया साथ ही धर्मपालो को इतर समाजो मे प्रतिष्ठित किया।

कर्मण्य संयोजक श्री नाहर :

सघ की भोपाल बैठक मे स्व. श्री गोकुलचन्द जी सूर्या ने एक क्रियाशील उपसमिति का निर्माण किया जिसके सयोजक श्री गेन्दालाल जी नाहर जावरा मनोतीत किये गये। वयोवृद्ध होकर भी मन से युवा श्री नाहर ने धर्मसेवा के इस प्रकल्प को अपने जीवन की अमर साधना बना लिया। श्री नाहर ने जावरा को केन्द्र बना कर प्रवृत्ति के चहुमुखी विकास की योजनाओ का क्रियान्वयन किया। आज श्री नाहर का पार्थिव शरीर हमारे बीच नही है किन्तु उनका यश शरीर हमारे बीच विद्यमान है। प्रवृत्ति के इतिहास मे श्री नाहर का नाम स्वर्णाक्षरो से अकित है। उनका अमित प्यार भरा नाम आज भी धर्मपालो के मनो को गुदगुदा देता है।

नया मोड़ :

रायपुर मे आयोजित तीसरे वार्षिक अधिवेसन मे श्रीयुत्

गणपतराज जी बोहरा की अध्यक्षता मे सघ ने धर्मपाल प्रवत्ति पर गहन चिन्तन किया । श्री गेन्दालाल जी नाहर प्रतिवेदन और श्री सरदारमल जी काकरिया के सुझावो पर प्रवृत्ति वजट मे वृद्धि की गई । श्री भीखमचन्द जी भसाली व श्री खुशालचन्द जी गेलडा (सघ के भूतपूर्व उपाध्यक्ष जो अब हमारे बीच नही रहे) ने श्री नाहर के प्रतिवेदन को उत्साहजनक बताया ।

इसी अवसर पर शालाओ मे अध्ययन शिविर लगाने का निश्चय किया गया और सितम्बर ६७ मे धर्मपालो का प्रथम अध्ययन शिविर ११ दिन के लिए लगाया गया । प्रवृत्ति कार्यों को द्रुत गति प्रदान करने के लिए श्री गणपतराज जी बोहरा एव श्री सरदारमल जी काकरिया के सहयोग से एक जीप उपलब्ध कराई गई ।

दुर्ग सुझाव, जावरा और आबू के शिविर–

सघ की ५, ६ अक्टवर' ६७ को दुर्ग मे आयोजित साधारण सभा की बैठक ने समिति हेतु ५ सुझाव प्रस्तुत किये । ये महत्वपूर्ण सुझाव इस प्रकार थे—१ स्वाध्याय सघ गठन, २ प्रचार सुविधाए जुटाना, ३ शालाओ का नामकरण, ४ व्यापार-उद्योग सिखाना, क्षेत्रीय सम्मेलन बुलाना ।

इन सुझावो पर अमल के प्रयास भी किये गये और दि. १३-१२-६७ को गुराडिया ग्राम मे क्षेत्रीय सम्मेलन बुलाया गया, जिस मे ६० गावो के लगभग ८०० भाइयो ने भाग लिया ।

उक्त सम्मेलन के पश्चात् १९ मई से २० जून ६८ तक जावरा मे शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया । इसमे ७५ प्रशिक्षणार्थियो ने भाग लिया । इस शिविर को सफल बनाने के लिए श्री गेन्दालाल जी नाहर ने विस्तृत प्रवास किए । आपने एक माह मे १२५ गावो का दौरा किया । शिविर का उद्‌घाटन देशनोक–निवासी सुश्रावक श्री चम्पालाल जी साड ने किया । इसमे अंतिम दिन ७५ गावो के १२५ धर्मपालो ने भी भाग लिया ।

इसके बाद दि. १८ मई से ८ जून '६९ तक आबू में संघ के स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया । इस शिविर मे सम्पूर्ण देश से आये हुए ५५ प्रशिक्षणार्थियो मे से १० धर्मपाल बन्धु भी थे।

कार्य-विभाजन

संघ के मन्दसौर अधिवेशन दि. १४-१५ अक्तूबर १९६९ में कार्य-विस्तार को देखते हुए प्रवृत्ति के कार्य-विभाजन पर बल दिया गया । इस समय तक संघ की ६ नियमित शालाओ में १७५ बालक अध्ययन कर रहे थे । इसी अवसर पर आयोजित धर्मपाल सम्मेलन को परम पूज्य आचार्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म. सा. ने भी सबोधित किया । इसी अधिवेशन मे श्री समीरमल जी काठेड समिति के नये संयोजक नियुक्त किये गये ।

जयपुर अधिवेशन—

संघ के जयपुर में आयोजित दशम् वार्षिक अधिवेशन तक धर्मपाल शालाओ की सख्या ६ से बढकर ११ हो गई थी । इसी अधिवेशन मे श्री गणपतराज जी बोहरा, बडौदा की उदार सहायता का सम्मान करने हेतु प्रवृत्ति का नाम उनके पूज्य पिताजी के नाम पर –"सेठ श्री प्रेमराज बोहरा धर्मपाल जैन प्रचार प्रसार समिति" कर दिया गया । जयपुर अधिवेशन मे संघ कार्यकर्ताओं के प्रवास पर बल देते हुए वृहद् सार्थक अधिवेशनो के आयोजनों का भी कार्यक्रम बनाया गया । सहमन्त्री (भंवरलाल कोठारी) द्वारा इस अवसर पर प्रवृत्ति हेतु एक समयबद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई, जिसे क्रियान्वित करने का दायित्व उन्ही को सौपा गया ।

तूफानी-दौरे नई चेतना का शंखनाद–

मन्दसौर अधिवेशन के बाद प्रवृत्ति का कार्य लगभग डेढ साल यथाविधि चलता रहा किन्तु जयपुर अधिवेशन से पूर्व प्रवृत्ति के कार्य मे कुछ शिथिलता आ गई थी । जयपुर अधिवेशन मे प्रस्तुत

नवीन निश्चित योजना और प्राप्त उत्साह से सघ के सभी कार्यों और विशेषत इस प्रवत्ति के कार्य मे नया जीवन आया । जावरा सम्मेलन की रूपरेखा और उसकी सफलता के लिये श्रीमान् अध्यक्ष महोदय व श्री काकरिया आदि के प्रवास एव आगामी महावीर जयन्ती (चैत्र शुक्ला १३, स० २०३०) के दिन सघ को साधारण सभा का विशेष अधिवेशन जावरा मे ही निर्धारित हो जाने से कार्यकर्त्ताओ मे उत्साह की लहर दौड गई ।

प्रवृत्ति क्षेत्र मे तीनो कार्यक्रमो-सघ कार्यकर्ताओ का प्रवास, सघ का विशेष अधिवेशन और जावरा धर्मपाल सम्मेलन को सफल बनाने के लिये कार्यकर्ता जी–जान से जुट गये । प्रवृत्ति–प्रयोजक श्री समीरमल जी काठेड एव मानवमुनि जी ने तूफानी दौरो द्वारा नई चेतना का शखनाद कर दिया ।

जावरा–सम्मेलन एक नया कीर्तिमान –

जयपुर मे निर्धारित दिशा-निर्देशो के अनुसार दि १५ ४ ७३ को जावरा मे धर्मपाल सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन मे ११० गावो के ९०० से अधिक पुरुषो व १०० महिलाओ ने भाग लिया । सम्पूर्ण भारत से आये हुए सघ के ४२ प्रमुख कार्यकर्ता भी इसमे सम्मिलित हुए । देश भर से इसकी सफलता हेतु शुभ-कामना सदेश प्राप्त हुए । सम्मेलन की एक अन्य प्रमुख विशेषता थी, इसका उद्घाटन-आद्य धर्मपाल श्री धूरजी भाई, गुराडिया द्वारा होना । इस समय तक २२ शालाओ मे ७०० बालक शिक्षण प्राप्त कर रहे थे ।

उपलब्धिया–

जावरा मे सम्पन्न इस सम्मेलन के महत्वपूर्ण एव दूरगामी परिणाम निकले । यह सम्मेलन आत्मनिर्भरता एव स्वावलवन की दिशा मे एक नव आयाम (वडा कदम) सिद्ध हुआ । इसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी— (१) सामाजिक परिवेश का विस्तार । इस

सम्मेलन की व्यापकता ने सामाजिक परिवेश में अपरिमित विस्तार किया । धर्मपालों को अपनी सामर्थ्य और फैलाव का अनुभव हुआ और उन्होंने धर्मपालों मे ही परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने का निश्चय किया ताकि व्यसन-मुक्त समाज का मूलाधार सबल सुदृढ बना रहे । (२) श्रावकत्व-व्रतोजीवन'—सम्मेलन की अनेक उपलब्धियों मे से दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी- धर्मपालो का व्रती-जीवन की ओर अग्रसर होना । अब वे केवल दुर्व्यसन-त्यागी ही नही रहे, अपितु श्रावकत्व का विकास कर सुश्रावक के अधिकारी पद को भी प्राप्त करने लगे ।

नई रूपरेखा–

इस समय तक प्रवृत्ति का प्रारम्भिक कार्य सुचारू रीति से चल रहा था । अब प्रवृत्ति के विकास की एक नई रूपरेखा बनाई गई ।

यह रूपरेखा थी व्यापक प्रवास-कार्यक्रमों द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्र में नवीन जागरण की लहर फैलाना, समिति के कन्धों पर ही सारा भार न रख कर धर्मपाल नवयुवकों को ही कार्य का दायित्व सौंपना । प्रशिक्षण हेतु आयोजित शिविरों, शिक्षण शालाओ के सचालन, निरीक्षण और परीक्षण की चतुर्मुखी योजना को आधार बनाकर सर्वतोमुखी उन्नति करने के लिये लक्ष्य निर्धारित करना ।

धर्मपाल जैन शिक्षक प्रशिक्षण–शिविर –

इस नई रूपरेखा के अन्तर्गत धर्मपाल जैन शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया । दि. १२ सितम्बर से २७ सितम्बर तक बीकानेर मे आयोजित इस शिविर में २७ धर्मपालों ने शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । शिविर का व्यस्त कार्यक्रम प्रातः से रात्रि तक चलता था । शिविरार्थियो को प्रतिदिन प्रात.काल स्वय प पू आचार्य भगवान् का एव मध्याह्न १ से ४ बजे तक पू श्री सपतमुनि जी, श्री धर्मेशमुनि जी आदि सन्तो एव विद्वानो का सान्निध्य प्राप्त होता था ।

असाधारण महत्व और उपलब्धियां–

सघ की दृष्टि मे इस शिविर के असाधारण महत्व का मूल्याकन इसी बात से किया जा सकता है कि देश के मूर्धन्य शिक्षा शास्त्री पद्मविभूषण डा० दौलतसिह कोठारी, राजस्थान के शिक्षाविद् श्री सत्यप्रसन्नसिह भडारी, शिक्षा निदेशक श्री रणजीतसिह जी कूमट आदि के साथ ही परम पूज्य आचार्य गुरुदेव एव सत मुनिराजो का जीवन-उन्नायक उद्बोधन भी शिविरार्थियो को प्राप्त हुआ।

शिक्षण शिविर ने धर्मपाल प्रवृत्ति एव सम्पूर्ण क्षेत्र मे नवनिर्माण के नये दौर को जन्म दिया। इस शिविर के परिणाम-स्वरूप प्रवृत्ति के सचालन हेतु तत्क्षेत्रीय तरुण सस्कारित हुए, उनके जीवन मे, आचरण मे, दैनदिन व्यवहार मे परिवर्तन आया-ऐसा परिवर्तन जिसने उन्हे अपने-अपने क्षेत्र मे आदर्श जीवन प्रस्तोता, सहज श्रद्धा-स्नेह का पात्र एव क्षेत्रीय नेता बना दिया।

नानेश नवयुवक मण्डल–

इन प्रशिक्षित नवयुवको ने क्षेत्रीय नेतृत्व को सम्भाला और "नानेश नवयुवक मण्डल" का गठन किया, जो युवक-सगठन व सस्कार की एक नई योजना सिद्ध हुई। इन प्रशिक्षित शिक्षको के कारण शिक्षण-शालाओ का विस्तार हुआ, स्तर ऊचा उठा और सघ को अच्छी सख्या मे समर्पित शिक्षक प्राप्त हुए। श्रावक-जीवन का आदर्श अपने व्यवहार से प्रकट करते हुए इन नवोदित नेताओ ने प्रवृत्ति के कार्य एव क्षेत्र को सर्वस्पर्शी बनाने मे महत्त्वपूर्ण योग दिया।

प्रवास –

सघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीयुत् गुमानमल जी सा चोरडिया, भूतपूर्व अध्यक्ष, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा, धर्मनिष्ठ श्री सरदारमल जी कांकरिया व अन्य कार्यकर्ताओ के प्रवासो

भारतवर्षीय स्तर के तीन महत्वपूर्ण प्रवास हुए । आगे भी प्रवास की योजना चालू रही ।

शाला एव धार्मिक क्रियाओ के सचालन हेतु धर्मपालो द्वारा स्थान की आवश्यकता अनुभव करने पर सघ ने 'समता-भवनो' का निर्माण शुरु किया । नवम्बर ७३ मे श्री गणपतराज जी बोहरा ने गुराडिया और मक्षी मे तथा जून ७४ मे श्री गुमानमल जी चोरडिया ने रुलकी मे स्वाध्याय भवनो का शिलान्यास किया । निकट भविष्य मे ही धर्मपालो के श्रम और सघ के सहयोग से भारी सख्या मे समता भवनो का निर्माण किया जा रहा है ।

कानोड़ मे शिक्षण –

सघ के मेधावी धर्मपाल छात्रो को श्री जैन जवाहर शिक्षण सस्था कानौड मे शिक्षण व छात्रावास सुविधा प्रदान की, जिससे ये बालक सरकारी सेवाओ मे पहुच सके । प्रतिवर्ष कानौड मे सघ की ओर से १० धर्मपाल विद्यार्थियो को शिक्षा प्रदान की जाती रही ।

मुनिराजो का संसर्ग –

बीकानेर चातुर्मास काल मे परम पूज्य आचार्यश्री गुरुदेव के सान्निध्य मे आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण शिविर एवं चातुर्मास समिति के पश्चात पूज्य पडित मुनिश्री सम्पतलाल जी म सा. का मालवा की तरफ विहार हुआ । उग्र विहारी प० मुनिश्री जी ने कुछ महीनो के अल्पकाल मे ही १०० से ऊपर भीतरी गावो मे विचरण करके सपूर्ण क्षेत्र मे धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित की । अनेक गावो के हजारो भाई-वहिनो, युवक-युवतियो एव बालक-बालिकाओ ने प्रथम बार जैन मुनि के दर्शन किये, उनकी कठोर दिनचर्या को देखा, उनके साधनामय जीवन से प्रभावित हुए । ज्ञान-गगा के प्रवाह ने अज्ञान अधकार को कुरेद-कुरेद कर साफ करना प्रारम्भ किया और विकारमुक्त होने के साथ-साथ उनमे सुश्रावकत्व के सस्कार दृढ बनने लगे । श्रावकत्व का जो वीजारोपण जावरा के विशाल अधिवेशन एव वीकानेर के शिक्षक-

प्रशिक्षण शिविर मे हुआ था, वह अब पल्लवित एव पुष्पित होने लगा । पूज्य श्री सम्पतमुनि जी म सा के पश्चात् ही वडावदा (मालवा) के जाने-पहचाने पुराने सेठ एव श्रेष्ठ श्रावक श्री सौभाग्यमल जी, जो अव वदनीय पूज्य मुनिश्री सौभाग्यमल जी म सा हैं, का भी उस क्षेत्र मे विचरना हुआ । कुछ ही समय पश्चात् प्रभावी वक्ता प० मुनि श्री प्रेमचन्द जी म सा की सेवा का सौभाग्य भी मालवा प्रात के धर्मपाल भाई-वहिनो को प्राप्त हुआ । रतलाम मे धर्मपाल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ । फिर प्रतिमाह ५-५ शिक्षको को तैयार करने का कार्य भी कुछ माह तक चला । सतो के विचरण एव शिक्षको के प्रशिक्षण से धर्मपालो मे श्रावकत्व का विकास एव सस्कारो का दृढीकरण हुआ ।

महासतिया जी म. सा. का विहार –

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व महासतिया जी श्री पैपकवर जी म सा, व श्री नानूकवर जी म सा ने अपने विहार मे १६ गावो के सैकडो व्यक्तियो को समकित ग्रहण करवाई ।

विस्तृत क्षेत्र : वहु आयामी कार्य –

सघ की विभिन्न गतिविधिया और सत मुनिराजो के सात्विक सम्पर्क से प्रवृत्ति का क्षेत्र अत्यत विस्तृत एव कार्य वहुआयामी वन गया । अव यह कार्य केवल व्यसन मुक्ति आदोलन ही नही रहा, जीवन उत्थान और धर्म जागरण का महान कार्य वन चुका है ।

धर्मपाल रैली –

इस विस्तृत और वहुआयामी कार्य की आशिक झाकी आप को धर्मपाल नवयुवको के प्रयाण तथा धर्म जागरण पदयात्रा से प्राप्त हो सकी है । नवम्वर ७४ मे १८ से ३० वर्ष की उम्र के २०० धर्मपाल नवयुवको ने उज्जैन से जावरा तक लगभग १०० मील की

पदयात्रा १० दिन मे सम्पन्न की । नवयुवको को आज धर्मविमुख कहा जाता है, फिर इनमे तो पिछड़े हुए क्षेत्रो के असस्कारी युवक भी थे, इन्होने अपने आचरण से प्रमाणित कर दिया कि आज का युवक यदि उसे सही दिशा-निर्देश प्राप्त हो तो पूर्ण सस्कारी एव धार्मिक बन सकता है । सयम, नियम, मर्यादा और अनुशासन मे रहते हुए, नियमित स्वाध्याय एव धर्माचरण करते हुए, सफेद कुर्त्ते और सफेद पाजामे की सीधी सादी एक सरीखो वेशभूषा मे दो-दो की पक्ति मे कतार-बद्ध चलते हुए, जयघोष एव धर्मजागरण गीतों को समवेत स्वरो मे उद्घोषित करते हुए, दो सौ नवयुवको की वीरवाहिनी के आत्मशोधक सैनिको का अमल-धवल यात्री दल के रूप मे प्रयाण एक अद्भुत प्रयोग था । जिधर से यह धवल यात्रीदलो का रैला मानवमुनि जी के नेतृत्व मे प्रयाण गीत गाता हुआ निकलता था, ग्राम-खेडो, खेत-खलिहानो से, स्त्री-पुरुष, बालक बालिकाए अपने काम छोड कर बरबस इनकी ओर आकृष्ट हो जाते थे । अभिनन्दन-वन्दन का क्रम धर्मसभाओ का रूप लेता था और सर्वत्र धर्मजागरण की एक लहर सी फैल जाती थी ।

प्रथम धर्मजागरण पदयात्रा –

धर्मपाल नवयुवको के इस प्रयाण के पश्चात ही आई भारत के धर्मों के इतिहास मे अभूतपूर्व ऐतिहासिक जीवन–साधना और धर्मजागरण पदयात्रा, जो दि २ अप्रेल से ८ अप्रेल ७५ तक मालवा मे आयोजित की गई थी । इस यात्रा से धर्मपाल प्रवृति व्यक्तिसुधार से आगे बढकर ग्राम सुधार के क्षेत्र मे प्रविष्ट हो गई ।

धर्मपाल समिति–

कार्य के इस अप्रतिम विस्तार एव प्रवृति के बहुमुखी उन्नयन को प्रगतिशील बनाये रखने के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था का पुनर्गठन किया गया । धर्मपाल क्षेत्र के कार्य सचालन हेतु एक ९ सदस्यीय धर्मपाल समिति का निर्माण किया गया, जिसके अध्यक्ष श्रीयुत गणपतराज जी बोहरा बड़ौदा एव सयोजक श्री समीरमल जी काठेड़ जावरा

तथा सभी क्षेत्रीय सयोजक सर्वश्री हीरालाल जी नादेचा खाचरोद, पूनमचन्द जी चौपडा रतलाम, गोकुलचन्द जी सूर्या उज्जैन, कन्हैया-लाल जी मेहता मन्दसौर के अतिरिक्त सर्वश्री मानवमुनि जी, मियाचन्द जी काठेड नागदा एव धुल्ला जी जैन गुराडिया सदस्य मनोनीत किये गए। इस समिति की अलग-अलग विभागीय केन्द्रो पर प्रतिमाह एक बैठक रखने एव श्री मानवमुनि जी द्वारा एक माह मे १५ दिन प्रवास करके कार्य को गतिशील बनाये रखने का निश्चय किया गया।

क्षेत्रीय समितिया–

इस समिति के सहयोग एव कार्य के सुचारू रूप से सचालन हेतु सम्पूर्ण प्रवृत्ति क्षेत्र को ५ भागो मे विभाजित किया गया। उन के सयोजक क्रमश श्री गोकुलचन्द जी सूर्या उज्जैन विभाग, श्री पूनमचन्द जी चौपडा रतलाम विभाग, श्री हीरालाल जी नादेचा नागदा खाचरोद विभाग, श्री कन्हैयालाल जी मेहता मन्दसोर विभाग, श्री ममोरमल जी काठेड जावरा विभाग मनोनीत किए गये।

कार्य–

क्षेत्रीय समितियो के कार्यों का भी स्पष्ट निर्धारण किया गया। इन समितियो को अपने-अपने क्षेत्रो मे सर्वेक्षण, शिक्षण-प्रशि-क्षण-निरीक्षण एव परीक्षण कार्यक्रमो के द्वारा कार्य सचालन करने के निर्देश दिए गए।

सर्वेक्षण :

समितियो से अपेक्षा की गई कि वे अपने क्षेत्रो का मानक सर्वेक्षण करावे, जिससे प्रवृत्ति कार्य का प्रामाणिक मूल्याकन कराने के साथ ही भावी रीति नीति ठोस आधारो पर निर्धारित की जा सके। नागदा क्षेत्र के ६७ और मवमी क्षेत्र के ३७ गावो का सर्वेक्षण हो चुका है। ३०० मील के विस्तीर्ण भूभाग के दुरूह अचलो मे बसे

शताधिक गांवों का सर्वेक्षण भी शनैः शनैः कराया जा रहा है।

शिक्षण–

एक और दो धार्मिक शिक्षण शालाओं की प्रारम्भिक स्थिति से चल कर प्रवृति ने इस क्षेत्र मे अनेक उतार-चढाव देखें हैं प्रवृत्ति की जवानी में ये शालाए १०० की सख्या को स्पर्श करने लगी और बढकर ऊपर भी चली गई। पुनः कम भी हुई। शिक्षा के दैनदिन अबाध क्रम को जारी रखना एक अति दुष्कर कार्य है। इसलिए आरोह–अवरोह का आना स्वाभाविक है।

प्रशिक्षण–

शिक्षण को आदर्श बनाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों का होना आवश्यक है। अत. शिक्षको को प्रशिक्षित करने के लिये बीकानेर, रतलाम व मन्दसौर आदि स्थानो पर शिक्षक प्रशिक्षण शिविर लगाये गये।

मन्दसौर आदि ठाणा के शिविर को पंडित रत्न श्री प्रेममुनि जी म. सा. के और बरवाला सम्प्रदाय के मधुर व्याख्यानी श्री सरदार मुनि जी म. सा. का प्रौढ योगदान सदेव स्मरणीय रहेगा।

रतलाम मे कई महीनो तक क्रमशः अनवरत प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित रखा गया। ये प्रशिक्षण शिविर एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप मे स्वीकृत हो चुके है। इनके माध्यम से धर्मपाल क्षेत्रो को कुशल शिक्षक और सगठक उपलब्ध होते हैं।

निरीक्षण–

प्रवृत्ति तथा सचालित शालाओं के निरीक्षण हेतु क्षेत्रीय सयोजक प्रति माह कम से कम दो बार प्रवास करें। वे अपने साथ सहयोगियो को भी ले जावे। अपने निरीक्षण से सघ को अवगत कराते रहे। केन्द्रीय कार्यकर्ताओ की टोलियां भी सघ प्रमुखो के नेतृत्व मे निरीक्षण के लिये ३ दलो मे विभक्त होकर पाचो क्षेत्रो का निरीक्षण करें, जिससे धर्मपालो के साथ ही क्षेत्रीय कार्यकर्ताओ का भी उत्साहवर्धन होता रहे।

परीक्षण–

सर्वेक्षण, शिक्षण, प्रशिक्षण और निरीक्षण के माध्यम से कार्य को गति प्रदान करने के साथ ही उचित मूल्याकन हेतु परीक्षण का प्रावधान किया गया है। धर्मपाल शालाओ के बालक-बालिकाए भी साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड के माध्यम से परीक्षण की कसौटी पर स्वय को प्रस्तुत करते है। गावो मे प्रवास, रैली और पदयात्रा आयोजनो के अवसर पर भी प्रमुख जन विविध प्रश्नादि के माध्यम से धार्मिक ज्ञान और श्रद्धान का परीक्षण करते हैं।

बजट–

पूर्णरूपेण सुयोजित श्री धर्मपाल प्रवृति विकेन्द्रित व्यवस्था के माध्यम से विकास के अभिनव आयामो को छू रही है। इसी सन्दर्भ मे इसका बजट जो सन् १९६४ मे ५ हजार था बढकर सन् १९७५ के देशनोक अधिवेशन मे श्रीगुमानमल जी चोरडिया की अध्यक्षता मे १ लाख तक पहुच चुका है।

७५ के बाद से प्रवृति मे अनेकानेक नए आयाम जुड गए हैं, जिन्होने प्रवृति कार्यो के समान ही बजट को भी विकेन्द्रित कर दिया है।

जवानी की ओर–

इस प्रकार सन् १९६४ मे स्थापित यह प्रवृत्ति सन् १९७५ समाप्त होते-होते सहज चित्ताकर्षक किशोरावस्था मे प्रविष्ट हो गई। किशोरावस्था विकास और विनाश की देहरी है। सर्वाधिक नाजुक यह अवस्था है। सौभाग्य से सघ को इस समय अत्यन्त यशस्वी नेतत्व, निपुण योजनाशिल्पियो और कर्मठ क्रियान्वित करने वाले कार्यकर्ताओ की नियुक्ति उपलब्ध थी। इसलिए प्रवृत्ति को किशोरावस्था को अक्षत यौवन मे परिवर्तित करने हेतु सूक्षम चिन्तन और दूरदृष्टिपूर्ण योजना तैयार की गई और उसे व्यवहार के कठोर धरातल उसी सतर्कता और सजगता पूर्वक अवतरित कर दिया गया। प्रवृत्ति के आगामी कुछ वर्षो का इतिहास निपुण शिल्पियो ने निष्णात हाथो मे उकेरा। (निर्मित किया)।

कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर :

रतलाम में सभी क्षेत्रों के धर्मपालो का एक दिवसीय शिविर दि १६ ६. ७८ को हुआ जिसमे ५५ कार्यकर्त्ताओ ने भाग लिया। श्री बोहरा की अध्यक्षता, सघ अध्यक्ष श्री चौपडा के मार्गदर्शन मे सर्व श्री मगनलाल जी मेहता, धीरजमल रतलाम, मन्नालाल जी मेहता धु धडका, वीरसघ प्रमुख श्री गुमानमल जी चोरडिया, मानवमुनि जी, आदि ने अटूट ध्येयनिष्ठा से प्रवृत्ति को राष्ट्र की पुकार समझ कर आगे बढ़ाने का अनुरोध किया।

क्षेत्रीय प्रवास कर्त्ताओं की संख्या निरन्तर बढती रही और इनमें सर्व श्री सरदारमल जी घडीवाल, राजमल जी नाहर, समरथ मल जी काठेड, फकीरचद जी मेहता सभी जावरा एव धर्मपाल सर्व श्री मन्नालाल जी, गगाराम जी बगदीराम जी व नागुजी भी सामिल हो गए।

संघ नेताओं का एक और गौरवशाली प्रवास :

सघ के अध्यक्ष व मंत्री आदि पदों पर परिवर्त्तन होता रहा। पर प्रवृत्ति के प्रति सघ की नीति अपरिवर्त्तित रही। नव निर्वाचित सघ अध्यक्ष श्री चौपडा, मत्री सरदारमल जी काकरिया, पूर्व मत्री भवरलाल कोठारी आदि प्रवृत्ति अध्यक्ष श्री बोहरा व सहयोगी कार्यकर्त्ताओ के आह्वान पर प्रवासो मे आते रहे। दि. ४ दिसवर से ७. १२ तक व्यापक प्रवास किया गया।

सर्व प्रथम दि ४. १२ को समिति की बैठक जावरा मे संपन्न कर निम्न मुख्य निर्णय लिए गए—(१) नागदा खाचरोद मे ५०% क्षेत्रीय सहयोग के आधार पर एक प्रचारक रखा जावे। (२) श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति मे सर्व श्री डॉ नदलाल जी बोरदिया इदौर, कैलाशचन्द्र जी जैन शाजापुर, प्रकाश जी सूर्या उज्जैन, सीताराम जी धर्मपाल नागदा व शकरलाल जी धर्मपाल चौसला को सदस्य मनोनीत किया गया।

उज्जैन मे दि ५ १२ को प्रवासी दल ने तत्र विराजित परम पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा के दर्शन, वदन व प्रवचन श्रवण का लाभ लेते हुए उन्हे धर्मपाल प्रवृत्ति की जानकारी कराई ।

ताजपुर मे सूर्या जलकूप सभारभ व क्षेत्रीय सम्मेलन ·

उज्जैन से प्रवासी दल ताजपुर पहुचा जहा सूर्या परिवार के कीर्त्ति पुरुष श्री गोकुल चद जी सूर्या द्वारा २ वर्ष पूर्व घोषित जलकूप बनकर तैयार हो चुका था । जैन शास्त्रो, गीता व रामचरित मानस के अधिकारी विद्वान और मुक्त हस्त के दानी श्री सूर्या जी का इस बीच निधन हो गया था । उनके परिजनो ने कूप निर्मित कराया था, जिसका पूजन कर श्री बोहरा ने धर्मपालो को समर्पित किया ।

श्री बोहरा जी ने स्व श्री सूर्या को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि अखिल भा साधुमार्गी जैनसघ के स्तभ स्वरूप सहयोगी और श्री धर्मपाल प्रचार समिति के प्रमुख सयोजक स्व श्री सूर्या जी इस प्रवृत्ति के प्रारभिक स्वरूपकार थे । हमे उनके आदर्शो को मूल रूप देना है ।

स्व श्री सूर्या जी की उदारमना धर्मपत्नी श्रीमती रतन कु वर सूर्या व उपस्थित सूर्या परिवार के सदस्यो सहित अनेक स्नेही जनो के नेत्र कोरको मे अश्रुकण प्रकट हो गए ।

इसके बाद श्री चोरडिया की अध्यक्षता मे क्षेत्रीय-सम्मेलन प्रारभ हुआ जिसमे सर्व श्री सरदारमल जी काकरिया, सोहनलाल जी सुराणा व विजयकुमार मूथा रायपुर, मानवमुनिजी, वीरेन्द्र जी कोठारी मोतीलाल जी पडा आदि ने विचार व्यक्त किए ।

स्व श्री सूर्या जी के अनुज श्री प्रकाश जी सूर्या ने ताजपुर मे समता-भवन का पक्कीकरण होने पर सहयोग करने का भाव व्यक्त किया ।

मक्षी :

प्रवासी दल रात्रि मे ही मक्षी जा पहुचा जहा धर्मपाल मौहल्ले मे इस क्षेत्र के कार्य मे पारस्परिक वैमनस्य से आरही शिथिलता के निवारण हेतु कडकडाती शीत मे खुले आकाश के नीचे कार्यकर्त्ताओ की बैठक बुलाई गई और श्री बाबूलाल की प्रमुखता मे सर्व श्री रुघनाथ जी, रामूजी, हीरालाल जी, गगाराम जी, प्रताप जी व मागीलाल धर्मपाल की समिति बनाई, जिसने दो माह मे शाला और सामान्य व्यवस्था मे सुधार का विश्वास दिलाया।

तिलावद :

शाजापुर मे म. प्र शासन के भूतपूर्व वित्तमत्री श्री सौभाग्यमल जी जैन व श्री केशरीमल जी आदि से प्रवृत्ति सबधी चर्चा कर प्रवासी दल तिलावद गोविन्दा के क्षेत्रीय सम्मेलन मे आ पहुचा। यहा उमग और दर्प दीप्त धर्मपालो के स्वागत को देख मक्षी की थकान मिट गई। शोभायात्रा और सम्मेलन को देखकर लगा कि दो वर्ष के अतराल से प्रवृत्ति मे नवजीवन का सचार हो रहा है।

सरपच श्री भैरूबा पटेल व धर्मपालो सर्व श्री नगजी, अमरजी नारायण जी, कालू जी, वनवारी जी, दौलतसिंह जी, श्रीमती उमराव वाई ने अतिथियो को सूत की माला पहनाई।

मीरा और रैदास के मिलन-सा प्रभावी यह उत्सव देख श्री वोहरा जी, चोरडिया जी व यशोदा देवी जी वोहरा ने सन्तोष व आनन्द का अनुभव करते हुए कहा कि यद्यपि २ वर्ष बाद हम मिल रहे हैं पर आपका उत्साह हमे उन्नति का विश्वास दिलाता है।

प्रवासी दल सतुष्ट हो लौटा।

अन्य कार्य :

रतनी मे बाल दिवस १ जनवरी ७९ को मनाया गया। डॉ. श्री एम एम नाहर व मानव मुनि जी ने आशीर्वाद दिया।

प्रवृत्ति क्षेत्रो मे धर्मपालो की हितैषी श्रीमती कमला चौपडा रतलाम के असामयिक निधन पर सर्वत्र श्रद्धाजलि सभाए आयोजित की गई । श्री पी सी चौपडा ने इस सवेदना के प्रति सबका आभार माना ।

अभिनव आयाम : समाज–रचना :

प्रवृत्ति अब परिपक्वता की ओर अग्रसर हो रही थी । धर्म-पालो मे सुश्रावकत्व विकसित होकर अपनी महक से वातावरण को सुवासित बना रहा था । परम कृपालु आचार्यश्री जो धर्मपालो के विकास हेतु सदैव सदय थे । उनके आज्ञानुवर्ती सत-सतीवृन्द समय-समय पर क्षेत्र मे आते रहे ।

दि २६ फरवरी ७९ को पडित रत्न श्री धर्मेश मुनि जी म सा ठाणा ३ नागदा से उग्रविहार करके गुराडिया गाव की पावन तीर्थ भूमि मे पधारे । व गतिविधियो मे आमूल सुधार हेतु प्रेरणा दी दि २७-२ को मुनि श्रय रठडा पधारे जहा इसी दिन धर्मपाल सम्मेलन का भी आयोजन था सब व प्रवृत्ति प्रमुख तथा निकटवर्ती १७ गावो के धर्मपाल वहा एकत्रित हुए ।

पडित रत्न श्री धर्मेश मुनि जी ने ओजस्वी वाणी मे धर्म-पालो से अपनी समाज रचना को व्यवस्थित रूप देने का आह्वान किया व धर्मपाल समाज के ५ नियम प्रतिपादित किये जिन्हे समस्त उपस्थित धर्मपालो ने शपथ लेकर स्वीकार किया । समाज रचना के ये सिद्धान्त थे—

१ धर्मपाल समाज शुद्धिकरण को अपनाए और भविष्य मे उन्ही के साथ सम्पर्क बढावें जो दुर्व्यसनो से दूर हो ।

२ विवाह-सगाई आदि मे भी दुर्व्यसनी लोगो से सम्बन्ध न रखा जावे ।

३. प्रतिमाह धर्मपाल दिवस पर 'अगता, रखा जावे।

४. गाव-गाव मे 'धर्मपाल पचायत' कायम की जाय।

५. समाज के सुन्दर भविष्य का ध्यान रखकर सब कार्य जैन विधि से किये जावे।

रठडा से प्रवृत्ति मे एक नये अध्याय का शुभारम्भ हुआ। रठडा प्रवृत्ति इतिहास का दीप्तमान नाम है।

प्रथम धर्मपाल पंचायत :

तत्काल प्रथम धर्मपाल पचायत का भी गठन किया गया जिसमे सर्वसम्मति से श्री शकरलाल जी जैन उमरना अध्यक्ष, सीताराम जी नागदा मन्त्री व घूलजी जैन सा गुराडिया कोषाध्यक्ष निर्वाचित किये गये।

पदयात्रा—२० से २६ मार्च ७९ को दलौदा से जावरा तक की धर्मजागरण जीवन साधना एव सस्कार निर्माण पदयात्रा का सफल आयोजन हुआ, जिसका शुभारम्भ मन्दसौर के तत्कालीन विधायक श्री गजा महाराज (अब स्वर्गीय) ने किया। समापन पर जावरा के नगर परिषद अध्यक्ष मिर्जा गफ्फार अली, सासद श्री लक्ष्मीनारायण जी पाडे श्री जवाहरलाल जी मूणत आदि उपस्थित थे।

श्री प्रेमराज गणपतराज जी बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीपनगर, रतलाम का भव्य शुभारम्भ :

तृतीय जीवन साधना, सस्कार निर्माण एव धर्म जागरण पदयात्रा के मध्य ही श्री पी सी चौपडा ने रतलाम के समीपस्थ दिलीपनगर मे एक महत्वपूर्ण भवन युक्त भूमि खड को धर्मपाल प्रवृत्ति मुख्यालय के रूप मे क्रय करने और वहा धर्मपाल छात्रों के

लिए छात्रावास सचालित करने का सुझाव दिया। सघ प्रमुखगण सर्वश्री गणपतराज जी बोहरा, गुमानमल जी चोरडिया, सरदारमल जी कांकरिया, भवरलाल जी कोठारी, समाजसेवी मानवमुनि जी, समीरमल जी काठेड आदि ने निर्णय की त्वरा का प्रदर्शन किया और पदयात्रा समापन के बाद सीधे ही रतलाम पहुच कर भवन व भूमि को देखा व क्रय करने का निश्चय किया। समिति अध्यक्ष श्री गणपतराज जी बोहरा के उदात्त सहयोग से यह भवन और भूमि क्रय की गई। कृषि भूमि, ट्यूववैल और दो मजिले भवन से युक्त इस भूखड का प्रकृति की शान्त गोद मे अपना एक निराला महत्व है।

यहां सन् १९७९ की ७ जुलाई को विधिवत धर्मपाल छात्रो के लिए छात्रावास प्रारम्भ कर दिया गया। कक्षा ८ से लेकर कॉलेज स्तर तक के छात्रो के निवास-भोजन और अध्ययन की यहां श्रेष्ठ व्यवस्था है। २० छात्र सहज ही गृहपति सहित निवास कर सकते हैं। भवन क्रय के पश्चात् एक भव्य और विशाल सभा-भवन का भी निर्माण कराया गया है।

श्री पी सी. चोपडा छात्रावास सचालन हेतु अपनी सेवायें दे रहे हैं। सर्वश्री मगनलाल जी मेहता, कोमलसिंह जी कूमट, चम्पालाल जी पिरोदिया श्रीमती शाता मेहता, श्रीमती धुरी बहिन पिरोदिया, श्रीमती रोशन देवी खाबिया सहित रतलाम श्रीसघ के सभी गणमान्य व्यक्ति छात्रावास सचालन मे सहयोग हेतु सदैव समुद्यत पाए जाते है।

छात्रावास धर्मपाल युवक-युवतियों के अनेक शिविर और एकाधिक धर्मपाल सम्मेलन जैसे उत्सवो के सुखद आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुके है। यह छात्रावास धर्मपाल प्रवृति के विकास मे एक विशिष्ट महत्व की भूमिका निभा रहा है।

उद्घाटन · धर्मपाल सम्मेलन पूर्वक :

इस विशिष्ट योजना का गौरवशाली समारोह के साथ ७-७-७९

७९ को छात्रावास भवन में ही उद्घाटन हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री कोमलसिंह जी कूमट व संयोजक श्री मानवमुनि जी थे। श्री बोहरा ने छात्रावास क्रय, निर्माण व सचालन में श्री कूमट व श्री चौपड़ा की भूमिका को सहयोग का ज्वलत उदाहरण बताते हुए कहा कि छात्रावास दलित वर्ग के उत्थान की आधारशिला बने, मेरी यही मंगल कामना है।

प्रमुख अतिथि डॉ० बोरदिया जी, श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा, समीरमल जी कांठेड, भूपराज जी जैन, डॉ० श्री मोहनलाल जी चोरडिया, मामा-मामी, धूलजी गुराडिया, सीताराम जी नागदा, रामसिंह जी गूजर, मनोहरलाल जैन पीपल्या, निहालचन्द गांधी, गजेन्द्र सूर्या, श्रीमती सोहन मेहता, मदन जी कटारिया, कनकमल काठेड आदि ने ३५ गावों के १०० धर्मपाल प्रतिनिधियों व अन्य समाज बान्धवो को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम अध्यक्ष भवरलाल कोठारी ने कहा कि छात्रावास के माध्यम से निकलने वाले बच्चे प्रवृति से सच्ची शिक्षा प्राप्त कर नर से नारायण बनेंगे, विश्वास है। समाज को इस ज्ञान मन्दिर का सहयोग कर आत्मा के आवरण को दूर करना चाहिये।

समिति बैठक :

आज ही दोपहर में छात्रावास परिसर में समिति बैठक आयोजित कर निम्न निर्णय लिये गये—

१. छात्रावास की नियमावली बनाई गई।

२ शाखा निरीक्षण व सघ-प्रमुखो के प्रवास निर्धारित किये गये।

३. पाठशालाओ के नवीन पाठ्यक्रम निर्माण हेतु श्री मगन-

लाल मेहता को मनोनीत किया गया ।

४. पचेड मे १९-८, पालन्वी मे १६-९ व घमनार मे ७-१० को स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किये जावे ।

५. धर्मपाल समाज रचना के कार्य को द्रुत गति से आगे बढावें ।

समता-भवन .

आज ही सन्ध्या मे श्री बोहरा जी के सहयोग से निर्मित डेलनपुर के धर्मपाल समता-भवन को श्री बोहरा ने गाव को समर्पित किया ।

निदान—९ मई को केरवासा स्वा प्र शि मे डॉ खाते, डॉ गागे, डॉ गारु आदि ने २०१ रोगियो की व वरगुडा मे ८० रोगियो की चिकित्सा की गई ।

बढे-चलो ! बढे-चलो !

मक्षी मे श्री घ प्र प्र समिति की दि ३-६-७९ की बैठक मे चातुर्मास काल मे मक्षी के अतिरिक्त शेष चारो क्षेत्रो मे चार स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित करने का निश्चय किया गया व शिविर ८-७-७९ का डॉ बोरदिया जी के नेतृत्व मे केरवासा मे रखना तय किया गया ।

जून मे ही डेलनपुर समता-भवन सम्बन्धी विवाद का समाधान और मक्सी क्षेत्रीय प्रधान श्री चांपडा व श्री मानपमुनि जी ने पूर्ण किया ।

जुलाई मे रतलाम मे महामन्त्री श्री इन्द्रचन्द जी स ना

ठाणा ११ के सान्निध्य में धर्मपाल बालकों ने सामायिक प्रतियोगिता मे भाग लिया।

६ अगस्त को डॉ. प्रेमसुमन जैन ने धर्मपाल छात्रावास का निरीक्षण कर प्रसन्नता अनुभव की।

धर्मपाल आचार्य श्री जी के सान्निध्य में :

अजमेर मे संघ अधिवेशन के अवसर पर सितम्बर १९७९ में महावीर भवन के हाल मे प्रभूत सख्या में उपस्थित धर्मपालों का सम्मेलन उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। आज के सम्मेलन की विशेषता थी धर्मपाल वक्ताओ की बहुलता, जो धर्मपालो की चेतना व स्वावलम्बन का प्रतीक थी।

सम्मेलन समाप्ति के तुरन्त बाद सभी धर्मपाल भाई-बहिन आचार्यश्री जी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए, तिक्खुत्तों के पाठपूर्वक वन्दना कर भावभीने स्वरो में, ओज, मिठास, चाह, समर्पण व भावावेश के साथ गीत प्रस्तुत किये गये। बहिनो ने गाया—

तरसे तरसे ओ नाना गुरुवर जी !
ये नैना दरसों के बिना !!

तो वृद्धाओं का विगलित स्वर—रखना धर्मपालों की लाज जी, ओ नाना गुरुवर जी। वातावरण को भावावेशित कर दिया।

करुणामूर्ति आचार्य प्रवर ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि चाहे शरीर से दूर रहू, मैं विचारो से आपके साथ हूं।

प्रमुदित मन, आश्वस्त धर्मपाल अपने क्षेत्रो की ओर कार्य-प्रसार का अभिनव सकल्प ले लौटे।

महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती विजयादेवी सुराणा रायपुर

ने धर्मपाल प्रवृत्ति की प्रगति मे विशेष योग प्रदान करने हेतु सदस्याओ से अपील की ।

प्रचार यात्रा—नवम्बर माह मे धर्मपाल क्षेत्रो मे नव–नियुक्त प्रचारक श्री छोटालाल मोहनलाल अजमेर, व प्रमुख जनो के प्रवास अबाध गति मे चल रहे थे । पदयात्रा की पूर्व तैयारी व शाला निरीक्षण हेतु (स्व) श्री गेंदालाल जी खाव्या सहित प्रचारक दल ने गुराडिया, घूमायडा, मऊ, बोरखेडा, मोयना, रतलाम, मक्षी, झोकर, तिलावद-गोविन्द, रूलकी इन्दौर चौसला, गोलवा, ताजपुर के प्रवास मे बालको के सस्कार और गावो की जागृति पर हर्ष हुआ ।

उल्लेखनीय है कि जोकर मे शिक्षक बलदेव जी, तिलावद मे बनवारीलाल जी, रूलकी मे उमरावसिंह जी शाला चलाते हैं । रूलकी मे समता-भवन बन जाने से बडा लाभ हुआ है, यहा के कालूजी चैनाजी समाज के अध्यक्ष हैं । चौसला मे समाज के चुनाव कराये गये जिसमे श्री हमीरसिंह जी मालवी अध्यक्ष और बलदेवसिंह जी मन्त्री चुने गये । यहा श्री शकर जी शिक्षक है । शकर जी धर्मपाल ने अपनी कीमती जमीन का प्लाट 'समता भवन' बनाने हेतु भेंट किया है । गोलवा मे श्री बापूलाल जी समाज के अध्यक्ष हैं और बृजविहारी लाल जी धार्मिक पाठशाला चलाते हैं । ताजपुर मे मोतीलाल जी का शिक्षण सराहनीय है ।

इन्दौर मे ४-११-७६ को पडित रत्न श्री धर्मेश मुनि जी म. सा के सान्निध्य मे धर्मपाल सम्मेलन हुआ ।

१४ दिसम्बर ७६ को सेजावता मे नन्दराम जी धर्मपाल के यहा ७० गावो के १००० धर्मपालो की श्रद्धाजली सभा को श्री मनोरंजन जी राठोड व सुरेश जी राठोड आदि ने प्रेरक सम्बोधन दिया ।

दिसम्बर माह मे प्रवास से ज्ञात हुआ कि सेहना गाव

समाज अध्यक्ष श्री नाथ जी, मूलचद जी व शिक्षक पीरदान जी, रठडा मे अध्यक्ष श्री धूल जी, मऊ मे अध्यक्ष माधोजी धर्मपाल है सहयोगी श्री देवीलाल जी व शिक्षक वक्षीलाल जी व दयाराम जी तथा धूमायडा मे शिक्षक रणछोड जी व नरसिह जी अच्छे कार्यकर्त्ता है । १५ व १६ दिसबर को जावरा व नागदा क्षेत्र का प्रवास श्री समीरमल व राजमल जी काठेड के नेतृत्व मे किया गया । दि २३-१२-७९ को वोरखेडा मे ३३० मरीजो की स्वास्थ्य सेवा की गई । ५ जनवरी ८० को मदसौर नागदा क्षेत्र का प्रवास किया गया । ३ फरवरी को नगरी मे स्वा. प. शिविर आयोजित किया गया जिसमे ४२५ रोगियो की चिकित्सा की गई ।

छात्रावास बैठक . नव वर्ष के उषाकाल मे दि. २ जनवरी ८० को श्री प्रेमराज गणपतराज जी बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास सचालन समिति की बैठक (दिलीप नगर) मे सर्व श्री चोपडा, मानवमुनि जी, समीरमल जी काठेड, मगनलाल जी मेहता, गेदलाल जी खाविया, चम्पालाल जी पिरोदिया, कोमल सिह जी कूमट व सुजान मल जी तालेरा ने भाग लिया । गृहपति नानालाला जी मठ्ठा ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । विकास सबधी महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए ।

क्षेत्रीय–सयोजक– गाण फिर प्रचार पर निकल पडे । मदसौर के श्री कन्हैयालाल जी और जावरा क्षेत्र के नव नियुक्त सयोजक श्री फकीरचद जी पामेचा ने अपने-२ क्षेत्रो का प्रवास कर स्थान-स्थान पर धर्मपाल समाजो का गठन किया । इन्होने पचम पदयात्रा की भूमिका भी निर्मित की । भटेरा गाव पूरा ही व्यसन मुक्त पाया गया–राजपूतो व मुसलमानो सहित ।

पचम पदयात्रा ९ से १४ मार्च ८० तक मोयना से नागदा आयोजित की गई, वीच मे दि १३ ३ को गुराडिया मे समता भवन का उद्घाटन व व प्र प्र सा. वैठक सपन्न हुई । नागदा मे यात्रा डॉ शिवमगलसिह सुमन के प्रेरक प्रवहमान भाषण के साथ पूर्ण हुई ।

मार्च के अतिम सप्ताह मे श्री चौपडा, मुनि जी व काठेड

जी ने फिर तूफानी और व्यापक प्रवास किए । १३ अप्रेल को रुलकी मे २७५ जनो का स्वा प किया गया । कनवास मे हिन्दूजी परमार के घर सभा मे ४० ने व्यसन मुक्ति की शपथ ली ।

अक्षय तृतीया पर राणावास परमपूज्य आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त साधना की नवसूत्री योजना अपनाने को भी धर्मपाल उत्सुक हुए ।

दिलीप नगर छात्रावास मे २२ जून ८० तक आयोजित ४५ धर्मपाल युवाओ के शिविर हेतु सन् १९८० स्मरणीय रहेगा । यहा निर्णय किया गया कि युवक धर्मपाल राणावास मे आचार्य जी का सान्निध्य भी प्राप्त करे ।

१८ ५ से २० ५ ८० तक श्री चोरडिया जी के नेतृत्व मे त्रिदिवसीय संघ प्रवास मे धमनार मे समता भवन का शिलान्यास सहित नगरी, सोखरा, कनवासा, भुवासा व खाचरोद आदि मे सभाएं की गई ।

२१ जून को ताजपुर मे महिला समिति द्वारा धर्मपाल महिलाओं का सम्मेलन श्रीमती रसकुवर सूर्या के उद्घाटन व संघ-प्रमुखो के सान्निध्य मे सोत्साह सम्पन्न हुआ ।

राणावास संघ अधिवेशन के समय ध प्र के संयोजक श्री पी सी चोपड़ा ने ३० जून ८० तक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि ६ क्षेत्रीय संयोजकों के सहयोग से कार्य संचालित किया जा रहा है । १६ शाखाएं चल रही हैं । धर्मपाल बालिकाओं का इंदौर शिविर में प्रदर्शन सराहनीय रहा । [illegible] का कार्य सराहनीय है ।

[illegible] ८० में [illegible] [illegible] श्री [illegible] [illegible] ने भी [illegible] दी । १४ [illegible] ८१

समाज अध्यक्ष श्री नाथ जी, मूलचद जी व शिक्षक पीरदान जी, रठडा मे अध्यक्ष श्री धूल जी, मऊ मे अध्यक्ष माधोजी धर्मपाल है सहयोगी श्री देवीलाल जी व शिक्षक वक्षीलाल जी व दयाराम जी तथा घूमा-यडा मे शिक्षक रणछोड जी व नरसिह जी अच्छे कार्यकर्त्ता है । १५ व १६ दिसबर को जावरा व नागदा क्षेत्र का प्रवास श्री समीरमल व राजमल जी काठेड के नेतृत्व मे किया गया । दि २३-१२-७९ को बोरखेडा मे ३३० मरीजो की स्वास्थ्य सेवा की गई । ५ जनवरी ८० को मदसौर नागदा क्षेत्र का प्रवास किया गया । ३ फरवरी को नगरी मे स्वा. प. शिविर आयोजित किया गया जिसमे ४२५ रोगियो की चिकित्सा की गई ।

छात्रावास बैठक : नव वर्ष के उषाकाल मे दि २ जनवरी ८० को श्री प्रेमराज गणपतराज जी बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास सचालन समिति की बैठक (दिलीप नगर) मे सर्व श्री चोपडा, मानव-मुनि जी, समीरमल जी काठेड, मगनलाल जी मेहता, गेदलाल जी खाबिया, चम्पालाल जी पिरोदिया, कोमल सिह जी कूमट व सुजान मल जी तालेरा ने भाग लिया । गृहपति नानालाला जी मठ्ठा ने प्रति-वेदन प्रस्तुत किया । विकास सबधी महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए ।

क्षेत्रीय–सयोजक– गाण फिर प्रचार पर निकल पडे । मदसौर के श्री कन्हैयालाल जी और जावरा क्षेत्र के नव नियुक्त सयोजक श्री फकीरचद जी पामेचा ने अपने-२ क्षेत्रो का प्रवास कर स्थान-स्थान पर धर्मपाल समाजो का गठन किया । इन्होने पचम पद-यात्रा की भूमिका भी निर्मित की । भटेरा गाव पूरा ही व्यसन मुक्त पाया गया–राजपूतो व मुसलमानो सहित ।

पचम पदयात्रा ९ से १४ मार्च ८० तक मोयना से नागदा आयोजित की गई, बीच मे दि १३. ३ को गुराडिया मे समता भवन का उद्घाटन व ध प्र प्र सा. बैठक सपन्न हुई । नागदा मे यात्रा डॉ शिवमगलसिह सुमन के प्रेरक प्रवहमान भाषण के साथ पूर्ण हुई ।

मार्च के अतिम सप्ताह मे श्री चौपड़ा, मुनि जी व काठेड

जी ने फिर तूफानी और व्यापक प्रवास किए । १३ अप्रेल को रुलकी मे २७५ जनो का स्वा प किया गया । कनवास मे हिन्दूजी परमार के घर सभा मे ४० ने व्यसन मुक्ति की शपथ ली ।

अक्षय तृतीया पर राणावास परमपूज्य आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त साधना की नवसूत्री योजना अपनाने को भी धर्मपाल उत्सुक हुए ।

दिलीप नगर छात्रावास मे २२ जून ८० तक आयोजित ४५ धर्मपाल युवाओ के शिविर हेतु सन् १९८० स्मरणीय रहेगा । यहा निर्णय किया गया कि युवक धर्मपाल राणावास मे आचार्य जी का सान्निध्य भी प्राप्त करे ।

१८ ५ से २० ५ ८० तक श्री चोरडिया जी के नेतृत्व मे मे त्रिदिवसीय सघ प्रवास मे धमनार मे समता भवन का शिलान्यास सहित नगरी, खोखरा, कनवासा, भुवासा व खाचरोद आदि मे सभाए की गई ।

२१ जून को ताजपुर मे महिला समिति द्वारा धर्मपाल महिलाओ का सम्मेलन श्रीमती रसकुवर सूर्या के उद्घाटन व सघ-प्रमुखो के सान्निध्य मे सोत्साह सम्पन्न हुआ ।

राणावास सघ अधिवेशन के समय ध प्र के सयोजक श्री पी सी चौपडा ने ३० जून ८० तक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि ६ क्षेत्रीय सयोजको के सहयोग से कार्य सचालित किया जा रहा है । १६ शालाए चल रही है । धर्मपाल बालिकाओ का इदौर शिविर मे प्रदर्शन सराहनीय रहा । चल-चिकित्सालय का कार्य सरानीय है ।

दिसवर ८० मे फिर प्रवास हुए जिनमे उदयपुर के भूतपूर्व सासद श्री ओकार लाल बोहरा ने भी प्रवृत्ति-कार्य देखा । ४ जनवरी ८१

८१ को नायन मे नागदा क्षेत्रीय समिति की बैठक श्री बोहरा के सान्निध्य मे हुई व उसी दिन गुराडिया मे धर्मसभा हुई ।

सघ-अध्यक्ष श्री जुगराज जी सेठिया भी धर्मपाल प्रवास पर पहुचे ।

मन्दसौर से मक्सी तक विस्तीर्ण धर्मपाल क्षेत्रो मे दि. ३-४-८२ चैत्र शुक्ला १० को धर्मपाल स्थापना दिवस मनाया गया । कार्यकर्त्ताओ ने एक बार फिर प्रवासो की धूम मचा दी ।

३०-५-८२ को दिलीपनगर मे मध्यप्रदेश मेडिकल एसोसियेशन रतलाम के सहयोग से डॉ. शशिकान्त शर्मा के नेतृत्व मे डॉ. बोरदिया स्मृति स्वास्थ्य परीक्षण शिविर लगाया गया । स्वास्थ्य परीक्षण शिविरो की इस मानव सेवी योजना को गगाशहर के श्री जेसराज जी भवरलाल जी बैद का प्रशस्त व उदात्त सस्कार प्रवृत्ति इतिहास मे सदैव स्मरण किया जावेगा ।

२० मई ८२ को सघ के भूतपूर्व अध्यक्ष और प्रवृत्ति के कर्मठ कायकर्त्ता व नेता सेठ श्री हीरालाल जी नादेचा के निधन से प्रवृत्ति क्षेत्र मे शोक की लहर फैल गई । सर्वत्र उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की गई ।

५ से १२ जून ८३ तक रतलाम मे श्री अ. भा. सा जैन महिला समिति के सहयोग से ५५ धर्मपाल बहिनो का शिविर श्री रणजीत मुनि जी म. सा. की मंगल प्रेरणा पूर्वक सम्पन्न हुआ .

दि. २३ मई से ५ जून तक ४० धर्मपाल छात्रो का भव्य शिविर श्री रणजीत मुनिजी म. सा के मार्गदर्शन मे सम्पन्न हुआ । दोनो शिविर विशेष सफल व उत्साहपूर्वक रहे ।

सन् ८२ के अहमदाबाद सघ अधिवेशन के अवसर पर धर्मपाल सम्मेलन मे २५० धर्मपालो ने भाग लिया । सम्मेलन को तमिल-

गोडु के भूतपूर्व राज्यपाल श्री प्रभुदास भाई पटवारी व बम्बई के उद्योगपति श्री चुन्नीलाल भाई ने सम्बोधित किया। परमपूज्य आचार्य प्रवर ने धर्मपालो को मार्मिक उद्बोधन प्रदान किया। सयोजन सघ मन्त्री श्री पीरदान पारख व आभार नव निर्वाचित सघ अध्यक्ष श्री दीपचन्द जी भूरा ने प्रकट किया।

नव वर्ष प्रारभ होने के साथ ही नव निर्वाचित संघ मन्त्री श्री पीरदान जी पारख एव श्री व श्रीमती काकरिया के नेतृत्व मे सघ प्रमुखो ने दि २०-१-८३ से २३-१-८३ तक त्रिदिवसीय धर्मपाल प्रवास पूर्ण किया। २५ व २७ जनवरी को मन्दसौर क्षेत्र व सरसी मे सम्मेलन किये गये। ग्राम जवासा मे ३१ जनवरी को १५० गावो के ३००० धर्मपालो की श्रद्धाजलि सभा को पुन मनोनीत प्रवृति के प्रमुख सयोजक श्री समीरमल जी काठेड ने ओजस्वी आह्वान दिया। ३० जनवरी को रीयायन मे स्वास्थ्य परीक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमे सर्वश्री डॉ निशिकान्त शर्मा, डॉ वावेल, डॉ वजाज डॉ कुरैशी, डॉ पडित दम्पति व डॉ० पाटोदी की सेवाए अविस्मरणीय है।

फरवरी ८३ धर्मपाल का प्रचार मास रहा। घनघोर प्रवास हुए। १२ से १८ जन तक भील विश्रातिगृह रतलाम मे धर्मपाल महिलाओ का शिविर हुआ। इससे पूर्व २२-५ से १२-६ तक धर्मपाल वालको का शिविर हुआ। आदर्श त्यागी, तपस्वी, मधुर व्याख्यानी श्री रणजीत मुनि जी म. सा. का सान्निध्य मिला।

दि २२ से २४ अप्रेल तक ताजपुर और लाहोरी मे धर्मपाल दिवस के कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हुए जिनमे सघ–प्रमुखो ने भी भाग लिया। ताजपुर मे धर्मपाल समाज के अध्यक्ष श्री सेवाराम जी, उपाध्यक्ष श्री बाबूलाल जी सोलकी व मन्त्री श्री कन्हैयालाल जी मास्टर चुने गये।

लाहोरी का शानदार क्षेत्रीय सम्मेलन सरपच श्री ओमप्रकाश मडलोई के स्वागत पूर्वक प्रारम्भ हुआ। भारी सख्या मे उपस्थित

ग्राम प्रमुखो को 'धर्मपाल प्रवृत्ति' को लक्ष्य मे रखकर श्री जानकी नारायण श्रीमाली द्वारा लिखे गये उपन्यास 'धर्मपाल' की प्रतिया श्री गणपतराज जी बोहरा ने भेंट की ।

इससे पूर्व श्रीयुत् गणपतराज जी वोहरा के ज्येष्ठ पुत्र संघ के सहमन्त्री व युवा सघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री पारसराज जी शाह के आकस्मिक निधन से धर्मपाल क्षेत्र शोक मे डूब गये । छठी धर्म जागरण पदयात्रा भी आधा दिन के बाद ही स्थगित करनी पडी । किन्तु लोहारी गाव के सामूहिक विवाहो का कार्यक्रम हुआ ।

दिलीपनगर छात्रावास मे दि २३–५ से ५ जून ८३ तक १४ दिन का धर्मपाल जैन शिक्षण शिविर आदर्श त्यागी मधुर व्याख्यानी श्री रणजीत मुनि जी म सा ठाणा २ के सान्निध्य मे हुआ जिसमे धर्मपालो ने भाग लिया । बाद मे विहार के समय मे मुनि द्वय नागदा के समता-भवन मे भी पधारे ।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविरो को पद्मश्री डॉ नन्दलाल जी बोरदिया स्मृति स्वा परीक्षण शिविर के रूप मे चालू रखा गया ।

सन् १९८३ के पयूर्षण पर्व मे श्री समता प्रचार सघ उदयपुर के स्वाध्यायी बन्धुओ ने धर्मपाल क्षेत्रो मे धर्माराधना करवाकर एक नवीन शुभ कार्य सम्पन्न किया ।

अन्तहीन प्रवास शृंखला :

इस प्रकार अन्तहीन प्रवास शृंखला के माध्यम से धर्मपालो के उन्नयन हेतु भाति–भाति के सस्कार परक व सहयोग मूलक कार्यक्रम सघ की ओर से आयोजित किये जाते रहे । धर्मपालो ने भी अपनी समाज रचना को सुदृढ बनाने और अपनी सामूहिक उन्नति के लिए अनथक श्रम करने मे कोई कोर कसर नही छोडी । फलस्वरूप आरोह–अवरोह के स्वाभाविक क्रम से प्रगति का विकास होता

रहा ।

भावी इतिहास हमारा है :

इसी बीच धर्मपालो के आराध्य परमपूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा अपनी शिष्य मण्डली सहित दि १८-२-८४ को रतलाम पधार गये हैं । धर्मपालो मे अपार उत्साह का जागरण हुआ है और उनका यह विश्वास प्रबल हो उठा है कि 'भावी इतिहास हमारा है ।

आत्म-शान्ति का मार्ग

□ राज सौगानी

श्रीमद् राजचन्द्र जी ने एक बार एक मनुष्य से पूछा—"यदि तुम एक हाथ मे घी का भरा लोटा और दूसरे हाथ मे छाछ का भरा लोटा लिए जा रहे हो और कर्म योग से मार्ग मे किसी का धक्का लग जाए तो तुम किस लोटे को सभालोगे ?"

मनुष्य ने कहा—"जरूरी बात है घी का लोटा ही पहले सभालेंगे ।"

तब श्रीमद् राजचन्द्र जी ने कहा–

"पर आजकल बात इससे बिल्कुल विपरीत है लोग पहले शरीर को सम्भालते हैं जो कि छाछ के समान है और आत्मा की तनिक भी परवाह नही करते जो कि घी के तुल्य है ।"

मनुष्य को श्री राजचन्द्र जी के कहने का अभिप्राय ठीक-ठीक समझ मे आ गया कि यदि कोई शान्ति प्राप्त करना चाहता है तो वह शरीर और आत्मा इन दोनो मे से आत्मा की पहिचान कर उस ओर ही दृष्टि रखे ।

द्वारा पी सी सौगानी
स्टेशन रोड, भवानी मडी (राज)

पर्यू षरण पर्व एवं अष्टमी चतुर्दशी आदि के वृत एव त्याग, प्रत्याख्यान पूर्वक सेवा के क्षेत्र मे भी वे अग्रगण्य है । ये आर्थिक क्षेत्र मे स्वावलंबन के द्वारा आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर है ।

इस प्रकार स्वाध्याय, साधना, सेवा, निवृत्ति, स्वावलंबन, भौतिक व आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों मे प्रगति की अदम्य आकाक्षा लेकर शताब्दियों से पीडित एक पूरे के पूरे समाज का अंगडाई लेकर जाग्रत हो जाना और वह भी मात्र २० वर्ष में, उस अवधि मे जो किसी समाज जागरण कार्य में नगण्य अवधि होती है, इस युग का एक अविश्वसनीय सा लगने वाला किन्तु पूर्णतः सत्य तथ्य है ।

धर्मपालों के निष्ठा और पुरुषार्थ पूर्ण श्रम, श्री अ. भा साधुमार्गी जैन संघ के आत्मीय सहयोग तथा समतादर्शन प्रणेता जिन शासक प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य श्री नाना-लाल जी म. सा की प्रेरक वाणी की त्रियुति धर्मपाल समाज रचना को परिपूर्ण बनावेगी, राष्ट्र के लिए, समाज के लिए एक आदर्श बनावेगी ।

३०० वर्गमील क्षेत्र में फैले मालव के इस उर्वर और ऐति-हासिक भूभाग के सैकडों गांवों के लक्षाधिक गुजराती बलाई के व्यक्ति-व्यक्ति तक धर्मपाल का सन्देश किसी न किसी रूप में पहुंच चुका है। बलाई समाज के सौराष्ट्री व मालवी लोग भी जिज्ञासु हृदयो से इस क्राति-कारी परिवर्त्तन को देख रहे हैं उनके अन्तस्तल में इस गगा मे अवगा-हन करने की चाह जाग उठी है ।

जो कुछ घटित हो चुका है वह असभव और कल्पनातीत सा प्रतीत हो रहा है किन्तु यदि आज के ओसवाल समाज के इति-हास पर ही एक दृष्टि डाले तो हमे धर्मपाल समाज के भविष्य का अनुमान हो सकता है । आज के ओसवाल भी किसी समय क्षत्रिय थे । शिकार व हिंसा उनका सहज कर्म था । आज वे चीटी तो क्या । पेड-पौधो तक के जीवन की यत्न पूर्वक अभिवर्धना करते हैं ।

धर्मपाल समाज भी कालान्तर मे पूर्ण अहिंसक, व्यसन मुक्त विकार मुक्त सेवा-व्रती समाज का रूप ग्रहण करेगा । गाव-गाव में अन्यत्ज के स्थान पर अग्रज के रूप में प्रतिष्ठित हो, शेष समाज का मार्गदर्शन करेगा समाज के अण्य अ ग भी इस नवोदित प्रेरणा-पु ज से प्रेरणा ग्रहण करेगे । आज भी हम देख रहे है—धर्मपाल प्रवृत्ति

सम्भावनायें

हमने प्रवृत्ति के गौरवशाली उद्भव और उज्जवल इतिहास का सक्षिप्त विहगावलोकन किया है, जिससे हमे इसके स्वर्णिम भविष्य का विश्वास मिला है। इस विकसोन्मुख प्रवृत्ति का विकास क्रम भावी के गर्भ मे छिपी विकास की असीम सभावनाओ का पुजीभूत रूप है।

प्रवृत्ति का उद्भव एक प्रेरक उपदेश मात्र से हो गया। क्या यह एक चमत्कार से कम है? आज उपदेश सुन-सुनकर भारत-वासियो के कान पक गए है। उपदेशो का उन पर कोई असर नही होता। ऐसी दशा मे आचार्य प्रवर के सरल शब्दो मे छिपी मन्त्र शक्ति और ग्रहणकर्त्ताओ के निर्मल उत्कर्षानुरागी जिज्ञासु मनो की झाकी उद्भव की घटना मे सन्निहित दिखाई देती है।

प्रवृत्ति विकास के क्रम से स्पष्ट होता है कि गत २० वर्षों मे व्यक्ति सुधार, से ग्राम सुधार व्यसन मुक्ति से विकार मुक्ति और अन्त्योदय से सर्वोदय की ओर यह प्रवृत्ति सफलता पूर्वक बढ चुकी है। व्यष्टि से समष्टि और ग्राम से राष्ट्र की एकात्मकता प्रवृत्ति विकास के साथ-साथ घनिष्टतर होती चली गई है।

नितान्त असस्कारी जन मात्र २० वर्षों मे पीढी दर पीढी सस्कारित वने जनो से सस्कार के क्षेत्र मे आगे वढ रहे है। प्रार्थना स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण व सत-दर्शन के माध्यम से आध्यात्मिक विकास के द्वार खुल चुके हैं। धर्म साधना क्षेत्र मे वैयक्तिक से बढ-कर सामूहिक साधना को धर्मपाल अपना चुके हैं।

पदयात्राओ व प्रवासो मे उन्होने जिस उत्कृष्ट कोटि की सेवा–भावना का सहज प्रदर्शन किया है, उससे वे वृत्ती श्रावको के समकक्ष वनते जा रहे हैं।

धर्मपाल पाठशालाओ का जितना लाभ इन सरल ग्रामीणो ने उठाया है, वह उन्हे स्वाध्याय के लिए प्रेरित करने की आधार भूमि के रूप मे उल्लेखनीय है।

के प्रवृत्ति के प्रभाव क्षेत्र मे राजपूत और मुसलमानो से युक्त गाव भी पूर्णत. व्यसन मुक्त गाव बन चुके है । समर्थ और विशाल गूजर समाज ने अखिल भारतीय स्तर पर समाज सुधार के नियम बनाकर क्रियान्वित करने का प्रारभ कर दिए हैं ।

व्यसन मुक्ति, विकार मुक्ति और समाजोन्नति की यह लहर राष्ट्र व्यापी स्पन्दन उत्पन्न कर ग्रामोदय से सर्वोदय के स्वप्न को साकार बनाने की आधार शिला बनेगी उनका विकास इस बात की साक्षी दे रहा है और धर्मपालो के नवीन समाज मे इस बात की असीम व क्रातिकारी सभावनाए निहित है कि ऊच-नीच, गरीब-अमीर जाति और वर्ण के भेद तिरोहित हो जाए गे । विषमता मिट जाय, सत्ता-सम्पत्ति की प्रधानता के स्थान पर गुण कर्म प्रधान व्यवस्था स्थापित होकर समता समाज साकार हो सके ।

व्यक्ति-व्यक्ति छल-छद्म कुटिलता से परे रहकर सरल, सहज, स्वाभाविक जीवन जीए, प्रकृति का शोषक नही अपितु सहचर बनकर नैसर्गिक जीवन यापन करे, परावलबी न रहकर स्वावलबी बने फैसन मुक्त होकर, रोगो और अप्राकृतिक दिखावे से मुक्त होवे, स्वस्थ, सतुलित और सात्विक वातावरण का निर्माण करे, प्रकृति का सरक्षण कर प्रदूषण को रोके, कौटम्बिक वायुमडल का सृजन कर सभी के सुख-दुख मे भागीदार बन कर ग्रामोन्मुखी समाज का निर्माण करेगा ।

इस ग्रामोन्मुखी समाज मे सबको विकास के समान अवसर मिले, अन्त्योदय का प्रयास हो, सबमे मैत्री, समन्वय और न्यासी (ट्रस्टी शिप) का भावना प्रादुर्भूत होकर सर्वोदयी समाज की रचना प्रत्यक्ष आकार धारण कर सके ।

अत्यन्त हर्ष की बात है कि धर्मपाल उद्धारक आचार्य प्रवर एक बार फिर धर्मपाल क्षेत्रो मे अपनी विशाल शिष्य मडली सहित आ पहुचे है । आपकी उपस्थिति, मन्त्रणा और चिन्तना से अनन्त सभावनाओ के द्वार खुलेंगे । धर्मपाल क्षेत्र आज एक सुखद प्रसव वेदना से गुजर रहा है । भविष्य की आशा और विश्वास इस वेदना के गर्भ मे छुपे है । आचार्य प्रवर के आर्शीवाद और अपने पुरुषार्थ से हम उक्त आदर्श धर्मपाल समाज को इसी देह और इन्ही आखो से अर्थात् अत्यन्त शीघ्र प्रत्यक्ष देखेंगे ।

आनेवाली पीढिया हमारे इस अचल सकल्प को उन्नत-मस्तक स्मरण करेंगी । □

चित्र-वीथिका

धर्मपाल श्री सीताराम जी राठौड की श्रद्धा को स्वीकारते हुए सघ के भूतपूर्व अध्यक्ष, क्षेत्रीय सयोजक धर्मपाल प्रवृत्ति (स्व) श्री सेठ हीरालाल जी नादेचा, खाचरोद, समीपस्थ समाजसेवी श्री मानवमुनि जी, मायाचन्द जी काठेड
△
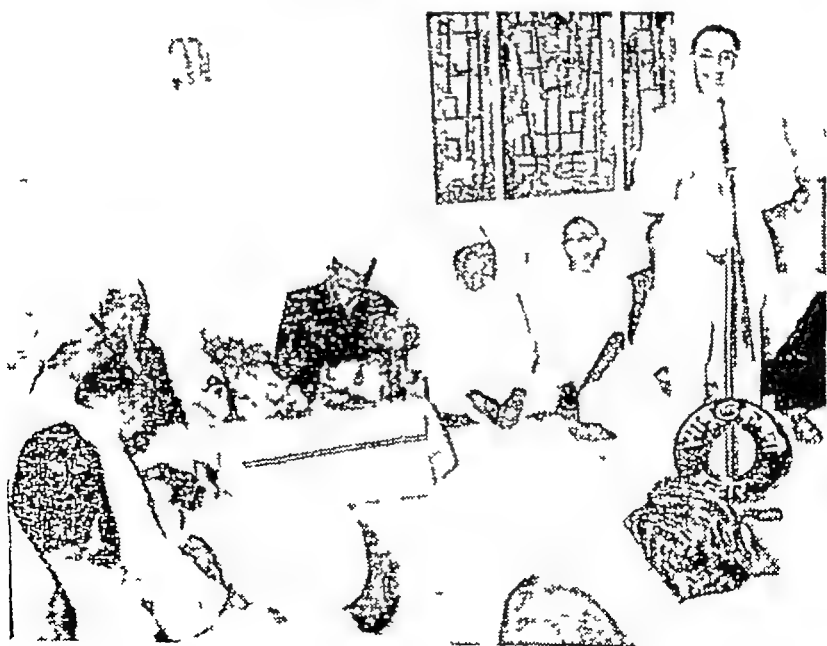
दि २५-११-७३ को इन्दौर मे आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुए पद्मश्री डॉ नन्दलाल जी बोरदिया
△

△ मन्दसौर शिविर मे विधायक श्री भाचावत

ग्रामीण अचल मे मुक्त चिन्तन के दुर्लभ क्षण △
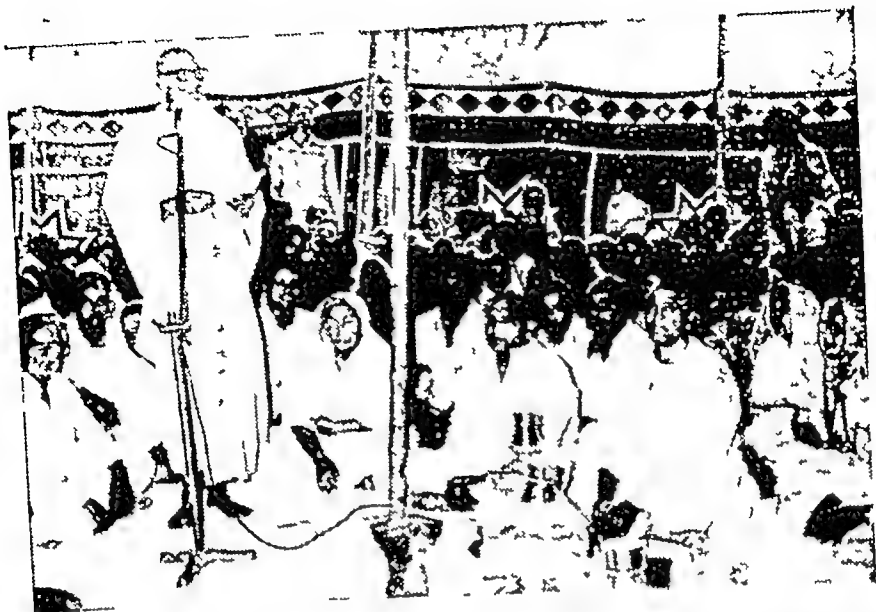
△ धर्मपाल क्षेत्र मे एक धर्मसभा : वक्ता-समाज सेवी श्री मानवमुनि जा
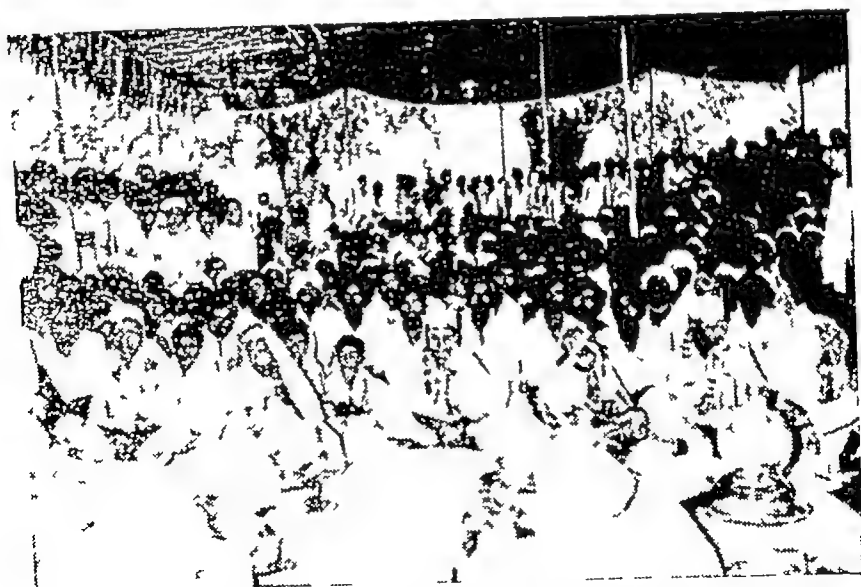
△ लाहोरी गाव मे दि १८ ३ ८२ को सम्पन्न सामूहिक धर्मपाल विवाहो का एक भव्य दृश्य
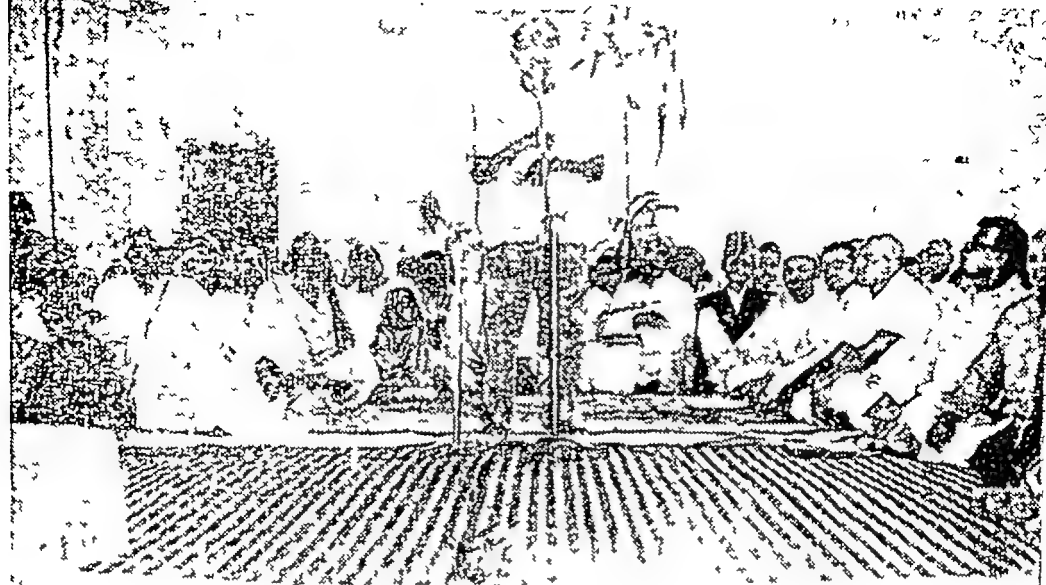
जावरा मे पदयात्रा समापन पर बोलते हुए माणक भाई अग्रवाल (सासद) व मचस्थ बाए से मिर्जा गफ्फार अली अध्यक्ष न परिषद, डॉ लक्ष्मीनारायण पाडे (सासद), पी सी चोपडा, मानवमुनि जी बोहरा जी व नीचे की ओर सरदारमल जी व समीरमल जी काठेड △

श्रीमती यशोदादेवी जी बोहरा एव श्रीमती डॉ हीराबेन बोरदिया के नेतृत्व मे पदयात्री बहिनें △

पदयात्रा गाव और नगर मे . दो दृश्य
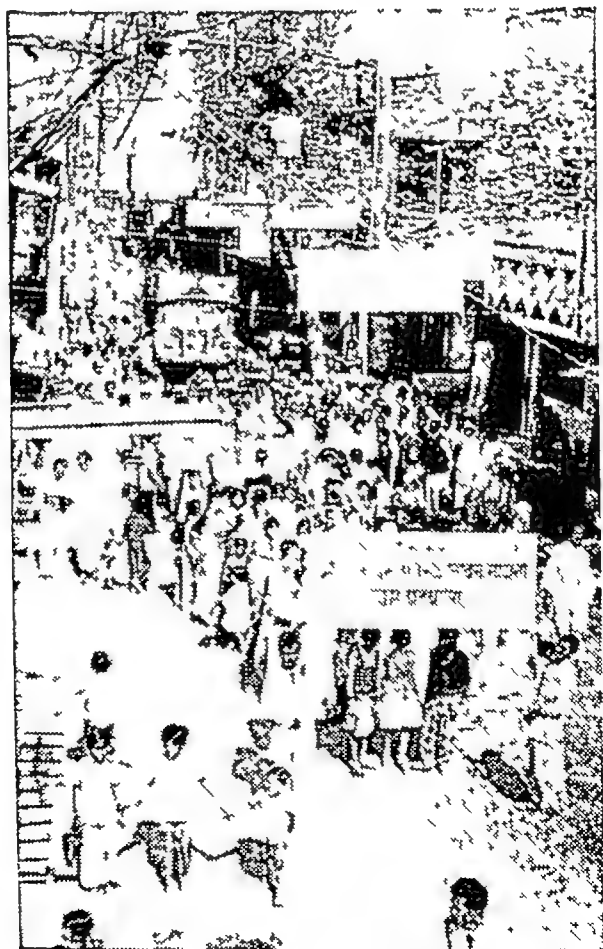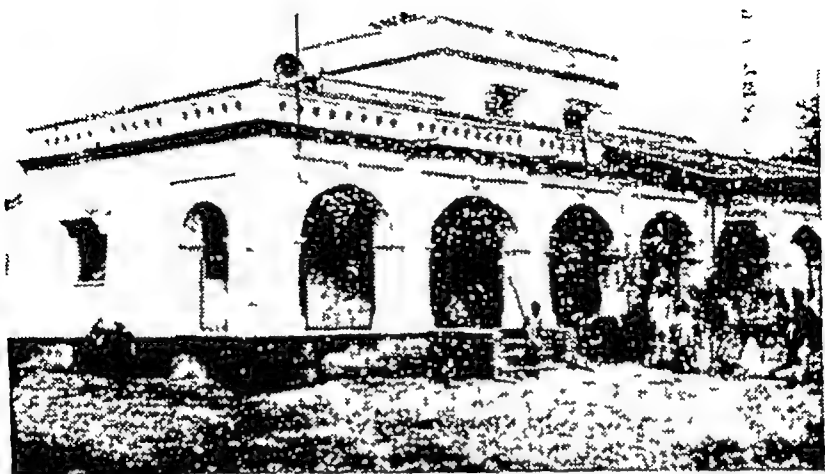
ऊपर . श्री प्रेमराजगणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीप
△ नगर रतलाम का भव्य भवन

नीचे : छात्रावास में शुभारम्भ और धर्मपाल क्षेत्रीय सम्मेलन
▽ के अवसर पर बोलते हुए समिति अध्यक्ष श्री गणपतराज जी बोहरा
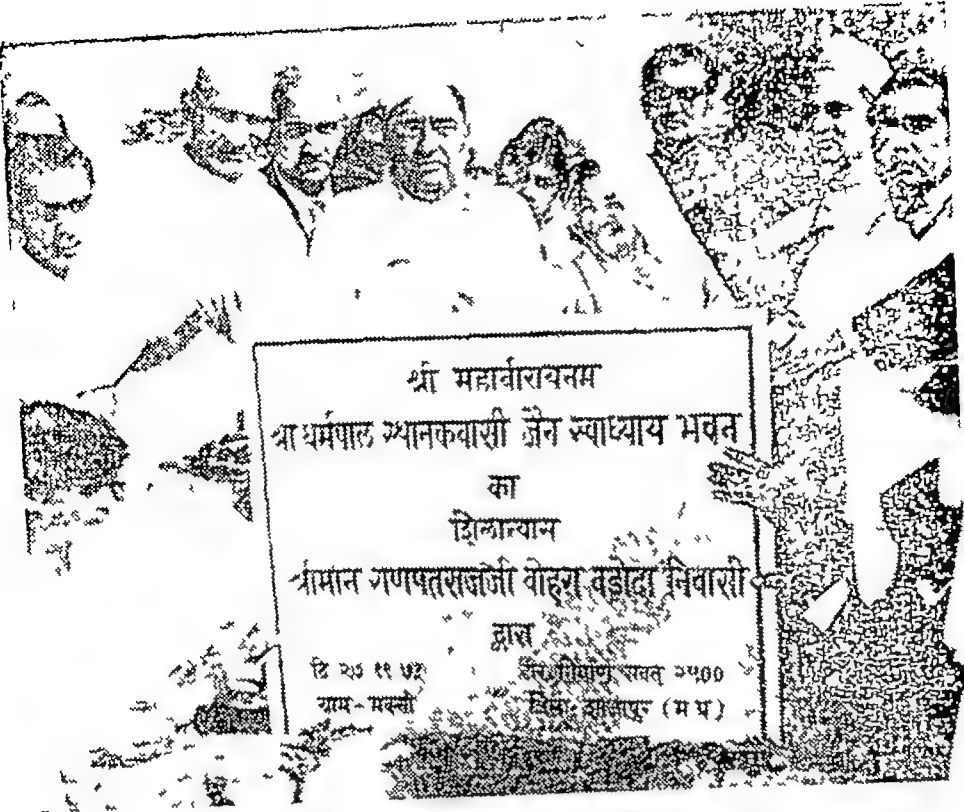
धर्मपाल–तीर्थ मक्सी के समता-भवन का शिलान्यास करते हुए श्री गणपतराज जी बोहरा, श्रीमती यशोदादेवी जी बोहरा, बाई ओर सर्वश्री भवरलाल जी कोठारी, गुमानमल जी चोरडिया, समीरमल जी काठेड एव दाई ओर चुन्नीलाल जी ललवानी, मानवमुनीजी, रामू व हीरालाल धर्मपाल

△
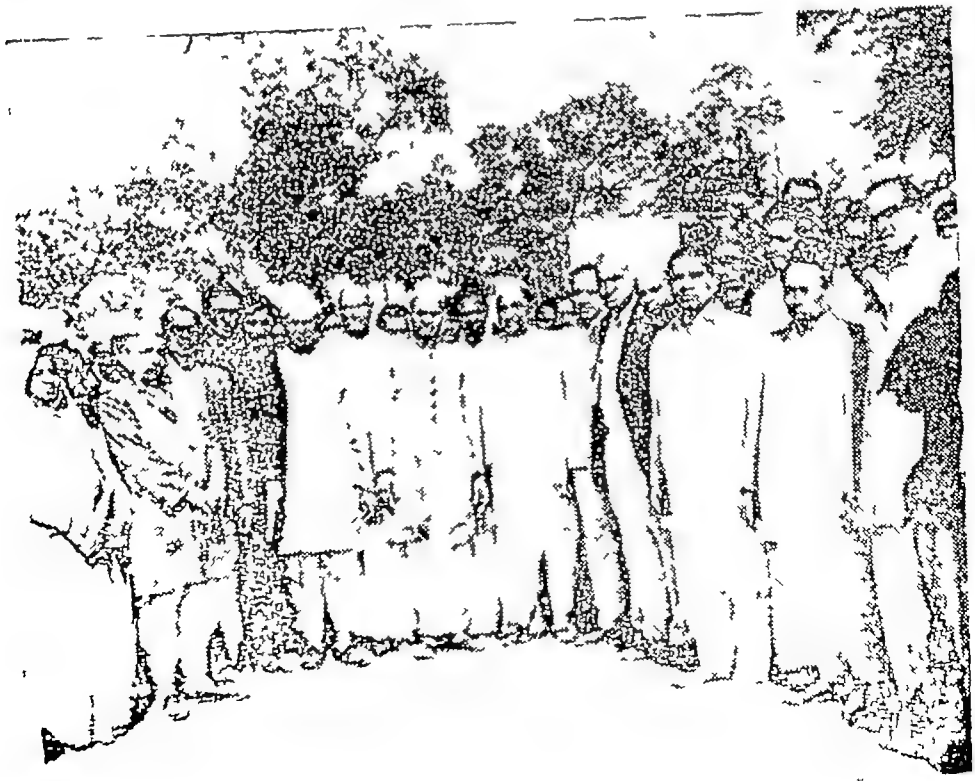
वेरछामडी में प्रथम पदयात्रा का एक भव्य दृश्य

खंड ३

धर्मपाल संस्मरण और अनुभव

समुद्र–मंथन से उपलब्ध रत्न

● श्री भंवरलाल कोठारी

तत्कालीन मत्री श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ

बीकानेर (राज०)

जीवन को साधते हुए धर्म जागृति की ज्योति जलाने के महत् उद्देश्य से आयोजित धर्मपाल धारिणी मालवा की धर्म–प्रवण धरती पर सघ के क्रियाशील कार्यकर्ताओ की पदयात्रा मानो समुद्र–मथन कर रत्न प्राप्ति का एक अनूठा उपक्रम था ।

पदयात्रा का पहला उद्देश्य था–सयम, नियम, मर्यादापूर्वक अनुशासन का पालन करते हुए जीवन साधना का अभ्यास करना ।

दूसरा उद्देश्य था–नियमित स्वाध्याय के माध्यम से अपने अन्तर मे झाक कर अपने आपको समझने, स्वय का अध्ययन करने का प्रयत्न करना ।

तीसरा उद्देश्य था–सादगीयुक्त, श्रमनिष्ठ, स्वावलवी शिविर-जीवन की अनुभूति करते हुए नि स्वार्थ सेवाभाव को जीवन का सहज स्वभाव बनाना ।

चौथा उद्देश्य था–व्यसन विषय विकारो से मुक्त होने का सकल्प कर धर्मपालना के लिए उन्मुख धर्मपाल भाई-बहिनो, युवक–युवतियो एव बालक–बालिकाओ से सपर्क साधते हुए उनके परिवर्तित जीवन से प्रेरणा प्राप्त करना और उन प्रेरक प्रसगो को सही स्वरूप मे प्रस्तुत कर सर्वत्र धर्मजागरण का वातावरण सृजित करना ।

दिनचर्या एव कार्यक्रमो की सरचना लक्ष्य साधक थी । प्रात काल साढे चार बजे जागरण, सामायिक–समभाव की साधना-पूर्वक

सामूहिक प्रार्थना, साढे छ बजे से ५-६ मील की प्रात:कालीन पदयात्रा, जन सपर्क एव धर्मसभा, मध्याह्न २।। बजे से ४।।–५ बजे तक सामायिक पूर्वक सामूहिक स्वाध्याय, सायकाल ५।। बजे से पुन. ३–४ मील की पदयात्रा सामायिकपूर्वक सामूहिक प्रतिक्रमण अ तर–अवलोकन करके आत्मशुद्धि का प्रयास, रात्रि ८।। से ११–१२ बजे तक धर्म सभा एव सबको भाव-विभोर तन्मय करने वाले भावनापूर्ण भजन एव सगीत के कार्यक्रम चलते थे । मध्याह्न एक वक्त का सात्विक भोजन एव प्रात.काल नवकारसी अथवा पोरसी के पश्चात एव सायकाल सूर्यास्त से पूर्व के अल्पाहार, साधना–परक दिनचर्या मे शरीर व मन को रोग विकार–मुक्त रखने मे सहायक सिद्ध हुए ।

दिनचर्या एव कार्यक्रमो को सचालित करने वाले अग्रणी महानुभावो का जीवन अनकहे ही सारी बात कह देता था और साधना की छाप छोडता था । अध्यक्ष महोदय का निश्छल, निष्कपट, त्याग–तप से ओतप्रोत, साधना प्रेरक नेतृत्व, ज्ञानमत्री श्री मोहनलाल जी मूथा का गहन अध्ययन–आधारित ज्ञान–ज्योति प्रज्वलित करने वाला स्वाध्याय सचालन, भजनमत्री श्री हनुमानमल जी बोथरा के सुमधुर स्वरो से प्रज्वलित होने वाली हृदयस्पर्शी स्वर–तरगिणी, सेवामूर्ति डा० नन्दलाल जी बोरदिया द्वारा निष्काम भाव से तन्मय होकर हर व्यक्ति की चिकित्सा करते हुए प्रस्तुत सेवाप्रेरक आदर्श, अहिसा प्रचार मन्त्री श्री चुन्नीलाल जी ललवाणी द्वारा 'यात्रा-वाणी' से विनोदपूर्ण यात्रा सस्मरणो का प्रसारण, मानवसेवी श्री मानवमुनि जी द्वारा धर्मपालो एव धर्मसाधको के धर्मभाव को बढाता हुआ पथ सचालन, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी सा. बोहरा एव धर्म–पाल माता श्रीमती यशोदादेवी जी बोहरा का स्नेहसिक्त वात्सल्य, कर्मनिष्ठ श्री सरदारमल जी काकरिया का सगठन कौशलयुक्त कर्तव्य-बोध, युवक प्रेरणा स्त्रोत युवासाथी श्री महावीरचन्द जी धारीवाल के प्रवचन शैली मे विचारोत्तेजक व्याख्यान, राष्ट्रीय रगमच पर कर्मयोगी की तरह कार्यरत श्री विजयसिह जी नाहर, भोपाल राजकीय महाविद्यालय के दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक ज्ञान गम्भीर डा० सागर–मल जी जैन एव अजमेर के जिलाधीश प्रवुद्ध विचारक्र सात्विक गुण-

सम्पन्न श्री रणजीत सिंह जी कूमट के भाव प्रेरक उद्बोधन, सेवा-निष्ठ, सरल स्वभावी श्री गोकुलचन्द जी सा सूर्या, कुशल व्यवस्थापक कर्तव्यनिष्ठ श्री चादमल जी पामेचा एव धर्मपाल प्रवृति के कर्मनिष्ठ सयोजक श्री समीरमल जी काठेड द्वारा पूर्ण मनोयोग एव परिश्रम-पूर्वक की गई व्यवस्था यात्री दल के प्रत्येक सदस्य के हृदय पर एक अमिट छाप अकित कर गई है ।

उपलब्धियां :

यात्रा की उपलब्धिया अविस्मरणीय एव अनूठी है । प्रवृति मे फसे व्यक्तियो ने निवृति का आनन्द चखा । वातानुकूलित बगलो मे रहने वाले व्यक्ति तपते तम्बुओ मे रहे । वाहनो मे चलने वाले पैदल चले, पैरो मे छाले पड जाने पर भी मन मे आनन्दानुभूति हुई । सुख-सुविधाओ मे भी सदा अस्वस्थ रहने वाले यात्राकाल मे पूर्ण स्वस्थ रहे । सभी ने श्रमनिष्ठ कर्तव्यनिष्ठ साधक बनने का प्रयत्न किया । समभाव की साधना (सामायिक) अतरावलोकन-पूर्वक आलोचणा (प्रतिक्रमण) एव स्वय के अध्ययन (स्वाध्याय) का अभ्यास किया । सभी प्रेम और आत्मीयता की पवित्र धारा मे अवगाहन कर गुणसपन्न बने । दूसरो के प्रति गुण-दृष्टि जगी, दोष-दृष्टि मिटी । सभी को एक अपूर्व सात्विक आनन्द की अनुभूति हुई । यह अनुभूति भाषा तथा हाव-भावो से अभिव्यक्त भी हुई । कभी नही बोलने वाले प्रभावी वक्ता बन गए । अपने मे सीमित रहने वाले सेवानिष्ठ समाज सेवी बन गए । प्रतिदिन रूढिगत रूप मे धर्म क्रियाए करने वाले भाई-बहिनो ने सामूहिक रूप से श्रावकोचित धर्माचरण करते हुए, धर्म के मर्म को समझने व उसे जीवन मे ढालने का सतत चिंतनपूर्वक अभ्यास किया । कर्मजात धर्मपाल जैनो के सरल सात्विक श्रद्धा से ओतप्रोत धर्ममय जीवन से जन्मजात जैन श्रावको को नई प्रेरणा प्राप्त हुई ।

गाव-गाव को स्पर्श कर बहने वाली इस धर्म-गगा ने धर्म-पालो एव सभी ग्राम निवासियो के जीवन को अत्यधिक प्रभावित

किया । धर्म के नाम पर पल रहे ढोंग के कारण धर्म विमुख बने नवयुवको मे भी इस विशुद्ध धर्म साधना-परक जीवन का सात्विक प्रभाव पडा । विकारमुक्ति के वातावरण को गति मिली । एक–एक व्यक्ति ने एक-एक गाव को विकारमुक्त करने का सकल्प लिया । धर्म-पाल आदोलन व्यक्ति-सुधार से ग्राम-सुधार की ओर उन्मुख हुआ । इस प्रकार पदयात्रा की उपलब्धिया अपरिमित हैं ।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने भगवान् महा-वीर के २५०० वें निर्वाण वर्ष को समता–साधना वर्ष के रूप में साधने का सकल्प लिया था । यह पदयात्रा उस जीवन साधना की दिशा मे एक अभिनव प्रयास था ।

वीर निर्वाण वर्ष के अन्त में एवं युगप्रवर्तक, युगदृष्टा, युग–सृष्टा आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष के प्रारम्भ मे कार्तिक सुदी चौथ सं० २०३२ के दिन 'वीर-संघ' योजना को मूर्तरूप देने के लिए भी सघ सकल्पित है । निवृति, साधना, स्वाध्याय एव सेवा के मूलाधारो पर अवलवित 'वीर-सघ' योजना के लिए साधक सदस्य तैयार करने की दृष्टि से यह पदयात्रा एक पूर्वाभ्यास थी ।

जिनशासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, समतादर्शन प्रणेता, परम–पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की भाव धारा के अनु-रूप ममत्व से समत्व, असमानता से समानता और विषमता से समता की ओर प्रयाण कर समता समाज रचना के शाश्वत उद्देश्य को साकार करने की दिशा मे भी यह पदयात्रा एक प्रारभिक कदम थी।

इस पदयात्रा को "एक महान् धार्मिक क्राति की पूर्व सूचना" बतला कर श्री विजयसिंह जी नाहर ने निश्चय ही सार्थक सकेत किया है ।

भारतीय धर्म दर्शन एव साधना के इतिहास मे यह पदयात्रा एक अविस्मरणीय पृष्ठ है ।

दोष स्वयं का : गुण दूसरों का

● श्री गुमानमल चोरड़िया, जयपुर

अध्यक्ष—श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ

पदयात्रा के प्रसग में एक दिन स्वाध्याय की समाप्ति के पश्चात मन्त्री श्री भवरलाल जी कोठारी खडे हुए और कहने लगे कि कल नागदा मे हम अपनी जिम्मेदारी नही निभा सके, शाम को देर से पहुचे एव रात्रि-भोजन निषेध होने पर भी कुछ शिविरार्थियो ने अल्पाहार ग्रहण कर लिया। अत मुझे प्रायश्चित्त दे दीजिये।

प्रसग इस प्रकार बना कि हमारे सयोजक श्री समीरमल जी काठेड ने नागदा मे दो जगह स्वागत एव सभाओ का आयोजन स्वीकार कर लिया था। पदयात्रा का एव शिविर का प्रथम अवसर था। अत॰ वे स्व साधना का महत्व पूर्णतया नही समझ सके थे। रास्ता लम्बा था। हम शाम को देरी से पहुचे। प्रतिक्रमण का समय नही रहा। दादाबाडी मे जैन सघ की ओर से स्वागत था। वहा कुछ सदस्यो ने अल्पाहार ले लिया। तदुपरान्त नागदा शहर मे जैन सघ की ओर से स्वागत एव सभा का आयोजन था। वह रात्रि को देर तक चलता रहा। सदस्यो को अखरा। वहा से मक्षी जाकर पुन दूसरे रोज सवेरे से कार्यक्रम प्रारम्भ होना था। मुझे दिल मे खेद रहा कि मैं अपनी जिम्मेदारी नही निभा सका। मुझे यात्रा समापन के वक्त प्रायश्चित्त करना है। मैंने तो यह सोचा ही था परन्तु हमारे सरल हृदय उत्साही दूसरो के गुण देखने वाले और दोष अपना मानने वाले मत्री जी खडे हुए और विगत दिन की अव्यवस्था के लिए कहने लगे—आप मुझे प्रायश्चित्त दीजिए।

मैंने निवेदन किया कि सघ की व्यवस्था की दृष्टि से सबसे ज्यादा जिम्मेदारी अध्यक्ष की होती है। मैं इसके लिए प्रायश्चित्त का का अधिकारी हू। कल सबके प्रतिक्रमण नही हो सके, अव्यवस्था

समय की रही, अतः मैं प्रायश्चित्त का अधिकारी हूं। मेरे पश्चात आपकी (मत्री जी) की जिम्मेदारी है, अत एक तेले का प्रायश्चित्त मैं लेता हू, एक उपवास का आपको देता हू।

यह सुनते ही हमारे सभी शिविरार्थी भाई–बहिनो मे आत्म-निरीक्षण की भावना बलवती हो उठी। जिन्होने अल्पाहार ग्रहण किया था, वे भी प्रायश्चित्त मागने लगे। उनको भी एक-एक पोरसी का प्रायश्चित्त दिया।

धन्य हैं, हमारे सदस्य जो गुण दूसरों का एव दोष अपना मानते है। यदि समर्पण की भावना इस प्रकार बलवती रही तो निश्चय ही हम भगवान महावीर के अनुयायी कहलाने के अधिकारी है।

आध्यात्मिक चल शिविर की आनन्दानुभूति

● श्री पी. सी. चोपड़ा, रतलाम

अ तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण-वर्ष मे अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के तत्त्वावधान मे आयोजित इस पदयात्रा मे सम्मिलित होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

इस पदयात्रा मे सम्मिलित होने के पूर्व मुझे अपनी पैदल चलने की शक्ति मे सदेह था । प्रात ४ बजे से मध्य रात्रि तक के व्यस्त विभिन्न धार्मिक एव आध्यात्मिक कार्यक्रमो को देख कर मेरा मन विचलित हो जाता था कि मुझ जैसा साधारण पुरुष इस कार्य-क्रम को तन्मयता से किस प्रकार निभा सकेगा । किन्तु आज मुझे यह स्वीकार करने मे तनिक भी सकोच नही कि इस आध्यात्मिक चल-शिविर मे जो आनन्दानुभूति एव आन्तरिक शक्ति का आभास मिला, वह कम ही अवसरो पर कुछ ही प्राणियो को प्राप्त हो सकता है ।

पश्चिमी बगाल के भूतपूर्व उपमुख्यमत्री एव प्रसिद्ध राजनेता श्री विजयसिंह नाहर के नेतृत्व मे इस धर्मयात्रा का शुभारभ खाचरौद से दिनाक २ अप्रेल ७५ को हुआ । प्रतिदिन ६ मील नियमित पद-यात्रा का कार्यक्रम, प्रात ४-३० बजे से प्रारम्भ होने वाले दैनिको का एक महत्वपूर्ण अ श था । एक समय का भोजन व दो समय का अल्पाहार जहा शरीर के लिए पौष्टिक एव उपादेय बना, वही इस नियमित आहार-विहार ने भयकर गर्मी से उत्पन्न होने वाली सभी व्याधियो से सभी पदयात्रियो को मुक्त रखा एव यही कारण था कि पद्मश्री डाक्टर नन्दलाल जी बोरदिया को अपने चल-चिकित्सालय का उपयोग पदयात्रियो के लिये करने का कोई विशेष प्रसग नही आया, यद्यपि डाक्टर बोरदिया सा ने इस धर्मयात्रा मे जहा-जहा पडाव हुआ,

वहा के रोगियो का परीक्षरण एव औपधि-वितरण नि शुल्क किया एव लगभग ४-५ हजार रू० की औपधिया नि.शुल्क वितरीत की । यही सच्ची मानव सेवा है ।

लगभग सौ धर्म-यात्रियो का यह काफिला विभिन प्रान्तो से आये हुए धर्मनिष्ठ नर-नारियो का एक अद्भुत सगम था । स्थान-स्थान पर ग्रामवासियो एव धर्मपालो का उत्साह देख कर मन मे अपार हर्ष होता था । वडे-वडे विद्वानो के गूढ आव्यात्मिक उद्वोवन से जैन-दर्शन की गम्भीर धारा सरल, सलिल-सी वहती थी ।

विभिन्न ग्रामो से होता हुआ धर्मयात्रियो का यह जुलूस ऐतिहासिक नगर उज्जयिनी पहुचा । वहा मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी ने धर्मयात्रियो का स्वागत कर भगवान् महावीर पर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ द्वारा प्रकाशित एव डा के सी. जैन द्वारा लिखित ग्रथ– "लार्ड महावीर एण्ड हिज टाइम्स" का विमोचन किया । उज्जैन मे जी गोकुलचन्द जी सूर्या की सेवा-भावना एव धर्मानुराग अभिनन्दनीय रहे ।

विभिन्न प्रान्तो से आये हुए धर्मयात्रियो ने समता, एकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, अनुशासनबद्धता एव जीवन-समरसता का जो रस पान किया, वह एक अभूतपूर्व वस्तु है । इस पदयात्रा के इतने अधिक आनन्ददायक सस्मरण है कि इनका वर्णन किसी एक लेख मे होना सभव नही है ।

मै तो केवल इतना ही कह सकता हू कि इस प्रकार की धार्मिक पदयात्रा से अनुशासित आयोजन वर्ष मे कम से कम एक बार अवश्य किये जाये । इस पदयात्रा मे सम्मिलित सभी पदयात्रियो के अनुराग एव प्रेम के लिये अनेक हार्दिक अभिनन्दन ।

अनेरा आनन्द

● श्री गरणपतराज बोहरा, बड़ौदा

जब पदयात्रा का आयोजन किया गया और इसकी रूपरेखा बनाई गई तो इसके व्यवस्था-विस्तार को देख कर प्रारम्भ मे मुझे तो यह भय हो रहा था कि ऐसा विशाल आयोजन दुरूह क्षेत्र मे सफलतापूर्वक कैसे होगा ? सारा दिन कैसे बीतेगा ? लेकिन जब मूर्त स्वरूप सामने आया तो प्रात ४॥ से रात्रि १२ बजे तक इतने व्यस्त रहे कि समय-बोध ही नही रहा । रात को इतनी देरी से सोने पर भी प्रात ४ बजे उठना मामूली बात लगती थी, थकावट नही, यह सब चमत्कार जैसा लगता था ।

सभी पदयात्री एक कुटुम्ब की तरह हिलमिल कर काम करने वाले थे और स्वत नियमित कार्य करते थे । लगता ही नही था कि हम दौरे पर हैं । रात को जिसको जहा जगह मिली, सो गया । एयर-कडीशन कक्षो से अधिक अच्छी नीद । मैं दग रह गया कि इसके पीछे कौन–सी शक्ति कार्य कर रही है, जो हर पदयात्री को आनदित व प्रफुल्लित रखती है ।

आठ दिन इस तरह पूरे हो गए कि हमे लगता था २४ घटे भी पूरे नही हुए । ऐसी यात्राओ मे अपने घरेलू कार्यो को और व्यस्तताओ को भूल कर शामिल होते हैं तो ऐसा अनेरा आनन्द आता है कि जिसका वर्णन शब्दो द्वारा नही किया जा सकता । जब यात्री लोग पैदल चलते थे तो किसी को ऐसा महसूस नही होता था कि पैदल चल रहे हैं । यात्रियो को आनन्दित रखने मे श्री चुन्नीलाल जी ललवाणी का विशेष श्रेय रहा है । मन फिर से यही आशा लगाए बैठा है कि ऐसा ही एक मौका और मिले, जिसमे हम कम से कम १५ दिन की यात्रा का आयोजन करें । ०

धर्मपाल भाईयों के बीच

● श्री सरदारमल कांकरिया, कलकत्ता

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ की कार्यकारिणी की जनवरी की बैठक कलकत्ता मे हुई थी। उसमे यह निश्चित किया गया था कि ७ दिन की एक धर्म-जागरण पदयात्रा धर्मपाल क्षेत्र मे की जाय। कलकत्ता सघ के भाई-बहिनो मे काफी उत्सुकता थी और वे इसमें भाग लेने को भी उत्सुक थे लेकिन कारणवश ज्यादा व्यक्ति तो इस पदयात्रा मे नही जा सके फिर भी करीबन १२ भाई-बहिन इस पदयात्रा मे कलकत्ता के सम्मिलित हुए।

कलकत्ता से जैन समाज के प्रमुख विचारक स्वनामधन्य श्री विजयसिंह जी नाहर भी इस पदयात्रा मे एक दिन के लिए सम्मिलित हुए। प्रथम दिन ही बाहर से आये हुए बहुत से गावो के धर्म-पाल भाइयों से नाना प्रकार के प्रश्न पूछ करके वे अत्यन्त प्रसन्न एव प्रभावित हुए।

शिविर जीवन का मेरा तो यह प्रथम प्रसग था। सभी भाई-बहिनो मे अत्यन्त उत्साह था व आपस मे ७ दिन एक साथ रहने से भाईचारे का सम्बन्ध अत्यन्त मजबूत हुआ सच तो यह है कि यात्रा की समाप्ति के दिनो मे सब की भावना थी कि यदि यह शिविर ४-५ दिन और चलता तो अच्छा था। इससे अन्दाजा लगा सकते हैं कि पदयात्रा का जीवन कितना आनन्द-दायक था। पदयात्रा के समय बहिनो का सामूहिक भजन "यह सघ चालियो रे हो करवा धर्म प्रचार" विशेष प्रभाव डालता था व भाई ललवाणी जी की रेडियो स्टाइल की कामेन्ट्री विशेष आनन्द-दायक थी।

धर्मपाल भाई-बहिनो के जीवन मे धर्म पर जो आस्था व जो सादगी व सरलता देखी, उससे कुछ ऐसा लगा कि इन लोगो ने

थोड़े से समय मे कितनी उन्नति करली है। हर गाव मे छोटे-छोटे बच्चो से नवकार मत्र व सामायिक की पाटियो का शुद्ध उच्चारण सुन कर सभी आनन्द का अनुभव कर रहे थे। धर्मपाल बहिनो का धर्म-प्रेम व घर की सफाई रखने की कला तथा पानी को शुद्ध ढग से छान कर सुन्दर ढग से रखने की कला विशेष आकर्षित करती थी। धर्मपाल भाई-बहिन जब भजन व धार्मिक गायन मे तन्मय होकर मधुर स्वर से गाते थे तो उनको सुनने का एक अलग ही आनन्द था।
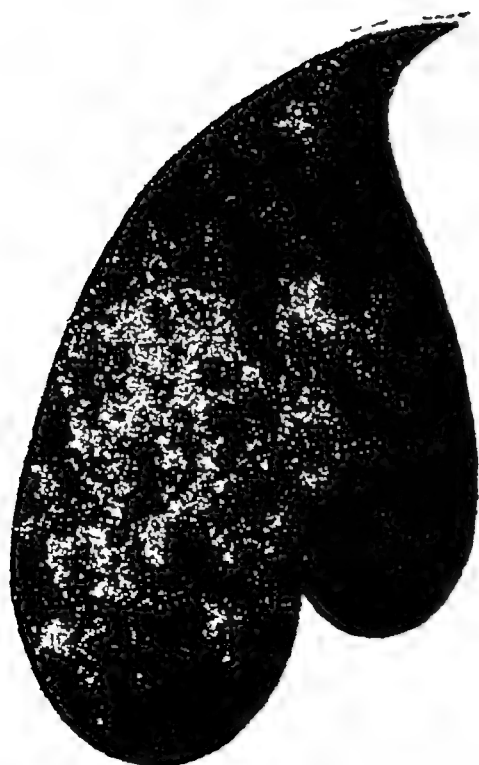
घने अन्धकार में रहने के बाद मिली सूर्य की वह किरण

● श्री प्रकाशचन्द्र सूर्या, उज्जैन

धर्मपाल क्षेत्रों में इस निकट सम्पर्क के पूर्व मैं प्रश्नकर्ताओं के इस प्रश्न पर प्रायः निरुत्तर हो जाया करता था कि "एक ओर हम जैनतर लोगों द्वारा मांस-मदिरा के त्याग के लिये प्रयत्नशील हैं, वही दूसरी ओर हमारे समाज का युवावर्ग स्वय इन कुव्यसनो के जाल मे फसता जा रहा है।" प्रश्न वास्तव में गहरी चोट करने वाला था। यही प्रश्न हाल ही मे धर्मपाल क्षेत्रो की धर्म-जागरण यात्रा के बाद मेरे सामने एक जाने-माने दर्शनशास्त्री द्वारा पुनः उपस्थित हुआ। परन्तु इस प्रश्न की गंभीरता इस बार मेरे लिये नगण्य थी—क्योंकि निरंतर सिद्धान्तों और तर्कों के परिप्रेक्ष्य मे जिसका जवाव मुझे नही मिल पाया था, वह मैं धर्मपालो के सान्निध्य मे प्रत्यक्ष पा चुका था।

धर्मपालो से मुझ सहित कई लोगों को व्यसन–मुक्ति के वारे मे पूछने पर वहुत सीधा, सरल–सा उत्तर प्राप्त हुआ— "अव इच्छा ही नही होती इन पदार्थो के सेवन की"। कुछ ने कहा— "घृणा होती है इनसे"। उनके इस सरल–से उत्तर ने मेरी गभीर ममस्या को हल कर दिया था।

वस्तुत. धर्मपाल भाइयो द्वारा कुव्यसनो का त्याग ऊपर से थोपी गई मर्यादा नही है वल्कि उनके स्वय के नैतिक और आध्यात्मिक जीवन-यापन का परिणाम है। उनके जीवन-क्रियाओ मे पोपित अच्छे सस्कार स्वत. उन्हे इन कुव्यसनो से दूर ले जा रहे हैं। उनके द्वारा सयम-नियमपूर्वक की जा रही प्रभु की आराधना का ही यह

परिणाम है । दूसरी ओर हमारे समाज का युवावर्ग स्वय भी इसी सिद्धान्त पर गुमराह है । सिद्धान्त वही है, कारण विपरीत है ।

सस्कार अच्छे होते हुए भी नैतिकता और आध्यात्मिकता के धरातल पर युवावर्ग क्रियात्मक रूप से उनका अनुकरण नही कर पा रहा है और परिणामस्वरूप कुव्यसनो के जजाल मे फसता-सा जा रहा है और सत्य तो यही है कि वे ही युवक गुमराह हुए हैं या हो रहे हैं जिनका जीवत सम्पर्क आध्यात्मिक शाला से नही रहा-या जिन्हे सतजनो का सान्निध्य प्राप्त नही हो सका है या जिन्होने कथनी और करनी के अन्तर को देख कर धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक गतिविधियो को महज एक ढोग मान लिया है ।

धर्मपाल भाइयो की अभिरूचि, इन नैतिक सस्कारो के प्रति ज्यादा सक्रिय होने का एक और महत्वपूर्ण कारण है और वह है— वर्षों तक घने अ धकार मे रहने के बाद मिली "सूर्य" की वह किरण जिसने उनके गहरे अ धकार को सुसस्कृति के प्रकाश से भर दिया है । स्वभावत इस प्रदीप्त मार्ग के मिल जाने से वे उतने ही आल्हादित है जितना आनन्दित पथ भूला पथिक सही मार्ग पाकर होता है । वास्तव मे धर्मपालो के इस परिवर्तन मे कुछ भी कृत्रिम नही है—सब उन नैतिक शिक्षाओ का परिणाम है—जो आचार्य गुरूदेव श्री श्री नानालाल जी म सा द्वारा इन्दौर, उज्जैन, रतलाम प्रवास के समय उन्हे मिली थी और आज भी सघ के माध्यम से इन्हे निरन्तर प्राप्त हो रही है ।

धर्मपाल भाईयो को मिला प्रकाश, उनके स्वय के सस्कारित आचरण का ही परिणाम है । तभी तो हमारे धर्मपाल भाई कहते है—"इच्छा ही नही होती व्यसन का विचार करने की ।" ❀
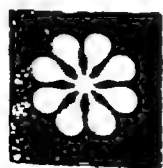
ओ संघ चाल्यो रे करवा धर्म प्रचार

● श्री महावीरचंद धाड़ीवाल, रायपुर

जब कभी हम साथी मिलते, धर्मपाल प्रवत्ति के सम्बन्ध में बातचीत होती। मन मे तीव्र उत्कंठा होती—उस प्रदेश मे अपने धर्मपाल भाइयो के बीच जाकर, उनके धर्मस्नेह का अवलोकन करने की। अतः मैं श्रीमान् चम्पालाल जी सुराना की कार द्वारा १ अप्रेल की रात को खाचरौद पहुच ही गया, जहा सेठ हीरालाल जी नादेजा को मेहमानो की व्यवस्था मे व्यस्त पाया। साथ मे ही वहा मिल गये राजस्थान के भूतपूर्व मत्री श्री भूरेलाल जी बया एव अन्य साथीगण।

२ अप्रैल को प्रात· ही पद-यात्रा का श्रीगणेश हो गया। हाथ में केशरिया ध्वज लिये धर्मपाल भाई, फिर पक्तिबद्ध पद-यात्रियो का यह अभियान एक अनूठा उत्साह लिये चल रहा था। भाई एव बहिनो के सयुक्त कठ से निकला हुआ यह गान ग्राम-ग्राम मे गूज उठा—

ओ सघ चाल्यो रे, करवा धर्म-प्रचार।
नाना गुरु के हम है चेले,
सत्यधर्म मे है अलबेले,
सेवाव्रत लिया धार,
ओ सघ चाल्यो रे, करवा धर्म-प्रचार।

खाचरौद से लेकर उज्जैन तक के इस यात्रा के दौरान जिस ग्राम मे भी हम पहुचे, वहा के निवासियो का धर्म-स्नेह, आचार्य के प्रति दृढ श्रद्धा, देख कर हमारे साथी श्री केवलचद जी मूथा के

मुह से सहसा निकल पडा कि हम को जो अपने आपको धार्मिक एव आचार्यश्री के परम-भक्त कहते हैं, आज पुन आत्म-निरीक्षण का अवसर प्राप्त हुआ है ।

घर-घर मे लिखा हुआ—'जैनधर्म की जय' 'जय गुरु नाना, जय गुरु नाना', यह उन धर्मपाल भाइयो की श्रद्धा व विश्वास का अपूर्व प्रतीक था । कौन भूल सकता है, गाम मे प्रवेश के पूर्व छोटे-छोटे बालको का विनय मुद्रा मे 'जय जिनेन्द्र' कहना, अपढ बहिनो के मुह से सस्कृत के श्लोक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक की गाथाओ का शुद्ध उच्चारण एव आगत-अतिथियो का हाथ मे कुकुम-थाल लिये हुए मगल-गान के द्वारा भावपूर्ण-स्वागत ।

पद-यात्रा मे जाने के पूर्व जब स्वास्थ्य की ओर दृष्टि जाती थी, बडा विकार आता था, परन्तु वह कौन-सी दिव्य-शक्ति थी कि हम निर्विघ्न एव स्वस्थ चलते ही रहे । हम तीन साथी चले-एक स्थूल, दूसरे का पैर का इलाज चल रहा था और मैं हृदय–रोग का रोगी । परन्तु सभी प्रसन्न चल रहे हैं । हस रहे है, एव साथ ही चिन्तन, मनन, स्वाध्याय आदि का साधनामय जीवन चल रहा है । जिन्हे हम भूल नही सकते वे हमारे इस पद-यात्रा के केन्द्र बिन्दु हैं—धर्मपाल ।
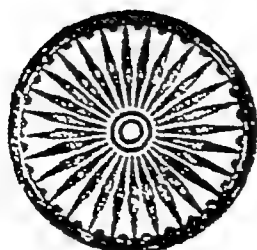
बहुरंगी भावभीने संस्मरण

● श्रीमती शांतादेवी मेहता, रतलाम

पदयात्रा का महत्त्व तो बहुत सुना था अत उसका वास्तविक, आनन्द प्राप्त करने की इच्छा जागृत हुई । मैंने मन की कमजोरी को दूर करते हुए निश्चय किया कि मुझे भी इस यात्रा मे जरूर भाग लेना चाहिये । इसी सकल्प के साथ मै भी चल पडी, आठ दिन के लिये । इस सुखद यात्रा के पश्चात् मुझे अब ऐसा महसूस हो रहा है कि यदि मैं इस पदयात्रा मे नही जाती तो अपने जीवन का एक स्वर्ण अवसर खो देती । इस पदयात्रा मे मुझे जिस आनन्द की अनुभूति हुई है, वह वर्णनातीत है । फिर भी कुछ प्रसग मैं लिख रही हू ।

झलक एक चलचित्र की :—मैं आजकल सिनेमा बहुत कम देखती हू, क्योकि उसके प्रति रुचि और आकर्षण अब नही रहा । पर जब मैं इस पदयात्रा के बारे मे सोचती हू तो मेरी आखो के सामने यात्रा के प्रसग चलचित्र की भाति एक-एक कर आने लगते है । ऐसा लगता है कि इन आठ दिनो मे हमने एक महान् धार्मिक और आध्यामिक चलचित्र का निर्माण किया । हमारे इस चलचित्र के प्रमुख नायक थे शात, धीर, वीर, गम्भीर हमारे अध्यक्ष श्रीमान् गुमानमल जी चोरडिया और भाई श्री गणपतलाल जी बोहरा और मार्गदर्शिका थी धर्मपाल माता यशोदा मैया (श्रीमती यशोदा बहिन बोहरा) । इसके हास्य-अभिनेता थे भाई श्री सरदार-मल जी सा० काकरिया । गीतकार थे श्री हनुमान जी, प्रसारणकर्त्ता थे श्री चुन्नीलाल जी ललवानी और हम सब थे सहयोगी कलाकार । दूसरी ओर इसकी प्रमुख भूमिका मे थे इसके कहानी लेखक भाई श्री समीरमल जी और श्रद्धेय मानवमुनि जी । डायरेक्टर थे भाई श्री भवरलाल जी कोठारी । यह तो हुआ हमारी इस पदयात्रा का स्पष्ट चित्रण—जो केवल हास्य ही नही, एक ऐतिहासिक चित्रण भी कहा जा सकता है ।

ऐतिहासिक यात्रा—यह यात्रा अपने इतिहास की एकमात्र धार्मिक यात्रा रहेगी क्योकि यह हमारी प्रथम यात्रा थी, जो सेठो के महलो से निकल कर गरीबो की झोपडियो की ओर गयी, धार्मिक भावना से प्रेरित होकर, सुसस्कारो के निर्माण हेतु बिना किसी ऊचनीच के भेदभाव के, समानता के आधार पर चली ।

सेवा की शिक्षा—हमारी इस यात्रा के अवसर पर सच्ची लगन और सेवा के अनेक प्रसग उपस्थित हुए, जिन्हे भूल जाना असम्भव है । सबसे पहले डॉ बोरदिया सा को ही लेवें—कहा एक ओर पद्मश्री की उपाधि से विभूषित और कहा दूसरी ओर धोती-कुर्ता पहने सादगीमय जीवन मे झोपडियो और तम्बुओ मे बैठ कर रोगियो की सेवा ।

हमारे अन्नदाता के रूप मे मामाजी-मामीजी श्रीमान् चम्पालाल जी एव धुरी बहिन पिरोदिया की सेवा अद्वितीय थी ।

यशोदा मैया का धर्मपालो मे घुलना-मिलना, उन्ही मे बैठना-उठना, उन्हे धार्मिक-शिक्षण, सामाजिक-चेतना और नैतिकता का पाठ पढाना एक आदर्श सेवा था ।

प्रेमअंकुर—धर्मपाल बहिनो का प्रेम अद्वितीय था । सुरोलिया गाव मे उन्होने हमे रात्रि के १२ बजे तक नही छोडा । हमने कहा कि हमे सबेरे ४ बजे उठना है, परन्तु वे कहा सुनने वाली थी । वे तो कहती थी—हम रात भर यही पर गीत गायेंगे । उनका प्रेम उनकी वाणी के द्वारा प्रस्फुटित हो रहा था । आखिर मे फूलकुंवर बहिन को तो पकड ही लिया और बैठाये रखा । रूलकी गाव मे भी लोगो का अत्यधिक प्रेम रहा । वे बहिने कहती थी कि आप लोगो ने हमारे लिए कितना कष्ठ उठाया है । सुरोलिया गाव की ५-६ लडकियो का प्रेम तो देखने लायक था । मुझे और रोशन बहिन को घेर लिया, क्योकि हम परिचित थे और कहने लगी कि हम आपके साथ चलेगी, पढेंगी और अपना विकास करेगी ।

प्रेम-अकुर के उद्भव को देख कर चकित रह गई । दो बालिकाये हमारे साथ आई । उनका नाम सीता और शान्ता है ।

एक मेरे पास और एक रोशन बहिन के पास, अभी तक हमारे परिवार के समान रही और अभी कुछ दिनो पूर्व उनके घर से लेने आये तो रोती हुई यह कह कर गई कि हम वापिस आयेगे ।

यात्रा के रूप मे एक अनुपम अवसर हमे प्राप्त हुआ था, जब हम सब सासारिक और पारिवारिक चिन्ताओ से मुक्त रहते हुए अपने स्वय के बारे मे चिन्तन कर सके । इस समय हमे अनुभव हुआ कि हमे अपनी मनोभावनाओ का विकास सशोघन, परिमार्जन करना है और अपने जीवन को आदर्श बनाना है ।

सघ-मन्त्री श्री भवरलाल जी कोठारी द्वारा कहे गये ये शब्द—"उठ भोर भई अब रैन कहा जो सोवत है" अब भी गू जते है । वास्तव मे कितनी भोरे बीत गई, जीवन कहा है ? मन मे आया कुछ कर ले, नही तो खाली हाथ लौटना पडेगा । उनके कहे गये ये शब्द मेरे लिए जीवन मे हमेशा प्रेरणा के स्रोत बने रहेगे । ०

संस्मरण एक चिकित्सक के

● स्व. पद्मश्री डॉ. नन्दलाल बोरदिया, इन्दौर

नवम्बर सन् १९७४ मे ही मैंने इस पदयात्रा मे सम्मिलित होने का निश्चय कर लिया था और व्यवस्थित ढग से योजना बना कर इसमे भाग लेने की ठान ली थी । अत उसकी तैयारिया काफी समय पहले से शुरू कर दी गई । मै जीवन भर चिकित्सक ही रहा हू और यद्यपि धर्म जागरण यात्रा मे धार्मिक जीवन, साधना इत्यादि पर अधिक बल दिया जाना स्वाभाविक था परन्तु मै दूसरो के कष्ट मिटाने मे सहायक हो सकने वाली मेरी उपयोगिता का भी लाभ लेना चाहता था । जो-जो वस्तुए ऐसी यात्रा मे उपयोगी हो सकती थी, उन्हे ले जाना था । साथ ही, जब गाव-गाव पैदल चलना ही था तो

अधिक बोझ उठा कर ले जाने का कोई प्रयोजन नही था। पैदल चलते समय प्राय शहरो मे ले जाने की चिकित्सा-पेटी (जिसे हम चिकित्सक मोटर मे ले जाते हैं और रोगी के परीक्षण के लिये जो आवश्यक होती है) ग्रामीण क्षेत्र मे सुगम नही समझी गई और कधे पर लटका कर ले जाने का झोला लिया गया, जिसमे आकस्मिक घटनाओ के उपचार की सामग्री साथ ली गई। अपनी उपयोगिता को पूरी तरह सफल बनाने के लिये तीन बक्सो मे मैंने खासा चिकित्सालय इकट्ठा कर लिया जो एक गाव से दूसरे गाव मोटर मे ले जाया जा सकता था। मेरे मन मे यह विचार आता रहा कि यात्रा के दौरान किसी भी शारीरिक व्याधि के सामयिक उपचार मे मजबूरी महसूस न करना पडे। जब मुझे आख मे अचानक गिरी ककरी को निकालने की कला मालूम है तो मुझे ऐसी उपयोगिता से किसी कारण वचित न रहना पडे, इस उद्देश्य से सभी प्रकार की औषधिया साथ मे ली गई। साथ मे शल्य-क्रिया के उपकरण भी थे।

यात्रा मे हमारे सभी मार्ग प्रायः कच्ची पगडडियो द्वारा ही पार किये जाते थे। यात्रा के पहले ही कुछ यात्रियो के पेट खराब हुए थे क्योकि यात्रा प्रस्थान स्थल खाचरोद पहुचने के पहले अपने घरो से आते समय राह मे जो उनकी खातिर की गई थी, उसमे भारी भोजन और शायद दूषित पानी रहा होगा। हमारे समाज का यह दोष है कि जब हमारे यहा कोई अतिथि-स्नेही आते हैं तो भोजन मे ऐसे व्यजन, पकवान उन्हे खिलाते हैं कि जो सभी को स्वास्थ्यप्रद नही होते। सभी लोग उन्हें पचा नही पाते। ऐसा भोजन यात्रा मे बाधक होता है। इसलिये जब यात्रा प्रारभ हुई तो इस बात का पूरा ध्यान रखा गया कि यात्रा मे भोजन स्वास्थ्यदायक ही मिले।

पहले दिन की यात्रा के प्रारभ मे गाव की चौकी की सभा मे यह सूचित कर दिया गया था कि हमारे साथ सामान्यत पाये जाने वाले रोगो की चिकित्सा का प्रबन्ध है और ग्रामीण जनता उसका लाभ उठावे। हमने आशा व्यक्त की कि जितनी भी लाई हुई अ

धियां हमारे साथ हैं हम उन्हे यही खर्च कर देना चाहते हैं ताकि उनका पूरा सदुपयोग हो सके और वापिस वोझ उठा कर न ले जाना पडे । सभा के सम्पन्न होते ही भोजन हुआ और उसके वाद रोगियो की भीड जमा होने लगी । मेरे अकेले के लिये रोगियो का रजिस्टर में नाम लिखना, उनकी जांच करना, दवा देना और साथ मे औपधि-पत्र भी देना कठिन होता । रोग के बारे मे तथा औषधि और पथ्य के प्रयोग के बारे में ग्रामीण जनता को समझाना सरल नही होता, पर देखते ही देखते हम यात्रियो मे मे से ही एक महिला मेरी सहायता के लिये स्वय आ गई । उसने मुझ से पूछा—"क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूं ?" "नेकी और पूछ-पूछ"—मैंने उनकी सहायता सहर्ष स्वीकार की । वे शीघ्र ही अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई । श्रीमती प्रेम-लता बहन, अजमेर मे अध्यापिका है । उनका रोगियों के प्रति व्यव-हार मानवीय, सरल नम्र था । वे उनका नाम इत्यादि लिखती, उन्हे औषधियां, गोलियां पुडिया गिन कर देती और उनको लेना समझाती । रजिस्टर मे नाम लिखना तो एक छोटा-सा ही काम था पर अधिक महत्त्वपूर्ण था रोगियों से बात करना और उन्हें उनकी ही भाषा में समझाना । जब तक मैं रोगियो की जांच करता उतने समय मे वे पहले देखे हुए रोगियो को औषधि वितरण कर देती और उनके लेने का क्रम समझा देती । वे जिज्ञासु और समझदार थी । उन्होने बहुत जल्दी ही मेरी सहायता करना सीख लिया । उन्हे अधिक कहने या समझाने की आवश्यकता नही होती थी, मानो वे नर्सिग कोर्स पास हो ।

हम लोग जब कभी गाव में पहुचते तो वहा पडाव के लिये ठहरने की व्यवस्था होते-होते ही अस्वस्थ्य लोग इकट्ठे होने लगते । यद्यपि हमारा यही प्रयत्न रहता कि नियमित समय मे ही औषधोप-चार हो किन्तु यह सदैव पालन करना कठिन होता । फिर भी मैं जहा भी काम शुरु करता, वे स्वयं मेरे साथ आ जाती मानो यह काम उनका ही था · चिकित्सा—कार्य के दो मुख्य पहलू थे । एक तो बाहर से आये अस्वस्थ यात्रियो की स्वय की अस्वस्थता की चिकित्सा और दूसरे उन ग्रामीणो की चिकित्सा जो हमारे पडाव के गाव या पास के गावो से आते थे ।

१. मुझे यह सुखद आश्चर्य ही हुआ कि यात्रियो मे किसी एक को भी कोई विशेष व्याधि नही हुई। यात्रा मे युवको से लग कर ७२ वर्ष तक की उम्र के व्यक्ति थे। महिलाए थी पर किसी को न तो रक्तचाप बढा, न कोई पेट की खराबी हुई, न किसी को बुखार आया, न किसी की हृदयगति मे कोई कठिनाई आई और न किसी का सिर दुखा। मुझे बडा डर था कि यात्रा के दौरान जब सभी यात्री १५ कुवो का पानी पीयेंगे तो कही न कही किसी को पेट की गडबड जरूर होगी पर कुछ नही हुआ। इससे सबसे बडा यही सबक मिला कि अगर मनुष्य कम खाये और श्रम करे तो ज्यादा स्वस्थ रह सकता है जैसा कि मैं इस यात्रा मे देख पाया।

यात्रियो मे मुख्य व्याधि थी चलने से पैरो मे छाले पडने की। बहुत से लोग मोटरो या अन्य वाहनो के आदि थे। साफ समतल भूमि पर वे शौकियाना थोडा बहुत धीरे-धीरे चलने वाले थे। उन्हे पथरीली काटेदार पगडण्डियो मे पहाडियो के चढाव पर या मालवे के खेतो की मेडो पर चलने की तो आदत थी ही नही। सामान्य रबर की स्नानगृहो की चप्पलें, ऐसी यात्रा के लिये कष्टदायक ही रही। ऐसे साधन वालो के सभी के पैरो मे छाले हो गये या एडिया फट गई और पैर दर्द करने लगे। रास्ते मे ही कई लोगो को कैनवास के या रबर के ढीले जूतो को खरीद कर उपयोग करना पडा। ऐसे छालो पर स्टीकिंग प्लास्टर का अच्छा उपयोग रहा। महिलाओ मे तो इस कदर सहनशक्ति थी कि उन्हे कभी शिकायत करते नही पाया और वे तो अपनी चप्पलो मे ही पुरुषो की बराबरी करती रही।

२. ग्रामीण क्षेत्रों मे अस्वस्थता की समस्याएं :—यह तो हमे प्रारम्भ से ही मालूम था कि जो चिकित्सा—सेवा प्रवास के दौरान दी जा सकती है, बहुत ही सीमित उपयोगी होगी। मेरा कभी ऐसा उद्देश्य नही था कि इस प्रकार की यात्रा मे कई रोग जड से नष्ट हो सकेंगे। ग्रामीण जनता मे रोग दूसरे प्रकार के होते हैं और शहरो की समस्याए हैं कुछ और। वहा न तो ब्लडप्रेशर बढता है, न हृदय रोग होता है और न मधुमेह। वहा तो प्राय: सक्रामक रोग

अधिक होते है । ग्रामीण–जनता पर औषधि भी जल्दी ही प्रभावी होती है क्योकि वे लोग औषधि के आदि नही होते । यदि कभी चार-पाच दिन से अधिक सामान्य व्याधि रह जाय तभी वे पास के चिकित्सा केन्द्र मे जाते है और कभी-कभी उपचार लेते हैं । कुछ दिन वे सहन करते है और कई बार उनकी शारीरिक शक्तिया ही उन रोगो पर बिना औषधि के काबू पाती है । हमे इन ग्रामो मे प्राय: मलेरिया, पेचिश, बच्चो मे आंखों की सामान्य शोथ, फ्लू, दमा, वच्चो मे असतुलित भोजन के दोष ही अधिक मिले, जिनका हम उपचार कर पाये । कुछ बडे रोग भी पाये गये जैसे कोढ, क्षय तथा कुछ जन्मजात रोग जिनके लिये मैंने उन रोगियो को लम्वे समय के उपचार की सलाह दो । यहां तक कि ऐसे रोगियो के उपचार की व्यवस्था का आश्वासन दिया कि यदि वे रोगी लगातार औषधियां लेंगे तो संघ के दानी यात्री ५००)-७००) रु० की औषधि की सहायता करेंगे क्योकि वे रोग जटिल थे, और उतनी ही रकम के बिना उनका ठीक होना आसान नही था । उन रोगियो को इन्दौर या उज्जैन जाना आवश्यक था । अई बार रास्ते मे जाते वक्त औषधिया तो वितरित की जा सकती थी किन्तु उनका रेकार्ड रखना व्यावहारिक नही था, इसलिये सभी रोगियो के नाम लिखे नही जा सके ।

हमारे देश की यह एक अजीब विडम्बना है कि जहा शासन ने गावो मे अच्छे स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किये है, वहा रोगी उपचार के लिये जाने मे डरते व हिचकते है और उन केन्द्रो का ठीक उपयोग नही कर पाते । गाव के लोगो का इन चिकित्सालयो पर पूरा विश्वास नही है और गावो के चिकित्सक ग्रामीणो के असहयोग की शिकायत करते हैं । इसमे कोई सन्देह नही कि पिछले २० वर्षो मे ग्रामीण जनता पहले से स्वस्थ है । मैने इन्ही ग्रामो को २०-२५ साल पहले बी. सी जी. अभियान के दौरान देखा था, इसलिये मै ऐसा अनुमान लगा सका ।

यह तो सभव नही कि हरएक गाव मे चिकित्सालय हो पर यह सभव है कि हरएक गाव मे एक औषधियो की पेटी रखी जाय,

जिससे सामान्य औषधियो रोजमर्रा की आवश्यकता के अनुसार दी जा सके । ये पेटिया स्कूल के अध्यापक या किसी पढे लिखे सामान्य समझदार व्यक्ति के सुपुर्द की जा सकती है । सबसे बडी आवश्यकता है ग्रामीणो मे स्वास्थ्य-शिक्षा की ताकि माता-पिता अपने बच्चो की देखरेख स्वास्थ्यप्रद तरीको से कर सके और सक्रामक रोगो से बचने मे शासन का सहयोग ले ।

मेरा यह निश्चित मत है कि भारत की ८२% जनता आज भी ग्रामो मे रहती है जिनमे शाति, सद्भावना और मानवता मौजूद है और वे आज भी भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण लिये है । वे अपनी कठिनाइयो को भाग्य की विडम्बना ही समझते है, इसलिये उनमे निराशा कम है । इसके विपरीत ही शहरो मे जहा केवल १८% भारतीय जनता रहती हैं, निरर्थक शोरगुल, हतासा और दुख का अनुभव करते हैं क्योकि उन्होने अपने मन मे असन्तोष को बढावा दिया है ।

अत मे मैं अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ का आभारी हू कि उन्होने मुझे इस यात्रा मे सम्मिलित करके ग्रामीण समाज के सपर्क मे आने का अवसर दिया तथा जीवन-साधना और आत्म-चिंतन की दिशा मे आगे बढने का मार्ग-दर्शन किया । ०

नये सात्त्विक प्रकार का अनुभव

● स्व. श्री अगरचन्द नाहटा

जन-जन से सम्पर्क करने का एक सुन्दर माध्यम है-पद-यात्रा । जैन धर्म मे इसे सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है । तीर्थंकर

स्वय पैदल विहार करते हैं और वर्षाकाल के ४ महीनो को छोडकर जैन साधु-साध्वी निरन्तर विचरण करते रहते है । इसी से विहार के समय रास्ते मे पडने वाले छोटे-छोटे गाव और वहा के निवासियो से सम्पर्क होने का मौका मिलता है । गाव के लोग सरल जिज्ञासु और धर्मप्रिय होते हैं । इसीलिए उनमे धार्मिक भावना थोडे समय मे अधिक रूप मे पनपायी और विकसित की जा सकती है ।

भारत मे सत्सग को बहुत महत्त्व दिया गया है, क्योकि अच्छे और बुरे व्यक्तियो के सग से मनुष्य मे दुर्गुण और सद्गुण सहज ही मे प्रगट हो जाते है । सतसमागम मनुष्य मे सद्भावनाओ को प्रस्फुटित एव पल्लवित करता है और इसका दूरगामी सुपरिणाम मनुष्य को चरित्रवान और उच्च स्थिति तक पहुचाने मे सहायक होता है । जैसा वातावरण मिलता है, उसका अच्छा या बुरा असर होना स्वाभाविक है । इस दृष्टि से नये जैन बने हुए धर्मपाल भाईयो को धर्म मे दृढ बनाने के लिए जो पदयात्रा का आयोजन साधुमार्गी जैन सघ द्वारा समय-समय पर किया जाता है, उसे मैं बहुत ही आवश्यक एव उपयोगी समझता हू ।

इस बार जावरा से रतलाम तक की पदयात्रा मे सम्मिलित होने का मुझे भी अवसर मिला । इस तरह की धर्म-साधना व प्रचार यात्रा मे ७ दिन बिताने का मुझे अपने जीवन मे पहला ही मौका मिला और इन दिनो मे जो अनुभव मुझे हुआ, वह एक नये ही सात्त्विक प्रकार का था ।

पदयात्रा की व्यवस्था भी बहुत ही उत्तम थी । उसमे स्त्री और पुरुष दोनो का सम्मिलन था । एक दिन मे ही सुबह और शाम दो-दो गावो मे पडाव होता । वहा के लोगो से मिलना होता । गाव के लोग बडे उमग के साथ स्वागत करते और धर्म सभा मे काफी समय तक सम्मिलित होकर लाभ उठाते । साथ ही डा बोरदिया जी जैसे कुशल चिकित्सक और उनके सहयोगी डाक्टर आदि से ग्रामीण जनता अपने रोगोपचार का भी लाभ उठाती । अच्छे-अच्छे व्यक्तियो के भाषण सुनकर ज्ञानवृद्धि करती । इस तरह ग्रामीण लोगो को एक चहल-पहल के साथ सुसस्कारित होने की प्रबल प्रेरणा मिलती ।

प्राय प्रत्येक ग्राम मे धर्मपाल बधुओ के लिए विद्याशालाए भी चलती हैं । अत अध्यापको और शिक्षार्थियो मे भी काफी उत्साह दिखाई पडता है । वालक-बालिकाओ को योग्य वस्त्र आदि देने की व्यवस्था भी वडी आकर्षक थी । धर्मपाल लोगो के अतिरिक्त अन्य ग्रामीण जनता भी आयोजनो मे सम्मिलित होकर लाभ उठाती । पदयात्री बहने प्रत्येक गाव के घर-घर मे पहुच कर वहा की स्त्रियो से सम्पर्क स्थापित करती और उन्हे प्रेरणा देती । इस तरह का सुन्दर वातावरण पदयात्रियो को भी उल्लासमय बना देता । पैदल चलने मे उन्हे एक सुखद अनुभव होता । यद्यपि मेरे गोडे मे दर्द होने के कारण पैदल चलना मेरे लिए सभव नही हुआ और डा बोरदिया जी ने भी छूट दे दी पर जो कुछ मैंने देखा उससे प्रभावित हुए विना नही रहा । आराम से जीवन बिताने वाले कई बडे-बडे लोग भी इसमे सम्मिलित थे और वडी खुशी से वे यात्रा के कष्ट उठाने मे तत्पर रहते एव आनद का ही अनुभव करते ।

पदयात्रियो के लिए जो नियम रखे गये थे उनसे सयमित और साधनामय जीवन बिताने का अभ्यास वढता है । नियमित समय पर उठना, सामायिक स्वाध्याय करना आवश्यक था । भोजन पदयात्रा आदि सभी कार्य नियमित समय पर होते । प्रात काल से लेकर रात तक का सारा समय अलग-अलग कार्यों मे विभाजित था ।

दोपहर का सामायिक और स्वाध्याय का आयोजन तो सभी के लिए बहुत ही साधनामय और ज्ञान-वृद्धि का साधन था । पहले 'उत्तराध्ययन–सूत्र' का अर्थ सहित पाठ होता और फिर उस पर कुछ चिन्तन चलता । इसके वाद किसी एक विद्वान का भाषण करवाया जाता । इन भापणो के लिए कई विद्वानो को बुलाकर लाभ उठाया गया, इससे श्रोताओ को वहुत–सी नयी-नयी वातें जानने को मिली । अनेको मे नयी जिज्ञासाए उभरी और समाधान पाने के लिए उत्सुकता जगी । मैंने देखा कि सभी लोग वहुत जिज्ञासु थे, वे दिल से चाहते थे कि इस मिले हुए सुअवसर का अधिकाधिक व अच्छा लाभ उठाया जाय । भाषणो मे कई विषय तो विल्कुल नये से थे । इससे जैन धर्म को ठीक से व गहराई से समझने का अच्छा अवसर मिला । कई

वहिनो मे भी ज्ञान की वडी भूख नजर आयी । उन्होने मेरे से अ प्रश्नो के समाधान पाने का भी रुचिपूर्वक प्रयत्न किया । सारे घर-गृहस्थी के कामो से निवृत होकर ऐसे स्वच्छ व सुन्दर वातावरण मे रहने से सात्त्विक आनन्द का सहज ही अनुभव होता है ।

जो लोग नये-नये जैनी वने है, उनमे जैन सस्कारो का बीजारोपण तो हुआ है पर उन्हे दृढ वनाने की आवश्यकता है । उनकी भक्ति और सेवा भावना अवश्य ही सराहनीय है पर विवेक जागृत करना आवश्यक है । इस पदयात्रा से उन धर्मपाल वधुओ को जैन धार्मिक जीवन किस तरह विताना चाहिये, इसकी अवश्य ही अच्छी प्रेरणा व शिक्षा मिली है । साथ ही पदयात्रियो को भी साधनामय निवृत जीवन विताने का जो सुअवसर मिला, वह भी कम उल्लेखनीय नही है ।

पदयात्रा के साथ जो सुव्यवस्थित चिकित्सा की व्यवस्था रखी गयी थी, उससे हजारो व्यक्तियो को स्वास्थ्य लाभ हुआ । यह वास्तव मे ही सर्वाधिक उल्लेखनीय सेवा कार्य है । ग्रामीण लोगो को अपने रोगो के इलाज कराने की ऐसी सुविधा अन्यथा मिल ही नही पाती क्योकि शहरो मे जाना और वहा इलाज करवाना, अधिकाश लोगो के लिए सम्भव ही नही होता । अत चिकित्सा का सेवादल स्वय उनके पास पहुच गया, यह तो मानो उनके लिए घर बैठे गगा ही आ गयी । डा. बोर्दिया जी जैसे उच्चकोटि के ख्याति-प्राप्त चिकित्सक का सेवाभाव एव तत्परता तो देखते ही बनती थी ।

रतलाम के श्री चोपडा जी की मूक सेवाओ से मै बहुत प्रभावित हुआ । वे और उनके साथी जिस तत्परता से सारे काम समय पर सम्पन्न कर रहे थे, उससे पदयात्रियो को कोई असुविधा नही होने पायी । श्री चोपडा जी के सुपुत्र का सेवाभाव भी उल्लेखनीय है । मुझे जैन कला पर भाषण देने भोपाल विश्वविद्यालय के आयोजित जैन सेमिनार मे २ दिन के लिए सम्मिलित होना था । उस समय मैंने श्री चोपडा जी के सुपुत्र की सेवाभावना का परिचय पाकर वड़ी प्रसन्नता अनुभव की । पिता-पुत्र का ऐसा सयोग दुर्लभ—सा है ।

श्री गुमानमल जी चोरडिया की धर्म-प्रेरणा व अनुशासन-व्यवस्था और श्री भवरलाल जी कोठारी की मिलनसारिता व कार्यदक्षता भी उल्लेखनीय थी । महिलाओ मे भी कई विदुषी और सेवाभावी प्रतीत हुई । उनका उत्साह भी पुरुषो से कम नही था । एक दिन महिला सम्मेलन का भी सुन्दर आयोजन रखा गया था । वास्तव मे महिला समाज मे जागृति लाना बहुत ही आवश्यक है । कई काम तो वे पुरुषो की अपेक्षा भी अधिक अच्छे रूप मे कर सकती है । धर्म प्रचार मे भी उनका ठीक से उपयोग किया जाना आवश्यक है । धर्मपालो मे साम्प्रदायिक कट्टरता न बढे, इसकी सावधानी रखना जरूरी लगता है । ★

मेरी यात्रानुभूति

● डॉ. नरेन्द्र भानावत, जयपुर

भगवान् महावीर के २५०० वें परिनिर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य मे श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन सघ द्वारा अप्रेल १९७५ मे मालवा के खाचरोद–उज्जैन क्षेत्र मे एक सात दिवसीय धर्म-जागरण पदयात्रा का आयोजन किया गया था । उसमे चाहते हुए भी मैं सम्मिलित नही हो सका । जब श्रीमद् जवाहराचार्य जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे जावरा–रतलाम क्षेत्र मे मार्च, ७६ मे पुनः पदयात्रा का आयोजन किया गया तो उसमे सम्मिलित होने की ललक बराबर बनी रही । पूरा अवकाश न मिलने से मैं सम्पूर्ण पदयात्रा का लाभ तो नही ले सका, पर अन्तिम तीन दिनो की यात्रानुभूति का लाभ मुझे अवश्य मिला । सघ मत्री श्री कोठारी जी यह का आग्रह रहा कि मैं अपराह्न मे आयोजित स्वाध्याय-गोष्ठी मे किसी दिन 'धर्म और विज्ञान' विषय पर अपने विचार रखू और समापन समारोह के अवसर पर

'श्रीमद् जवाहरचार्य जीवन और व्यक्तित्व' पॉकेट बुक तथा Bhagwan Mahavira and his Relevence in Modern Times' अंग्रेजी पुस्तक का विमोचन कार्यक्रम रखने से पदयात्रा में सम्मिलित होना मेरे लिये आवश्यक कर्त्तव्य-सा हो गया। अतः मैं 'हिन्दुस्तान' दैनिक पत्र के राजस्थान राज्य के प्रतिनिधि डॉ. भवर सुराणा के साथ २५ मार्च, १९७६ को चेतक एक्सप्रेस से रतलाम के लिये रवाना हुआ। जब हम २६ मार्च को जावरा स्टेशन पहुचे तो हमे सूचना मिली कि हमें रतलाम न उतर कर नामली स्टेशन पर ही उतरना है।

नामली स्टेशन पर उतर कर हम स्टेशन से थोडी दूरी पर ही लगे पदयात्रा केम्प में शरीक हुए। जाकर देखा तो ग्रामवासियों की सभा जुडी हुई थी। उसमें इस क्षेत्र के धर्मपाल एवं अन्य भाई-बहिन काफी संख्या मे उपस्थित थे। उनमें विशेष प्रकार का उत्साह, आखो में नई चमक और मुखमडल पर दृढ सकल्प-शक्ति का तेज था। अपने क्षेत्र को व्यसनमुक्त, रूढिमुक्त और प्रगति-कामी देखने की उत्कट भावना थी और उसमें सहायक और मार्गदर्शक बन रहे थे—श्री साधुमार्गी जैन संघ के निष्ठावान पदयात्री कार्यकर्ता। इसी स्थल पर दोपहर को मानव मुनी जी के प्रयत्न से पत्रकार-सम्मेलन आयोजित किया गया था। धर्मपाल प्रवृति की प्रगति और उसकी सस्कार-निर्माण की भूमिका तथा रचनात्मक प्रक्रिया का परिचय पाकर सभी पत्रकार अभिभूत हो उठे।

अपराह्न मे एक ओर महिला सम्मेलन का आयोजन चलता रहा तो दूसरी ओर सामायिक सहित स्वाध्याय-सगोष्ठी मे 'उत्तराध्ययन-सूत्र' का वाचन और विवेचन। महिलाओ मे अदम्य उत्साह और समाज को रूढियो से मुक्त करने की दृढ सकल्पशक्ति थी। महिला समिति की मत्री श्रीमती शान्ता देवी मेहता एवं अन्य बहनो के ओजपूर्ण भाषण व समाज-सुधार की दिशा मे पारित किये गये प्रस्ताव, नवयुग निर्माण के सूचक थे।

पदयात्रा मे खाद्य-संयम पर विशेष बल दिया जाना विशेष महत्त्व की बात है। इससे आत्मसाधना और आत्मानुशासन मे बडी

सहायता मिलती है । अत अपराह्नोत्तर सात्विक स्वल्पाहार के बाद हम सब नामली से तीन मील दूर पचेड के लिये चल पडे । वही रात्रि पडाव करना था । तीन मील की यह पद यात्रा मेरे लिये नया अनुभव था । इस दल मे ऐसे श्रीमतो की कमी नही थी । जो बिना मोटर-गाडी के सामान्यतः कही आते-जाते नही । पर मैं देख रहा था—यहा बडे-बडे सेठ और सेठानिया अपने वैभव और ऐश्वर्य की स्थिति को विस्मृत कर मिट्टी की सहज गध से साक्षात्कार कर रहे थे । शारीरिक अनुकूलता नही होने पर भी कुछ एक भाई-बहिन सबके साथ पैदल चलने मे ही आनन्द अनुभव कर रहे थे । सच तो यह है कि यह यात्रा केवल पैरो के चलने की यात्रा नही थी । इसके साथ 'यतना' का पूरा ख्याल था । अलग-अलग दलो मे विचारो का विनिमय होता था और भाई-बहिनो की अन्त्याक्षरी की आकर्षक होड सबको सगीत की मधुरता में रचाये-पचाये थी । बहनो के गीतो और स्तवनो के खजाने कितने समृद्ध और वैविध्यपूर्ण हैं, यह तब जानने को मिला । धार्मिक गीतो में मन को रमाने की कितनी पकड है, इसकी गहरी अनुभूति उस समय हुई ।

पचेड पहुचते-पहुचते अंधेरा घिर—सा आया था । यात्रियो की पदचाप से गाव का कण-कण स्पन्दित हो उठा । गाव के अबालवृद्ध नई चेतना से आत्मविभोर हो, पदयात्रियो के सम्पर्क-सान्निध्य मे आये । रात को सभा जुडी । उसमे लगा कि नगर और गाव का अन्तर मिट गया है । ग्रामधर्म की ओर जैसे सबका ध्यान आकृष्ट हुआ । गाव को व्यसनमुक्त बनाने की जोरदार अपील की गई । इसके लिये डोक्यूमेन्ट्री फिल्मो का भी सहारा लिया गया । पदयात्रा का एक दूसरा ही उद्देश्य प्रगट हुआ—लोकजागरण और चेतना के विकास का । लोक प्रबुद्ध हो जाय तो धर्म की पालना सहज बन जाय । यह सूत्र हाथ लगा इस कार्यक्रम मे ।

इधर हम सब लोकजागरण के इस माहौल मे थे पर उधर इसके समानान्तर ही चिकित्सा-सेवा का सूत्र सम्भाले हुए थे—पद्मश्री डॉ नदलाल जी सा बोरदिया । स्वस्थता आवश्यक है, शरीर की भी और मन की भी । बीमारी अभिशाप है । इसे दूर करने की

पहल भी की गई है उस यात्रा में । आसपास के सैकडो लोग रात्रि मे भी चले आ रहे है स्वस्थ होने, स्वस्थता के नियम जानने और सीखने । पदयात्रा का चिकित्सा-सेवा, एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है, जिससे यात्रा लोकयात्रा बनती है ।

२७ मार्च का ब्रह्म मुहूर्त । 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई' की टेर के साथ सब चैतन्य । राइसी प्रतिक्रमण और सामूहिक प्रार्थना का क्रम और पलसोडा जाने की तैयारी । मिनटो मे सामान लद गया निश्चित वाहन पर और सब चल पडे गन्तव्य की ओर । किसी ने मौन धारण कर रखी है, कोई दल प्रभाती गाता चल रहा है, कुछ युवक सामाजिक चर्चा मे और कुछ कार्यकर्त्ता सघ-सगठन की बातों मे रमते-मचलते चल रहे हैं कदम-ब-कदम । मैं डॉ० बोरदिया साहब के साथ हो लिया हूं । ग्रामीण स्वास्थ्य के बारे मे चर्चा चल पडी है । नेत्र-रोग और युवा-स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे भी डाक्टर साहब महत्त्वपूर्ण बाते और जीवन के अनुभव बताते चल रहे है । पलसोडा आ गया इतना जल्दी कि पता ही नही चला । यहा ग्राम पचायत है । पचो और सरपच का अच्छा सहयोग मिला । निकटवर्ती क्षेत्रो के लोग काफी सख्या मे एकत्र हुए । भाई-बहिनों ने यहा के धर्मपालों से, उनके परिवारो से सम्पर्क किया । यह सम्पर्क का नैकट्य इस यात्रा का एक प्रमुख उद्देश्य है । संस्कारी बनने के बाद किसी प्रकार का भेद रह ही नही जाता । धर्मपाल भाइयों मे स्वाभिमान जगाना और उन्हे स्वावलम्बी बनना सघ यात्रा का लक्ष्य है ।

यहा की प्रात कालीन सभा मे धर्मपाल भाइयो ने व्यसन-मुक्ति के वाद जीवन मे आये नये परिवर्तनो और अनुभवो को भाव-विभोर होकर रखा। उससे कई लोगो को प्रेरणा मिली और अनेक स्त्री-पुरुषो ने पदयात्रा के प्रमुख श्री गुमानमल जी सा. चोरडिया के आह्वान पर मद्य, मास आदि कुव्यसनो के त्याग का सकल्प ग्रहण किया । यह दृश्य वडा मार्मिक और हृदय को गुदगुदाने वाला था । लगता था जैसे पापो की कालिमा, सत्सग के जल से धुल रही है, मिट रही है ।

अपराह्न की ज्ञानगोष्ठी मे जैन विद्या के मर्मज्ञ विद्वान् और

साहित्यान्वेषी श्री अगरचन्द जी नाहटा ने जैन दर्शन के विविध पक्षो पर महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिया और मैंने भी धर्म और विज्ञान के सम्बन्ध-सूत्रो और उनकी पारस्परिकता पर अपने विचार व्यक्त किये। समय हो चला था। अत सात्विक अल्पाहार के बाद फिर हम चल पडे रतलाम की ओर। रतलाम नगर के पास ही एक सुरम्य स्थली पर हमारा रात्रि पडाव रहा। यह यात्रा का अतिम पडाव था। अत प्रतिक्रमण के बाद एक विशेष कार्यक्रम रखा गया। इसमे सम्मिलित पदयात्रियो ने अपनी आत्मस्वीकृतिया अर्थात् पदयात्रा के दौरान हुई भूले-प्रस्तुत की। यह दृश्य बडा रोचक और भावविभोर कर देने वाला था। छोटी-छोटी भूलो और छोटे-छोटे नियमो की अवहेलना के प्रसग स्मृति मे ला-लाकर, लोग अध्यक्ष के सम्मुख, विनयपूर्वक प्रस्तुत कर रहे थे। यह आत्मस्वीकृति तभी सभव है जब व्यक्ति परिधि से केन्द्र की ओर मुडता है, उसकी प्रज्ञा जागृत होती है, उसका अहम् टूटता है—गलता है। यह स्थिति वह स्थिति है जिसे प्राप्त कर साधक साधना की ओर अग्रसर हो सकता है और मैंने देखा कि अध्यक्ष जी सबकी बाते धैर्यपूर्वक सुन रहे है और सब उनसे यथायोग्य प्रायश्चित ले रहे हैं। दिल की सफाई का यह तरीका व्यक्तित्व को माजता निखारता है। अध्यक्षजी यह सुन-सुन कर गद्‌गद् हो रहे हैं और यह क्या—उन्होने स्वय सबसे बडा प्रायश्चित्त ले लिया है—एक तेले का। महज इसलिये कि पचेड ग्राम मे ग्रामवासियो ने भावविभोर होकर यात्रादल का स्वागत बैण्ड-बाजो से कर दिया था। यह अध्यक्ष जी का कोई निजी दोष नही था, पर यात्रादल-प्रमुख के नाते उन्होने महसूस किया कि व्यवस्था का कोई भी अग कही से भग होता है तो उसका जिम्मेदारी उनकी अपनो है।

यह सारा दृश्य बडा ही हृदयस्पर्शी और दिल को हल्का करने वाला था। पदयात्रा का यह आत्मस्पर्शी दृश्य अवर्णनीय है। इस दृश्य ने मेरे मन को ही आन्दोलित नही किया, वरन् प्रकृति भी आन्दोलित हो उठी। आधी और तूफान के बीच यह कार्यक्रम चलता रहा। अन्त प्रकृति और बाह्यप्रकृति का यह अद्‌भुत सामजस्य देखते ही बनता था।

★

पदयात्रा की फूल-झड़ियां

● श्री कालूराम नाहर, ब्यावर

धर्मपाल-क्षेत्र की धर्म-जागरण पदयात्रा के अनूठे सस्मरण मेरे जीवन की एक महान् उपलब्धि है । मुझे रह-रह कर याद आता है वह दिन, जब हमारी पदयात्रा रैली चौकीग्राम मे पहुची । उस समय एक धर्मपाल भाई के घर मे किसी पारिवारिक सदस्य का देहावसान हो गया था परन्तु उनके परिवार वालो ने यह बात किसी को मालूम तक नही होने दी और स्वागत मे जुटे रहे । उनकी भावना थी कि जो होनी थी, वह तो हो गई । जो गया है, वह तो वापिस आने वाला है नही, लेकिन सहधर्मी भाईयो की धर्म-गगा, जो हमारे गाव मे आई है, वह पता नही फिर आयेगी या नही ?

गजब की थी वह वात्सल्य—भावना ! उनके इस चिर—स्नेह की अमिट छाप मेरे हृदय-पटल पर अकित रहेगी ।

उभरना ग्राम मे त्यागमूर्ति अध्यक्ष महोदय अपना त्यागमय धर्मोपदेश दे रहे थे । वहा पर एकत्रित आस-पास के गावो के अगुओ ने यह प्रण किया कि वे इस वर्ष मे हर आदमी एक-एक दो-दो गावो को सुधारेंगे । उसी समय वहा पर उपस्थित गाव के ठाकुर साहब, जो दिन-रात मास मदिरा मे रत रहते थे, की आत्मा बोल उठी, त्यागी के त्याग के आगे वह हार मान बैठी और उन्होने भी आजीवन मास-मदिरा एव शिकार का त्याग किया । यह क्या था, सिर्फ त्यागी के त्याग का प्रभाव ।

मक्षी ग्राम के पडाव की छटा तो देखते ही बनती थी । गाव से कुछ दूर सडक के किनारे एक उद्यान मे हमारा कार्यक्रम चल रहा था । उस समय का दृश्य हमे महावीर के समवसरण की याद

दिला रहा था । हमारे बीच उस समय गुरूदेव नही थे । परन्तु उनका असली आत्मीय रूप हमें जैन धर्मपाल भाईयो मे नजर आ रहा था ।

एक ग्राम मे जिसका नाम मुझे इस समय याद नही आ रहा है, हमारे धर्मपाल-कार्यकर्ता श्री हीरालाल जी को पुलिस वाले पूछताछ के लिए ले गये । यह बात मा यशोदा (धर्मपाल-माता) को विदित हुई । उनका मातृत्व उमड पडा और उन्होने चन्द मुख्य-कार्यकर्ताओ को उनके दरियाफ्त के लिए भेजा । जब तक उनका सही समाचार न मिला, उन्होने अन्न-पान नही किया । जब श्री हीरालाल जी वापस आये, तब उन्हे छाती से लगा लिया । कैसी उनका स्नेह था ! यह स्नेह एक माता का अपने पुत्र को भी दुर्लभ है परन्तु धर्म की ओर अग्रसर धर्मपालो को यह मिल रहा है ।

रुडकी ग्राम मे हमारे कवि श्री हनुमानमल जी बोथरा ने अपने भजन से जनता को हर्ष-विभोर करते हुए पूछा—"यशोदा मैया धर्मपाल थारै काई लागे ?" यशोदा मा ने खडे होकर कहा—"ये लाल कृष्ण गोपाल लागै ।" क्या ही वात्सल्यपूर्ण जवाब था ! सारी सभा में हसी का सागर उमड पडा ।

सस्मरण तो इतने हैं और मन चाहता है कि लिखता ही रहू परन्तु इस लेखनी मे इतनी शक्ति नही । फिर भी डॉक्टर साहब नन्दलाल जी बोरदिया के बारे मे कुछ न लिखू तो यह मन मानेगा नही। डॉक्टर साहब की अनूठी सेवा का उच्च आदर्श मेरे जीवन में सतत प्रेरणादायी रहेगा ।

जो क्रान्ति का बिगुल भारत मे भगवान् महावीर ने २५०० वर्ष पूर्व बजाया था, वही क्रान्ति का बिगुल आचार्य प्रवर १००८ श्री नानालाल जी म सा द्वारा आज के युग मे मालवा क्षेत्र की बलाई-जाति के उद्धार के लिए बजाया गया ।

आज तथाकथित नामधारी लोग फैशन की आड मे कुव्यसनो

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

सुसंस्कार और ज्ञान के आराधक धर्मपाल

● श्री दीपचन्द भूरा, देशनोक

वर्तमान अध्यक्ष—श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ

सघ अध्यक्ष बनते समय मैने सकल्प लिया था कि जो भी श्री सघ मुझे आमन्त्रित करेगा, मै उनके यहा अवश्य जाऊगा । आचार्य श्री जी की महान् अनुकम्पा से मुझे अपने सकल्प की पूर्ति का सुयोग मिलता रहा । धर्मपाल प्रचार-प्रसार प्रवृत्ति का आमन्त्रण प्राप्त होने पर मैं वहा भी गया । सच तो यह है कि इस प्रवृत्ति को निकट से देखने की स्वय मेरी हार्दिक व अन्तरग कामना थी ।

मुझे कुछ धर्मपाल क्षेत्रीय प्रवासो मे सम्मिलित होने का अवसर मिला और मुझे इन धर्म के दीवानो के सहज, सरल व निश्छल जीवन को देख कर अपार खुशी हुई ।

उस समय तो मै आश्चर्यचकित रह गया जब जून ८२ में मैंने रतलाम मे आयोजित धर्मपाल बालको के शिविर के समापन एव बालिका–शिविर के शुभारम्भ समारोह को देखा । इन कार्यक्रमो मे धर्मपालो की सुसस्कार और ज्ञान की आराधना को देखकर बडे-बडे धर्म–धुरीणो ने दातो तले अगुली दबा ली । भाति-भाति से इनकी परीक्षा ली गई और हर परीक्षा की कसौटी पर ये खरे उतरे । इनके जीवन मे इतने थोडे समय मे जो महान् परिवर्तन आया है वह अभिनन्दनीय है ।

यह आचार्य गुरूदेव की अमृतवाणी और उस क्षेत्र मे रहने वाले हमारे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की श्रम-साधना तथा धर्मपालो के अपार उत्साह के त्रिविध प्रयासों का सुखभरा फल है ।

मेरी कामना है कि धर्मपाल-प्रवृति समाज और राष्ट्र के उत्कर्ष मे इसी प्रकार सहभागी बन कर प्रगति करती रहे ।

की ओर अग्रसर हो रहे हैं और जिन धर्मपाल भाईयो को ये लोग नीची दृष्टि से देखते हैं , वे लोग आज कुव्यसनो का त्याग कर अपने जीवन को सुखी व समृद्ध वना रहे हैं। इनके वच्चो, औरतो मे धर्म के प्रति सस्कार इतने गहरे घर कर गये हैं कि देखते ही वनता है । उनकी किसी प्रकार की आर्थिक माग नही है । माग है तो सिर्फ आध्यात्मिक जीवन को सुधारने के लिए आध्यात्मिक पाठशालाओ की ।

हम सात रोज के इस प्रवास में आपस में इतने घुलमिल गये कि समय का पता ही नही चला । जव समापन-दिवस आया तो सवके चेहरो पर एक उदासी प्रतीत होने लगी, जैसे "जल विन मछली" और अन्तर्मन रो पडा ।

सच्ची क्रान्ति

● श्री विजयसिंह नाहर

भूतपूर्व उप-मुख्यमन्त्री—प० वगाल

सन् १९७४-७५ की वात है । एक दिन भाई सूरजमल जी वच्छावत हमारे घर पर पधारे साथ मे एक सौम्य मूर्ति युवक भी थे। परिचय कराया कि ये वीकानेर से आये हैं । वहा धार्मिक और सामाजिक सेवा का कार्य करते हैं । नाम है श्री भवरलाल जी कोठारी । तेजस्वी, धीर, धीरे-२ शब्द-शब्द वोलनेवाले युवक को देखकर समझ मे आया कि यह सच्चा कार्यकर्त्ता है ।

श्री कोठारी जी ने कहा कि "मैं आपको एक निमन्त्रण देने के लिए आया हू । मालव मे व्यसन-विकार मुक्ति का एक महान्

आन्दोलन चल रहा है । इस सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात परम पूज्य आचार्यश्री नानालाल जी म सा. ने किया है । श्री अ भा. साधुमार्गी जैन सघ की देखरेख मे धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति के इस आन्दोलन द्वारा गाव के गरीब परिवारो के मध्य सेवा कार्य कर उन्हे आदर्श जीवन बिताने की प्रेरणा दी जाती है । उस क्षेत्र मे कुछ दिन बाद एक पदयात्रा आरम्भ होने जा रही है । यह पदयात्रा समाज के लोग करेगे, जिससे समाज-बान्धवो और धर्मपालो के बीच भाईचारा और निकटता हो सके "

भाई सूरजमल जी जाने को तैयार थे । मैंने भी हा भर दी, क्योंकि पदयात्रा मे मुझे बहुत आनन्द आता है । जब मैंने पश्चिम बगाल मे सन्त विनोबा जी के साथ भूदान आन्दोलन के लिए पदयात्रा की थी । तब मैंने देखा कि पदयात्रा से गाव के लोगों मे नई प्रेरणा जागृत होती थी । वे त्याग के क्रान्तिकारी कार्य देखते-देखते कर दिखाते थे । जनता मे कितनी भाव-भक्ति होती है, यह पदयात्रा से ही पता चलता है ।

पूर्व पदयात्राओं की सुखद स्मृतिया सजोए मैं भाई श्री सूरजमल के साथ रतलाम पहुचा । स्टेशन पर बहुत से व्यक्ति उपस्थित थे । श्री पी सी चौपडा जी के यहा विशिष्ट जनो से मिलना हुआ । वहा से खाचरौद पहुचे । स्व. श्री हीरालाल जी नादेचा के यहा रात्रि विश्राम किया । प्रातः पदयात्रा मे सम्मिलित हुए ।

पदयात्रा का पथ-सचालन दृढता के प्रतीक, स्वस्थ, कर्मठता से युक्त और तेजस्वी समाजसेवी श्री मानवमुनि जी कर रहे थे । सभी लोग पैदल चल रहे थे, कुछ अस्वस्थ लोग गाडी मे थे ।

पहले पड़ाव का गांव 'चौकी' आया । स्वागत के लिए जनता उपस्थित थी । गाव का परिवेश आनन्दमय और शुद्ध था । लोगो मे उत्साह था । धर्मपाल आन्दोलन का सात्विक प्रभाव उनके जीवन मे स्पष्ट दिखाई दे रहा था । जहा के लोग बराबर शराब पिया करते

थे, स्त्रियो को मारा करते थे, जहा घरो मे खाने का अभाव था, वहा शराब छूट गया, परिवार का कलह दूर हो गया । अब रोजगार का सारा धन खाने मे और घर की आवश्यकताओ मे खर्च होने लगा है। स्त्रिया काफी सुखी प्रतीत होती थी ।

इस क्षेत्र मे सच्ची क्रान्ति हो चुकी है । यहा के लोग मासाहार छोडकर शुद्ध शाकाहारी बन गये हैं । मेहनत करते हैं । नवकार मन्त्र का जाप और भगवान महावीर के सिद्धान्तो का नित्य अभ्यास करते हैं ।

मैंने वहा अनेक धर्मपाल भाईयो से बातचीत की । एक भाई से पूछा कि आप लोगो ने यह कैसे ग्रहण किया ?

उसने व अन्य उपस्थित धर्मपालो ने बताया कि हमारे यहा नवकार मन्त्र के जाप से सकट मिट जाते हैं । महावीर के ध्यान से भय और बीमारी भाग जाती है ।

धर्मपाल नाम से प्रसिद्ध इन लोगो के मन मे कितना विश्वास हो गया था । ये हम जैनियो से भी अधिक शुद्धाचारी हो रहे थे । एक परिवार मे हम लोगो के भोजन का प्रबन्ध था । सचमुच देखा कि कितने प्रेम से वे भोजन बना रहे थे । उस प्रेम का आहार सचमुच कितना स्वादिष्ट लगा था ।

काश ! हमारे और साधु-मुनिराज भी इसी तरह के कार्य करे तो ससार का कल्याण हो जावे । जैन साधु पदाचारी है । गाव गाव मे पैदल विहार करते हैं, परन्तु अजैन जनता के गहरे सम्पर्क मे नही आते । इससे उन पर कोई प्रभाव नही पडता ।

प्राय. जैन सन्तो के साथ गाडी वाले लोग चलते है और समाज के लोग इन्हे घेरे रहते हैं । उनके निमित्त कितना खर्च होता है ? यह आचरण कब बदलेगा ?

हम देखना चाहते हैं कि जैन साधु आज के युग में
योगी क्रान्ति की शक्तिशाली नींव रोपण करें ? हम कूपमंडूक
लकीर के फकीर नहीं रहना चाहते । अगर इस विचार और
कार्य करें तो सच्ची धर्मभावना और मानव कल्याण के धर्मपाल
जैसे कार्य सम्पन्न हो सकेंगे ।

पहला-पहला अनुभ

● श्री सरदारमल जी ढढा, ज

मैं जीवन साधना, संस्कार-निर्माण एवं धर्मजागरण पद
में पहली दफा ही सम्मिलित हुआ और पहली बार में ही बहुत
नित हुआ । जब तक यात्रा प्रारम्भ नहीं हुई थी, मैं सोचता जा
था कि पैदल कैसे चलते हैं ? यात्रा शुरू होते ही भय भंग हो
पता ही नहीं चला और हम चलते रहे । गाव के लोगों का ढोल
रेशमी सुर्ख मालाएं लिए स्वागत के लिए मिलना, कितना सु
लगता था । आज भी मेरी निगाहों के सामने वह चित्र है
रहता ।

आत्मानुशासन और अन्त्योदय

● श्री कृष्णराज मेहता, वाराणसी

आत्महितेरतः और लोकहितेरत गहराई से देखने पर दोनो अभिन्न है और ऊपर से दोनो भिन्न हैं। पदयात्राये प्रधानतया दो प्रकार की होती हैं—एक आत्महित, दूसरी लोकहित । अधिकाश साधु-साध्वी, सत-सन्यासी की पदयात्रा आत्महित की होती है और उनका उद्देश्य आत्मदर्शन प्राप्त करना होता है तथा सेवको, शिक्षको साधको और सामाजिक कार्यकर्ताओ की पदयात्रायें लोकहित के लिये होती है और उनका उद्देश्य लोकदर्शन होता है परन्तु यह धर्म-जागरण पदयात्रा आत्महित और लोकहित दोनो के सम्मिलित उद्देश्य से हुई थी ।

स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री नानालालजी महाराज के प्रेरणापरक उद्वोधनो से ता० २२ से २८ मार्च तक जावरा से रतलाम के ग्रामीण क्षेत्रो मे यह धर्म-जागरण-पदयात्रा हुई। इस यात्रा मे करीव १५० श्रावक-श्राविकाओ ने उपासना और धर्मपाल प्रवृत्ति को गति देने के लिये सामूहिक प्रयास किया। उपासना तथा स्वाध्याय के साथ मद्य-मास-मुक्ति, व्यसन त्याग, रोगियो की सेवा और धर्म-जागरण का शिक्षण इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य था । इस पदयात्रा मे पदयात्री भाई-वहन भारत के कोने कोने से आये थे । भारत की चारो दिशाओ से मध्य प्रदेश मे एकत्रित हुए ये पदयात्री भारतीय एकात्मकता का परिचय देते थे ।

धर्मपाल प्रवृत्ति मे वलाई तथा अन्य जाति के भाई-वहन और वच्चे मद्य-मास-मुक्ति का ग्रामसभा मे सामूहिक सकल्प लेते थे और सघ अध्यक्ष श्री गुमानमलजी चोरडिया उन्हे इसके लिये प्रतिज्ञा-वद्ध करते थे । इस प्रकार एक सप्ताह मे लगभग ७०० व्यक्तियो ने मद्य-मान-परित्याग का सकल्प लिया । ५० महिलाओ ने दहेज न

लेने-देने का सकल्प लिया। पदयात्री दल के साथ एक चल-चिकित्सालय इदोर के प्रतिष्ठित डा० बोरदियाजी के मार्गदर्शन मे चलता था। उसमे करीब १००० व्यक्तियो का नि शुल्क इलाज हुआ। डा० बोरदियाजी के ज्ञान और सवेदनाशील व्यक्तित्व से ग्रामीणो तथा पदयात्रियो पर उनकी अमिट छाप पडी।

धर्मपाल लोगो के गरीब बच्चो मे साक्षरता का प्रचार, सस्कार निर्माण और वस्त्रवितरण आदि की ओर श्री मानवमुनि उत्कटता से ध्यान देते थे और आवश्यक सयोजन करवाते थे।

ज्यो ज्यो पदयात्रा आगे बढती जाती थी, सहजीवन मे पारिवारिकता, हार्दिकता और आत्मीयता बढती जाती थी। दिन मे सुबह-शाम दो बार पदयात्रा होती थी और दोनो गावो मे आम सभाये होती थी। जिन जिन गावो मे पदयात्रा पहुचती थी, गावो मैं सामूहिक घूम-धाम से उसका स्वागत होता था तथा नारो और गानो से वातावरण-जागृत हो जाता था। जो धर्मपाल बनते थे, उनके साथ समव्यवहार और एक पक्ति मे आहार शुरु हो जाता था। इससे धर्मपाल परिवारो मे एक नया उत्साह पैदा होता था उनमे से भी कई भाई-बहन पदयात्रा मे साथ थे और गाव गाव मे स्वागत व्यवस्था आदि मे सहयोग करते थे।

इस प्रवृत्ति का बलाई जाति के करीब ७०-८० हजार लोगो मे अब तक प्रवेश हुआ है। अब उनके शिक्षण, सस्कार, व्यवहार आदि की उन्नति का भी चिंतन और सयोजन हो रहा है। आत्मानुशासन और अन्त्योदय की दृष्टि से स्वाध्यायो साधको और उपासको की यह पदयात्रा आकर्षक रही।

अनुपम आनन्दानुभूति

○ श्री अशोक नवलखा

(वर्तमान मे मधुर-व्याख्यानी, तरूण तपस्वी
श्री अशोक मुनि जी म. सा.)

घर्मपाल के हो उद्धारक ,
सुरेन्द्र पूज्य शासनेश ,
हे दीनवन्धु ! समत्व सिन्धु ,
वन्दन कोटि–कोटि नानेश ।।

स्वाध्याय, सावना, शिक्षण-प्रघान पावन पवित्र घर्मपाल पदयात्रा जनमानस पर एक प्रभावी असर डालने मे समर्थ हुई । इसमे अतिशयोक्ति नही, अपितु वास्तविकता है । मै भी उस सुनहले अवसर पर उपस्थित रहा । यह मेरा परम सौभाग्य था ।

आचार्य श्री नानालाल जी म सा की आध्यात्मिक प्रेरणा से कुसस्कारो की शिकार वनी हुई घृणास्पद मालव वलाई जाति आज सुसस्कारित एव सदाचार की प्रतीक वन गई है । उस जाति के नन्हे–मुन्ने वच्चो से लेकर वृद्धो तक मे असीम उत्साह, नई उमग, अनुपम श्रद्धा एव अद्‌भुत घर्म भावना है, जिसकी अनुभूति मुझे पद–यात्रा के समय हुई । पदयात्रा के समय उनके सरल, सादगीमय घर्म-निष्ठ जीवन की एक अमिट छाप मेरे मानस पर पडी और वह मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना वन गई ।

उदाहरण के लिये एक वार घर्म-जागरण पदयात्रा का चक्र किसी गाम मे प्रवेश कर रहा था । तभी एक गाडी मे जुते हुए वैल

युगल विक्षप्त चित्त, अहोस्वित, बिगडे हुए, क्रोधावेश मे उछलते हुए वेग से दौडते रभाते पद-यात्रियो के समीप आये । पदयात्री घबराये नही । परिणाम हुआ बैल शात हो गये । कारण यही था कि निवृत्ति-प्रधान जीवन से अलकृत पवित्र परमाणुओ ने औषधि-मन्त्र या जादुइ असर किया । यह पदयात्रा की आध्यात्मिक शक्ति की देन थी । ०

卐

सेवा और आध्यात्मिकता का संगम

● श्री रिखबराज कर्णावट, जोधपुर

मुझे भाई श्री कोठारी जी ने जावरा से रतलाम धर्मपाल क्षेत्रो मे होने वाली पदयात्रा मे सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया । मुझे भारत जैन महामण्डल के अधिवेशन मे हैदराबाद जाना पडा जिससे मैं प्रारम्भ मे पदयात्रा मे सम्मिलित नही हो सका किन्तु तीन दिन पदयात्रा मे साथ रहा । पदयात्रा का कार्यक्रम सेवा व आध्यात्मिकता से इतना जुडा हुआ था कि जीवन आत्म-साधना की ओर अग्रसर हो सके । सभी पदयात्रियो से कुछ न कुछ प्रेरणा जरूर मिलती थी । आध्यात्मिक विषयो पर भाषण व चर्चायें तथा सार्वजनिक सभाओ मे मद्य-मास निषेध के सम्बन्ध में उपयोगी भाषण व उस ग्राम मे किये गये सफल प्रयासो का विवरण भी बड़ा दिलचस्प रहता था । एक सप्ताह की इस पदयात्रा मे पदयात्री एक नये ही वातावरण मे रहे । इस पदयात्रा मे सेठ-सेठानियो की सख्या भी काफी तादाद मे थी । उन्हे भी नियन्त्रित व सादा जीवन जीने की कला का अभ्यास हुआ । यात्रा के नये परिवर्तित वातावरण मे जो

आनन्द उनको आया, वह तो उनके लेखो या सस्मरणो मे प्रकट होगा।

मुझे लगा ऐसी पदयात्राओ का आयोजन अन्य सस्थाओं व सघो को भी करना चाहिए। मन्दिरमार्गी समाज मे सघ निकालने की परिपाटी है। वैसे एकाघ सघ मे सम्मिलित होने का मौका मुझे भी मिला है। धर्मध्यान का वातावरण तो वहा भी रहता है किन्तु सार्वजनिक सम्पर्क व जनहित के कार्यों का अभी उनमे समावेश नही के बराबर है। आचार्यों को उस पर विचार करना चाहिए।

इस पदयात्रा की सफलता का बहुत बडा श्रेय त्यागमूर्ति सघ-अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया को है जिनके नेतृत्व मे यह पदयात्रा आयोजित हुई। श्री कोठारी जी का परिश्रम व व्यवस्था शक्ति भी उल्लेखनीय है। ○

आत्मसाधना का अनुकरणीय आयोजन !

● श्री प्रतापचन्द पालावत, जयपुर

यात्रा स्वय मे ज्ञान की एक खुली पुस्तक होती है और फिर यह तो समता साधना की यात्रा थी और वह भी पदयात्रा। जावरा मे यात्रा प्रारम्भ की पूर्व सध्या मे हुई जनसभा ने ऐसा अनुमान हुआ था कि यह एक ग्रामीण जन-सम्पर्क यात्रा रहेगी, परन्तु यात्रा समापन पर मैं यह कहने की मन.स्थिति मे हू कि यह

युगल विक्षप्त चित्त, अहोस्वित, विगडे हुए, क्रोधावेश मे उछलते हुए वेग से दौडते रभाते पद-यात्रियो के समीप आये। पदयात्री घवराये नही। परिणाम हुआ बैल शात हो गये। कारण यही था कि निवृत्ति-प्रधान जीवन से अलकृत पवित्र परमाणुओ ने औपधि-मन्त्र या जादुइ असर किया। यह पदयात्रा की आध्यात्मिक शक्ति की देन थी। ०

卐

सेवा और आध्यात्मिकता का संगम

● श्री रिखबराज कर्णावट, जोधपुर

मुझे भाई श्री कोठारी जी ने जावरा से रतलाम धर्मपाल क्षेत्रों मे होने वाली पदयात्रा मे सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया। मुझे भारत जैन महामण्डल के अधिवेशन मे हैदराबाद जाना पडा जिससे मै प्रारम्भ मे पदयात्रा मे सम्मिलित नही हो सका किन्तु तीन दिन पदयात्रा मे साथ रहा। पदयात्रा का कार्यक्रम सेवा व आध्यात्मिकता से इतना जुडा हुआ था कि जीवन आत्म-साधना की ओर अग्रसर हो सके। सभी पदयात्रियो से कुछ न कुछ प्रेरणा जरूर मिलती थी। आध्यात्मिक विषयो पर भाषण व चर्चायें तथा सार्वजनिक सभाओ मे मद्य-मास निषेध के सम्बन्ध मे उपयोगी भाषण व उस ग्राम मे किये गये सफल प्रयासो का विवरण भी बड़ा दिलचस्प रहता था। एक सप्ताह की इस पदयात्रा मे पदयात्री एक नये ही वातावरण मे रहे। इस पदयात्रा मे सेठ-सेठानियो की सख्या भी काफी तादाद मे थी। उन्हे भी नियन्त्रित व सादा जीवन जीने की कला का अभ्यास हुआ। यात्रा के नये परिवर्तित वातावरण मे जो

आनन्द उनको आया, वह तो उनके लेखो या सस्मरणो मे प्रकट होगा ।

मुझे लगा ऐसी पदयात्राओ का आयोजन अन्य सस्थाओं व सघो को भी करना चाहिए । मन्दिरमार्गी समाज मे सघ निकालने की परिपाटी है । वैसे एकाध सघ मे सम्मिलित होने का मौका मुझे भी मिला है । धर्मध्यान का वातावरण तो वहा भी रहता है किन्तु सार्वजनिक सम्पर्क व जनहित के कार्यो का अभी उनमे समावेश नही के बराबर है । आचार्यों को उस पर विचार करना चाहिए ।

इस पदयात्रा की सफलता का बहुत बडा श्रेय त्यागमूर्ति सघ-अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया को है जिनके नेतृत्व मे यह पदयात्रा आयोजित हुई । श्री कोठारी जी का परिश्रम व व्यवस्था शक्ति भी उल्लेखनीय है । •

आत्मसाधना का अनुकरणीय आयोजन !

• श्री प्रतापचन्द पालावत, जयपुर

यात्रा स्वय मे ज्ञान की एक खुली पुस्तक होती है और फिर यह तो समता साधना की यात्रा थी और वह भी पदयात्रा । जावरा मे यात्रा प्रारम्भ की पूर्व सध्या मे हुई जनसभा से ऐसा अहसास हुआ था कि यह एक ग्रामीण जन-सम्पर्क यात्रा रहेगी, परन्तु यात्रा समापन पर मैं यह कहने की मन स्थिति मे हू कि यह

एक सफल आत्मार्थिक, पारमार्थिक एवं सामाजिक सम्पर्क यात्रा थी इस यात्रा की सबसे बडी विशेषता यह थी कि इसका रूप दिन-ब-दिन निखरता ही गया। यात्रार्थियों में हर आने वाला पडाव, प्रत्येक अगला दिन एक नई स्फूर्ति व उत्साह जागृत करता था। यात्रा मे सम्मिलित साथियों मे आपसी स्नेह एव सौहार्द शनै. शनैः यात्रा समापन तक परिवारिक आत्मीयता तक पहुच गया था। विद्वानो के ओजस्वी एव सारगर्भित व्याख्यान जीवन के लिये काफी प्रेरणा-दायक थे।

जिन ग्रामवासियों के मध्य हम सब यात्रीगण रहे, उनका सरल व सौम्य व्यवहार, अपनी कुरीतियो अथवा गल्तियो को समझने की चेष्टा, मानने की उदारता एव उन्हे दूर करने की दृढ निष्ठा, हम सबके लिये भी एक मूक प्रेरणा थी।

सप्त दिवसीय सारे कार्यक्रम निश्चित समयानुसार क्रम-बद्धता के साथ जिस सहज भाव से चल रहे उसके लिये सयोजक एवं व्यवस्था समिति के सदस्यगण भूरि भूरि प्रशसा के अधिकारी हैं। व्यवस्था मे कही भी किसी भी वस्तु की कमी न आना उनके अथक परिश्रम का ही परिणाम था।

संघ का यह निर्णय कि इस प्रकार के आयोजन भविष्य मे भी बराबर होते रहेगे, अत्यन्त प्रसन्नतादायक है। ०

पदयात्रा का स्वाद: जो चलता है, वह चखता है !

● श्री चम्पालाल पिरोदिया, रतलाम

मुझे पदयात्रा करने का मौका सन् १९५४ से आज तक बराबर मिल रहा है। पहले विनोबा, जयबाबू आदि महापुरुषो के साथ ग्रामदान, ग्राम स्वराज्य, गरीबी कैसे मिटे, जैसे आन्दोलनो मे भाग लिया। घर–घर मे सुख का राज और परिवार मे प्रेम कैसे बढे, इसके प्रयोग किये और सफलता मिली।

बारह वर्ष पूर्व पूज्यश्री के साथ गुराडिया गाव मे धर्मपाल प्रवृत्ति की शुरुआत हुई। मुझे यह प्रवृत्ति बहुत अच्छी लगी। मानव उत्थान और सच्चरित्रता की नीव डालने का यह काम कितना अच्छा है। तभी मुझे ऐसा लगा कि पर्युषण तो इन्ही लोगो के बीच रह कर करना चाहिए ताकि इनके सस्कार मजबूत बनें। नेत्र-शिविरो मे व राष्ट्रीय पदयात्राओ मे भी हम जाते है। उनमे भी सस्कार-निर्माण व दुर्व्यसन-मुक्ति की प्रेरणा दी जाती है।

सरकार कानून बदल सकती है, डण्डे के बल पर उसका पालन करा सकती है पर सस्कारो के निर्माण का काम तो सस्कारी समाज ही कर सकता है। इसी विचार से हमने धर्म–जागरण पद-यात्राओ मे जाने के लिए कदम बढाये।

धर्म-जागरण पदयात्रा मे दोनो ही बार मुझे काम करने का मौका मिला। कई नये लोगो से सम्पर्क हुआ। कई विचार सीखने को मिले और प्रेम का वातावरण बढा। कई नये मित्र बने। हम दोनो पति-पत्नी को इन धर्मपालो के बीच जाने मे प्रेम और प्यार मिलता है और खुद को आनन्द आता है। ★

समतादर्शन का प्रत्यक्ष अनुभव

● श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, जयपुर

धर्म-प्रेमी, साधनारत श्रीयुत् गुमानमल जी सा. चोरड़िया, की प्रेरणा से मुझे पदयात्रा में तीन दिन भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जयपुर छोडते ही मार्ग मे श्रीमान् चोरडिया जी के सग में ऐसा अनुभव हुआ कि हम लोग विषय-कषाय व भौतिक चकाचौध के अत्यत सघन तनावमय वातावरण से निकल कर समता व शातिमय वातावरण मे हर कदम आगे बढे जा रहे है।

शिविर में पहुचते ही ऐसा अनुभव हुआ कि हम जैन धर्म उल्लिखित समता-दर्शन का यहां प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। यहां पर श्री श्रीचंद जी सा. गोलछा, श्री सरदारमल जी सा. कांकरिया, पद्मश्री डा. नदलाल जी बोरदिया, श्री अगरचद जी नाहटा, श्री मोहनलाल जी मूथा, श्री भवरलाल जी कोठारी आदि महानुभाव अपने क्षेत्र के ख्यातिप्राप्त वैभव सम्पन्न तत्त्वचिंतक, लेखक, आदि विद्यमान थे और इन्ही के बीच मे धर्मपाल बधु। इन सब मे परस्पर जैसा गहरा आत्मीय भाव व धर्म-वात्सल्य भाव नजर आ रहा था, उससे ऐसा लग रहा था मानो सब किसी एक ही बडे परिवार के सदस्य हैं।

भगवान् महावीर के संघ-शासन मे सब समान है। यहां जाति, कुल, वर्ण, धन आदि से धर्म के क्षेत्र मे कोई छोटा-बडा ऊच-नीच नही होता है। यह सर्वांगीण-साम्यवाद (समता-दर्शन) का दृश्य इस शिविर मे प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा था। सभी धर्मपाल बधु अपने को बडे सौभाग्यशाली, प्रसन्न व गरिमामय अनुभव कर रहे थे। 'धर्मपाल बधुओ के जीवन का सर्वांगीण विकास हो' यह भावना इस शिविर मे साकार रूप ले रही थी। धर्मपालो के इस बहुमुखी

विकास को देखकर शेष लोगो मे भी धर्मपाल बनकर अपना मानव-जीवन सफल करने की प्रेरणा जग रही थी ।

प्रात काल ४ बजे से रात्रि के १० बजे तक यम-नियम-मय नियमित जीवन, अनुशासन-प्रियता, इन्द्रिय-निग्रह, त्याग-तप आदि सभी धार्मिक प्रवृतिया अति ही प्रशसनीय थी । धर्म श्रद्धा, स्वाध्याय, ध्यान, व्रत-प्रत्याख्यान रूप ज्ञान दर्शन चारित्र की त्रिवेणी अजस्र वह रही थी । शिविर की सफलता मे श्री भवरलाल जी कोठारी का योगदान अति महत्त्वपूर्ण था भविष्य मे भी शिविर की यह प्रवृत्ति प्रगति पथ पर बराबर आगे बढती रहे, यही शुभ भावना है । ★

पदयात्रा में स्वाध्याय-क्रम

● श्री मोहनलाल मूथा, जयपुर

मेरी इस दूसरी पदयात्रा मे स्वाध्याय क्रम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा । पदयात्रा मे हम दोपहर २।। बजे से ४।। बजे तक स्वाध्याय करते । सभी पदयात्री सामायिक लेकर बैठते थे । 'उत्तराध्ययन-सूत्र' का वाचन होता था । इस सूत्र की शुरुआत विनय से होती है । विनय यानि शिष्टाचार । गुरुजनो का अनुशासन जीवन मे कितना निर्माणकारी है, यह प्रथम अध्ययन मे ही मालूम हो जाता है । कैसे बोलना, कैसे बैठना, कैसे सीखना-समझना इत्यादि छोटी-छोटी बातो की भी उसमे काफी गम्भीरता के साथ चर्चा की गई है । आज जो हम राग द्वेष, कलह और द्वन्द्व परिवार मे समाज मे और राष्ट्र मे देख रहे है उन्हे यदि मिटाना है तो उतराध्ययन-सूत्र के प्रथम अध्ययन की ३-४ गाथाए ही निष्ठा के साथ जीवन मे उतार लें ।

श्रीमान् भवरलाल जी कोठारी 'उतराध्ययन-सूत्र' सुनकर गम्भीरता से उस पर विचार करते और अपनी अमूल्य वाणी द्वारा उसका विश्लेषण करते । उनकी मधुर वाणी से सभी यात्री गण भाव-विभोर हो जाते । ★

आता है तो आने दो, जाता है तो जाने दो।

● श्री चम्पालाल डागा, गंगाशहर

पिछली पदयात्रा के सस्मरण सुनकर, पढकर तथा श्री कोठारी जी के आग्रह के कारण मै भी इस पद यात्रा मे सम्मिलित हुआ। हम कुल १३१ पदयात्री थे तथा लगभग इतने ही मेहमान, धर्मपाल वन्धु व स्वयसेवक आदि मिलाकर थे। पदयात्रा के दौरान मुझे मालूम ही न पडा कि ७ दिन कैसे व्यतीत हो गये। कार्यक्रम का निर्धारण इस ढग से किया गया था कि पाच मिनट का समय भी वेकार नही जाता था। इस दौरान जगह-जगह के सैकडो धर्मपाल बन्धुओ से मिलना हुआ, उनसे प्रेरणा मिली और मिला ग्राम्य जीवन को नजदीक से देखने का मौका। इसके अलावा जीवन को साधने का भी अवसर मिला। प्रार्थना, सामायिक, स्वाध्याय व प्रतिक्रमण मे एक विशेष आनन्द का आभास होता था। पैदल यात्रा करने के कारण रात्रि मे इतनी मीठी नीद आती थी कि भोर आभास भी श्री मानव मुनि के भजन "उठ जाग मुसाफिर भोर भई" के कारण होता था।

सवसे ज्यादा मैं प्रभावित हुआ आदरणीय श्री अगरचन्द जी सा नाहटा के एक पद से कि "आता है तो आने दो, जाता है तो जाने दो, होता है सो होने दो" इस वाक्य से मेरे समान सभी पदयात्री प्रभावित हुए।

यात्रा की अन्तिम रात्रि मे प्रतिक्रमण के पश्चात् सव पदयात्रियो ने क्रमश खडे होकर, यात्रा के दौरान अपनी होने वाली गल्तियो की श्रीमान् अध्यक्ष महोदय, श्री चोरडिया के समक्ष आलोचना की व प्रायश्चित लिया। वह दृश्य देखने योग्य था। ★

पदयात्रा : कल्याणकारी व सुधारवादी

● श्री मनोहरसिंह चौहान, पलसौड़ा

जीवन तथा धर्म की प्रक्रिया मे इस प्रकार की पदयात्रा सामाजिक दशा को सुव्यवस्थित करने का एक वडा उपयोगी साधन है। श्री अ भा साधुमार्गी जैनसघ द्वारा इस युग मे जन साधारण मे सुधार एव समता–भाव लाने हेतु जो विशिष्ट मार्ग अपनाया गया है, उससे हम विशेषत प्रभावित हुए हैं। यह पदयात्रा विशेप कर दलित वर्ग के हित मे काफी कल्याणकारी व सुधारवादी सिद्ध हुई है। चू कि भावो और विचारो के आदान–प्रदान का यह सबसे सरल एव समर्थ माध्यम है, इससे समस्त धर्मावलम्बियो ने अभीष्ट धर्मोंपदेशो को ग्रहण करने के साथ–साथ एक विशेष प्रकार के आह्लाद का भी अनुभव किया। श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के निर्देशन मे यह आयोजन भविष्य मे और अधिक सफलता प्राप्त करे, ऐसी हार्दिक कामना करता हू। ★

शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ

● श्री समीरमल कर्णावट, रतलाम

इस तरह की पदयात्रा का आयोजन अपने आप मे ही बहुत ही स्तुत्य है क्योकि इस मे ग्राम्य जीवन की झाकी काफी नजदीक से देखने को मिल जाती है। इसमे परमार्थ, सयम, स्वास्थ्य भी अपने आप सध जाता है। निश्चित ही ऐसे आयोजन काफी कष्टसाध्य होते है परन्तु इनसे समाज को भी देखने का अवसर मिलता है। हमारे अपने समाज (जैन समाज) की अनेको विभूतियो के दर्शन, विचार व आचार देखने को मिल जाते है। हमारी अपनी माताओ, बहिनो व बच्चियो को बाहरी वायुमण्डल का अनुभव होता है, इससे निश्चित रूप से ग्रामीण लोगो, धर्मपाल लोगो पर अच्छी छाप पडती है। सक्षेप मे इस प्रकार के आयोजनो से शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक सभी प्रकार से बहुत लाभ मिलते है। ★

धर्मरूचि वृद्धि

● श्रीमती सुशीला पालावत, जयपुर

मैंने यात्रा मे देखा कि धर्मपाल भाइयो व बहनो मे प्रेम और आदर की भावना काफी है। जब हम एक पडाव से दूसरे पडाव पर पहुचते थे तो वे बहने थालो मे कुमकुम लेकर खडी हो जाती थी और स्वागत–गीत गाने लग जाती थी। उनके कठ बहुत

ही कोमल और मधुर थे । जब वे लोग भजन गाते थे तो ऐसी इच्छा होती थी कि ये गाते ही जाय ।

एक दो बार ग्रामीण भाइयो व बहनो के घर जाने का मौका मिला । जब हम लोग किसी भी भाई के यहा जाते तो सभी धर्मपाल भाई और बहिनें आ जाती । उस समय हम लोग उन से धर्म चर्चा करते थे । कई छोटे बच्चो से नवकार मन्त्र व गुरु वदना का पाठ सुना तो शुद्ध उच्चारण से सुनाते थे । उन्ही घरो मे एक प्रसग आया तो एक धर्मपाल बहिन ने कहा कि इन दोनो सास–बहू मे रोज झगडा होता है, उन्हे आप समझाइये । लेकिन उस समय सास व बहू के मन मे कोई अहम् या लडाई के भाव उनके चेहरे से प्रगट नही हो रहे थे । इससे मैंने यह महसूस किया कि धर्मपाल बहिनो के अन्दर विनय और सहनशीलता है । इनसे ये गुण अपने को भी सीखने चाहिये । धर्म मे रूचि लेकर ज्ञान वढाना चाहिये ।

इस तरह से छह दिन खुशी से निकल गये लेकिन जैसे ही यात्रा समाप्त होने को आई तो मन मे दु.ख होने लगा कि इन सब आत्मीय लोगो से बिछुड जायेंगे । ★
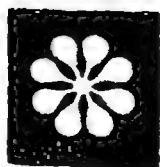
कर्म - सन्देश की प्रबल संवाहक यात्रा

● श्री जवाहरलाल मुणत

अध्यक्ष—श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस

मैं पदयात्रा के अन्तिम दिन केवल एक दिन ही इस साधना की लीला-भूमि मे प्रवेश कर पाया और इससे पहिले इच्छा होकर भी जा न पाया था। केवल एक दिन की पदयात्रा ने ही मुझे चिन्तन, मर्मस्पर्शी जीवन मुल्यों से निकटतम परिचय और अपने परिवेश को नई नजरो से देखने का नितान्त नयापन दे डाला। काश, मैं इससे पहले भी आ सका होता या इसी यात्रा मे अधिक दिन पड़ाव डाल सकता।

गतानुगति और आदत की जडता को, न तो कोई किताब चलित कर पायेगी और ना ही कोई बाहरी उपादान। इस जडता को स्वय अपना कर्म ही तोड़ने में समर्थ है। पदयात्रा इसी बुनियादी सन्देश की प्रबल सवाहक है—आप न तो किसी दूसरे से आपकी पदयात्रा करवा सकते हैं, न ही इस यात्रा के अनुभवों को दूसरे के माध्यम से जी सकते है। स्वय अपनो को ही नही, अपने आपको जानने पहिचानने के लिए यह सबसे अधिक सरल और सिद्धिदायक रसायन है।

पाका हांडे गार नीं लागे पर लाख तो लागे

● श्रीमती प्रेमलता जैन, अजमेर

यात्री–दल खाचरौद से रवाना होकर ग्राम चौकी पहुचा और अपने निश्चित कार्यक्रम के उपरात मैं जन-सम्पर्क हेतु गाव मे जाने लगी तो कई धर्मपाल भाइयो ने हमे गाव मे जाने से रोका । उनके रोकने से मेरे मन मे गाव निवासियो से सम्पर्क करने की भावना और अधिक तीव्र हो गई ।

भाइयो के मना करने पर भी मैं टेंट के पीछे से गांव के घरो मे जा पहुची । मैं उसी घर मे पहुंची, जहा हमारे पहुचने के एक घण्टे पूर्व ही एक ४२ वर्षीय भाई की मृत्यु हुई थी ।

घर में जाकर मैंने जो दृश्य देखा तो दग रह गई घर के सारे प्राणी पदयात्रियो के स्वागत–सत्कार एव उनके साथ ज्ञानचर्चा हेतु गए हुए हैं । केवल मृतक की पत्नी एव बहिन ही घर मे शात-मुद्रा मे बैठी थी ।

उन बहनो के सामने जाते ही मैं आत्मविभोर हो गई । मेरे पास उन्हे सात्वना देने के शब्द भी नही रहे । लेकिन उन बहनो ने मुझे कहा—बहिनजी, यह दुख तो जब तक हम जीवित हैं, हमे रहेगा ही, लेकिन हमारे गाव मे जो धर्म–गगा आई है, उसमे हम पहले गोता लगा लें तो हमे कुछ ज्ञान हो जायेगा । यदि हम रोने धोने बैठेंगे तो हम इस लाभ से वचित रह जायेंगे ।

देखिए, वे निरक्षर जन कितने बुद्धिमान हैं । कितनी सहन–

शीलता कितना धैर्य है उनमे ! आश्चर्य ! अति आश्चर्य !

इतनी सहनशीलता का एक अनूठा उदाहरण मैंने पहली दफा देखा । इससे मुझे बहुत प्रेरणा मिली ।

एक दिन पदयात्री संध्या समय ग्राम वंडवा पहुचे । जन-सम्पर्क का कार्य चल रहा था । धर्मपाल माता यशोदा जी बहनो को कुछ सीखने को कह रही थी । उस समय एक भाई ने कहा—"अब काई पाका हाडे गार लागै ?" उस भाई की बात सुनकर पास बैठी धर्मपाल बहिन निम्माबाई ने तत्काल उपर्युक्त दलील का खण्डन करते हुए कहा— "दादा, पाका हाडे गार नी लागै पर लाख तो लागै ।" यानि मिट्टी का घडा पक जाता है, फिर उस पर कच्ची मिट्टी नही ठहरती है । यह तो सच है, पर उस पर लाख तो लग जाती है, अर्थात् वह कहना चाहती थी कि हम लोग उम्र मे बडी हो गई तो क्या हुआ, हमारे अंदर लगन है तो हम अब भी बहुत कुछ सीख सकती हैं ।

धर्मपाल बहिन के ये शब्द मुझे आज भी जीवन पथ पर आगे बढने की प्रेरणा देते है । ★

"यात्रा जो मेरे लिए प्रकाश-स्तम्भ बन गई"

● श्री मांगीलाल धोका, मद्रास

मुझे इस पदयात्रा में सबसे ज्यादा जो आनन्द मिला है, वह अपने धर्मपाल बन्धुओ के साथ घलमिल कर अपनेपन को भूल जाना

ही एक मात्र है । क्या उनकी भावना, क्या उनके विचार, क्या उन की खूबिया, क्या उनकी सादगी, क्या उनके आदान-प्रदान के तौर-तरीके, क्या उनकी आत्मीयता से निकली आवाज, क्या उनका अति-शय प्रेम, इन सभी ने जिस महान तत्व का दर्शन मुझे दिया, उसका वर्णन नि सदेह मेरी लेखनी से परे है । सचमुच उसने मुझे मूक-सा बना दिया । मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो मैं आध्यात्मिक सागर की गहराई मे गोते लगा रहा हू ।

इसके साथ ही सघ-प्रमुखो और धर्मपाल प्रवृत्ति के सचालको के आदर्श जीवन को देखकर मेरे मन मे यही अभिलाषा जागी है कि इन महान् आत्माओ की कर्त्तव्य-निष्ठा और अमृतमयी वाणी सदा मेरे जीवन को आदर्श बनाती रहे और मैं उन आदर्शों के पालन मे अपने आपको भूल जाऊ । ०

"आत्मानद की अनुभूति"

● श्री चुन्नीलाल ललवाणी, जयपुर

स्वास्थ्य सघ के सदस्य के रूप मे मुझे ८ दिन पर्युषण मे जैतारण बेतुल, सवाई-माधोपुर, मावलय, मद्रास मे सेवा देने का मौका मिला । उसमे सुबह प्रार्थना, शास्त्रवाचन तथा दोपहर मे चौपाई, शाम को सामायिक प्रतिक्रमण आदि क्रिया करते हुए हरी सब्जी व कच्चे पानी के त्याग तथा पौषध व्रत के साथ रहने मे जो आनन्द आता है, उसकी मैंने अनुभूति की है । इसी प्रकार इस पद-यात्रा मे भी अध्यक्ष महोदय के अनुशासन में सभी भाई-बहिनो को सुबह सामायिक, दोपहर मे स्वाध्याय के साथ दो सामायिक तथा

शाम को प्रतिक्रमण करके रात्रि को धर्मपालो के साथ चर्चा व भजन-गायन करके भी आत्मानन्द की उपलब्धि हुई, जिसकी मस्ती मैं आज भी अनुभव कर रहा हू ।

मुझे आचार्य श्री श्री १००८ श्री नानालाल जी म. सा. के व्याख्यान मे एक बार फरमाये गये शब्दो की "कि अगर समाज के प्रबुद्ध वर्ग के ८५ भाई–बहिन धर्म-जागरण करने मे अपने जीवन का योग देवे तो जैन धर्म सारे देश मे फैल सकता है" इस पदयात्रा मे साक्षात् अनुभूति हुई । इस कार्यक्रम से श्री जवाहरलाल जी म. सा 'वीर–सघ' की योजना भी इसी वर्ष सफल होती नजर आ रही है । ये ही भाई-बहिन 'वीर–सघ' के सदस्य बन सकते है ।

इस यात्रा से मुझे यह अनुभव हुआ कि हमे वही बात कहनी चाहिये जो हम अपने जीवन मे उतार सकें । पदयात्रा के दौरान प्रेम और भाईचारे का ऐसा वातावरण था जैसे कि हम एक ही परिवार के सदस्य हैं । यह उस यात्रा की सबसे बडी उपलब्धि है । मुझे ऐसा लगा है कि यह यात्रा सामायिक और स्वाध्याय प्रचार का चलता-फिरता मिशनरी का कार्य है । ०

निराले अनुभव

● श्री शांतिलाल धनराज मूणत, रतलाम

धर्मपाल-परिवारो मे मैंने पाया कि उनका कठोर श्रम की ओर विशेष झुकाव है । रात्रि को प्रवासी-दल जब सो जाता तो गावो के श्रमिक धर्मपाल, जो दिन भर मजदूरी करके आते एव कल पुनः

मजदूरी पर जाने वाले होते, फिर भी वे लोग हमारे सामान की निगरानी करके प्रफुल्लित हृदय पाये जाते । प्रवास मे हम जहा भी गये, वहा उन्होने हमारा भाव–भीना स्वागत किया एव प्रेमरस बहाया ।

शिविर-जीवन की तरह सभी पदयात्री रहा करते थे फिर भी लोगो मे कोई झुझलाहट नही, उनके मुखमण्डल पर अपूर्व प्रसन्नता रहती ।

आजादी के बाद श्रम या कार्य की पूजा का महत्व देश मे लोप होता जा रहा है । ऐसे युग मे जब सामायिक तो दूर रही, १५ मीनिट एकात बैठ कर आत्मचिन्तन या प्रभु स्मरण नही कर सकने वाले लोग, शिविर मे प्रात १-२ सामायिक, मध्यान्तर २ एव साय १-२ सामायिक करने बैठने लगे तो यह आत्मोत्थान की दिशा मे महान् क्रान्तिकारी कदम था । जिसे शासन हजारो दण्डो या कानून के बल पर नही करा सकता, वह सहज सभव हो गया ।

वहा के लोगो का जीवन-परिवर्तन एव विचार जानकर तो दग रह गया । हृदय मे भावना बनी कि यदि समय एव सम्पत्ति का सही विनियोग करने की कभी इच्छा पैदा हो जाए तो धर्मपाल क्षेत्रो मे ही लगना चाहिए । धर्मपाल क्षेत्र के हृदयो की धरती इतनी उपजाऊ लगी कि वहा पर डाला धर्मरूपी दाना बगैर खाद के भी फलता-फूलता एव काफी वृद्धिगत होने जैसा लगा । ०

सोने में सुगन्ध

● श्री फूलचन्द बया, छोटीसादड़ी

ता० १-४-७५ को श्री कोठारी जी, श्री चोरडिया जी तथा अन्य गणमान्य महानुभावो का जीप कार द्वारा साय ८ वजे करीव छोटी सादडी पधारना हुआ। मुझे बुलाया एव पदयात्रा मे शरीक होने के लिए साथ ही हो लेने को कहा। मैं सहर्ष तैयार हो गया।

ता० २-४-७५ प्रात प्रारम्भ होने वाली पदयात्रा मे हम सभी शरीक हो गये। वहा पदयात्रा मे शरीक होते ही मन में एक स्मृति फिर तरोताजा हो उठी। मुझे गाधी जी एव विनोबा जी के साथ रहने का शुभ अवसर मिला है। गाधी जी एव विनोबा जी की पदयात्राए चिरस्मरणीय है। उसी तरह मेरी पदयात्रा भी सदैव के लिए चिरस्मरणीय वन गई।

पदयात्रा मे अनेको धर्मप्रेमी भाई-बहनो से मिलना हुआ। स्नेह, प्यार, प्रेम की गगा हिलोरे लेने लगी।

अनेक व्यक्तियो या जन समूह से नाता जोड उन्हे सन्मार्ग पर ला खडा करना एक बहुत बडा जनकल्याण कार्य है। आचार्य श्री नानालाल जी म. सा के सद् उपदेशो ने आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाया और इस पदयात्रा ने तो सोने मे सुगन्ध ही भर दी।

जहा-जहा भी हमारा यह काफिला गया, वहा का व्यक्ति-व्यक्ति कृत-कृत्य हो उठा। हर जगह अगवानी, हर जगह आवभगत, हर जगह स्वागत, धर्मपालो के समूह के समूहों का उस गाव मे आना, धर्मचर्चायें करना, सुनना एव मनन करना। जो भी व्यक्ति सम्पर्क मे आया भाव-विभोर हो उठा।

सन् १९२९ मे मुझे गाधी जी के साथ साबरमती आश्रम में एक लम्बे समय तक रहने का सौभाग्य मिला । जो गाधीजी के सम्पर्क मे आता, गाधीजी का ही बन जाता । गाधीजी क्षमाशील थे, दूसरो की गलती पर स्वय प्रायश्चित्त करते । वैसी ही एक घटना एक बार हमारी इस पदयात्रा मे घटी । कुछ यात्रियो ने नागदा मे सन्ध्या के बाद नाश्ता कर लिया । इस पर श्री अ भा सा. जैन सघ के अध्यक्ष श्री गुमानमल जी सा चोरडिया ने एक तेले का एव मत्री श्री भवरलाल जी कोठारी ने एक उपवास का प्रायश्चित लिया ।

निश्चित समय के अनुसार हम हर स्थान, हर गाव पहुच जाते और स्वाध्याय, धर्मचर्चा, जनसेवा, लोकसेवा, अहिंसा धारण करने और शराब का त्याग आदि व्रत करते-कराते जाते । ★
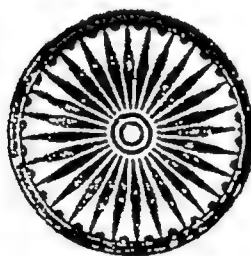
अभिनन्दनीय उपक्रम

● श्री रणजीतसिंह कूमट, अजमेर

पदयात्रा मे सम्मिलित होने का जो मुझे सौभाग्य मिला और उसकी अभूतपूर्व जो सफलता देखी, उससे मैं बहुत उत्साहित हुआ । श्रेष्ठिवर्ग का उच्च अट्टालिका से निकल कर ग्रामीण जन से सम्पर्क करने हेतु दुरूह पदयात्रा में सम्मिलित होने का उपक्रम अभिनन्दनीय है । दूसरी ओर ग्रामीण जनता से अनौपचारिक रूप में

मिल कर बातचीत करने का जो सौभाग्य मिला, वह भी एक नया अनुभव था। पद पर रहते हुए क्षेत्र मे दौरा करने से जनता से खुली बात नही हो सकती परन्तु अनजान बन कर अनौपचारिक रूप उनके मन की बात ज्ञात कर सकने की सुविधा पदयात्रा मे ही मिल सकती है। मैं समझता हू ऐसे प्रयास और होने चाहिए। सगठन कार्यकर्ताओं ने इसका नियोजन बहुत ही अच्छे रूप मे किया और वह भी सफलता का मूल कारण रहा। ०

❀❀❀

अशांति से शांति की ओर

● श्री मगनलाल मेहता, रतलाम

संघ द्वारा आयोजित यह पदयात्रा, धर्मजागरण ही नहीं, स्वजागरण यात्रा भी कही जा सकती है। यात्रा के दौरान पैदल घूमना, खुली हवा मे डेरो में रहना, एक समय सात्विक आहार करना और दिन भर यह चिन्तन चलता था कि मैं कौन हूं, मुझे क्या होना चाहिए और मैं क्या हो रहा हूं ? निश्चय ही हमारे जीवन में ये आयोजन आत्मिक जागृति और स्वचिन्तन का मार्ग प्रशस्त बनाते हैं।

यात्रीदल को चलता-फिरता आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र ही कहना अधिक उपयुक्त होगा। सहयात्री और अन्य जिन-जिन व्यक्तियो के ससर्ग मे हम आये, उनसे कुछ न कुछ सीखने को ही मिला। जीवन की सरलता, रहन-सहन की सादगी, ग्रामीण जीवन, सेवा की भावना, ऊंच-नीच का भेद नही और व्यवहार मे निश्चल प्रेम, जिसकी चाह सबको रहती है, जो हमारा धर्म हमे सिखाता है, इन्हें प्राप्त करने के प्रसंग ऐसे ही अवसरो पर आ सकते है। मैं चाहता हूं कि जीवन इस त्रस्तता से निकल कर, हमेशा उसी धारा में बहे-शांत, सरल, स्वचिन्तनयुक्त। ०

अभिनव प्रयोग

● श्रीमती शांतिदेवी मिन्नी, कलकत्ता

अपूर्व आनन्द व उल्लास और उत्साह भरे वातावरण मे हमने महावीर स्वामी की जयनाद घोषित करते हुए अपनी पदयात्रा आरम्भ की। यह यात्रा सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की आराधना हेतु सयमित तथा नियमित जीवन विताने का अभिनव प्रयोग था।

यात्रा मे हमने यह पाया कि धर्मपाल लोगो मे धर्म के प्रति विश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है। वहा के छोटे-छोटे वालको को धर्म के इतने-इतने श्लोक याद थे कि यह देख कर व सुनकर आश्चर्य होता है।

रात्रि मे जव गाव के धर्मपाल बन्धुओ के साथ धार्मिक चर्चा मे लीन हो जाते थे तो धर्मपाल बन्धु धार्मिक भावना से विह्वल होकर हृदय से प्रभु-वन्दन मे रत रहते थे। कई गावो मे तो यह गोष्ठी रात्रि के एक-एक वजे तक चलती।

हमारी यह सात दिवसीय यात्रा अत्यन्त सफल रही। हमने इस यात्रा के दौरान बहुत धर्म-लाभ प्राप्त किया। ०
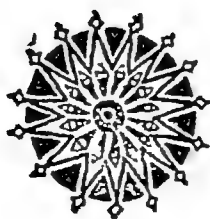
उत्साह, उमंग और सहयोग का वातावरण

● स्व. श्री हीरालाल नांदेचा खाचरौद

रैली का खाचरौद से उत्साहपूर्वक प्रस्थान हुआ। जो व्यक्ति एकत्रित हुए थे, उनमें उत्साह व उमग थी। पहला पडाव ग्राम चौकी से शुरू हुआ। नावटिया, उमरना होते हुए नागदा पहुचे। वहा पर बिडला मिल व श्रावक सघ की तरफ से अच्छा स्वागत हुआ। वहा से मक्षी के लिये प्रस्थान किया। जगह जगह धर्मपाल भाइयों मे उत्साह था व स्थानीय लोगो का सहयोग था। भोजन की व्यवस्था मामाजी पिरोदिया जी व चादमल जी पामेचा ब्यावर वाले के जिम्मे थी, जो व्यवस्थित थी। सभा का कार्यक्रम मुकाम-मुकाम पर व्यवस्थित था। टाइम की बराबर पाबन्दी होती थी। जगह-जगह धर्मक्रिया भी समय-समय पर होती थी। सब लोग उमग के साथ् कूच करते थे। स्वास्थ्य सभी का अच्छा रहा। बेरछा मुकाम पर कतिपय व्यक्ति और सम्मिलित हो गये थे। जयपुर से मूथा जी, चोरडिया जी आदि पधार गये थे। उदयपुर से पानगडिया जी भी पधारे थे। बाइयो में भी काफी उत्साह था। उन्होने पद-यात्रा मे बराबर साथ दिया। कहने का मतलब यह कि हमारा कार्य-क्रम उत्साह व सहयोग से बढता ही गया। श्री मानवमुनि जी हमारे साथ थे और श्री समीरमल जी काठेड वक्त-वक्त पर हमे सभाल लिया करते थे। श्रीमान् गोकुलचन्द जी सूर्या की तरफ से हमे काफी सह-योग मिलता रहा उन्होने हमारे उत्साह मे वृद्धि की। सब लोगों की यही भावना रही कि ऐसे कार्यक्रम भविष्य मे और बने ताकि हम उत्साह से और भी सेवा कर सकें। ★

एक यात्रा : कृत्रिम जीवन से वास्तविक जीवन की ओर

● श्रीमती रोशनीदेवी खाबिया, रतलाम

मेरा जीवन आज जिस आनन्द, प्रेम और शून्य की विराट नाव मे खो गया है, उसके प्रेरणा स्रोत आचार्य भगवान् श्री नानालाल जी म. सा. ही हैं ।

उन्ही आचार्य प्रवर के मार्ग पर हम २ अप्रेल से पदयात्रा पर निकल गये ।

मेरी प्रतिदिन विश्राम करने की नियमित आदत बनी हुई है । इसीलिये मेरा मन अन्दर ही अन्दर सामायिक से बचने के लिए तर्क खोज रहा था कि मेरे अन्तर्द्वन्द्व को देख कर अध्यक्ष महोदय श्री चोरडिया साहब ने पूछा—

"क्या आप सामायिक नही लेंगी ?"

और मैं उनके विराट व्यक्तित्व के सामने इन्कार न कर सकी । मैंने सामायिक ले ली और सामायिक मे इतना अधिक आनन्द आया कि प्रतिदिन दो सामायिक भी करती तो भी मन नही भरता ।

इस यात्रा मे एक कमी लगी तो आचार्यश्री की—यदि आचार्यश्री का सानिध्य होता तो पूरा समवसरण का आनन्द आता ।

धर्मपाल भाई-बहनो का भोलापन और श्रद्धा शब्दो मे व्यक्त नही किये जा सकते और उनके भावपूर्ण भजन आज भी कानो

गूंज रहे है । वालको का उत्साह देख कर लगता है कि स्वर्ग का आनन्द यही उतर आया है ।

श्रीमान् गणपतराज जी सा. वोहरा का व्यक्तित्व नन्दवावा जैसा मौन और गम्भीर है तो यशोदा देवी का यशोदा मैया जैसा आत्मीय ।

सक्षेप मे यदि लिखू तो इस यात्रा से शरीर और मन की क्रियाए सतुलित होने लगी है । चित्त भगवत् आनन्द से भर गया । जीवन नित्य प्रति अज्ञात तरगो से गतिमान हो रहा है ।
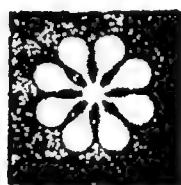
आनंद अनुभव किया जा सकता है, व्यक्त नहीं

● स्व. श्री गेदालाल खाबिया

दो अप्रेल १९७५ से आठ अप्रेल १९७५ तक की पदयात्रा मे जाने का जो अवसर मिला, उसके लिए आयोजको को बहुत–बहुत धन्यवाद । यात्रा मे इतना अधिक आनन्द आया था कि मैंने सोचा खूब जोरदार सस्मरण लिख कर भेजूगा ।

जब कागज पेन लेकर लिखने बैठा तो यात्रा के दृष्य टेली–विजन की तरह मेरी आखो के सामने घूमने लगे ।

एक ओर धर्मपाल भाई-बहनो की श्रद्धा और भक्ति जहा भाव-विभोर करती है तो दूसरी ओर शिविर मे आए भाई-बहनो के अनूठे-अनूठे व्यक्तित्व जीवन के विविध रूपो की झाकिया प्रस्तुत करते हैं।

सुबह साढे चार बजे से रात बारह बजे तक व्यस्त कार्य-क्रम चलते रहते और इस बीच शायद ही कोई ऐसी घटना घटी हो जो कि लिखने के काबिल न हो। मैं तो बस यही सोचता हू कि जो आनन्द, जो उत्साह मुझे मिला वह शब्दो मे नही लिखा जा सकता, केवल महसूस किया जा सकता है और वह आनन्द मैंने महसूस किया है। जो व्यक्ति इस आनन्द मे वचित रहे हैं, उन्हे मेरा सुझाव है कि जब भी यह अवसर आए, इसका लाभ अवश्य उठावें। ०

धार्मिक जागरूकता

● श्री कन्हैयालाल नाहर, ब्यावर

हमने धर्मपालो के घर पर देखा कि वे पानी को छान कर पीते है। यही नही, मटकियो से ऊपर कपडा तथा परिन्डो के ऊपर चन्दोवा भी रखते हैं ताकि कोई जीव पानी मे पड कर न मरे। कितनी जागृति आई है, इन लोगो मे। वहा के हर बच्चे के मुह से जय जिनेन्द्र शब्द का उच्चारण बहुत सुन्दर लगता है। हमारे बच्चो मे ऐसे सस्कार अभी नजर नही आते। धर्मपाल बहिन–भाई व बच्चो के भजन व कठ–कला से मैं बहुत प्रभावित हुआ। उनके भजन सुन कर मेरा मन हर्ष-विभोर हो उठता था। जी चाहता कि वे गाते ही रहे। मेरी इच्छा है कि ऐसा आयोजन फिर हो और हम उनमे भाग लेवे।

अटूट आस्था

● श्री मोहनलाल श्रीश्रीमाल, ब्यावर

जब हम धर्मपाल क्षेत्रो मे पहुचे तो सर्वप्रथम वहा हर मकान के बाहर व भीतर जय गुरु नाना व भगवान् महावीर की जय के साईन बोर्ड देखने को मिले ।

धर्मपाल परिवार मे धार्मिक सस्कार इतने गहरे है कि जब वे आपको देख लेगे तो सबसे पहले जय जिनेन्द्र शब्द का उच्चारण करके आपको सम्बोधित करेगे । मगलाचरण के रूप मे वे धार्मिक श्लोक व भक्तामर के श्लोक इतने शुद्ध बोलते हैं कि हम लोग सुनने वाले, अपने आप मे कितनी कमी है, महसूस करते है ।

अन्त मे हम लोगो मे आपस में इतना स्नेह हो गया कि जब हमारी पदयात्रा का ५ वा दिन आया तो मन मे यही भावना आई कि यह यात्रा कल समाप्त हो जायेगी, सभी व्यक्तियों के चेहरे पर उदासी सी आ गई । यहा हम लोगो को यात्रा मे इतने आनन्द का अनुभव हुआ कि उसे व्यक्त करने की मेरी सामर्थ्य नही है ।
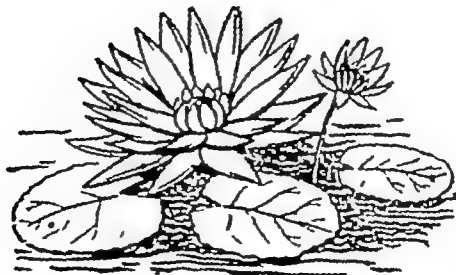
मन म्हारो हर्षायो रे

● श्री हनुमानमल बोथरा, रामपुर हाट

पैदल चल कर सात दिनो तक मन म्हारो हर्षायो रे,
धर्मपाला रे घर घर जाकर, मन म्हारो आनंद पायो रे।
नाम गुमाना, करे नही अभिमाना,
संघपति पद पायो रे ।। पैदल ।।
धर्मपाल की मात जसोदा, जीवन इनका सीधा सादा,
गनपत जी तो 'बा' बन पायो रे ।। पैदल ।।
सरदार बने काकरिया सरदार जी, मधुर भाषी है मंत्री भवर जी,
"मानव मुनि" मन भायो रे ।। पैदल ।।
पद्यश्री बोरदिया ने धन्य है, कर सेवा मुस्काये मन है,
धन्य संघ इन्हें पायो रे ।। पैदल ।।
मांस मदिरा के बने ये त्यागी, धर्मपाल बने नाना अनुरागी,
जीवन शुद्ध बनायो रे ।। पैदल ।।
यह पदयात्रा सफल बनी है, एकता की इक चादर तनी है,
नाना गुरु ने यह बाग लगायो रे ।। पैदल ।।
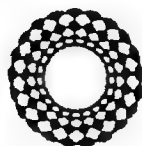
मेरे अनुभव

● श्रीमती धुरीदेवी पिरोदिया, रतलाम

चखे सो याद रखे

इस वैज्ञानिक युग में यात्रा करने के लिये हवाई जहाज, मोटर, रेल आदि साधन उपलब्ध है । इस साधन–सम्पन्न काल मे यह पदयात्रा कैसी ? सामान्यत. यह प्रश्न उठता है तो मैं कहूगी कि क्या दिलो को जोडने का काम भौतिक साधनो से संभव हो सकता है ? नही, कदापि नही । इस धर्मजागरण पदयात्रा मे अमीरो व गरीबो के दिल से दिल मिले । अमीरो ने एक दूसरे भाई के सुख–दु.ख सुने, समझे व उन्हें दूर करने के उपाय ढ ढे । उन्हे ज्ञान का प्रकाश दिया ।

अज्ञान व सत्‌गुरु के अभाव मे सरल श्रमजीवी लोग सही मार्ग भूल गये, वर्षों से वे अज्ञानान्धकार मे भटक रहे थे । जिन्हें हम लोग अछूत कहते हैं, उन लोगो को इस पदयात्रा से नव–प्रकाश मिला । आज वे लोग हजारों की तादाद मे मास–मदिरा छोड कर पवित्र जीवन बिता रहे है । धर्म के प्रति इन भाई-वहिनो की अटल श्रद्धा और विश्वास है, जो देखते ही बनता है ।

ग्रामीण सरल हृदय धर्मपाल भाइयों से मिलने का आनन्द तो जिन्होने लिया है वही उसे जान सकते हैं । आम को चखने का जो स्वाद है वह तो वही जान सकता है, जिसने आम खाया है । वाणी के द्वारा उसका वर्णन करना मुश्किल है । मेरी जड लेखनी उस आनन्द को व्यक्त करने मे असमर्थ है । किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

"खाये सो मजा पाये, चखे सो याद रखे ।"

मानव का मानव से मुक्त मिलन

यह यात्रा इतिहास के पन्नो पर अमर रहेगी । गरीबों की झोपडियो मे जाने के लिये धनपति पैदल चले हो, अछूतो के घरो मे जाकर उनके सुख–दु ख की बात जानने के लिये यात्रा निकाली हो, ऐसा पढने मे व सुनने मे नही आया जो इस बार सभव हुआ इस लिये हमारी यह पदयात्रा अनुपम व बेजोड है । इस यात्रा मे मानव का मानव से मुक्त मिलन हुआ । इससे भगवान् महावीर का दिव्य-सदेश घर-घर, गाव-गाव व झोपडियो मे फैला । ★

तीर्थयात्रा की सुखानुभूति

● श्री नेमीचन्द खींवसरा, ब्यावर

हमेशा अत्यधिक कार्यव्यस्तता से होने वाली चिन्ताए आठ दिन की इस पदयात्रा मे प्रथम दिवस से ही समाप्त हो गई । सवेरे तथा शाम का प्रतिक्रमण व धार्मिक ज्ञान–गोष्ठियो तथा दोपहर मे दो घन्टे का सामायिकपूर्वक सामूहिक स्वाध्याय व अनेक सद्गुणो से युक्त व्यक्तियो के साथ आठ दिन इस तरह व्यतीत हो गये, जैसे दो घटे ही व्यतीत हुए हो ।

इस यात्रा से वास्तविक तीर्थयात्रा की सुखानुभूति हुई । शारीरिक व मानसिक दृष्टि से भी काफी हल्कापन अनुभव हुआ । रात्रि को थके हुए होने से सयमित व नियमित भोजन से तथा चिन्ता रहित जीवन होने से सोते ही कुछ मिनटो मे ही अत्यन्त सुखद निद्रा आ जाती थी । इन आठ दिनो मे पीछे मेरे कारखाने मे उत्पादन पूर्ण रहा और न कोई समस्या आई । ०

यात्रा : जिसने मुझे अनुशासन का पाठ पढ़ाया

● श्री वीरेन्द्र कोठारी, उज्जैन

पदयात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व मैं यह सोच रहा था कि क्या ये उद्योगपति एव बड़े–बडे लोग कभी पैदल भी चल सकेंगे ? लेकिन २ अप्रेल को जब मैंने खाचरोद से पदयात्रा का शुभारंभ देखा तो सोचने लगा कि कही मेरी ये निगाहे धोखा तो नही दे रही ? पर मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि बडी–बड़ी मिलों के मालिक, बडे-बडे आलीशान वातानुकूलित भवनो मे रहने वाले संघ-प्रमुख, कार्यकर्तागण, गगनभेदी नारो का उच्चारण करते हुए पैदल चल रहे थे। पदयात्रा से सम्बन्धित सूचनाएं एवं नियमावली पढी तब तो यह अहसास होता था कि यह सूचनाएं एव नियमावली तो केवलमात्र कागजी है, लेकिन पदयात्रा के दौरान मेरी जो पूर्व धारणा बनी थी, उसके ठीक विपरीत पाया ।

पदयात्रा के नागदा प्रवेश के समय बिरला ग्रामवासियों द्वारा जो अभिनन्दन किया जा रहा था, वह कार्यक्रम लिलोतरी (बगीचे) के स्थान पर था । हम लगभग सभी लोग उस स्थान पर जाकर बैठ गये । जब कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ एव अभिनदनकर्ताओं द्वारा सघ अध्यक्ष श्री चोरडिया जी का अभिनदन किया जा रहा था तो वे कार्यक्रम स्थल पर नही दिखे । यह देख सभी श्री चोरडिया जी को ढूढने लगे । वे दूर सीढियो पर बैठे थे, जहा जाकर अभिनन्दन–कर्ताओ ने उनका अभिनन्दन किया लेकिन मालाए फूलो की होने से उन्होने नही पहनी ।

एक बात और उल्लेखनीय है कि चाहे कभी मुझे कोई

बोलने को न भी कहे, तब भी मैं स्वय बोलने खडा हो जाया करता हू। परन्तु पदयात्रा के दौरान कई स्थानो पर धर्मचर्चा, आत्मोत्थान पर भाषण आदि होते रहे, परन्तु उस समय के वातावरण ने मुझे अनुशासन मे रहने को प्रेरित किया। मेरे जीवन का यह पहला मौका था, जब मैं अपने आपको वश मे रख, अनुशासन मे रह, दूसरो से सुन कर कुछ सीख सका।

धर्मपाल-पितामह श्री सेठ गणपतराज जी बोहरा, श्रीमती यशीदादेवी बोहरा, श्री सरदारमल जी काकरिया, श्री भवरलाल जी कोठारी, श्रीमती फूलकुवर काकरिया, श्री मानवमुनि जी आदि ने मुझे जो स्नेह दिया एव कार्य करने की प्रणाली समझाई, वह सदैव ही मेरे भविष्य-विकास मे सहायक होगी।

इन सघ-समर्पित जनो के जीवन से धर्मपाल भी प्रभावित होकर विकास पथ पर आगे बढ रहे हैं। ०
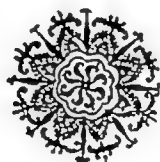
जंगम विद्यापीठ

● श्री मानवमुनि

भगवान् महावीर निर्वाण-शताब्दी वर्ष मे श्री अ भा साधु-मार्गी जैन सघ के तत्त्वावधान मे धर्मपाल क्षेत्र मे पदयात्रा प्रारम्भ हुई। यह क्षेत्र आचार्य श्री नानालाल जी म सा की साधना, तप, आध्यात्मिक शक्ति एव धर्मपाल प्रवृत्ति की तीर्थभूमि है, जो भविष्य मे भारत का एक शोध-सस्थान होगी, ऐसी आशा है।

इस पदयात्रा का सबको महत्वपूर्ण लाभ मिला। सहजीवन, सहचितन, सामूहिक प्रार्थना, वन्दना सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय के साथ जीवन सयममय हो, यह सबने अनुभव किया।

महिलाओ ने एक विशेष महत्वपूर्ण कार्य महिला-सम्पर्क का किया। पुरुषवर्ग मे यह एक अभाव सा रहा कि ये धर्मपाल परिवार के लोगो से व्यक्तिगत चर्चा कम कर सके।

मुझे तो बडा आनन्द इस बात से रहा कि सबको माता-बहिनो का व भाइयो का आत्मीय स्नेह मिला। यह सबसे बड़ी उपलब्धि हुई और इससे शक्ति भी मिली।

श्रीमान् डा० नदलाल जी बोरदिया की प्रत्येक पडाव पर जो सेवा हुई, वह चिरस्मरणीय रहेगी। मैं इस यात्रा को एक प्रकार की जीवन-साधना मानता हू। इसे जगम विद्यापीठ भी कह सकते है।

धर्म के प्रति गहरी निष्ठा

● श्रीमती सरलादेवी कांकरिया, कलकत्ता

मानव-जीवन मे यात्रा का बहुत अधिक महत्व है। मैंने अपने जीवन मे ऐसी बहुत सी यात्राए की है, किन्तु पदयात्रा का यह पहला मौका था। पदयात्रा के मधुर अनुभव मेरे हृदय–पटल पर अकित है।

पदयात्रा का वह मधुर संस्मरण जो धर्म के प्रति गहरी निष्ठा व आस्था का द्योतक बना, वह मैं कभी नही भूल सकती। पदयात्रा के आगमन के दौरान भोले-भाले ग्रामवासियो का मधुर व निश्छल प्यार आज भी मेरे मन को उनकी ओर आकृष्ट करता है तथा आते वक्त उन्होने जो भाव-भीनी विदाई देकर हमे विदा किया, वह क्षण मेरे जीवन का बहुमूल्य क्षण बन गया है।

समय बडी तेजी से बीत ही गया और आखिर वह दिन आ ही पहुचा जब हमे कलकत्ता के लिए प्रस्थान करना पडा।

मैं यही कामना करती हू कि मुझे अधिक से अधिक ऐसी यात्राओ मे जाने का सुअवसर प्राप्त हो। ○
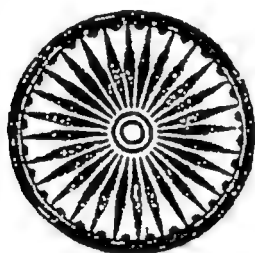
जीवन निर्माणकारी कार्यक्रम

● श्री तख्तसिंह पानगढ़िया, उदयपुर

सघ द्वारा आयोजित जीवन-साधना एव धर्मजागरण पदयात्रा कार्यक्रम मे अल्प समय के लिए ही सम्मिलित होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। काश, मैं पूरे कार्यक्रम मे भाग लेकर लाभ उठा पाता। कुछ ही समय के कार्यक्रम ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया कि उस आनन्द की अनुभूति को मैं अपने शब्दो मे व्यक्त करने मे असमर्थ हू। जीवन-निर्माण के लिए ऐसे कार्यक्रम समाज के लिए बहुत उपयोगी है। ○

मंगलमयी प्रेरणापूर्ण यात्रा

● श्री हस्तीमल मूणत, रतलाम

इस मगलमयी पदयात्रा से हम साथी भाइयो को तथा उन धर्मपाल भाइयों को आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सभी दृष्टियो से लाभ तथा आनन्द की प्राप्ति हुई। पदयात्री भाइयो के धर्माराधन तथा श्रवण-कीर्तन से उन धर्मपाल भाइयो मे धर्म के प्रति विशेष जागृति आई। साधनहीन अवस्था मे भी सतोष, प्रेम, आतिथ्य-सत्कार और धर्म के प्रति उत्साह को देख कर हमे भी हर अवस्था मे यानि सुख-दुख सभी अवस्थाओ मे धर्म के प्रति अटल श्रद्धा रखने की प्रेरणा मिली।

सामाजिक दृष्टि से उन भाइयों मे मास-मदिरा आदि कुव्यसनो को छोडने से सामाजिक प्रेम-भाव बढा तथा उनका घरेलू जीवन भी सुखी हुआ तथा उनमें बच्चो को शिक्षा दिलाने तथा सामाजिक बुराइयो को छोडने की भावना भी जागृत हुई, जिससे उनका जीवन और अधिक उन्नत हुआ।

राष्ट्रीय दृष्टि से जातीयता, प्रान्तीयता तथा ऊच–नीच और छुआ-छूत की भावना और सकीर्णता कम हुई।

इस मगलमय यात्रा रूपी सुन्दर बगीचे मे अनेक गुणो से युक्त सुन्दर फूलो से सुगन्ध रूपी सत्सग प्राप्त हुआ। किसी मे दान-रूपी फूल की सुगन्ध महकती थी, तो किसी मे ज्ञान-रूपी गगा बह रही थी। किसी मे सेवा-रूपी फूल की सुगन्ध आ रही थी तो किसी मे सबको आनन्द–विभोर कर प्रेम-सूत्र मे बाधने की कला दिखाई दी। इस प्रकार अनेक गुणो से युक्त इस पदयात्रा रूपी गुण क्यारी से मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ, वह अवर्णनीय है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हू, मेरी आत्मा मे भी इन सद्गुणो की वृद्धि हो। ०

धर्म के प्रति रुचि जागी

● श्री चांदमल चोरड़िया, ब्यावर

पदयात्रा में पैदल चलने का बहुत आनन्द आता था, हम सभी भजन बोलते हुए चलते थे। जिस-जिस गाव मे जाते, वहा के लोगो का प्रेम बहुत अच्छा था। नन्हे-नन्हे बच्चो मे जैन-धर्म के प्रति जागरूकता देखी गई। बच्चो मे नवकार मत्र पर अटल श्रद्धा देखने को मिली। उनके आचार्य श्री नानालाल जी म. सा की जय, श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की जय के नारो मे अपूर्व जोश था।

इस यात्रा मे सबसे ज्यादा आनन्द आपसी प्रेम व स्नेह भाव मे रहा। इस पदयात्रा से मेरी धर्म के प्रति रुचि जागी। ०
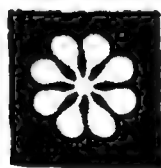
आत्म विकास की प्रेरणा

● श्री हंसराज सुखलेचा

श्रद्धा योग्य व्यक्ति के आदेश से पदयात्रा मे जाने का प्रसग बना। सयमित, नियमित, मर्यादित दिनचर्या मे ६ दिन कैसे व्यतीत हुए मालूम ही नही पडा। सासारिक झझटो से दूर प्रकृति की गोद मे गांवो के निकट सरलता के जीते जागते प्रतीक प्रेरणास्पद व्यक्तियो के बीच बीती घडिया आत्मविकास के लिए प्रेरणा देती रहेंगी।

दोपहर २ बजे से ४ बजे स्वाध्याय का कार्यक्रम, विद्वानो के सहयोग से कितना प्रेरणादायी, आनन्ददायी बन गया । लेखनी से लिखना सभव नही है। इसकी सिर्फ अनुभूति ही की जा सकती है। आखिरी दिन पदयात्रा के दौरान हुई गल्तियो के लिए प्रायश्चित्त स्वरूप हुई आलोचना व दण्ड की माग का दृश्य देखने योग्य था ।

पदयात्रा के दौरान उपवास १२, एकासना २१, सामायिक १४४२ का भी बड़ा ठाठ रहा । मेरा यह प्रथम प्रवास मुझे सदैव स्मरण रहेगा । ०
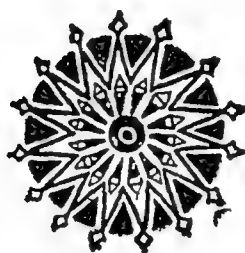
साधना और सेवा का समन्वय

डा० प्रेमसुमन जैन

बहुत दिनों से इच्छा थी कि अ भा साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर द्वारा प्रति वर्ष आयोजित पदयात्रा का मैं भी पदयात्री बनू । सवारियो पर पदयात्रा करते करते हम आकाश गामी हो गये हैं। धरती से कट गये हैं । धरती से कटना यथार्थ से कटना है । कल्पनाओं और आदर्शों मे जीना है । अत· पदयात्रा मानव को सही अर्थ मे मानव बना रहने देती है । वह धरातल प्रदान करती है, जहा मानव मे अनेक गुण विकसित होने की सम्भावनाए हैं ।

इस सत्र मे आयोजित जावरा-पदयात्रा मे जब मैं सम्मिलित हुआ तो मुझे लगा कि मैं अपने गाव वालो के बीच लौट आया हू ।

और उस धरती पर चल रहा हू जहा मै जन्मा तथा जहा मेरा बचपन बीता है। गाव के बच्चे, जवान, बूढे सभी पदयात्रियो का जिस स्नेह और आदर से स्वागत करते थे, उससे लगा कि अभी भी भारतीय सस्कृति गावो मे विकृत नही हुई है। सभी पदयात्री अपनी साधना और ध्यान से अवकाश पाते ही गाव वालो के साथ घुलमिल जाते थे। उनके साथ मनोरजन के कार्यक्रमो मे सम्मिलित होते थे।

पदयात्रा मे डा० बोरदिया केवल धार्मिक साधना ही नहीं करते थे अपितु गाव मे पहुचते ही अपना चिकित्सालय खोल देते थे। सारा गाव उनके पास उमड पडता था। तब पता चलता था कि गावो मे चिकित्सा सुविधा कितनी दी गयी है और कितनी आवश्यक है। यह नि शुल्क चिकित्सा सेवा का कार्यक्रम पदयात्रा का विशिष्ट आकर्षण था। साधना और सेवा के समन्वय का यह ज्वलन्त उदाहरण था।

सामूहिक गमन, सामूहिक साधना, सामूहिक भोजन एवं सामूहिक चर्चा का जो दृश्य मैंने इस पदयात्रा मे देखा, वह बहुत प्रेरणादायक था। यहा के जीवन को देखकर लगता था कि इस पदयात्रा मे कोई बडा, कोई छोटा नही है। सबके लिए समान सुविधा एव समान नियम। पदयात्री बहिनें साधना, शास्त्रचर्चा, सेवा आदि कार्यों मे जिस उत्साह से भाग लेती थी, उससे लगा कि नारियो के समान अधिकार तो यहा सार्थक हुए हैं।

मुझे स्वाध्याय पर पदयात्रियो से चर्चा करने का अवसर मिला। विचारो का आदान प्रदान हुआ। ऐसा अनुभव हुआ कि पदयात्री न केवल साधन के व्यवहार पक्ष से परिचित थे, अपितु ये अच्छे साधक भी थे। वे इतनी दूर स्वय अपना अध्ययन करने ही तो आये थे कि हम क्या हैं और हमारा गन्तव्य क्या है? पदयात्रा धर्मपालो के उत्थान मे सहायक हुई। ०

पदयात्रा मोक्ष की पगडंडी

श्री मदन जैन, भदेसर

यह पदयात्रा मोक्ष नगर में प्रवेश करने के लिए एक पगडंडी रूप है। प्रकृति की सुरम्य शस्य श्यामला गोदी मे घर के झंझटों से, चिन्ताओ से, मुक्त अन्तर्मुखी होने का व स्वआत्मरमण होने का अनूठा स्थान है। प्रखर पडितो के सान्निध्य से जो ज्ञानरस प्राप्त हुआ उसका वर्णन करना लेखनी की क्षमता मे नही है। गूंगे का गुड ही कह दीजिए।

मैं अपने आपको माइक पर खडा करने मे झिझकता था, मगर पर्दे में रहने वाली मेरी वृद्धा माताओं ने माइक पर बोल कर जो कमाल किया तो मुझ मे भी नया जोश पैदा हुआ कि तू पुरुष होकर भी अपने ही आत्मीय जनों के बीच मे बोलने से कतराता है। अरे, एक अबोध बच्चा भी अपनी तुतली भाषा मे अपने भाव व्यक्त कर सकता है तो ये सब तेरे बुजुर्ग क्या तेरी अटपटी भाषा को सुन कर भी क्षमा नही करेंगे ? अवश्य करेंगे।

पदयात्रा से मेरा आत्म विकास हुआ और धर्मपालों के असीम विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। ०

स्तुत्य प्रयास

● पं० श्री शोभाचन्द जी जैन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर द्वारा गत तीन वर्षो से धर्म जागरण पदयात्रा का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रवृति से परिचित था, पर इसका लाभ लेने का सयोग इस वार ही प्राप्त हुआ।

सचमुच ही पदयात्रा का दृश्य अतीव अह्लाददायक था। सभी यात्री आत्मीयता अनुभव कर रहे थे। दो दिन पदयात्रियो के साथ रहने का अवसर मिला। श्री मानवमुनि जी की अन्त. प्रेरणा, मूथाजी का शास्त्र स्वाध्याय, सघ मन्त्री कोठारी जी का ध्यान के प्रति आग्रह व अनुशासन-प्रियता यह सब कार्यक्रम की रोचकता व आनन्द को द्विगुणित करने वाले पक्ष थे। भूतपूर्व अध्यक्ष शान्तमना श्री गुमानमल जी की कर्मठता व सरलता तो वर्तमान अध्यक्ष श्री चौपडा जी का निश्छलता व धर्मप्रेम से समस्त पदयात्री अभिभूत थे।

एक बात और, जिसे भूल नही सकता। डा० बोरदिया व उनकी धर्मपत्नि का ग्रामीणो की चिकित्सा का सेवा कार्य सबसे अधिक सराहनीय लगा-इसके पीछे उन्हे न भूख सताती थी, न प्यास। सघ ने इस पदयात्रा मे ग्रामीणो को सप्तव्यसन छोडने की प्रेरणा दी। स्थान स्थान पर रात्रि व दिन मे ग्रामीणो व युवको के लाभार्थ सभा के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विशेष बात यह भी हुई कि सघ ने पदयात्रा के दौरान प्रतिदिन विद्वानो को आमन्त्रित करने का कार्यक्रम भी वनाया जो स्तुत्य लगा। इससे नवीन पीढी को भगवान महावीर के सिद्धान्तो को आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे समझ कर श्रद्धा को परिपुष्ट वनाने का सुयोग मिलेगा।

०

नई अनुभूति

● श्री कल्याणचन्द कांकरिया, कलकत्ता

पदयात्रा मेरे जीवन की एक नई यात्रा थी । यो भी घूमने का शौक रहता ही है । इस बार पदयात्रा का क्रम सुनकर मैं भी नये अनुभव प्राप्त करने के लिए तैयार हो गया । वहा का प्यार भरा वातावरण मुझे बहुत ही पसन्द आया । सभी लोग प्रायः मेरे लिए नये थे परन्तु ऐसे घुलमिल गये थे कि सब अपने लगने लगे ।

गाव के मुक्त वातावरण मे नित्यक्रिया करने में एक अलौकिक आनन्द मिला । सबसे मजे की बात यह है कि मैंने जीवन मे पहले कभी भी सामायिक की क्रिया नही की थी, परन्तु वहा का सुन्दर तथा स्वच्छ वातावरण देखकर मन के अन्दर से अपने आप सामायिक करने की भावना प्रकट हुई तथा जहा तक बन सका, क्रिया भी की । विशेष क्या लिखू ? मुझे तो लिखते लिखते भी वहा का प्यार भरा वातावरण याद आ रहा है ।

मेरी तो यह हार्दिक इच्छा है कि ऐसी पदयात्रा हर साल हो । इससे हमे कुछ न कुछ सीखने को तो मिलता ही है । उसके साथ साथ आपस मे एक दूसरे के निकट आने का भी अच्छा साधन मिलता है तथा एक दूसरे से आपस मे विचारो का आदान प्रदान भी हो जाता है ।

सुखद-प्रसग

● श्रीमती गायत्री कांकरिया

कई सालो से पदयात्रा का प्रसग सुन रही थी, हृदय मे पदयात्री बनने की कामना भी तीव्रतर होती रही परन्तु किसी अन्त-राय कर्म के उदय से ऐसा सौभाग्य पहले न पा सकी । इस बार पदयात्रा मे सम्मिलित होकर एक अलौकिक अनुभव प्राप्त हुआ, जो जीवन का सर्वोत्तम, अविस्मरणीय सुखद प्रसग बन गया ।

आज भी स्मृति पर पदयात्रा-काल की छवि चित्रित होने से मन आत्म-विभोर हो उठता है ।

पदयात्री पारिवारिक जनो के साथ मिल कर प्रार्थना, सामा-यिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण तथा नित्यक्रिया करते हुए मन मे शान्ति और हृदय मे धर्म जागृति प्राप्त हुई । किसी भी प्रकरण का तात्त्विक अर्थ सुन कर, देखकर, समझ कर श्रद्धा के साथ वैसा आचरण करना यही सीख सकी ।

अनेक विशिष्ट विभूतियो के प्रवचनो ने जीवन मे ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित कर दी । इस ज्योति को हृदय मे कायम रख सकू तभी अपने जीवन को सार्थक समझू गी ।

सचमुच हमारी यह धार्मिक टोली आध्यात्मिक उन्नति को बढावा देती हुई धर्म गगा के नाम से अलकृत हो गई और मन को पावन कर गई ।

शहरी वातावरण से दूर गाव की प्राकृतिक छटा का दृश्य मन को स्निग्ध कर रहा है । गाव वालो का निष्कपट प्यार मन को ऐसा तरगित कर गया जिसकी अनुभूति ही सभव है, अभिव्यक्ति नही ।

जिस प्रकार धर्मपाल भाई–बहिन व अन्य ग्रामवासी अपने उत्थान के लिए आखे बिछाए बैठे है, वही जाकर देखा और जाना जा सकता है ।

हमारे साथ चल रहे चल चिकित्सालय के कार्य की तो जितनी भी सराहना की जाय कम होगी । गावो मे चिकित्सा की आवश्यकता और समाज द्वारा उसके प्रति बरती जा रही उपेक्षा का हृदय–विदारक दृश्य आज भी मन को झकझोर रहा है । आखे पथरा सी जाती है ।

पदयात्रा अनुभव की वस्तु है, जिसे पाने के लिये वहा चल कर जाना होगा । धर्म-प्रेमी समाज सेवीयो से मेरा हार्दिक अनुरोध है कि ऐसे प्रसगो को भरपूर बढावा दे, जिससे हमारा जीवन अन्त-मुखी होकर, ज्ञान की ज्योति एवं स्वाध्याय-साधना क्रम से आत्मीयता के सूत्र मे बध सके ।

हम 'समता' तथा 'जीओ और जीने दो' के पाठ का सिर्फ नारा ही न लगा कर उसे अंगीकार कर जीवन का उत्थान करने मे सफल हो सके, यह कामना है । ०

प्रेरणास्त्रोत यात्रा

● श्री मन्नालाल मेहता

हमारे गाव धुवड़का मे जब धर्मजागरण एवं जीवन साधना पदयात्री दल पहुचा तो सारा गाव उनके स्वागत को उमड पडा ।

वहा आयोजित सभा मे हरिजन व धर्मपाल बन्धु भी सम्मिलित हुए। सभा मे सघ मन्त्री श्री भवरलाल कोठारी ने बहुत ही आकर्षक भाषण दिया। सघ अध्यक्ष श्री चौपडा जी एव यात्रा प्रमुख श्री चोरडिया जी के सारगर्भित भाषण हुए।

दोपहर के स्वाध्याय मे श्री कोठारी जी का समभाव पर प्रवचन और श्री मोहनलाल जी मूथा की अमृतवाणी से हमे बडा आनन्द हुआ। हम लोग भी उत्साहपूर्वक पदयात्रा मे सम्मिलित हो गए। थमनार मे श्री कोठारी जी के सुन्दर गायन से सभी श्रोताओ का मन प्रफुल्लित हो गया।

मार्ग के गावो मे बहुत से अजैन भाइयो के व्यसन छुडवाए। जगह-जगह श्रीमती फलकवर काकरिया ने वस्त्र-वितरण करके धर्म-लाभ प्राप्त किया।

स्वाध्याय क्रम मे श्री भानावत जी व डा० श्री छगनलाल जी शास्त्री के प्रवचन बहुत अच्छे लगे। श्रीमती गायत्रीदेवी काकरिया के समझाने का तरीका बहुत प्रभावी था। रिंगनोद मे बडे रावले सा. श्री जसवतसिह जी का सहयोग प्रशसनीय रहा।

यात्रा से मेरी समता, नम्रता, सरलता, सादगी, सेवा, त्याग और सयम के प्रति रूचि बढी तथा राग-द्वेष छोडकर सुचरित्रवान बनने की प्रेरणा मिली। ★

पदयात्रा

● स्व. पं. श्री माधवप्रसाद पराशर

पंच परमेष्ठी आशा मन पूरें ।
भजियां सूं हो जावें संकट दूरे ।।
प्रथम आचार्य श्री को वन्दन ।
प्रवचन सूं काटे भव बन्धन ।।
मालव प्रान्त में पूज्य श्री आया ।
करुणानिधि करुणा सं छाया ।।
मन में एक धारणा धारी ।
धर्मपाल प्रवृति प्रचारी ।।
लाखों मानव हिंसा तज दीनी ।
सत्संस्कारी प्रतिज्ञा लीनी ।।
संघ-एकता रो भाषण दीनो ।
आपस में प्रेम-भाव रंग भीनो ।।
आध्यात्मिक यात्रा अति सुखदाई ।
आनंद सूं रहज्यो सब भाई-भाई ।।
सामायिक साधना दिन दिन बढ़ावो ।
भूलचूक 'माधव' को माफ करावो ।।

भेंटवार्ता

धर्मपालों के मध्य

श्री विजयसिंह जी नाहर, भूतपूर्व उपमुख्यमत्री, पश्चिम बगाल एव सर्वश्री फलचन्द जी वया, सूरजमल जी बच्छावत, भवरलाल जी कोठारी आदि ने प्रथम पदयात्रा के चौकी गाव मे आए विभिन्न गावो के धर्मपालो से कुछ प्रश्न किए । इस साक्षात्कार से उभरने वाला धर्मपाल प्रवृति का यथार्थ चित्र ज्यो का त्यो आपकी सेवा मे प्रस्तुत है । —सम्पादक

सर्व प्रथम चौकी गाव के श्री गगाराम जी से वार्ता की तई—

श्री नाहर —सामायिक व्रत आपने धारण किया है । इससे आपको क्या लाभ हुआ ?

श्री गगाराम—जबसे मैंने सामायिक व्रत धारण किया है, मुझे आज तक बुखार नही आया । कभी रास्ते मे मेरे साथ धोखा-घडी नही हुई । सुबह ४ से ७ बजे तक सामायिक करता हू । चातुर्मास मे जूते नही पहनता ।

श्री नाहर —जूते क्यो नही पहनते ?

श्री गगाराम—जीव जतु मर जाते हैं । खुले पैरो से जीवो की बचत होती है, इसलिए ।

श्री नाहर —आपने रात्रि-भोजन का भी त्याग किया होगा ?

श्री गगाराम—नही, रात्रि-भोजन करता हू । मेरे को काफी घूमने का काम है ।

श्री नाहर —आप उपवास कितने दिन से कर रहे हैं ?

श्री गगाराम—७–८ वर्ष से ।

श्री नाहर —उपवास से पहले और बाद की स्थिति में आपको कोई अन्तर अनुभव हो रहा है ?

श्री गंगाराम—पहले शरीर मे बीमारी थी, अब कोई कष्ट नही। दीवाली पर तेला व अन्य उपवास, बन सकती है वह सेवा। जैसी रसोई सामने आई, पा लेता हूं।

श्री नाहर —आपको सामायिक से कुछ अनुभूति हुई ?

श्री गगाराम—सोते समय कभी-कभी मानवमुनि जी, गुरुदेव श्री नानालाल जी म. सा. सपने में आते हैं। उठने के समय पर अपने आप उठ जाता हू, जैसे कोई हाथ पकड़ कर उठाए।

श्री नाहर —सपने में उन्होंने कोई आदेश दिया ?

श्री गंगाराम—थोडा सहारा मिलता है, बस। हम धर्मपाल माता-पिता श्री गणपतराज जी बोहरा व यशोदादेवी जी बोहरा को कभी नही भूल सकते।

श्री नाहर —आपके घर में सामायिक होती है ?

श्री गंगाराम—बच्चे थोडा कम करते हैं। सरमाते हैं, धंधा करते हैं।

श्री नाहर —क्या आपको व्यवसाय (लकडी का) में ईमानदारी से काम करने मे कोई दिक्कत आती है ?

श्री गगाराम—हम व्यवहारिक काम करते हैं और ईमानदारी से काम मे कोई दिक्कत नही होती।

श्री धूलचन्द जी गरादिया गांव से वार्ता —

श्री वयाजी—आपके क्या कार्य है ?

श्री धुलजी – खेती, ३०० बीघा जमीन है। छह भाई है। जिस दिन से धर्म मे आये हैं, जमीन सभलती नही।

श्री भवरलाल जी —आप क्या-क्या धार्मिक क्रियाए करते हैं।

श्री धुलजी —चौदस, अष्टमी, पर्युषण, दिवाली मे तेला।

श्री नाहर —कभी उपवास नही हो तो दिल मे कैसा लगता है ?

श्री धुलजी —वडा अटपटा । दिल ही नही लगता ।

श्री नाहर —आपने धर्मपाल का रास्ता कैसे लिया ?

श्री धुलजी —महाराज आचार्य श्री नानालाल जी म सा के दर्शन हुए । धर्मपाल की नीव हमारे गाव से ही लगी । मैं इस बारे मे समझता नही था कि धर्म क्या ? मैं क्या ? पशु की तरह था । सीताराम जी ने कहा, अपने गाव मे महाराज श्री पधार रहे हैं । सब को स्वागत करने चलना है । मैंने सोचा ग्वालियर दरबार पधारेंगे । वे बोले, नही जैन आचार्य श्री नानालाल जी म सा पधार रहे हैं । तो पूछा, स्वागत कैसे करना है ? बोले, बस सामने जाना है । मैं नही समझा, यह क्या है ? हम सुबह गए । मैं बखान मे बैठा । दो दिन तो समझ नही आई । तीसरे दिन हृदय मे परिवर्तन हुआ । सूर्य की भाति आख मे आचार्य जी का प्रकाश हुआ । मन मे प्रणाम किया । मैंने उसी दिन से कुव्यसन निकाल फेंके ।

श्री कालूराम नाहर, ब्यावर—क्या-क्या कुव्यसन ?

श्री धुलजी —दारू, मास सव ।

श्री हस्तीमल जी (रतलाम) वच्चो मे भी परिवर्नन आया क्या ?

श्री धुलजी —हा, पूरा घर, पूरा गाव वदल गया । मेरी माता जी की सामायिक कभी नही टूटती । मेरी तो टूट जाती है ।

श्री नाहर —सुवह उठ कर पानी तभी पीजिए, जव सामायिक हो हो जाए, ऐसा करने से नियम नही टूटेगा,

श्री वरधा जी, करंदीगांव (रतलाम से २ मील दूर) से वार्ता

श्री कोठारी जी ने वरधा जी का परिचय कराते हुए वताया कि गत वर्ष श्री प्रेम मुनिजी रतलाम चातुर्मास के समय से प्रतिदिन

रतलाम आते, एकातर उपवास करते ।

श्री नाहर —भाई वरधा जी, आपको प्रेरणा कैसे मिली ?

श्री वरधाजी—मैं इन्दौर चौमासे मे गया था । लोगो ने कहा, जाओ । मैंने उसी रोज से १०८ मिणिया गिन कर नाम जप शुरू कर दिया । सामायिक का समय कब होता है, मुझे पता ही नही लगता । अत शाम को भी माला फेर लेता हू । मेरी आयु ६५ वर्ष की है । दो लडके है, एक मास्टर है, एक खेती करता है ।

श्री कोठारी जी—इन्होने चौमासे मे शीलव्रत ले लिया था ।

सोनेड़ा के श्री नानूराम जी से वार्ता—

श्री सूरजमल जी बच्छावत—आप कितने वर्षों से धर्मपाल है ?

श्री नानूराम जी—३–४ साल हुए है । सरदारशहर गए थे, वही प्रेरणा मिली ।

श्री बच्छावत—कितनी जमीन है ?

श्री नानूराम जी—८००–९०० बीघा ।

श्री नाहर —आपका खान-पान क्या है ?

श्री नानूराम जी—२०-२५ साल पूर्व से ही दारू-मास छोडा हुआ है ।

श्री शंकरलाल जी, गांव उमरना, उम्र ५५ साल, खेती ६५ बीघा जमीन

कबीर पंथी, वर्षों से खान-पान शुद्ध, सारा गाव कबीर पथी ।

प्रश्न—आपका खान-पान पहले से ही शुद्ध है, तो आप धर्मपाल प्रवृत्ति मे क्यो आए ?

उत्तर—वही मार्ग आगे श्री नानालाल जी म सा का हमे मिला । कबीर पथी होने से बलाई का टीका नही मिटा । अब धर्म-पाल हो गये, बलाई का टीका मिटाने के लिये । अभी ५ साल से इस प्रवृत्ति मे आये है ।

श्री कोठारी जी—कोई विशेष अनुभव ?

उत्तर—महाराज श्री ने कहा, ११ बार महावीर स्वामी, महावीर स्वामी बोलने से विशेष लाभ होगा, इस बात को मैंने पकड लिया और रोज करता हू । ०

क्या भूलूं क्या याद करूं !

● श्रीमती धन कुंवरी कांकरिया

हम आज आये, धर्मपालो के गाव
बहुत दिनो की थी अभिलाषा, पूर्ण हुई है आज पिपासा ।
जिनका जीवन था अ धियारा, चम-चम चमके जैन सितारा ।
नन्हे-नन्हे बच्चो मे हैं कैसे धर्म सस्कार । हम आज आये० ।
नाना गुरु ने बाग लगाया, बोहरा जी ने जल बरसाया ।
अध्यक्ष महोदय का त्याग है आला, कांकरिया जी ने कर्तव्य पाला ।
कोठारी जी कोठा भर-भर, करें धर्म का काम ।। हम आज आये० ।
विजया बहिन के गुण मैं गाऊ, बहिन यशोदा के कार्य सराऊ ।
धर्मपालो की माता बन कर, चमकी गगन मे आज ।। हम आज आये० ।

धर्मपाल यात्रा मे गये मुझे करीबन एक वर्ष होने आया है पर उन दिनो की स्मृतिया आज भी मेरे मस्तिष्क मे आती हैं तो मैं समय के इतने बडे अन्तराल को विस्मृत कर देती हू ।

मैंने धर्मपाल भाई-बहिनो के बीच अनेक अच्छी-अच्छी बातो का अनुभव किया । उन सब मे मुझे उनकी पानी छान कर पीने की आदत बहुत अच्छी लगी । वे माताए खूब मोटे गाढे कपडे से पानी छानती है । कुए से पानी भर कर लाती हैं तब वे बडे विवेक से पानी छानती हैं । मुझे उनके यहा के पानी मे जो स्वाद मिला, वह न तो बादाम, काजू की बर्फी मे मिलता है, न अन्य पेय पदार्थो मे ।

धर्मपाल भाई-बहिनो के कुशल व्यवहार और आध्यात्मिक प्रेम सम्बन्धी अनेक स्मृतिया मेरे मन और मस्तिष्क मे उठ रही हैं पर क्या भूलू, क्या याद करू ? यही सोच मैं जिनदेव से प्रार्थना करती हू कि हमारे जीवन मे ऐसे अवसर बार-बार आये । हम उन भाईयो के क्षेत्र मे शिविर आदि का आयोजन कर अपने समाज-सेवा और धर्मसेवा के दायित्व को निभाए । ○

मेरे जीवन का शुभ प्रसंग

● स्व. श्री चांदमल पामेचा

अप्रैल १९७५ की धर्मपाल क्षेत्र की उस पदयात्रा का शुभ प्रसग मेरे जीवन मे भी आया। धर्मपाल भाइयो के अगाध स्नेह को अपनी लेखनी से व्यक्त करने मे मैं अपने आपको असमर्थ पा रहा हू। सचमुच ! कितना प्रगाढ प्रेम था उनके मानस मे। धर्मपाल क्षेत्रों मे जहा-जहा भी हम पहुंचे, अपार जनसमूह हमारे स्वागत के लिए उमड पडता। जगह-जगह स्वागत गान सुन कर हम भाव-विभोर हो जाते। बालक-बालिकाओ के कलकण्ठ से सुमधुर स्तवन एव भक्तामर का पाठ सुन तथा अपार जनमेदिनी को देख हमारे मन मे प्रभु महावीर के समवसरण की कल्पना साकार हो उठती।

इस पदयात्रा मे धर्मपाल भाइयो के धैर्य और साहस के गुणो से मैं बहुत प्रभावित हुआ।

इस धर्मपाल यात्रा मे मैंने सघ प्रमुखो और धर्मपालो मे जैसे आदर्श मूल्यो को देखा उनकी स्मृति से दिल आज भी गद्गद् हो जाता है। यात्रा मे बहनो ने पैदल चल कर धर्मपाल बहनो मे जागृति लाने के लिए जिस प्रकार का कदम उठाया, वह सचमुच बडा सराहनीय है। ०

महान यात्रा का महान फल

● श्रीमती विजयादेवी सुराणा

मालवा क्षेत्र की महान् धर्म-जागरण पदयात्रा मे जाने की तमन्ना मेरे से अधिक मेरे पतिदेव की थी । कलकत्ता कार्यकारिणी बैठक मे तय होते ही वे हर क्षण, हर सहधर्मी भाई-वहिनो को प्रेरित करते थे कि पदयात्रा मे चलिये, एक वक्त चल कर देखिए । मुझे वडी चिन्ता थी कि इस भारी शरीर मे चल पाएगे या नही । साथ ही यात्रा के १५ दिन पूर्व अचानक गिर जाने से उन्हे काफी चोट भी लगी थी, चलना तो दूर, उठने मे भी काफी तकलीफ होती थी । हम लोगो ने कहा— "आप कैसे पद-यात्रा करेंगे," तो उत्तर मिलता था—"कुछ भी हो, हम तो पदयात्रा करेंगे ।" दृढ सकल्प का चमत्कार देखने को मिला, एक सप्ताह मे काफी ठीक हो गये और पदयात्रा को चल पडे ।

उज्जैन मे धर्मप्रेमी श्रीमान् गोकुलचन्द सूर्या जी के यहा पहुचे । विश्राति के उपरात वहा से दि० १ अप्रेल की रात्रि को खाचरौद पहुचे । सभी श्री सघ के दर्शन कर अपार हर्ष हुआ । दि० २ अप्रेल को प्रात पदयात्रा शुरु हुई । आनन्द का पार नही । सूर्य निकलने का समय वडा शोभायमान था,जैसे वह पदयात्रा देखने के लिये ही गगनमडल मे निकल आया हो । पदयात्रा का हर क्षण, हर कार्य अनुकरणीय व मनमोहक रहा । उसका लेखन मेरी शक्ति से परे है ।

सिरोडी गाव मे हमारी वर्तमान अध्यक्षा श्रीमती फूलकुंवर-देवी काकरिया एव यशोदा माता तथा हमारी मत्राणी आदि को ले कर धर्मपाल वहने रात्रि २॥ वजे तक वैठी रही कि—"आज तो हम रात्रि जागरण करेंगे । देवगुरु के गुणगान करेंगे, आप सभी को हम

सोने नही देंगे ।" बडा आनन्द आया । हमारी सहमत्राणी कर्मठ कार्यकर्त्री धनकुंवरदेवी पग-पग पर कविता-गायन जोडती हुई चल रही थी ।

महान पदयात्रा का महान् फल चिरस्मरणीय एवं भव-भव मे तारणहार होगा । उन्नति के पथ पर आगे बढने का सौभाग्य प्राप्त कर हम कृतार्थ हुए । धर्मपालो के अपार उत्साह से हमे गहरा संतोष हुआ ।

साथ ही, लौटते समय बालाघाट में समिति की मंत्राणी श्रीमती तारादेवी के घर पर मिलने गई तो देखती हू कि धर्मपाल क्षेत्र यहा पर भी खुला हुआ है । बगाली कुर्मी, रावत, महाराष्ट्रीयन भाई-बहन सामायिक, सामूहिक प्रार्थना के साथ त्याग प्रत्याख्यान कर रहे हैं । करीब १५ जनो ने उपवास आदि किया तथा करीब २१ जैनेतर बहनें तपस्वनी तारादेवी के साथ ढाई सौ पच्चखान की तपस्या विधि सहित कर रही हैं । करीब ५१ जैनेतर लोगो ने भी शराब-मास का त्याग किया है । बोलने के शब्दों को कार्यरूप में परिणत देख कर बडी खुशी हुई । पदयात्रा के समय धर्मपालों की याद आई । सोचने लगी-यदि इस प्रकार हर क्षेत्र के भाई-बहन कार्य क्षेत्र मे कूद पडे तो भारतीय सस्कृति पुनः जाग उठेगी । स्वच्छ और शुद्ध वातावरण मे प्राणी सुख शाति प्राप्त करेगा एव पूज्य जवाहरलाल जी म. सा., पूज्य आचार्य श्री व गाधी जी का स्वप्न साकार होगा । यदि सही मायने मे आपको भी आनन्द लेना है, तो वीर सघ योजना तथा आगामी पदयात्रा मे नाम लिखाइये । ★

काश, दो चार दिन और साथ में बिताते

● श्रीमती फूलकुंवर कांकरिया

तत्कालीन अध्यक्षा

श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति

कलकत्ता

यो तो मैं धर्मपाल क्षेत्र मे पहले भी दो वार जा चुकी हू परन्तु पैदल चलने का यह पहला ही अवसर था। पर गुरुदेव की कृपा से कोई तकलीफ नही हुई।

जव मैं धर्मपाल भाई-बहनो के साथ वैठती थी तो मुझे लगता कि अपने ही परिवार मे वैठी हू। जव उन लोगो के भजन सुनती तो इच्छा होती कि सुनते ही जाऊ, उठने की इच्छा नही होती थी। इच्छा होती भी कैसे ? कितने मधुर स्वर मे गाते थे वे लोग ? उनके गाने का तरीका ही अलग था।

जब हम लोग उनके घरो मे जाते तो देखते कि कितना साफ सुथरा घर है। कही भी गन्दगी नहीं, कही कोई चीज विखरी हुई नही। पानी इतना शुद्ध कि मटकियो के ऊपर कपडे का चन्दोवा ववा हुआ है कि कही मच्छर न गिर जाए। वहा भी वहुत सी वातें सीखने को मिली परन्तु सव लिखना सम्भव नही है।

आज जव मैं अकेली वैठी धर्मपाल यात्रा के वारे मे सोचती हू, तव सारा दृश्य आखो के सामने घूम जाता है।

ऐसी थी यह अद्भुत यात्रा। मन मे आता है वहुत कुछ लिखू पर क्या लिखू, क्या नही, समझ मे नही आता।

जब हम लोग प्रथम दिन ग्राम चौकी पहुचे तो वहां के धर्मपाल भाइयो ने बडे सुन्दर ढग से सबका स्वागत किया । ११ चौकियो पर पेंटिग की हुई थी । सभी यात्रियों को चौकियो पर खडा करके तिलक लगा कर मालाएं पहनाई गई । बहने मधुर स्वर मे बधावा गा रही थी ।

गुमानमल सा. पधारोनी, अब तो आंखियां खोलोनी ।
धर्मपाल को गले लगावोनी, गुरुदेव के दर्शन कराओनी ।।

इसी तरह वे सब बहनों और भाइयों के नाम ले-लेक गीत गा रही थी । इस तरह उनके जोडने की कला देख कर मैं तो दग रह गई ।

ऐसे ही ये हमारे सेठ साहब मियाचन्द जी सा. उन्होंने खूब सेवा की ।

जब मीटिंग शुरु होती सघ-मन्त्री श्री भवरलाल जी कोठारी इतने अच्छे ढग से सबको समझाते कि हम सव भाव-विभोर हो जाते ।

जब यात्रा का समापन हुआ, तब सबसे बिछुडने का मन मे बहुत दुख हुआ । काश, दो-चार दिन और साथ मे बिताते तो कुछ और सीखने को मिलता । यह यात्रा बहुत अच्छी रही ।

☆
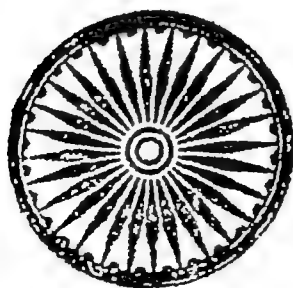
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

● श्रीमती सूरजदेवी चोरड़िया
अध्यक्षा—श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति
जयपुर

पूज्य गुरुदेव स्व आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के जन्म शताब्दी वर्ष मे पुन आयोजित पदयात्रा का आमन्त्रण मिला। मैं स्वास्थ्य के कारण से हिचकिचा रही थी। प्रसगवश उन्ही दिनो डा० वोरदिया जी का जयपुर शुभागमन हुआ। उनके आश्वस्त करने पर मैं यात्रा मे चल पडी। आज मैं सोचती हू वह जो स्वर्णिम अवसर मिला था, सचमुच वडा कीमती था।

प्रथम वार इस यात्रा के दौरान ही मैंने दो-दो, तीन-तीन मील की पैदल यात्रा की पर मैंने एक दिन भी थकान महसूस नही की। गाव-गाव मे जा जाकर हम जब धर्मपाल भाई-वहनो से मिलते तो हमारे मन मे उनके प्रति एक आदर की भावना जागृत होती। वातचीत के दौरान मैंने यह अनुभव किया कि धर्मपाल वहिनो मे अव काफी जागृति आ गई है। वे वहिनें वडे विवेक से अपने घर का काम करती हैं, पानी छान कर काम मे लाती हैं, व्रत-प्रत्याख्यान करने का भी उन्होने नियम ले रखा है। वच्चो को कुव्यसनो से दूर रहने और पति को सन्मार्ग पर चलने की भी वे सलाह देती रहती हैं।

खटीक और वलाई जाति की इन महिलाओ मे इतना परिवर्तन देख मैंने एक वहन से पूछा—वहन ! तुम्हे सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा कहा से मिली ? उसने तपाक से जवाव दिया—

बाईसा ! हमे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले, हम भूले भटके लोगों को राह दिखाने वाले नाना गुरु है । उनके उपदेशो से हमारा घर बन गया, जीवन सुधर गया । पहले हमारे घर वाले बीडी पीते, दारू पीते, जीव हिंसा करते थे । तब हमारे घर मे खाने को अनाज नही रहता, तन ढकने को वस्त्र नही मिलता, आये दिन घर मे बीमारी रहती । पर अब गुरुदेव की कृपा से हमारे घर वाले इन सब बातो से दूर हैं । शरीर भी ठीक रहता है रहने को मकान भी हैं । और आपकी कृपा से खेतीबाडी भी है ।

बात ही बात मे मैंने उनसे पूछा—तुम्हारा धर्म कौनसा है ? तो वह बोली—हम धर्मपाल जैन धर्म को मानते है । महावीर भगवान को मानते है और आगे बिना मेरे कुछ पूछे ही वे अपनी धार्मिक जानकारी मुझे देने लगी । उनके जीवनानुभव की ज्ञानयुक्त चर्चा सुन मैं आत्मविभोर हो गई । मैंने मन ही मन गुरुदेव को नमस्कार किया और कहा—गुरुदेव ! आप अंधकार मे भटकने वाली मानवता के लिए प्रकाशस्तम्भ हैं, भवसागर मे डूबने वाली जीवन नैया को पार लगाने वाले है । आप धन्य है कि आपने धर्मपाल का उद्धार किया । सच है मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।

★

धर्मपाल संपर्क

● श्री कन्हैयालाल बोथरा, रतलाम

धर्मपाल क्षेत्रीय पदयात्रा मे सम्मिलित होने से मुझे धर्मपालो के साथ जीवत सम्पर्क स्थापित करने का सुअवसर मिला । उनके घर-गाव और चौगान पर उन्ही के बीच बैठ कर चर्चा-वार्ता करने पर हमे यह जानकर हार्दिक खुशी हुई कि उनमे अपूर्व उत्साह है । हमारी यात्रा ग्रामीण जीवन की अनुभूति यात्रा थी ।

बहुरंगी अनुभूतियां

• श्री नेमीचन्द चौपड़ा, अजमेर

जव कभी मैं सघ के साथियो से मिलता हू, उस वार्तालाप मे धर्मपाल प्रवृत्ति के सम्वन्ध मे चर्चा अवश्य होती है। अत. जव धर्मपाल पदयात्रा का आमन्त्रण मिला तो मैं चल पडा। वहा मैंने धर्मपाल भाइयो की धार्मिक श्रद्धा को आखों से देखा और हृदय से अनुभव किया। मैंने देखा कि अनेक धर्मपाल बन्धुओ का चरित्र-निर्माण हुआ है।

यात्रा से अमीर-गरीव का भेद मिट गया। निश्छल प्रेम और व्यवहार की सरलता तथा नि स्वार्थ सेवा के भाव धर्मपालो मे प्रत्यक्ष देखने को मिले। यात्रा से समाज और धर्मपाल एकाकार हो गए।

धर्मपाल-परिवारों के बीच

• श्री नेमीचन्द मेहता, ब्यावर

वन्दन योगीराज नानेश को
है जीवन जिनका ललाम
सस्कार दिये प्रभु आपने
धर्मपालो मे अभिराम

धर्मपाल पदयात्रा के निमित्त से हम उन धर्मपाल परिवारो

के बीच पहुंचे, जिनमे मैंने धर्म के प्रति जागृति व निर्माण तथा अपने जीवन को प्रशस्त बनाने की प्रबल भावना देखी थी ।

वहा के दृश्य देख मन आनन्द से भर गया । धर्मपाल भ्राताओ के स्नेहिल और क्रियाशील जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत है ।

आचार्य श्री नानेश द्वारा पल्लवित, पुष्पित एव परिवर्धित इस धर्म–वाटिका मे महकते इन चारित्र सुमनो का पराग लेने के लिए किस मधुकर का मन आह्लादित न होता होगा ।

हमने देखा कि कितने ही धर्मपाल युवको ने जैन-दर्शन का प्रशिक्षण प्राप्त किया है और अब वे धार्मिक पाठशालाए चला रहे है । इन लोगो का मिलन हमारे लिए सौभाग्य का विषय था । हम इन्हे अपना वात्सल्य और सम्पर्क प्रदान करे, यही निवेदन है । ०

नित नया उत्साह

श्री वृद्धिचन्द पगारिया, आलोट

धर्मपाल पदयात्रा ने हमें धर्मपालों के जीवन में झांकने का सुअवसर दिया । जब हम यात्रा के पडाव पर पहुचते तो धर्मपाल भाई-बहिनें उत्कृष्ट भावना लिए, सादे वस्त्रों मे, आत्मीयता सहित कु कुम–ढोल से बधाकर हमे अपने गाव मे ले जाते । पूरे समय ग्राम सभा मे बैठते और उठते ही फिर सेवा मे जुट जाते ।

इन भाइयो की सहनशीलता, धैर्य, पावन प्रेमलीला और जागरूकता देखते ही बनती थी । यात्रा से धर्मपालो मे नित्य नया आनन्द जागता था । इन व्यसन मुक्त बान्धवो से मिलने का आनन्द अवर्णनीय है । ०

धर्मपालों से प्रेरणाएं

● श्री मदनलाल पीपाड़ा, अजमेर

इस पदयात्रा मे मुझे धर्मप्रेमी धर्मपालों मे धर्म के प्रति श्रद्धा, सयममय जीवन, उच्च विचार, मास-मदिरा त्याग आदि के सराहनीय वातावरण को देखने का मौका मिला। आचार्य श्री के उपदेशो ने उनके जीवन का काया पलट ही कर दिया है। सघ कार्य-कर्ताओ ने उनकी बढोतरी के कार्य को प्रोत्साहित किया है।

धर्मपालो के आनन्द-विभोर करने वाले आचरण से हमे भी सहज प्रेरणाए मिली हैं। ०

卐

जीवन साधना की यात्रा

● श्री लाभचन्द पालावत, जयपुर

मैं पदयात्रा के आखिरी दो दिनो मे गया। आराम से पैदल चल सका कुछ भी थकान महसूस नही हुई। सच मे यह जीवन साधना की यात्रा है।

धर्मपालो के जीवन की उन्नति मे यात्रा सहायक रही।

०

सहयोगी धर्मपाल

● श्री रखबचन्द कटारिया, रतलाम

पदयात्रा के दौरान भोजन व्यवस्था का दायित्व मुझे व मेरे साथियों को सौंपा गया था। हमारी व्यवस्था को सफल बनाने मे धर्मपालो का भारी सहयोग रहा। इनके सहयोग से हमने सेवा का जो आनन्द लिया, वह अविस्मरणीय है। ०

नया वातावरण

● श्री सूरजमल मेहर, श्योपुरवाले

जावरा से रतलाम की पदयात्रा में सम्मिलित होने का मुझे भी सौभाग्य मिला। यात्रा की सफलता अभूतपूर्व थी। अलग-अलग प्रान्तों से आये स्वधर्मी बन्धुओं और धर्मपालो मे परस्पर जो स्नेह, सम्पर्क व प्यार देखा वह एक नया अनुभव और नया वातावरण था।

इसे शब्दों मे व्यक्त करना कठिन है। ०

खुशी की लहर

● श्रीमती गवरीदेवी कांकरिया, गोगोलाव

पदयात्रा मे जाकर मैंने देखा कि गाव के अज्ञानान्धकार मे धर्मपाल प्रवृत्ति रूपी प्रकाश की ज्योति जगमगा रही है। वहा की धर्मपाल बहिनो के ज्ञान को देखकर मुझे हार्दिक खुशी हुई। ०

धर्मपालों का सान्निध्य

● श्री झमकलाल जी घोटा, रतलाम

पदयात्रा की जल व्यवस्था का दायित्व होने से यात्रा के पूरे कार्यक्रमो मे सम्मिलित नही हो सका फिर भी धर्मपालो से सम्पर्क का प्रयत्न करता रहा। मैंने गाव उकेडिया, रघुनाथगढ, नामली, डेलनपुर, सेमलिया और पचेड की शालाओ के बालको के धार्मिक अध्ययन और जैन सस्कारो को देखा जिससे मुझे बडा सन्तोष हुआ। ०

स्नेह दान

● श्री नौरतनमल डेडिया, ब्यावर

संघ द्वारा आयोजित धर्मपाल क्षेत्रीय पदयात्रा स्वधर्मी बन्धुओ और धर्मपालो के बीच पारस्परिक स्नेह दान की यात्रा थी। धर्मपालो का बढता हुआ उत्साह और आत्म विश्वास हमारी बहुत बड़ी सफलता है। ०

चहुं ओर सुगन्ध ही सुगन्ध

● श्रीमती कोमल मूणत, रतलाम

पदयात्रा मे चारो ओर आनन्द ही आनन्द था। जिस प्रकार चन्दन की लकडी काटने और जलाने पर भी सुगन्ध ही देती है। उसी प्रकार पदयात्रा मे चहु ओर सुगन्ध ही सुगन्ध थी। यह धर्मपालो के साथ हमारे धर्म-प्रेम की सुगन्ध है, यह सुगन्ध समाज जीवन को सुवासित करे, यही शुभकामना है। ०

नई चेतना और स्फूर्ति

● श्री केवलचन्द नाहर, ब्यावर

मैं पदयात्रा मे इसीलिए सम्मिलित हुआ कि मुझे धर्मपालो को निकट से देखने की लालसा थी। धर्मपालो को पास से देखकर अपने ७५ वर्ष के जीवन मे मैंने पहली बार अनुभव किया कि वलाई जाति के दलित माने जाने वाले लोगो मे कितनी गहरी धर्म आस्था और श्रद्धा है। उन्होने लगन और निष्ठा के साथ कुव्यसनो का त्याग किया है और गुरुदेव द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर बराबर आगे बढ रहे है।

मेरी भावना है कि धर्मपाल का यह वटवृक्ष निरन्तर फले-फूले। ०

धर्मपालो की आर्थिक उन्नति के दर्शन

★ श्री प्रेमराज सोमावत, ब्यावर

इस प्रकार की पदयात्रा द्वारा हमे गरीब जनता के घर–घर जाने और उनकी सम्भाल लेने का अवसर प्राप्त होता है। सच्चे अर्थो मे यही मानव सेवा है।

१३० पदयात्री और १२५ स्वयंसेवको के समूह मे ब्यावर संघ से भी पन्द्रह सदस्य पहुचे। हम वहा पहुच कर अपने घर तथा व्यापार धन्धो के प्रपचो को भूल गए। प्रकृति के शान्त वातावरण मे हम गाव-गाव व घर-घर जाकर लोगो को सस्कारशील बनने की

स्नेह दान

● श्री नौरतनमल डेडिया, ब्यावर

संघ द्वारा आयोजित धर्मपाल क्षेत्रीय पदयात्रा स्वधर्मी बन्धुओ और धर्मपालो के बीच पारस्परिक स्नेह दान की यात्रा थी। धर्मपालो का बढता हुआ उत्साह और आत्म विश्वास हमारी बहुत बड़ी सफलता है। ०

चहुं ओर सुगन्ध ही सुगन्ध

● श्रीमती कोमल मूणत, रतलाम

पदयात्रा में चारों ओर आनन्द ही आनन्द था। जिस प्रकार चन्दन की लकडी काटने और जलाने पर भी सुगन्ध ही देती है। उसी प्रकार पदयात्रा मे चहुं ओर सुगन्ध ही सुगन्ध थी। यह धर्मपालो के साथ हमारे धर्म-प्रेम की सुगन्ध है, यह सुगन्ध समाज जीवन को सुवासित करे, यही शुभकामना है। ०

नई चेतना और स्फूर्ति

◉ श्री केवलचन्द नाहर, ब्यावर

मैं पदयात्रा मे इसीलिए सम्मिलित हुआ कि मुझे धर्मपालो को निकट से देखने की लालसा थी। धर्मपालो को पास से देखकर अपने ७५ वर्ष के जीवन मे मैंने पहली बार अनुभव किया कि बलाई जाति के दलित माने जाने वाले लोगो मे कितनी गहरी धर्म आस्था और श्रद्धा है। उन्होने लगन और निष्ठा के साथ कुव्यसनो का त्याग किया है और गुरुदेव द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर बराबर आगे बढ रहे हैं।

मेरी भावना है कि धर्मपाल का यह वटवृक्ष निरन्तर फले-फूले। ०

धर्मपालो की आर्थिक उन्नति के दर्शन

★ श्री प्रेमराज सोमावत, ब्यावर

इस प्रकार की पदयात्रा द्वारा हमे गरीब जनता के घर–घर जाने और उनकी सम्भाल लेने का अवसर प्राप्त होता है। सच्चे अर्थों मे यही मानव सेवा है।

१३० पदयात्री और १२५ स्वयसेवको के समूह मे ब्यावर सघ के भी पन्द्रह सदस्य पहुचे। हम वहा पहु च कर अपने घर तथा व्यापार धन्धो के प्रपचो को भूल गए। प्रकृति के शान्त वातावरण मे हम गाव-गाव व घर-घर जाकर लोगो को सस्कारशील बनने की

प्रेरणा देते । इस प्रयास मे हमने कभी थकावट महसूस नही की ।

मालव क्षेत्र मे सघ द्वारा ७० पाठशालाए चलाई जा रही है व उनमे प्रशिक्षित शिक्षको द्वारा धर्मपाल बच्चो मे पूर्ण जागृति लाई जा रही है । बच्चो को शुद्ध-प्रतिक्रमण, नवकार मन्त्र और थोकडे आदि सिखाये जाते है । सघ ने हर समय इस क्षेत्र मे धर्म प्रचार किया और इनकी समस्याओं को सुलझाया । इसी का फल है कि आज इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगी है । गाव की गृहणियो को भी सघ की महिलाओ व भाइयो ने सब तरीके से समझा कर धार्मिक एव आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी है । इससे बहुत सी महिलाओ का हृदय-परिवर्तन हुआ है और हजारो बहनो ने त्याग प्रत्याख्यान लिये है ।

धर्मपाल क्षेत्र मे धर्म-जागरण पद-यात्रा का दैनिक कार्यक्रम अति व्यस्त और क्रमबद्ध था । जनता पर इस धर्म-गगा का सच्चे माने मे असर पडा और इसलिए धर्म-जागरण पदयात्रा को प्रति वर्ष अनिवार्य करने के निमन्त्रण आने लगे हैं । ०

प्रगाढ धर्म-श्रद्धा

★ श्रीमती सोरभकंवर मेहता, ब्यावर

हमको भी पदयात्रा मे जाने का सुअवसर मिला । सभी धर्मपाल भाई-बहिनो से भेट हुई । उनकी हमने अति धार्मिक रुचि देखी । इन धर्मपाल भाइयो के छोटे-छोटे बच्चो के मुंह से 'जय गुरु नाना' के नारे निकल रहे थे । सभी बच्चो ने महावीर की प्रार्थना व नाना गुरु की प्रार्थना भी गाकर सुनाई । सामायिक की पाटिया भी

उन्होने सुनाई । इस प्रकार उनके दिल मे धर्म के प्रति बडी श्रद्धा भक्ति देखने को मिली । 'सरसी' गाव मे तो एक छोटे से बच्चे ने बहुत सुन्दर ढग से नवकार मन्त्र का उच्चारण व भगवान महावीर की प्रार्थना सुनाई, जिसे सुन कर सभी दग रह गये ।

रघुनाथपुरा मे तो 'भैरू जी' नामक धर्मपाल की इतनी धर्म पर श्रद्धा हुई कि उन्होने अपना मकान भी समाज को भेट कर दिया ।

इस प्रकार उनका सम्पर्क पाकर अनुपम आदर्श की झलक हमे मिली । वस्तुतः इनका जीवन सुसस्कारित बन रहा है । इनकी धर्म श्रद्धा बडी प्रगाढ है ।

मैं पाठक भाई-बहनो से भी प्रार्थना करूंगी कि आप भी धर्मपाल भाई बहिनो के सन्निकट पहुंच कर उनके धार्मिक जीवन की श्रीवृद्धि मे पूर्ण सहयोगी बनें । ०

धर्मपाल भाई-बहिनों से सम्पर्क

● श्रीमती गुलाबदेवी मूथा, जयपुर

मैं जब जयपुर से चली तब मन मे सोचा था कि पदयात्रा मे कैसे चल पाऊगी ? मगर पदयात्रा के दौरान मैं रोजाना ७-८ मील की पदयात्रा कर लेती । पता ही नही चलता, कोई थकान भी नही होती । यात्रा मे हम धर्मपाल भाई-बहिनो के घर जाते । वहा जाकर कई बहनो व बच्चो से सम्पर्क साधते । उनके घरो मे नाना गुरु की गूज थी । उनके मन मे यह तमन्ना थी कि हम आगे बढें । उन्हे आगे बढाने के लिए हमने कई व्यावहारिक व धार्मिक बातें बताई जिससे वहा के भाई-बहन व बच्चे बडे खुश हुए । ०

पदयात्रा के वे स्वर्णिम दिन

• श्रीमती सरोज खाबिया, रतलाम

मैने अपने जीवन में बहुत सी यात्राए की लेकिन पदयात्रा का मेरा यह पहला ही अवसर था तथा पदयात्रा के अनुभव आज भी मेरे हृदय पर अ कित हैं । मैंने कभी स्वप्न मे भी नही सोचा था कि मैं कभी पदयात्रा करू गी, लेकिन वह स्वर्णिम अवसर मेरे हाथ लग ही गया ।

धर्मपाल क्षेत्र की धर्म-जागरण पदयात्रा के वे स्वर्णिम दिन मेरे जीवन की एक महान् उपलब्धि है । यात्रा का अन्तिम रात्रि-पडाव रतलाम के बाहर था । तब प्रतिक्रमण के पश्चात् सभी ने प्रायश्चित्त लिए । यह देखकर तो मुझे अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि जो व्यक्ति, अपनी सत्य बात सत मुनिराजो के सामने कहने मे सकुचाते है, वहा त्यागमूर्ति अध्यक्ष गुमानमलजी चोरडिया के समक्ष प्रत्यक्ष खड़े होकर अपनी गल्तिया बताने व उनका प्रायश्चित मागने लगे । सचमुच ! "आहा" कैसी अद्भुत बाते थी वे ।

सबसे ज्यादा आनन्द की अनुभूति तो सायकाल ३-४ मील की यात्रा मे 'अन्त्याक्षरी' करते हुए होती थी । किस तरह ३-४ मील हम चल लेते, इसकी अनुभूति हमे नही होती । समय बडी तीव्र गति से बीत गया और आखिर वह दिन आ ही पहुचा जिस दिन हमे ब्यावर के लिए प्रस्थान करना पड़ा ।

कैसी थी वह पदयात्रा जिसका चित्र मेरी आखों के सामने अब भी घूमा करता है, मेरे स्मृति पटल से एक मिनिट के लिए भी नही हटता । मैं तो यही सोचती हू कि वापिस कब उस स्वर्णिम पदयात्रा के दिन आए और मैं सम्मिलित होकर उसी आनन्द की चरम सीमा पर पहुच सकू । ०

धर्मपाल नवयुवकों की द्वितीय पदयात्रा रैली

(दि. ३ जनवरी ७८ से ८ जनवरी ७८)

बलोदा से जावरा

आज से ६ वर्ष पूर्व सम्पन्न इस रैली की एक झलक पाठकों को धर्मपाल क्षेत्र के 'नींव के पत्थरों' 'धर्मपाल-युवकों' की मनोदशा, उत्साह, साहस, कर्मण्यता और समर्पण के मनोहारी यथार्थ से परिचित करा सकेगी, इसी विश्वास के साथ उस समय छापे गए विवरण का सशोधित रुप प्रस्तुत है। रैली से संबधित चित्र 'चित्र-वीथी' में देखिए।

—सम्पादक

मालवा के धर्मपाल क्षेत्रों मे ११० धर्मपाल नवयुवकों की पांच दिवसीय साधना, सेवा और ग्राम सुधार पदयात्रा का आयोजन दि. ३ जनवरी ७८ से ८ जनवरी ७८ दलोदा से जावरा तक श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ की श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति प्रवृत्ति के तत्वावधान मे किया गया था ।

पदयात्रा में पांचों धर्मपाल क्षेत्रों के क्रमशः मक्सी के २२, नागदा-खचरोद के ३३, रतलाम के १५, जावरा के २७ एव मन्दसौर के १४ इस प्रकार कुल ११० धर्मपाल नवयुवकों ने पाच टोलियों में अपने नायकों सर्वश्री रामरतन जी, मन्नालाल जी, शकरलाल जी, गणपत जी व बगदीराम जी के नेतृत्व में यात्रा मे भाग लिया ।

ये युवक शुभ्र वेश में पंक्तिबद्ध होकर अनुशासित रीति से प्रयाण-गीत गाते और समाज सुधार के नारे लगाते हुए जब गाव-गाव से गुजरते थे तो युवाशक्ति का एक अभिनव स्वरूप जन-जन के मन मे साकार होता था । हृदय आनन्द से उल्लसित होते थे ।

इन युवकों ने ५ दिनो मे ११ गांवों मे १४ पड़ाव किए और प्रात। मध्याह्न रात्रि मे प्रार्थना सभाए, ग्राम सभाए, भजन सगीत सभाए, चर्चा-वार्त्ता एव स्वाध्याय कार्यक्रमो के द्वारा स्वयं के जीवन का आदर्श उपस्थित करते हुए ग्राम्यजीवन में परिवर्तन की प्रेरणा प्रदान की ।

रैली-शुभारम्भ व घुंघड़का प्रवेश दि. ३.१.७८

दलोदा की शुगर फैक्टरी के विशाल प्रांगण में संसद् सदस्य श्रीयुत् डा. लक्ष्मीनारायण जी पाडेय के शुभाशीषमय प्रेरक उद्बोधन से यात्रा प्रारम्भ हुई ।

इस अवसर पर श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ के अध्यक्ष श्रीयुत् पी. सी. चोपडा, जावरा श्रीमघ के अध्यक्ष तथा जावरा एव मन्दसौर क्षेत्रीय धर्मपाल प्र. प्र समिति के सयोजक महोदयो तथा शुगर फैक्टरी के मैनेजर सा. ने भी सभी का उत्साह वढाया ।

धुंधडका ग्राम मे प्रवेश करते ही श्रीयुत् मन्नालाल जी भटेवरा के नेतृत्व मे ग्रामवासियो ने यात्रियो का स्वागत किया । ग्राम भ्रमण के पश्चात् सभा प्रारम्भ हुई जिसमे मामाजी एव मामीजी के सदुपदेशो व प्रयासो से उपस्थित जनो मे से ४४ लोगो ने शराब त्यागने का सकल्प ग्रहण किया ।

समाजसेवी श्री मानवमुनि जी ने भी सभी से कर्त्तव्यपालन के लिए सकल्पित रहने का अनुरोध किया ।

घमनार व नगरी दि. ४.१.७८

रैली के घमनार ग्राम मे पहुचने पर श्रीयुत् हीरालालजी सा. के नेतृत्व मे गाववासियो ने स्वागत किया । यहा रात्रि विश्राम और प्रात कालीन प्रार्थना व स्वाध्याय के पश्चात यात्रीदल ने आगे बढकर नगरी मे प्रवेश किया । ग्राम भ्रमण के पश्चात् शाला प्रागण मे सभा प्रारम्भ हुई । ग्राम प्रमुखो ने रैली को आशीर्वाद प्रदान किया ।

नगरी की शासकीय माध्यमिक शाला के आचार्य महोदय ने रैली के शुभागमन को सौभाग्य मानते हुए नई प्रेरणा प्रदान करने के लिए आभार प्रकट किया ।

पेटलावद और धतरावदा दि. ५.१.७८

पेटलावद मे प्रातः प्रार्थना और स्वाध्याय के पश्चात् अपने सक्षिप्त प्रवचन मे मानवसेवी श्री मानवमुनि जी ने राजा हरिश्चन्द्र का उदाहरण देते हुए सत्यवादिता अपनाने और महाभारत के महा-विनाश का उदाहरण देते हुए 'जुआ' जैसे दुर्व्यसन छोडने का अनु-रोध किया ।

उन्होने उपस्थित जनो से अत्याचारो का अहिंसापूर्वक विरोध करके वीरता अपनाने का आग्रह किया । आपने किसानो को 'गोसेवा' के महत्व से भी अवगत कराया ।

माण्डवी और रोला में समारोह

रोला ग्राम मे रात्रि ८ बजे रिंगनोद के ठाकुर सा. के सान्निध्य मे पदयात्री नवयुवको के सम्मान मे एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया। श्रीयुत् हीरालाल जी मकवाना ने मगलाचरण एव श्रीयुत् कालूराम जी धर्मपाल ग्राम रठड़ा ने मधुर गीत सुनाए।

प्रमुख संयोजक श्रीयुत् समीरमल जी सा. कांठेड ने कहा कि प. पू. आचार्य श्री नानालाल जी म. सा ने दलितो को गले लगाने का जो सन्देश दिया है, आइये हम सब मिल कर इसे मूर्त रूप प्रदान करें।

श्री काठेड ने बस्ती के निवासियो को उत्साह भरे अच्छे व्यसनमुक्त वातावरण का निर्माण करने के लिए हार्दिक बधाई दी।

उन्होने श्रीमद् जवाहराचार्य चल-चिकित्सालय के गाव मे आने पर उससे पूरा-पूरा लाभ उठाने का भी अनुरोध किया।

देश को ऊंचा उठावें

प्रमुख अतिथि पद से बोलते हुए रिंगनोद के ठाकुर सा. ने कहा कि दलितो को ऊचा उठाकर हम देश को ऊचा उठावें। उन्होने धर्मपाल प्रवृत्ति को समझकर इसके पूरे सहयोगी बनने का अनुरोध किया।

गांव कैसे सुखी हो ?

श्रीयुत् भट्ट सा ने कहा कि हमारे चिन्तन का मूल बिन्दु यह है कि-गाव कैसे सुखी हो ? मुझे इस प्रश्न का समाधान धर्मपाल प्रवृत्ति मे मिल रहा है जो कुप्रथाओ और दुर्व्यसनो के उन्मूलन को प्रयत्नशील है। मैं समिति की सफलता की कामना करता हू।

श्रीयुत् नाहटा जी व डा श्री पारस जी ने भी ग्रामवासियो से बुराइया छोडने का अनुरोध किया ।

यहा नौ हरिजन बन्धुओ ने शराब व जुआ आदि बुराइया छोडने का सकल्प किया ।

इससे पूर्व माण्डवी ग्राम मे नशाबदी पर व्यापक चर्चा की गई ।

धर्मपालो के अनुभव रिंगनोद व बनवाड़ा दि. ६.१.७८

श्री कालुराम जी के मगलाचरणपूर्वक दोपहर मे ग्राम सभा प्रारम्भ हुई ।

गुणग्राहकता

आज श्रीयुत् समरथमल जी सा डागलिया रामपुरा ने आत्मदर्शनपूर्वक सद्गुणो को ग्रहण करते हुए चारित्र निर्माणपूर्वक गुणग्राहकता को अपनाने का अनुरोध किया ।

उन्होने अपने मधुर ओजस्वी स्वरो मे दो गीत भी सुनाए । मक्सी के श्री रामुजी धर्मपाल ने भी अपना गीत प्रस्तुत किया ।

गुरुदेव की देन

प्रमुख सयोजक श्रीयुत् समीरमल जी सा काठेड ने कहा कि धर्मपाल प्रवृत्ति प पू आचार्य गुरुदेव की देन है । उन्ही की कृपा से प्रवृत्ति और उसके कार्यकर्ता साधनारत हैं ।

उन्होने धर्मपाल नवयुवकों से यात्रा के दिनो का पूरा लाभ उठाने का भी अनुरोध किया ।

इसके वाद पदयात्री धर्मपाल नवयुवको ने भी इस अवसर

पर अपने अनुभव सुनाए ।

श्रीयुत् तुलसीराम जी ने कहा कि रैली से हमे भारी लाभ मिला है । मै इस लाभ को सर्वत्र फैलाने का भरसक प्रयत्न करूगा ।

श्रीयुत् गणपत जी ने कहा कि हमे रैली से मानवता और उदारता की भावना प्राप्त हुई है ।

धमनार के श्रीयुत् शकरलाल जी ने कहा कि रैली से मुझे अच्छी प्रेरणा मिली हैं और पूज्य गुरुदेव के उपदेशो का मर्म प्रत्यक्ष अनुभव करने का अवसर मिला है ।

छुआछूत मिटाव

विश्वविश्रुत ओजस्वी सन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी के हरिजनोद्धार सम्बन्धी कार्यो का स्मरण कराते हुए श्री रामलाल जी ने छुआछूत मिटाने का अनुरोध किया ।

बनवाडा ग्राम मे आयोजित रात्रि सभा श्रीयुत् कालूराम जी रठडा के मंगलाचरण से प्रारम्भ हुई । प्रमुख सयोजक श्रीयुत् समीरमल जी सा. काठेड ने धर्म की सेवा मे बलिदान होने का आह्वान किया ।

श्रीयुत् डा. जोशी ने सामूहिक गुरुवदन कार्यक्रम पर विशेष प्रसन्नता प्रकट की ।

टूटे न माला प्रेम की

मामा श्री पिरोदिया जी ने प्रेम की इस कडी को आगे जोड कर माला बनाने का आग्रह किया । उन्होने चेतावनी के स्वरो मे कहा कि सावधानी रखिए 'टूट जाए न माला कही प्रेम की ।'

प्रातः प्रवचन

इसी ग्राम मे प्रातः प्रार्थना के पश्चात् प्रवचन करते हुए मानवसेवी श्री मानवमुनि जी ने आत्मशोधन पूर्वक पवित्र शातिमय सुसस्कारित जीवन-निर्माण करने की अपील की ।

नदांवता—दि. ७-१-७८ मधुर गीतो की गूंज

आज बीकानेर से सघ के सहमन्त्री श्री हसराज जी सुकलेचा एव वैरागी श्री जितेश जी भी पदयात्रा मे सम्मिलित हो गए थे । सभा का प्रारम्भ दोनो सुधी गायको के सुमधुर गीतो से हुआ । श्री जितेश जी ने "तुम भी बोलो जय प्रभु की" तथा सहमन्त्री जी ने "गुरुदेव तुम्हे नमस्कार बार-बार है" नामक गीत प्रस्तुत किये ।

प्रमुख सयोजक श्री समीरमल जी काठेड़ ने सहमन्त्री श्री सुकलेचा जी के पधारने व श्री मानवमुनि जी द्वारा यात्रा के सुसचालन के लिए आभार प्रकट किया । उल्लेखनीय हे कि युवको को आद्योपात श्री मानवमुनि जी सत्सस्कारो की ओर उन्मुख करते रहे ।

श्री काठेड ने पदयात्रियो के विनय पर सतोष और हर्ष प्रकट करते हुए कहा कि मैं यथाशक्ति आपके सहयोग को तत्पर हू और रहूगा ।

उच्च शिखर

श्री मानवमुनि जी ने पदयात्री नवयुवको व ग्रामवासियो से लक्ष्य उच्च रखने का अनुरोध किया । उन्होने कहा कि हमे प्रगति के उच्च शिखर पर पहुचना है । इसके लिए नम्रता और विवेक आवश्यक है ।

आपने यात्रा की सुव्यवस्था ओर श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार प्रवृत्ति

की अपनी पूर्ण क्षमताओ से सेवा करने के लिए श्री समीरमल जी सा. काठेड का अभिनन्दन भी किया ।

जावरा के द्वार पर

यहा से पदयात्रा रैली जावरा नगरी के द्वार पर पहुची । जहा 'ताल नाका' मे विशिष्ट जनो द्वारा अगवानी की गई । इस अवसर पर सर्वश्री पी. सी. चौपडा, गणपतराज जी बोहरा, हसराज जी सुकलेचा, सुरेश जी कांठेड, मागीलाल जी राका, विरमावल ने अपने विचार व्यक्त किये व रैली की अगवानी की ।

सर्वश्री शकर जी, कालूराम जी, हीरालाल जी, सीताराम जी व गणपत जी धर्मपाल ने गीत व अनुभव सुनाए ।

रतलाम और जावरा श्रीसंघो के प्रतिनिधिजनो ने भी विचार प्रकट किए ।

भव्य समापन समारोह

धर्मपाल नवयुवकों के मनोहारी नगर प्रवेश के दृश्य को जावरा वासियो ने उत्साहपूर्वक देखा । यात्रीदल जब पीपली बाजार पहुचा तो जुलूस सभा मे परिवर्तित हो गया ।

स्वागत

सवप्रथम प्रमुख अतिथि श्रीयुत् डा. लक्ष्मीनारायण जी पाडे ससद सदस्य, सघ अध्यक्ष श्रीयुत् पी. सी. चौपडा, समापन समारोह के अध्यक्ष श्रीयुत् गणपतराज जी बोहरा सर्वश्री डा. नदलाल जी बोरदिया माणक भाई तथा मामाजी श्री चम्पालाल जी पिरोदिया का क्षेत्रीय सयोजको, जावरा सघ के पदाधिकारियो तथा जावरा की विभिन्न सस्थाओ तथा नानेश नवयुवक मंडल, राजेन्द्र युवक मडल, वर्धमान नवयुवक मडल एव धर्मपाल प्रतिनिधियो श्री मूलजी भाई, सीताराम जी व शकर जी द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया ।

मंगलाचरण के पश्चात् श्री पी सी चोपडा एव प्रमुख सयोजक श्री समीरमल जी काठेड ने अपने भाव भरे भाषणो से अतिथियो का स्वागत करते हुए प्रवृत्ति की विशेषताओ का भी परिचय दिया ।

बटोरें नहीं, बांटें

डा. श्री नंदलाल जी बोरदिया ने धर्मपाल प्रवत्ति को हजारों वर्ष बाद प्रारभ हुई एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति बताते हुए आग्रह किया कि हम बटोरने के स्थान पर बाटने का, त्याग का भाव धारण करें ।

कमजोरों की मदद

जावरा नगर परिषद के अध्यक्ष मिर्जा गफ्फारअली जी ने समाज के कमजोर वर्गो की मदद करने का आह्वान किया ।

जैन एक अनूठा दर्शन

भूतपूर्व ससद् सदस्य श्री माणक भाई अग्रवाल ने जैन दर्शन को अनूठा दर्शन वताते हुए धर्मपाल प्रवृत्ति को अपने निकट से देखे व अनुभव किए गए कार्यो के आधार पर एक बडी महत्त्वपूर्ण योजना बताया ।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा

ससद् सदस्य व प्रमुख अतिथि डा लक्ष्मीनारायण जी पाण्डेय ने त्याग और भोग की दो प्रवृत्तियो की चर्चा करते हुए भारत की सस्कृति को त्याग प्रधान वताया । त्याग का लाभ दलित वर्ग को दिलाने का अनुरोध और सभी के सुखी होने की कामना करते हुए डा पाण्डे ने सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया. सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दु ख भाग् भवेत्' को आत्मिक एकाग्रता से अपनाने का अनुरोध किया ।

मूक प्रदर्शन

श्री गुमानमल जी चोरड़िया, जयपुर ने रैली को चरित्र का महान् प्रभाव डालने वाली मूक यात्रा बताया। उन्होंने मालवा के इस महान कार्य को शीघ्र पूर्णता प्रदान करने का निवेदन किया।

ये यात्राएं

संघ मन्त्री श्री भंवरलाल जी कोठारी ने कहा कि इन पदयात्री धर्मपाल नवयुवकों का मैं हृदय से स्वागत करता हू। यह दल मालवा की इस भूमि पर जो नए युग की नई तीर्थ भूमि है एक मिशन लेकर चला था। यह मिशन था अन्त्योदय से सर्वोदय। इतिहास का नया निर्माण करना। जीवन विकास का अनवरत अभिनव प्रयास करना। सघ इसके लिए वर्षो से प्रयत्नशील है और आपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के हमारे प्रयासो को गति दी है। श्री कोठारी जी ने कहा कि ये पदयात्राए व्यसनमुक्ति से विकारमुक्ति की यात्राए है। धार्मिक जीवन और सदगुणो को धारण करने की यात्राए हैं। जीवन को बदलने की अभ्यास-यात्राए है, केवल दिखाने की यात्राए नही।

अपने अनुभूतिजन्य शव्दो से यात्रीदल के मार्ग-संचरण का दृश्य साक्षात् की भाति श्रोताओ के मानस पर साकार करते हुए मन्त्री जी ने कहा कि कतारबद्ध धवल पदयात्रीगण जब बगल से निकलते थे तो आसपास के गावो के लोग उनका अभिनन्दन करने आते थे। यात्रीगण समवेत स्वर मे प्रयाण गीत सस्कार गीत गाते हुए आगे वढते थे। इस प्रकार धर्म के मूल तत्त्वो को जीवन मे उतारने की ये यात्राए हैं।

इसी मार्ग पर हम भी अनुसरण करने वाले हैं। हम भी पदयात्रा के आचरणपूर्वक जीवन वदलनेका प्रयास करेंगे। सघ उद्देश्यो को साकार करने आगे वढेगे। इसी क्षेत्र मे धर्मजागरण, जीवन भावना और सस्कार निर्माण पदयात्रा मे आप सभी से पुनः साक्षात्कार का विश्वास है।

विचार का स्वागत

श्री मानवमुनि जी ने आज के सभी धर्मो के स्वागत को धर्मपाल प्रवृत्ति के उदात्त विचार का स्वागत बताया ।

प्यार की जरूरत

श्रीमती यशोदादेवी जी बोहरा ने कहा कि धर्मपालो को केवल शिक्षा और प्यार की जरूरत है, हमे इन तक प्यार पहुचाना चाहिए ।

मानव सेवा प्रभु सेवा

अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्रीयुत् गणपतराज जी बोहरा ने मानवसेवा को ही सच्ची प्रभु सेवा बताया । उन्होने लालसाओ से अलग रह कर कर्त्तव्य भाव से काम कर पिछडे भाइयो को आगे ला कर देश को ऊंचा उठाने का आह्वान किया ।

आभार

श्री वीरेन्द्र कोठारी ने गायत्री परिवार तथा समस्त सहयोगी जनो के प्रति आभार प्रकट किया ।

जयघोषो के साथ यात्रा सम्पन्न हुई ।

समता की अमर प्यास ने धर्मपाल बनाया

● श्री सीताराम धर्मपाल, नागदा

[श्री सीताराम राठौड़ ने प. पू. आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के रतलाम चातुर्मास में उनसे अपने बलाई समाज की ओर से सर्वप्रथम भेंट की थी। दर्शन-प्रवचन का लाभ लेते हुए हृदय में सहसा फैले ज्ञान के प्रकाश से उनके जीवन में आए युगान्तरकारी परिवर्त्तन की सत्य कथा उनके भावो में यहां अंकित है। उल्लेखनीय है कि श्री सीताराम जी धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति, के स्थापना काल में ही सदस्य रूप में मनोनीत हो चुके है। आज भी प्रवृत्ति के प्रमुख कार्यकर्ता हैं —सं.]

मेरी जवानी के दिन थे। घर में लकडी का व्यापार था। भगवान की दी हुई दाल-रोटी बडे मजे से मिलती थी। एक बार मैं अपने पिताजी के साथ व्यापार के काम से तिमरनी गाव मे अपने आढतिये के यहां गया। हमारे प्रातःकालीन भोजन हेतु चौके में आगत-स्वागतपूर्वक दरी और पाटी बिछाई गई। सम्मानपूर्वक भोजन कर हम दुकान पर आ बैठे। वहा हमारे आढतिये ने मेरे पिताजी से पूछा-तमी कूण जात ? उन्होने सहज भाव से जवाब दिया – बलाई। हमारे चतुर व्यापारी आढतिये के चेहरे पर अनेक रग आए और चले गए।

सायकाल हम फिर भोजन के लिए घर पहुचे। जहा जूते खोले जाते है, वहां फटे टाट के टुकडे बिछा कर हमे भोजन परोसा गया। मैंने पिताजी से कहा यहा तो कुत्ते भी बैठना पसन्द नहीं

करेंगे । रहीम के ये शब्द मेरे कानो मे गूज उठे–'मान सहित मरिबो भलो' मैं पत्तल फाड कर उठ खडा हुआ ।

मेरे मन मे जहर घुल गया था । एक ही प्रश्न– 'तमी कुण जात ? और उत्तर 'बलाई'–मुझे पागल बना रहा था । बलाई शब्द के साथ जुडी हुई, युग–युग की घृणा साकार हो चुकी थी । घृणा की गठरी का बोझ मेरे लिए असह्य हो उठा । जी ने बार-बार चाहा मर जाऊं ।

विचार आते जिस 'समाज मे इतनी घृणा और विषमता है, जो दुत्कारता है, उससे क्यो चिपटू ? कभी जो चाहता ईसाई बन जाऊ, मुसलमान बन जाऊ, बहाई बन जाऊ । मेरी जाति के अनेक लोग विधर्मी बन भी गए पर प्रबल सस्कारो ने मेरे पग बाध रखे थे । मैं असहाय सा विकल और छटपटाता व्यक्तित्व लिए जी रहा था ।

तभी आचार्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म. सा का रतलाम चातुर्मास हुआ । मैं भी वहा गया । उनकी समता की बातें मेरे जले मन पर मरहम जैसी ठडक पहुचाती थी । मैं उनकी चरण–शरण मे मस्तक टिकाकर रो पडा । आचार्य श्री ने स्नेह और समता का विश्वास दिलाया । जैन समाज को भी हमारे सामने ही हमे अपनाने के कर्त्तव्य का ज्ञान कराया ।

आज मैं धर्मपाल बन कर स्वय को गौरवान्वित अनुभव करता हू । मैं धर्मपाल बनने से पहले भी व्यसनमुक्त था और आज भी व्यसनमुक्त हू किन्तु अब मेरे जीवन को समता की अमर और अतृप्त प्यास को मिटाने वाली समतामयी वाणी का नया सहारा प्राप्त हो गया है । जीवन मे फिर से आशा और विश्वास जाग उठा है ।

०

सोने रो सूरज

● श्री धूलजी भाई धर्मपाल, गुराड़िया

[गुराड़िया ग्राम के धूलजी भाई अपने समीपस्थ क्षेत्रो में 'जैन साब' के उपनाम से विख्यात है । इन्हे प्रथम धर्मपाल बनने का सौभाग्य प्राप्त है । ये धर्मपाल प्रवृत्ति के प्रमुख स्तंभ और समिति सदस्य हैं । प्रस्तुत है आप द्वारा विभिन्न सभाओ मे दिए गए मालवो भाषणों का मूलभावयुक्त सरस हिन्दी अनुवाद । —सं.]

वह दिन आज भी मुझे भली भाति याद है, जिस दिन मेरे गाव की काकड़ मे परमपूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. पधारे थे और हमारे गांव मे सोने का सूरज उगा था । हम दीन-हीन दलित लोगों को स्वप्न में भी विश्वास नही था कि इसी जनम मे हमारा 'जमारा' सुधर जावेगा ।

पहले दिन दिनाक २२ मार्च १६६४ को जो व्याख्यान सुना उससे हमारे दिलो मे एक अजीब हलचल मच गई । दूसरे दिन हम सभी की प्रार्थना पर आचार्यश्री जी फिर गुराडिया पधारे और हम लोगो को सात कुव्यसन छोडने और आचरण सुधारने का सदुपदेश दिया । इस पर मैंने कहा कि 'कंणो म्हारो यो है अन्नदाता कै, अमै गामडा का गमार हा । म्हानै धर्म रो सरल मारग बतावो" ।

परम कृपा पूर्वक आचार्यश्री जी ने हमे उद्बोधन दिया और धर्मपाल नाम से सबोधित करके हमारे माथे से कलक भरा बलाई का टीका मिटा दिया । हम लोग आज भी उसी राह पर मजबूती से चल रहे है । हमारी उन्नति मे श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ का जो सहयोग है, वह भूला नही जा सकता । सघ के प्रमुख लोग हमे सम्हालने के लिए प्रवास करते हैं । स्थायी देखभाल

के लिए सघ ने श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार प्रवृत्ति की स्थापना कर रखी है, जिससे हमे बडा बल मिला हैं। आदरणीय श्री गणपतराज जी बोहरा द्वारा चल चिकित्सालय भेंट करके हमारे क्षेत्र मे चिकित्सा की सुविधाए प्रदान करने से गाव के उच्चवर्णीय समाजो मे भी हमारी प्रतिष्ठा बढी है।

हम गुरुदेव से ग्रहण की गई प्रतिज्ञा को प्राणापण से निभा रहे हैं। मेरे जीवन की वह घटना मुझे आज भी ऐसी याद है, मानो कल की बात हो। मेरी दो लडकियो की शादी थी। सघ के प्रमुख गण श्री बोहरा सा, श्री काठेड सा, श्री मानवमुनि जी आदि भी कन्याओ को आर्शीर्वाद देने पधारे थे। दोनो बारातें आ गई। बधाई के बाजे और बधावे गाए जा रहे थे। आनन्द और उमग के रस मे विष घोलते हुए बारातियो ने शराब परोसने की माग की। मैंने दो टूक शब्दो मे मना कर दिया। एक भूचाल सा आ गया। पर मेरी अचल प्रतिज्ञा ने आखिर सब कुछ भला ही किया।

मुझे मेरे नियम पर नाज है और इस छोटी सी घटना ने मालवा के सैकडो गावो मे फैले १ लाख से अधिक बलाई-भाइयो के अन्तरो मे जो हिलोर पैदा की है, वह धर्मपालो के लिए एक सुखद गर्व का विषय है।

हमे धर्मपाल बने २० वर्ष होने जा रहे हैं। इस बीच समय-समय पर सत मुनिराजो और महासतिया जी म सा. के दर्शन-प्रवचन का लाभ हमे नागदा वाले दा सा श्री मयाचन्द जी काठड की कृपा से मिलता रहा है। हम अब पूर्णत व्यसनमुक्त हैं। हम गुराडिया के समता-भवन मे नियमित रूप से सामूहिक सामायिक करते हैं। मेरे १४ का व्रत रहता है। गाव मे व धर्मपाल क्षेत्रो मे सामाइक, व्रत-प्रत्याख्यान के नियमित साधको की बडी अच्छी सख्या है।

सुन रहे हैं कि दयालु आचार्यश्री जी पुन हमारी धर्म-धरा की ओर पधार रहे हैं। हम आशा भरी नजरो से उस दिन की प्रतीक्षा मे है जब आचार्य गुरुदेव फिर हमारे बीच पधारेंगे और हमे उन्नति के नए मन्त्र और मार्ग बतावेंगे।

०

हम जिनधर्म के उपासक

❀ श्री रुघनाथ जी धर्मपाल, मक्षो

[मक्षी के नवनिर्मित समता-भवन ने छोटे से ९ वर्ष के कालखंड मे अनेक उतार-चढ़ाव देखे है । कभी धर्मपालो की सामूहिक साधना और प्रार्थना के सहघोष से उद्घोषित तो कभी निर्जन सा प्रतीत होकर शांत और चुप, यह भवन श्री रुघनाथ जी की अविच्छिन्न साधना का मूक साक्षी है । पूरे मक्षी मे इसी साधना के बल पर श्री रुघनाथ जी समाज के सभी वर्गो के आदर और स्नेह भाजन है। पढ़िए उनके विचार । —सं.]

आजादी के लिए गाधी जी की लडाई चल रही थी। लडाई मे आदमी सब कुछ भूल ज़ाता है पर गाधी जी लडाई मे भी हरिजनो को नही भूले । उन्होने दलितो के उत्थान और हरिजनो के उद्धार को लडाई का एक हिस्सा बना दिया । हम लोग बलाई से हरिजन बन गए । तब भी गाव-गांव मे काग्रेस वाले आते थे । स्वराज और हरिजन की बाते समझाते थे । हमने ऊचे उठने की कोशिश की पर सबने और एक साथ नही की । हम ऊचे नही उठ सके ।

हमारे इस मक्सी मे ईसाई धर्म के प्रचारक आए । समता की प्यास लिए मेरे बहुत से भाई ईसाई बन गए । बहाई आए अनेक बहाई बन गए । आर्य समाजी आए उन्होने ईसाई-बहाई को फिर से शुद्ध बनाकर 'आर्य' बना दिया । अनेक गुरुद्वारे मे जाकर दाढी और वाल बढाकर सिख बन गए । ये बदलाव और पीढी के भटकाव मेरी बूढी आखो ने प्रत्यक्ष देखे हैं, पर समाज को बदलते नही देखा ।

तभी 'जयगुरु नाना' का नारा भी सुना । नित नए नारे सुनते सुनते नारो से मोह टूट चुका था, किन्तु जिस दिन श्री राजेन्द्र

लाल जी दलाल के मकान के दालान मे स्वय आचार्य प्रवर श्री नाना लाल जी म सा पधारे और उनके मुखारविन्द से सामाजिक समता की वात सुनी। मन मे हलचल मची। उनके शब्दो मे कोरा आश्वासन नही था। था एक आह्वान। व्यसनमुक्त, उच्च व आदर्श जीवन से ही समाज मे उच्च स्थान प्राप्त होगा, प्रतिष्ठा व समता मिलेगी। सव वात समझ मे आ गई।

तव का दिन और आज का दिन है। बीस वर्षों में ऐसा एक दिन भी नहीं वीता कि सामायिक न की हो। सामायिक तो रोटी पानी से भी वढकर जीवन की मूल जरूरत बन गई है। परिवार के सुधरे सस्कार आज प्रत्यक्ष फल दे रहे हैं। मेरे बच्चो मे जो विनय, शिक्षा और अनुशासन है, वह पूरे मक्षी और आसपास के समाजो, यहा तक कि उच्चवर्णीय समाजो के मुकावले भी गौरवमय है। यह सामायिक साधना इसी जीवन मे सफल हो गई। अव परलोक सुधरने मे कोई सन्देह नही।

हमारे समाज मे परिवर्तन की कसमकस से गूजर समाज भी आन्दोलित हुआ। उन्होने भी व्यसनमुक्ति की २९ सूत्री योजना प्रसारित की।

जो धर्मपाल समय की कसौटी पर अपने आचरण की परीक्षा देकर खरे उतर चुके हैं, उनसे आज हमारी मक्सी के वैष्णव भी छुआछूत नही मानते। इसलिए मेरा तो मेरे अपने वलाई समाज से निवेदन है कि सच्चे अर्थों मे धर्मपाल वन आओ।

जव नानागुरु खेवनहार है
तो भय काहे का।

❀

हम धर्मपाल ध्वज के धारक

❀ श्री मोतीलाल पंडा, ताजपुर

[श्री मोतीलाल पंडा इस क्षेत्र के जाने-माने सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ता हैं। आप इसी सुरक्षित सीट से विधान सभा का चुनाव भी लड़ चुके हैं। ओजस्वी वक्ता और संस्कारी शिक्षित परिवार के मुखिया श्री पंडा अति उत्कृष्ट धर्मपाल पाठशालाओं के संचालक और धर्मपाल प्रवृति के निपुण प्रचारकर्ता है। भारत के वर्तमान गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी की उज्जैन से ताजपुर तक की पदयात्रा में आपने उनके समक्ष धर्मपाल प्रवृत्ति का तेजस्वी चित्र सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया था। निम्न पंक्तियों में पढ़िए उनके विचार। —सं.]

हम ताजपुर के बलाई पीढियों से कबीर पंथी हैं। पीढियों से हम में से अधिकाश व्यसन मुक्त हैं किन्तु समाज में हमें समता नही मिली। हम खेती करते हैं। हम शिक्षित भी हैं। खद मेरा सगा भाई शिक्षक है, शासकीय माध्यमिक शाला मे। इतना कुछ होने पर भी हमे समाज से समता नही मिली।

स्वय मेरा व्याकुल मन कितना तडपा है। मैं खुद समता की चाह लिए क्या-क्या न बना? आज विगत जीवन पर दृष्टि डालता हू तो उस रग-बिरगे जीवन पर स्वयं मुझको ही आश्चर्य होता है। आप सभी तो शायद मेरी कथा की सचाई पर भरोसा करने मे भी कठिनाई अनुभव करें।

मैं वही मोतीलाल हूं जो एक दिन अपमान से आहत होकर मुसलमान बनने पर उतारु हो गया था। मैंने बहाई आचरण को

स्वीकार कर लिया था । मैं पक्का मुसलमान ही बन जाता यदि महात्मा देवी प्रसाद जी आर्य ने हमे आर्यसमाज के प्रकाश से परिचित नही कराया होता । महात्मा देवीप्रसाद जी पजाब के रहने वाले थे। वे मुसलमान–बहाई बन चुके थे । अनेक वर्षों के बाद वे फिर से आर्य बने । प्रचारक बन कर मालवा मे आए । हमारा उद्धार किया । उन्होने उत्तम विचार दिए पर शेष समाज विचारो के अनुरूप आचार नहीं अपना सका । उनका स्वप्न अधूरा रहा ।

मैं राजनीति मे कूद पडा । विधानसभा का चुनाव भी लडा, पर मुझे शाति नही मिली । तभी परमपूज्य आचार्यश्री नानालाल जी म. सा का उज्जैन पधारना हुआ । उन समता-दर्शन प्रणेता के उपदेशो ने हमारे जीवन को फिर से आशा और विश्वास से भर दिया ।

आचार्यश्री जी के अनुयायियो ने हम गिरे हुओ को उठाने के लिए अपने 'करूणा हस्त' बढाए । उज्जैन के सेठ श्री गोकुल-चन्द जी सूर्या ने दामन थामा । हम लोग धर्मपाल बन गए । धर्म-पाल की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए हम अब रात दिन जुटे हुए हैं ।

आचार्यश्री जी ने कहा था 'महावीर के द्वार सभी के लिए खुले हैं । हम इस द्वार मे प्रविष्ट हो गए हैं ।

हम जल छान कर पीते हैं । जीवो को बचाकर चलते हैं । विवेक से कार्य करते हैं । सामायिक व स्वाध्याय करते हैं । सप्त कुव्यसनो के परित्यागी हैं । चातक की भाति हमारी चाह व टेक है कि हम धर्मपाल ध्वज के धारक हैं, इसे सदैव उन्नत आकाश मे फह-राते रहेंगे ।

❀

हम दीवाने फिर मचल उठे

● श्री हीरालाल मकवाना, मक्षी

● श्री रामलाल धर्मपाल, मक्षी

[मक्षी क्षेत्र में दिन को दिन और रात को रात न समझते हुए, आंधी-तूफान की भांति विचरण कर धर्मपाल पाठशालाओ का जाल बिछाने, धर्मजागरण पदयात्राओ के स्वयंसेवक दलो का नेतृत्व करने, धर्मपाल युवकों की रैलियो का आयोजन करने से लेकर संघ प्रमुखों के समक्ष धर्मपालो की समस्याओं को दृढ़ व मुखर भाव से प्रस्तुत करने मे अग्रणी मक्षी के इन दो युवाओं के विचार पढिए वस्तुतः ये विचार समग्र क्षेत्रो के धर्मपाल युवकों की ओर से है :
—सं.]

शरीर पहले जैसा था, वैसा ही आज भी है, वल्कि उन जवानी के दिनो में अधिक ही बलवान था । पर मन मे विचार की प्रेरणा नही थी । सत् सस्कारो के बीज नही थे । उन्नति की चाह थी पर दिखती कोई राह नही थी · परमपूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म सा मक्षी पधारे । हममें जो शक्ति निहित थी, उन्होने हमे उस शक्ति की अनुभूति दी । हमारे पैरो में पख लग गए । समता के सन्देश को गाव-गाव, खेडे-खेडे पहुचाने के लिए हम आतुर हो उठे । श्री अ. भा साधुमार्गी जैन सघ ने हमे सहयोग दिया और साथ चल कर रास्ता वताया ।

रात को रात और दिन को दिन न मानते हुए हमने गाव-गाव में घूम-घूम कर धर्मपाल पाठशालाए खोलनी प्रारभ की । पाठ-शालाओ के भवन नवकार मन्त्र के सामूहिक गान से गूज उठे । धर्म पाल क्षेत्रों की १०० से अधिक, धार्मिक पाठशालाओ से हजारो

छात्र, गाव की महिलाए व प्रौढ तथा युवा जुड गए । सर्वत्र धर्मपाल की खुसबू फैल गई । इन शालाओ के विद्यार्थी भी धर्मपाल, शिक्षक भी धर्मपाल ।

प्रौढो मे धर्माराधना बढी । धर्म की प्यास बढी और सघ के दानीमानी महानुभावो ने सामूहिक धर्माराधना हेतु समता-भवनो का जाल बिछाना प्रारम्भ किया । इस क्षेत्र मे फैले ये समता-भवन हमारे धर्मपाल समाज के, उत्कर्ष की प्रबल चाह और साधुमार्गी जैन सघ के आत्मीय उदात्त सहयोग के जागृत प्रतीक हैं ।

श्री गणपतराज जी बोहरा द्वारा अपने अनुज स्व श्री सम्पतराज जी बोहरा की स्मृति मे प्रदत्त श्रीमद् जवाहराचार्य चल चिकित्सालय के साथ भी हम गाव-गाव घूमे । हमने युवको की रैलिया और पदयात्राए आयोजित करने हेतु सघ योजनाओ को मूर्त रूप प्रदान करने मे स्वय को भुला दिया, खपा दिया ।

आचार्यश्री जी की प्रेरणा का विद्युत प्रवाह और सघ का सहयोग हमे कार्योन्मुख और उन्मत्त बना चुका था । किन्तु तभी शनै. शनै आचार्यश्री जी के शिष्य समुदायो और सघ-प्रमुखो के विहार व प्रवास कम होने लगे । सम्पर्क के अभाव मे हरा भरा लहलहाता बगीचा सूखने सा लगा । हम चिन्तित हो उठे ।

सौभाग्य का विषय है कि सघ ने फिर धर्मपालो की सुधि जोर-शोर से लेने की ठानी है और महान् सौभाग्य की बात है कि हमारे आराध्य आचार्य श्री नानेश स्वय हमारे क्षेत्रो की ओर आ रहे है ।

हम धर्मपाल युवक एक बार फिर धर्मपाल प्रवृत्ति के पतझड को वसन्त मे बदलने को मचल उठे हैं । फिर से वही तराना, जिओ हमारे नाना' को मुक्त गगन मे गाने को स्वर थरथरा रहे हैं ।

हमारे समाज का भविष्य उज्जवल है । धर्म के पथ पर चलने वाले सब भाई-भाई हैं । धर्मपाल समाज रचना को मूर्त स्वरूप प्रदान करने को हमारा पुरुषार्थ समुद्यत है । आइये स्वप्न को धरा पर साकार करे ।

०

साधना सफल करें

❀ श्री जुगराज सेठिया

भूतपूर्व अध्यक्ष
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ
बीकानेर

[धर्मपाल गांव रानी-पीपलिया मे जून ८१ में संघ अध्यक्ष के नाते प्रवास करते हुए श्री जुगराज जी सेठिया पधारे। उस समय दिए गए उनके प्रवचन का सार-संक्षेप प्रस्तुत है : यह धर्मपाल प्रवृति के स्वरूप का अधिकारिक विश्लेषण है। यह सरल और संवादशैली का हृदयगाही भाषण है। —सं.]

आदरणीय धर्मपाल बन्धुओ व बहिनो !

बडी खुशी है कि आप इस गरमी व धूप मे भी यहा पधारे। आज सत्यनारायण जी की कथा हुई। प्रश्न यह है कि क्या सत्य-नारायण जी को मास-मदिरा चढाई जाती है ? नही, दूध-दही-घी-शहद। तो फिर आप लोग क्यो खाते हैं ?

समाज के और आपके बीच दुराव ऐसी आदतो के कारण हुआ है जो सामान्यत: हेय मानी जाती है। आप ऐसी आदतो को छोडेगे, तभी दुराव समाप्त होगा। सच तो यह है कि भारत मे जाति प्रथा कभी नही रही। सभी भारतीय रहे। केवल मुसलमान आए जो विलीन नही हो सके, अन्यथा भारतीय सस्कृति समुद्र के समान सभी को समाहित करती रही। प्राचीन भारत मे वर्ण थे पर वे जन्म पर नही, कर्म पर आधारित थे। जैन धर्म भी जाति प्रथा मे विश्वास नही करता।

आपने जैनत्व को स्वीकार किया है पर आप सच्चे अर्थो मे

जैनी तभी बनेंगे, जब सप्त कुव्यसन छोड कर अपने पैरो पर खडे हो जावेंगे । तभी शेष समाज से एकत्व हो सकेगा । आप एकत्व प्राप्त करने को आतुर हैं, पर मैं आपको सलाह दूगा कि इस कार्य मे समय लगेगा, अत अधीर मत होइये ।

आप अपना स्तर सुधारते जाइये कुछ समय मे वैश्य बन जायेंगे, जैसे कि हम बन गए । सभी को मालूम है कि हम ओसवाल पहले राजपूत थे । आप भी इसी प्रकार धर्मपाल वैश्य हो जाएगे । आपका और हमारा अन्तर मिट जाएगा ।

इस प्रवास मे मैंने अनेक धर्मपाल भाइयो से बात की है । बहुत लोगो को अपने उद्धारक नानागुरु के विषय मे पर्याप्त जानकारी नही है, ऐसा मुझे लगा । हम तीर्थ के पास हैं फिर भी उससे अपरिचित है । आप अपना आध्यात्मिक ज्ञान बढाइये ।

हम नानागुरु के अनुयायी हैं । उन्ही की पुनीत प्रेरणा से धर्मपाल प्रवृत्ति चला रहे हैं । आपसे हम केवल प्रेम चाहते हैं । भ्रातृभाव चाहते है ।

जहा तक अनेक वक्ताओ ने तहसील स्तर पर छात्रावास खोलने की बात की है तो मेरा यही कहना है कि गगा शिव के मस्तक से निकली और गगा का जल लेकर फिर से शिव के मस्तक पर चढाया जाता है । समाज की उन्नति के लिए रूपया भी समाज से एकत्र किया जाता है । अब आपका धर्मपाल समाज बन चुका है । आप स्वय अपने स्तर पर पहल करें, हम भी भरसक सहयोग करेंगे ।

अन्त मे यही निवेदन है कि जीवन उन्नत बनाने हेतु गुरुजी द्वारा बताए मार्ग पर दृढता और श्रद्धा से बढते जाइये । ❀

जय जिनेन्द्र !

इन से सीखें

● श्री केशरीचन्द सेठिया

☆

भारत एक कृषि और धर्म प्रधान देश है । यहां अनेक ऋषि मुनि, मनीषी हुए हैं, जिन्होंने समकालीन परिस्थितियो के गहन चिंतन मनन के पश्चात् समाज और देश मे फैली विषमताओ एव सामाजिक कुरीतियो, बुराइयो को समाज से हटाने के लिए क्रान्तिकारी कदम उठाये ।

जैनाचार्य श्री जिनदत्त सूरीश्वर जी ने एक लाख से भी अधिक लोगो को सुसंस्कृत किया । उन्हे जीने की कला सिखाई । मात जाति का आदर करना सिखाया । अहिंसा के सिद्धांत का महलों से झोपडो तक प्रचार किया । उसी शृ खला मे जैनाचार्य श्री हीरविजय सूरी हुए जो मणिधारी के नाम से प्रख्यात हुए जिन्होने आम जनता के अलावा अकबर जैसे प्रतापी सम्राट को भी अपने उपदेश से उप-कृत किया । इन्ही का प्रभाव था कि 'आइने अकबरी' मे पोर्चुगीज पादरी ने अपने पत्र मे लिखा था "अकबर जैन धर्म का अनुयायी है ।"

उसी शृंखला में महान् आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. का नाम आता है । बहुत पुरानी बात नहीं, मार्च १९६४ की बात है । आप अपनी शिष्य मण्डली के साथ पदयात्रा करते हुए मालवा क्षेत्र के नागदा ग्राम मे पधारे । उनकी यह एक ऐतिहासिक यात्रा रही । इसलिए नही कि जैन सत या जैनाचार्य का इस ओर कोई प्रथम विहार हुआ हो । जव आचार्यश्री को पता चला कि यहा पर वलाई जाति के लोग काफी सख्या मे वसे हुए हैं । आर्थिक स्थिति से ग्रस्त वे सस्ते से सस्ता पेय, मनोरजन के लिए, विस्मृति के लिए,

ताडी और चरस प्रतिदिन पीते हैं। अन्ध विश्वास के शिकार देवो—देवताओ पर मूक पशुओ की बलि चढाते हैं, नशे मे धुत मार-पीट, गाली-गलौच, औरतो को पीटना आदि अनेक बुराईयां जिनमें घर कर गई हैं। अपने ही आप कुल्हाडी मार कर अपनी भली सी गहस्थी को नरक से भी बदतर बनाए हुए हैं। यह सब सुन कर उन का हृदय द्रवित हो गया। दुर्लभ मनुष्य भव इस तरह निष्फल जाय, यह गवारा नही हुआ। किसी अदृश्य प्रेरणा ने इनको व्यसन-मुक्त करके जीने की कला सिखाने की प्रेरणा दी।

आपके उपदेश एव प्रवचनो मे जहा सस्कारी लोगों को वैराग्य की ओर मोडने की अद्‌भुत चुम्बक सी आकर्षण शक्ति है वहा असस्कारी, पिछडे लोगों मे सस्कार, आत्म-विश्वास जगाने की भी चमत्कारिक शक्ति है। आपके प्रवचन मे जहा उच्च जाति के लोग इक्कठे हुए, भील एव वलाई जाति के लोग भी शामिल हुए। प्रभावकारी प्रवचन ने कुछ ऐसा जादू किया कि करीव सात सौ लोगों ने तत्काल कुव्यसन-शराव-मास एवं शिकार आदि का त्याग किया। लोगो की हृदय से की गई विनती एव महान् उपकार को देखकर आचार्यश्री के चरण आगे नही बढ सके। गुराडिया गाव आदि के लोग धन्य हो गये। उनका हृदय खुशी से वासो उछल रहा था। वे उल्लास से विभोर हो उठे। उनके नयनो से अश्रुओ की धारा वह चली। दोनो हाथ जुडे के जुडे रह गये। मस्तक श्रद्धा से झुक गया। ग्रामीण परिवेश की शोषित, दलित औरतें तो-निहाल हो गई, लगा कोई उनके जीवन मे सुख-शाति फैलाने के लिए मसीहा आ गया है।

वे व्यसनमुक्त हुए, लेकिन उच्च जाति के लोग उन्हे वलाई नाम से सम्वोधित करते थे। उन्हे हीन दृष्टि से देखते थे। उनकी परछाई मे परहेज करते थे। उन्होने जव अपनी व्यथा वताई कि उनके साथ वहुत अन्याय हो रहा है तो आचार्यश्री के मुख-मण्डल पर गम्भीर रेखाए खिच गई, उनका यह दर्द सच्चा दर्द था। उनकी यह

प्रार्थना सच्चाई से ओतप्रोत थी । आचार्यश्री के मुख से निकला-तुम अपने को आज से "धर्मपाल" सम्बोधित करो । ध्यान रहे, इस नाम की सार्थकता तुम्हारे हाथ है । नाम क्या मिला उन्हे तो वरदान मिल गया । उपस्थित लोगो की आखे चमत्कृत हो गई । आनन्द और उल्लास छा गया । लोगो को लगा जैसे कही से देवदु दभी वजी है । 'धर्मपाल' 'धर्मपाल' 'धर्मपाल' ।

धीरे-धीरे सैकड़ो हजारो लोगो ने अपने को 'धर्मपाल' कहना प्रारम्भ कर दिया । नाम क्या मिला, परिवर्तन की एक जीवत दिशा मिल गई । गुरुचरणो मे नत-मस्तक हो बोल उठे- "गुरू गोविन्द दोनो खड़े, काके लागू पाय । बलिहारी गुरू आपकी, श्री गोविन्द दियो बताय ।,

व्यसनो को त्यागते ही उनके स्वास्थ्य मे परिवर्तन आने लगा । ठर्रे से भीगी मास-पेशियो मे फिर से स्पदन होने लगा । मुख पर कार्य करने की भावना तरगित होने लगी । नया जीवन जीने की भावना जाग उठी । दो समय खाने को तरसते बच्चो को थोडा दूध भी मिलने लगा । औरतो के जेवर छूटकर आ गये । टूटी-फूटी हांडियो का स्थान धातु की तपेलियो ने ले लिया । शराव और ताडी मे खर्च होने वाला पैसा घर गृहस्थी मे खर्च होने लगा । बच्चे स्कूल जाने लग । शोषण और अत्याचार से मुक्ति मिली । वे नित्य अपने आराध्य की माला फेरने लग । नवकार महामन्त्र का जाप और सामायिक करने लगे । यह सब परिवर्तन किसी जादू की छडी से नही हुआ । एक महान् साधक की साधना का फल था कि जिसकी वाणी हृदय के अतस्थल को छू गई ।

उनके जीवन मे तो क्रान्ति आ गई । गुरु कृपा से वे तो सुधर गये । उनमे सर्वांगीण सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक चेतना आ गई ।

१४ तुलसीगम स्ट्रीट, मद्रास—६०००७९

सचित्र-धार्मिक कथाएं

खंड ४

दामनक-कथा

□ श्रीमती सुधा खाब्या

Δ

राजगृह मे एक धनाढ्य सेठ रहता था। उसके दामनक
मक एक पुत्र था। दामनक के आठ वर्षीय होने पर उसका परिवार
ड्ढमारी की चपेट मे आ गया। नागरिको ने यह देखकर रोग फैलने
भय से उसके घर को चारो ओर से वन्द कर दिया। जिससे
ी परिवार-जन मृत्यु को प्राप्त हो गये किन्तु दैववशात् नामक किसी
ार वहा से निकलने मे सफल हो गया तथा भीख माग कर पेट
रने लगा।

एक रात वह तीव्र सर्दी मे एक दूकान के वाहर सोया हुआ
उसी समय दूकान का मालिक सेठ सागरदत्त वहा आया और
मनक पर दया करके उसे अपने यहा नौकर रख लिया। दामनक
भी मेहनत एव ईमानदारी से सेठ को प्रसन्न कर लिया।

एक वार दैववशात् दो साधु उधर से निकले और दामनक
लक्षित कर कहा कि 'यह वालक जो आज एक रोटी के लिए
र-२ देख रहा है, वही कुछ दिनो मे इस घर का मालिक
गा।' मुनि के इन वचनो को सागरदत्त ने सुन लिया तथा अनेक
ारो मे लीन हो कर सोचने लगा मैं अपने पुत्र को छोड कर इसे
स्वामी नहीं वनाऊंगा। ऐसा विचार कर एक चाण्डाल को बुलाकर
ानक को मारने की आज्ञा देकर कहा—कि—जगल मे ले जा कर
का वध कर दो तथा इसकी आखें निकाल मुझे दो।' यह आदेश
त कर चाण्डाल दामनक को जगल मे ले गया किन्तु उसकी भोली
ाकृति को देखकर उसे दया आ गयी और उसने उसे छोड दिया
। सेठ को हिरण की आखे ले जाकर वता दी। जिससे सेठ ने
ुष्ट होकर उसे इनाम दिया।

इधर दामनक चलता २ एक जगल मे पहुंचा । वहां एक गोपालक ने उसे देखकर उसका परिचय पूछा । तव दामनक ने उसे कहा कि मैं अनाथ हूं । उसके वचनो को सुनकर गोपालक ने मित्रवत् अपने पास रखा ।

कई वर्षों बाद एक बार सेठ सागरदत्त उस गांव में आया और युवक दामनक को देखकर उसका परिचय पूछा । तब लोगों ने बताया कि 'यह अनाथ है तथा हमे जंगल मे मिला था । गोपालक ने इसे प्रेमपूर्वक पाल पोसकर बड़ा किया है ।' यह सुनकर सेठ को बीती घटना याद आ गई और उसे विश्वास हो गया कि यह वही दामनक है जिसको मैंने मरवाया था किन्तु यह किसी प्रकार बच गया है । लेकिन अब यह नही बचेगा ।' तब सेठ ने एक पत्र लिखकर गोपालक को दिया और कहा कि 'मैं अपने घर एक वस्तु भूल आया हूं । अतः यह पत्र लेकर इस को मेरे घर भेज दो जिससे यह वह वस्तु ले

आएगा । रहस्य से अनभिज्ञ गोपालक ने यह पत्र दामनक को दिया और दामनक उसे लेकर नगर की ओर चल पडा ।

नगर के समीप पहुंच कर वह एक उद्यान मे थकान के कारण विश्राम लेने रूका और ठडी २ हवा मे उसे नीद आ गई ।

इसी बीच सेठ सागरदत्त की पुत्री विषा देव पूजा के निमित वहा आई और दामनक को देखकर मोहित हो गई । वह उसका परिचय प्राप्त करने के लिए उसके जागने की प्रतीक्षा मे वही बैठ गई । वहा बैठे २ अचानक उसकी दृष्टि दामनक के हाथ मे पकडे पत्र पर गई जिसे देखकर जिज्ञासावश उसे खोलकर पढा । पत्र पढते ही उसने सोचा कि 'इसे तो पिता ने मेरे भाई के पास मेरे घर भेजा है किन्तु यह क्या ? इस पत्र मे तो पिता ने भाई को आदेश दिया है कि इसे तुरन्त विप दे देना । अब क्या करू ? जिसका मैंने मन से वरण किया है उसे मरने नही दू गी ।

इस प्रकार काफी सोच-विचार के बाद उसने बडी कुशलता से 'स्वागत सत्कार कर भोजन कराकर विपा दे देना' के स्थान पर 'स्वागत सत्कार कर भोजन कराकर विप दे देना' लिख दिया । ऐसा करने के पश्चात् वह तुरन्त घर चली गई ।

नीद से जागने पर दामनक पत्र लेकर सेठ के घर गया तथा पत्र श्रेष्ठी-पुत्र को दे दिया जिसे पढकर श्रेष्ठी-पुत्र प्रसन्न हुआ और शीघ्र ही बडी धूमधाम से अपनी बहिन विपा का विवाह उसके साथ कर दिया ।

इधर जब सेठ घर आया तो यह विपरीत कार्य देखकर बहुत दुखी हुआ । दामनक के जामाता बन जाने पर भी सेठ अपनी पुत्री के वैधव्य की चिन्ता न कर उसे मारने के उपाय सोचने लगा । अन्त मे काफी सोच-विचार के बाद बहुतसा धन देकर नौकरो से कहा कि मौका मिलते ही इसे मार देना ।

एक बार दामनक अपने मित्र के यहा नाटक देखने गया । वहां से आधीरात को लौटा तो दरवाजा बन्द देखकर उसने सोचा कि

'अभी सब की नींद खराब करने से अच्छा है मैं इस पलंग पर ही सो जाऊं।' ऐसा सोचकर वही लेट गया किन्तु खटमालो के कारण उसे नींद नही आई। अतः वह पुनः अपने मित्र के यहां नाटक देखने चला गया।

उसी समय दैववशात् सेठ का पुत्र नाटक देखकर आया और वहीं सो गया। दामनक को मारने की फिराक में रहने वाले नौकर ने उसे देखकर तथा उसे दामनक समझकर मार डाला। सुबह उठते ही शोर मच गया कि श्रेष्ठी-पुत्र को किसी ने मार डाला है। लोगों ने राजा से शिकायत करने को कहा किन्तु सेठ चप रहा क्योकि गल्ती उसी की थी।

कुछ दिनों बाद पत्नी से परामर्श कर दामनक को गृह-स्वामी बना दिया। तथा दामनक विषा के साथ आनन्द पूर्वक दिन बिताने लगा।

एक बार अपने भवन में आमोद–प्रमोद में लीन दामनक एक नाटक देख रहा था। उसी समय नर्तको ने एक गाथा पढी जिसे सुनकर दामनक को पूर्वजन्म का स्मरण हो गया। अत. प्रसन्न होकर उसने एक लाख स्वर्ण-मुद्राएं उसे दी। नर्तक ने प्रसन्न होकर पुनः वही गाथा पढी तो दामनक ने पुनः एक लाख स्वर्ण-मुद्राएं दी। तीसरी बार भी वैसा ही करने पर वही बैठे राजा ने उत्सुक होकर उसका कारण पूछा तो उसने कहा कि इस गाथा ने मुझे पूर्वजन्म का स्मरण करा दिया है। राजा के पूछने पर उसने अपना पूर्वजन्म सुनाया—

किसी समय गगातट पर मछुए रहते थे। मैं भी वही रहता था। मैं हमेशा मछलिया पकड़कर अपना व अपने परिवार का भरण पोषण करता था।

एक बार भयंकर सर्दी मे मैं मछलिया पकडकर घर जा रहा था कि मार्ग मे एक ध्यानस्थ मुनि को देखा। ऐसी सर्दी में उन्हे निर्वस्त्र देखकर मैंने उन्हे अपना जाल ओढा दिया। रात भर मैं मुनि के बारे मे सोचता रहा। सुबह जब मैं गंगातट पर पहुचा तब भी वे उसी तरह खड़े थे। मुनि द्वारा ध्यान पूर्ण करने पर मैंने

श्रद्धावनत होकर प्रणाम किया । मुनि द्वारा पूछे जाने पर मैंने कहा कि मैं मछुआरा हूं । रात में आपको यह जाल सर्दी से बचाव के लिए ओढा कर गया था । यह सुन साधु ने धर्मोपदेश दिया तथा प्राणिवध के दुष्परिणाम बताये जिसे सुनकर मेरे मन में हलचल मच गई तथा मैंने जीव हिंसा को त्यागने का निश्चय किया । मेरे निश्चय को सुनकर मुनि ने कहा कि 'यह तुम्हारा धन्धा है । अत दृढ निश्चय करके नियम लो क्योंकि नियम ले कर तोडना अच्छा नही । तब मैंने कहा कि अब मैं यह घृणित कार्य नही करू गा ।' तब मुनि ने नियम दिला दिया और मैं जाल को फेंक कर घर आ गया । दो दिन बाद पत्नी ने मछली न पकडने का कारण पूछा तो मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उसे सुना दिया । जिसे सुनकर वह अत्यन्त क्रुद्ध हुई । उसकी आवाज सुनकर सभी स्वजन एकत्रित हो गये और मुझे समझाने लगे किन्तु मैं अपने नियम पर अडिग रहा ।

अन्त मे सभी लोग मुझे जबरदस्ती तट पर ले गये और गगा मे जाल डलवाया। विवश होकर मैंने तीन बार जाल डाला और ढीला छोड दिया जिससे मछलिया निकल गई । इस प्रकार जीवदया की भावना से मैंने मनुष्य आयु का बन्ध किया और यहा जन्म लिया । तीन बार मछलियो को छोडने से इस भव मे तीन बार मेरी मृत्यु टली ।

तत्पश्चात् दामनक ने जन्म का समस्त वृत्तान्त राजा को बता दिया । अहिंसा के प्रभाव को देख सभी चकित रह गये । अन्त मे विरक्त होकर दामनक ने मुनिधर्म स्वीकार किया तथा वहा से मरकर देवपद प्राप्त किया ।

★

सहायक आचार्य
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग, उदयपुर वि० वि०

करुणा :

दया की परीक्षा

□ श्री कमल सौगानी

△

सोलहवें तीर्थंकर भगवान् श्री शान्तिनाथ अपने पूर्व भव में मेघरथ नाम के राजा थे। एक दिन राजा मेघरथ सोने के सिंहासन पर बैठे थे कि इतने मे एक शिकारी के डर से उडता हुआ सफेद कबूतर राजा की गोद मे आ बैठा। पीछे-पीछे शिकारी राज भवन मे आ पहुचा और राजा से अपने शिकार की माग करने लगा।
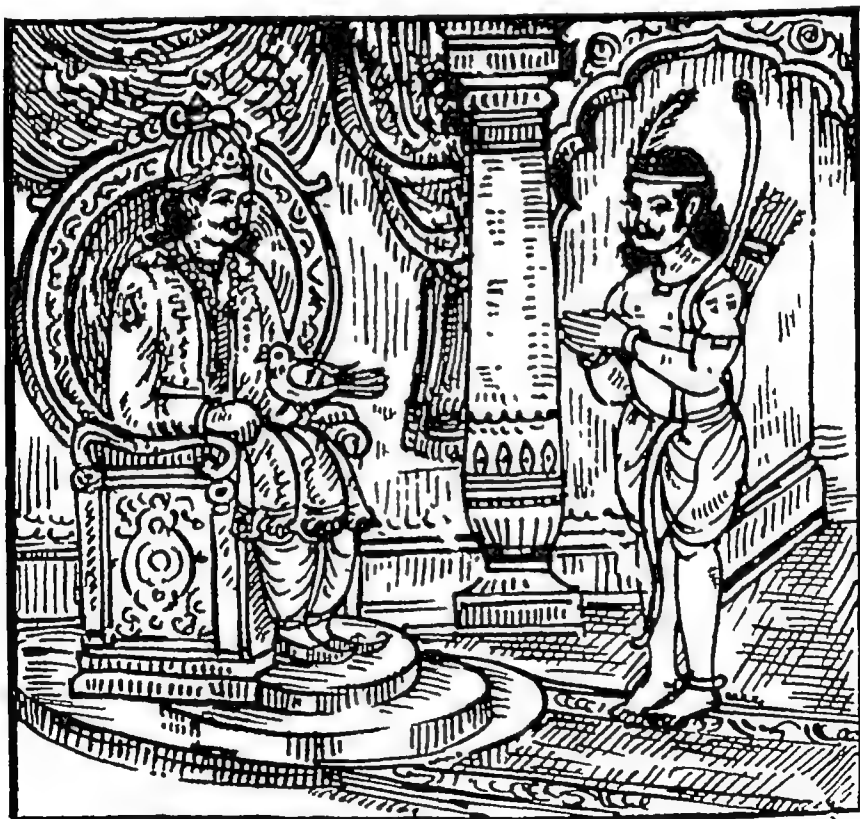
राजा ने कहा—'कबूतर तो मेरी शरण मे आ चुका है, अब उसे नहीं दिया जा सकता।'

यह सुनते ही शिकारी बोला—महाराज ! आप न्यायी होकर भी मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं । दूसरे की वस्तु हड़प लेना कहा का न्याय है ? मेरा कबूतर दे दें, या फिर उतना ही मास कही से लाकर दें ।

राजा से उसके बदले मे अपने शरीर का मांस देना स्वीकार कर लिया । एक तराजू के पलड़े पर कबूतर रखा गया और दूसरे पलड़े पर राजा ने अपने शरीर का मास चढाना प्रारम्भ कर दिया। शरीर का बहुत सा मास कट जाने पर भी पलडा बराबर नही हो रहा था । उसी समय शिकारी के स्थान पर एक देव ने प्रकट होकर कहा—महाराज ! मैं तो आपकी दया की परीक्षा कर रहा था । मुझे क्षमा प्रदान करें ।

राजा का शरीर पहले जैसा हो गया । ०

स्टेशन रोड, भवानी मंडी—३२६५०२ (राज.)

जीवदया :

आत्म-चोट

□ श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

△

ससार में कई आदि जातियां है । ये आदिवासी, अनपढ, विज्ञान की दुनिया से दूर, जागरण के प्रकाश से पृथक' अपनी ही रूढियो, परम्पराओ व धर्मों को जीते है ।

ये अपनी बात के पक्के होते है ।

चूंकि ये अज्ञान के अंधकार से ग्रस्त हैं इसलिए कई बार बड़ी-बड़ी गलतियां कर देते है ।

भीखू मे भी अज्ञान के एक नही, हजारों अंधेरे थे । जाति का भील था वह शराबी, कबाबी और निर्मम था ।

वह सदा सुबह तीर-कमान लेकर घर से निकल जाता था और दिन भर घनघोर जगलो मे भटकता रहता था । शाम तक किसी न किसी जंगली जानवर को मार कर ले आता था और उसे पका कर खा जाता था उसमे उसकी पत्नी और तीन लकड़े भी शामिल होते थे ! कभी-कभी वह इतने पक्षी मार लाता था कि फिर दूसरो को बाटता था ।

उसके पड़ोसी धर्मपाल हरखू को यह अच्छा नही लगता था । वह बार-बार भीखू को समझाता था कि "भीखू ! इन निर्दोष पक्षियो को मत मारा कर ··· अरे ! इन्हे जीवित पकड़ कर बाजार बेच आया कर, ··· उससे तुम्हारा पेट आसानी से भरा जायेगा । ··· जीवहत्या पाप है ··· उनको आत्माएं तुझे दुराशीष देगी ।"

भीखू हरखू को डांटते हुए बोला "मुझे बामण की तरह उपदेश मत सुना ···· मैं पहले पक्षियो को जिंदा पकड़ूं । फिर बाजार मे बेचूं फिर धान लाकर पिसवाऊं·······मुझसे यह सब नही

होता । आखिर भरना तो पेट ही है ।'

"पेट राक्षस की तरह न भरकर तू आदमी की तरह भर ।"

मगर भीखू ने हरखू की वात को अनसुना कर दिया । वह जानवूझ कर हत्या करने लगा । हिंसा जैसे उसके जीवन का अ ग वन गयी ।

एक वार वह पक्षियो के छोटे-छोटे वच्चो को पकड लाया । वच्चे रोने लगे उन वच्चो के मा-वाप पक्षी उसकी झोपडी को घेर कर अत्यन्त ही मार्मिक करुण क्रन्दन करने लगे । चारो ओर भयकर कुरलाहट फैल गयी ।

लोग बहुत सारे इकट्ठे हो गये । हरखू व अन्य जनो ने समझाया कि बच्चो को छोड दो भीखू ! देखो, वे कितनी पीडा से कुरला रहे है । इनके मा–बाप भी क्रन्दन कर रहे हैं ।"

भीखू ने भडक कर कहा—"मै एक भी बच्चा नही छोड़ूगा । यदि ये ज्यादा कुरलाएंगे तो मैं इन्हे भी मार डालूंगा ।

क्रन्दन बढता गया ।

भीखू को क्रोध आ गया । उसने तीर कमान निकाला । एक पक्षी को निशान बनाया और तीर छोड दिया । सनसनाता तीर चला ।

एक जोर की मानवी अर्न्तनाद हुई । पक्षी उड गये ।

भीखू लपक कर ऊपर गया । उसने देखा उसका तीर उसके बडे लडके के सीने में घस गया था और तीर दिल को चीर कर पीठ की ओर से निकल गया था । लडका शांत हो गया था । उसके प्राण पखेरु उड़ गये थे ।

भीखू चिल्ला कर उसकी लाश पर गिर गया और जोर-जोर से रोने लगा । उसकी पत्नी भाग कर आयी । वह अपने पुत्र को मरा हुआ देखकर सिर पीट-पीट कर रोने लगी ।

देखते-देखते भीड इकट्ठी हो गयी ।

लोगो ने भीखू को उठाया । पडौसी ने पूछा "क्यो रोते हो भीखू ?"

देख नही रहे मेरा बेटा मर गया है ।" वह झल्लाया ।

"अब सोचो भीखू ! तुमने कितने पक्षियों के बेटो को मारा है । देख-दूसरो की हत्या करते-करते आखिर तूने अपने बेटे को भी मार डाला न ?……अब भी समझ …… ज्ञान की आखे खोल ताकि तेरा सर्वनाश न हो । जीव हत्या पाप है, हिंसा अपराध है ।……

और उसी दिन के बाद भीखू ने कभी भी जीव हत्या नही की ।……वह मजदूरी करने लगा बल्कि वह दूसरो को शिकार करने के लिए रोकने लगा ।

जो आदमी दूसरो को मारता है, दरअसल वह स्वयं को भी मारता है ।

०

—आशा लक्ष्मी, ईदगाह बारी के भीतर,
नया शहर, बीकानेर—३३४००१

जीवन-मूल्य :

मांस का चस्का

□ सुबुद्धि गोस्वामी

△

एक राजा था जिसे मास खाने का बडा चस्का लगा हुआ था कोई दिन ऐसा नही जाता था जिस दिन उसके भोजन मे मास नही पकाया गया हो जो मास वह खाता जीवित और स्वस्थ जीवो का होता था ।

राजा के मन्त्री को यह जीव हत्या पसन्द नही थी । वह नित्य कोई न कोई युक्ति सोचता कि किस तरह वह राज घराने में मास का भोजन वन्द करे ।

एक दिन मत्री ने अपने मन मे साहस वटोर कर राजा से कहा 'महाराज, आखिर प्रतिदिन की यह जीव हत्या कव वन्द होगी ? वह दिन कव आयेगा जव यहा मास पकना वन्द होगा ? अन्नदाता, मास वहुत कीमती चीज है । उसे इस तरह लुटाना नही चाहिये ।"

मत्री की यह वात सुन कर राजा हसा । वोला—' मत्रीवर ! मास के विना भोजन मे स्वाद नही आता और फिर ऐसी मुश्किल भी क्या है ? हमारे राज्य मे किस वात की कमी है ?"

"महाराज स्वेच्छा से मास देना कोई पसन्द नही करता । मास का भी वही मूल्य है जो हमारे जीवन का । क्षमा करें तो एक एक वात कहू ।" मत्री ने कहा ।

हा, कहो—राजा वोला ।

'भगवान न करे यदि आप वीमार पड जायें और मरणासन्न हो तव भी दूसरो की तो वात छोडिये आपके परिवार के लोग भी

आपको दो तोला मास आपका जीवन बचाने के लिए नही दे सकते। यदि आपको विश्वास नही हो तो मैं यह बात आपको सिद्ध करके बतला सकता हू।'

'हमे मन्जर है, मगर सिद्ध नही कर सके तो तुम्हे देश निकाला दे दिया जावेगा।' राजा ने कहा।

'मुझे मन्जर है महाराज ! किन्तु इसके लिए आपको कुछ दिनों के लिए झूठ-मूठ ही बीमार बनना पडेगा। मत्री ने कहा।

राजा ने मत्री की बात मानली। दूसरे दिन राज-घराने मे राजा की बीमारी की बात फैला दी गई। दूर-दूर से राजा के रिश्तेदार देखने आये।

वैद्यजी के अतिरिक्त किसी को भी बीमार राजा से मिलने

की आज्ञा नही थी । पूछने पर मन्त्री महोदय ने परिवार के लोगो को एक स्थान पर इकट्ठा करके कहा—'महाराज की हालत चिंताजनक है, वैद्यजी कोई वडा असाध्य रोग वताते हैं उससे वचने की एक ही सूरत है । आप लोग मे से कोई भी उन्हे अपना दो तोला ताजा मास देने को तैयार हो तो उनके वचने की उम्मीद हो सकती है ।"

यह सुनकर राजा के परिवार के सब लोग एक दूसरे का मुंह ताकने लगे । घुस-पुस करते रहे, किन्तु मास देने को कोई एकाएक तैयार नही हुआ, यहा तक की उसका लड़का भी नही ।

राजा यह सब छुप कर देख रहा था । उसे वडी चोट पहुची और उसी दिन से उसने मास का भोजन सारे राज्य मे वन्द करवा दिया । मन्त्री की तरक्की भी कर दी गई । ०

A-६० जनता कॉलोनी
जयपुर (राजस्थान)-३०२००४

क्षमा :

दादू की क्षमा

□ डॉ. भैरूंलाल गर्ग

△

सन्त दादू एक बार नई जगह पहुंचे। नगर से दूर जंगल में ठहर गये। ज्यों-ज्यों लोगो को पता लगा त्यों-त्यों वे जंगल में आकर ही प्रभु-भक्ति का अमृत पीने लगे। शहर के कोतवाल ने भी सन्त दादू के आने की बात सुनी। उसके मन में आया कि चल कर इस महात्मा के दर्शन करूं जिसकी प्रशंसा कितने ही लोग करते हैं। अपने घोड़े पर चढकर कोतवाल महोदय जगल की ओर चल दिये। काफी दूर आ गये तो भी दादू महाराज का पता नही लगा। कुछ दूर जाने पर एक व्यक्ति दिखाई दिया—दुबला-पतला शरीर, केवल एक लगोटी पहने वह झाडियो को साफ कर रहा था। कोतवाल ने उसके पास जाकर पूछा, "ओ भिखारी ! तुझे पता है कि सन्त दादू कहा रहते हैं ?"

उस व्यक्ति ने कोतवाल की ओर देखा परन्तु बोला नहीं। कोतवाल ने समझा यह बहरा है, चिल्लाकर बोला, "अरे मूर्ख, मैं पूछता हूं दादू कहा रहता है ?"

इस बार उस व्यक्ति ने कोतवाल की तरफ देखा भी नही झाडियों को काट कर फेकता रहा।

कोतवाल को क्रोध आया। जिस चाबुक से वह घोड़े को चलाता था उसी से उस व्यक्ति को मारने लगा। चाबुक से उस व्यक्ति के शरीर पर नीले-नीले निशान पड़ गये। इससे भी वह व्यक्ति नही बोला तो कोतवाल ने चाबुक का डण्डा उसके सिर पर दे मारा और चिल्लाकर कहा, "मूर्ख की औलाद ! हां या ना भी नही कह सकता ?"

परन्तु वह व्यक्ति फिर भी नही बोला उसके सिर से रक्त वहने लगा। उसकी ओर भी उसने ध्यान नही दिया।

खून देखकर कोतवाल रुका, समझा यह व्यक्ति गूगा और बहरा भी नही, पागल भी है। घोडे को लेकर वह आगे बढा थोडी ही दूर गया था कि एक व्यक्ति दूसरी ओर जाता हुआ मिला। कोतवाल ने उससे पूछा, "ओ जाने वाले ! तुझे पता है इस जगल मे सन्त दादू कहा रहते हैं ?"

उस व्यक्ति ने कहा, "आपको इसी मार्ग पर पीछे दिखाई नही दिये ? मैं तो अभी उन्हे देखकर आया हू।"

कोतवाल ने पूछा, "कहा है वह ?"

उस व्यक्ति ने कहा, "इस रास्ते पर पीछे तो थे। लगोटी पहने मार्ग की काटेदार झाडिया काट रहे थे जिससे मार्ग मे चलने वालो को कष्ट न हो।"

कोतवाल ने आश्चर्य से मुह फाडकर कहा, "कौन ? वह लगोटी वाला दुबला-पतला-सा व्यक्ति ?"

यात्री ने कहा, "वही तो। वही महात्मा दादू है। आपने शायद उनकी ओर ध्यान नही दिया, उन्हे पीछे छोड आये।"

कोतवाल ने जल्दी से घोडा मोडा। वापस उस व्यक्ति के पास पहुचा जिसने अपने सिर पट्टी बाध ली थी। उसके पास जाकर बोला, "आप, आप क्या दादू हैं।"

उस व्यक्ति ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा, धीमे से बोला, "इस शरीर को दादू भी कहते हैं।"

कोतवाल जल्दी घोडे से उतरा और उनके पैरो पर जा पडा। पश्चात्ताप भरी आवाज मे बोला, "क्षमा कर दो महाराज ! मैं तो आपको गुरु धारण करने के लिए आया था।"

दादू ने उसे प्यार से उठाया, बोले, "तो फिर यह दु.ख किस

लिए ? व्यक्ति साधारणतय घोडा खरीदने के लिए जाता है तो उसे ठोक-पीटकर देखता है कि वह कच्चा है या पक्का । तुम तो जीवन का मार्ग दिखाने वाला गुरु चाहते थे । तुमने यदि गुरु को ठोक-

पीट कर देख लिया इसमे हर्ज क्या है ? थोडी देर ठहरो । मैं यह झाडी परे फेक लू, फिर बैठकर बातें करेंगे । ये झाड़ियां और इनके काटे मार्ग चलने वालों को बहुत कष्ट देते हैं ।" ०

जेल रोड, झालावाड़-३२६००१ (राजस्थान)

सहनशीलता :

गार्ग्य की सहनशीलता !

☐ कल्पना आचलिया

△

एक वार महर्षि वोधायन अपने शिष्यो को लेकर वन विहार के लिए गये। अनेक प्रकार फल-फूल और प्रकृति के आनदमय वातावरण का आनद लेने के वाद सभी शिष्य थक कर चूर-चूर हो गये। कुछ जलपान करके घने वृक्षो की छाया मे विश्राम करने के लिए वे महर्षि के पास आ वैठे। महर्षि उन्हे कथा कहते-कहते वौद्धिक ज्ञान की वातें वताने लगे। अनुशासन, शालीनता, नैतिकता, दृढता तथा चरित्र की श्रेष्ठता के विषय मे अनेक प्रकार की कथाए सुनाते हुए महर्षि अपने शिष्यो का मनोरजन करने लगे। धीरे-धीरे शिष्यो को नीद ने आ घेरा। सभी शिष्य इधर-उधर वृक्षो के तले छाव देख-कर विश्राम करने लगे। स्वय महर्षि भी विश्राम करने लगे। दिन ढल आया तो महर्षि जागे और उन्होने अपने शिष्यो को जगाया। तपोवन लौट चलने के लिए सभी शिष्य एकत्रित हो गए। लेकिन एक शिष्य गार्ग्य का अभी तक कही पता नही था। सभी शिष्य उसे खोजने लगे। महर्षि भी उसे खोजते हुए एक पेड के पास पहुचे। वहा उन्होने देखा कि गार्ग्य आराम से लेटा हुआ है लेकिन वह सो नही रहा था उसकी आखें खुली थी। महर्षि पास जाकर वोले—उठो गार्ग्य दिन ढल गया है। हमे आश्रम लौट चलना चाहिए।

गार्ग्य ने लेटे हुए कहा, 'कैसे उठू भगवन्, एक वडा-सा सर्प मेरे पावो मे लिपट कर सो रहा है। यदि मैं उठा तो वह भी उठ जायेगा और उसकी नीद खराव हो जायेगी, इसलिए जव तक वह स्वय उठकर चला नही जाता, मेरा इसी प्रकार लेटे रहना उचित है। अव तक अन्य शिष्य भी वहा आकर यह कौतूहल देख रहे थे। कोई उसे साहसी कहता तो कोई शक्तिशाली। कुछ समय वाद साप

जागा, और पास ही एक झाडी मे अपने बिल की ओर चला गया। गार्ग्य उठा तो महर्षि बोधायन ने उसे गले से लगाते हुए कहा—गार्ग्य एक दिन तुम्हारे शील की चर्चा विश्व के कोने-कोने मे सुगध की तरह फैल जायेगी। एक विषधर जीव के साथ भी तुम्हारा यह मानवीय व्यवहार प्रकट करता है कि तुम मानव के प्रति निश्चय ही शीलवान और दयावान रहोगे।'

शिष्यों ने बात सुनी तो आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। एक शिष्य मैत्रायणि ने तो पूछ ही लिया - "यह तो साहस का कार्य था भगवन्! आप गार्ग्य के साहस की प्रशसा क्यो नही करते? इसके शील व दया का प्रश्न ही नही उठता।

महर्षि ने मैत्रायणि को समझाते हुए कहा—"वत्स, बिना

शील के साहस हो ही नही सकता । जिन मनुष्यो मे शील और दया है, उनमे साहस पहले ही विद्यमान रहता है । यदि गार्ग्य शीलवान न होता तो भयभीत होकर साप पर हमला कर बैठता और सभवत उसकी हत्या भी कर देता । लेकिन भयभीत नही हुआ कारण कि उसमे साहस तो था ही, इसीलिए शील भी था । शीलवान होने के कारण ही अपनी शक्ति को उसने सहन करने मे व्यवस्थित किया ।

०

—११६ देवाली, उदयपुर-३१३००१

जागा, और पास ही एक झाडी में अपने विल की ओर चला गया। गार्ग्य उठा तो महर्षि बोधायन ने उसे गले से लगाते हुए कहा—गार्ग्य एक दिन तुम्हारे शील की चर्चा विश्व के कोने-कोने मे सुगध की तरह फैल जायेगी। एक विषधर जीव के साथ भी तुम्हारा यह मानवीय व्यवहार प्रकट करता है कि तुम मानव के प्रति निश्चय ही शीलवान और दयावान रहोगे।'

शिष्यो ने बात सुनी तो आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। एक शिष्य मैत्रायणि ने तो पूछ ही लिया - "यह तो साहस का कार्य था भगवन्! आप गार्ग्य के साहस की प्रशसा क्यो नही करते? इसके शील व दया का प्रश्न ही नही उठता।

महर्षि ने मैत्रायणि को समझाते हुए कहा—"वत्स, बिना

शील के साहस हो ही नही सकता । जिन मनुष्यो मे शील और दया है, उनमे साहस पहले ही विद्यमान रहता है । यदि गार्ग्य शीलवान न होता तो भयभीत होकर सांप पर हमला कर बैठता और सभवत उसकी हत्या भी कर देता । लेकिन भयभ त नही हुआ कारण कि उसमे साहस तो था ही, इसीलिए शोल भी था । शीलवान होने के कारण ही अपनी शक्ति को उसने सहन करने मे व्यवस्थित किया ।

o

—११६ देवाली, उदयपुर-३१३००१

व्यसन-मुक्तिः

सुबह का भूला

□ श्री कृष्णमोहन जोशी

△

किसी समय अवन्तिकापुरी मे एक राजा शासन करता था। नाम था, 'शीलनिधि'। किन्तु नाम बडे और दर्शन खोटे वाली बात है। उसमे शील का नितान्त अभाव था। सभी प्रकार के व्यसन उसमे घर किये हुए थे। शिकार का बडा शौक था महीने मे लगभग १५ दिन वह शिकार के लिए इधर-उधर जगलो मे भटकता रहता। और तो और, साथ मे उसका लवाजमा भी रहता जिसमे कई नर्तकिया रहती। शाम को थका हारा राजा शराब पीता तथा नर्तकियों के नृत्य का आनन्द लेता था। शेष १५ दिन वह शिकार मे मारे गये पशुओ का मास खाता था तथा राजमहल मे वेश्याओ के रग मे डूबा रहता। सुरापन के दौर चलते। इस प्रकार वह व्यसनो से घिरा हुआ था।

किन्तु जब विपत्ति आती है तो कह कर नही आती। हुआ यो कि एक दिन नगर के मध्य से साधुओ की एक टोली गुजर रही थी जिसमे कुछ साध्वियां भी थी। राजा महल की खिड़की से देख रहा था। अचानक एक सुन्दर साध्वी पर उसकी नजर पडी और वह कामातुर हो उठा। उसने अपने सैनिको द्वारा उसे महल मे बुला लिया और दुर्व्यवहार करने का प्रयत्न किया। साध्वी तपोबल युक्त थी। उसने राजा को शाप दिया कि एक महीने के भीतर-भीतर तुम्हारा राजपाट छीन जाएगा और वहा से चली गई।

कुछ दिनो बाद दिपावली आई। राजा का प्रारब्ध देखिये। राजा ने आडोस-पाडोस के सामतो तथा पाडौसी राजाओ को आमन्त्रित किया। दीपावली के दिन राजा व सभी आमन्त्रित व्यक्ति जुआ खेलने लगे। शराब के नशे मे उसने अपना राजपाट दाव पर लगा दिया

तथा पासे उल्टे पडने से वह हार गया । इस प्रकार उस साध्वी का शाप रग लाया और वहा का राज्य रामसिह ने, जो कि जुए मे जीता था, सभाल लिया । राजा को दीपावली के दूसरे दिन राजपाट छोड-कर निकलना पडा किन्तु उसके मन का मैल अभी भी मिटा नही था । आदते अभी भी वही थी अत' वह उन आवश्यकताओ की पूर्ति न होने से वडा दुखी रहने लगा ।

एक दिन वह राजमहल मे चोरी करने के इरादे से घुसा किन्तु इस कला मे निपुण न होने ने पहरेदारो द्वारा पकड लिया गया व राजा के सामने पेश किया गया किन्तु भूतपूर्व राजा होने के कारण उसे यातना नही दी गयी अपितु देश निकाला देकर छोड दिया गया भूखा-प्यासा, भटकता हुआ राजा दूसरे राज्य मे पहुचा । रास्ते के काटो से उसके कपडे तार-तार हो चुके थे । वह दूसरे राज्य मे मजदूरी करके जीवन-यापन करने लगा । यहा का राजा दुर्जन सिंह

था । नाम भले ही दुर्जन सिंह हो, पर था वह गुणों की खान । उसके राज्य में सभी सुखी थे । कही चोरी या डाका नही पड़ता था । उसके राज्य मे प्रजा भी धार्मिक स्वभाव वाली थी । कहा भी गया है "यथा राजा तथा प्रजा ।"

दिन बीतते गये शील निधि के मन का मैल धुलने लगा । वह धर्म में रूचि लेने लगा । तभी पर्युषण पर्व आया । सारे नगर में उन दिनों काफी चहल-पहल रहती थी । लोग स्थानक-उपाश्रम जाते थे और धर्म श्रवण करते थे उन दिनों वहां जैन साधुओं का सघ आया हुआ था । उसमें साधु थे । ये साधु प्रतिदिन व्याख्यान देते थे। धार्मिक भाव उदय होने से शीलनिधि भी व्याख्यान सुनने जाने लगा। उसने क्षमा, मार्दव, आर्जव, सयम, तप, त्याग, ब्रह्मचर्य आदि पर व्याख्यान सुने उसे ऐसा लगा कि अब तक जो जिंदगी व्यतीत हुई, वह व्यर्थ चली गई । अहो, घोर दुर्भाग्य है, ऐसा सोचकर वह पछताने लगा । और उस दिन उसने जैन धर्म अंगीकार कर लिया क्योंकि जैन धर्म के गुणो से वह बहुत प्रभावित हुआ था ।

अब वह प्रतिदिन धर्म श्रवण करता तथा धर्म को अपने जीवन मे उतारने का प्रयत्न करता । वह आध्यात्म की प्रतिमूर्ति बन चुका था । इधर अवंतिकापुरी में महामंत्री और शीलनिधि की रानी ने मिलकर जो राजा रामसिह वहा शासन कर रहा था, उसे भगा दिया तथा अपने राज्य को स्वतंत्र करा लिया । राज्य स्वतंत्र होते ही महामत्री ने चारो ओर दूत दौडा दिये और दूतो द्वारा भूतपूर्व राजा शीलनिधि की खोज प्रारभ हुई जो कि धर्म का ही प्रभाव था। दूत घूमते-घामते दुर्जन सिंह के राज्य मे भी आये । उस समय शील-निधि व्याख्यान सुन रहा था । व्याख्यान समाप्त होने पर दूतो ने उससे चलने का आग्रह किया किन्तु राजा शीलनिधि तो नश्वर राज्य से भी एक वडी सम्पत्ति प्राप्त कर चुका था, धर्म की सम्पत्ति । और जिस व्यक्ति के पास यह सम्पत्ति होती है, उसे छोटी-मोटी सम्पत्ति की परवाह नही होती है । खैर…

राजा ने दूतो को यह कह कर लौटा दिया कि उसे अब

राज्य की कोई आवश्यकता नही है क्योकि वह सबसे बडा राज्य प्राप्त कर चुका है, धर्म का राज्य । दूत चले गये । किन्तु फिर उसने सोचा कि भूतपूर्व राजा होने के नाते मेरा राज्य के प्रति कुछ कर्त्तव्य है । मुझे राज्य को विधिवत् पुत्र के हाथो सौप और पुत्र का राज्याभिषेक कर फिर तप मार्ग का आलबन लेना चाहिये । अतः वह राज्य की ओर चल पडा ।

राजा के पुनः आने पर राज्य मे खुशी की लहर छा गई । उस रात सारे नगर में खूब रोशनी हुई क्योकि राजा भी एक नई रोशनी प्राप्त कर चुका था । सारे नगर मे घी के दिये जलाये गये । दूसरे दिन राजा ने मुहुर्त निकलवाया अक्षय तृतीया के ही दिन राजकुमार का विवाह भी दुर्जन सिंह की पुत्री के साथ हो गया ।

राजा के सभी कर्त्तव्य पूरे हो चुके थे, अत वह तप के लिए जाने लगा । रानी भी उसके साथ चली गयी । वे दोनो अध्यात्म-साधना के लिए जा रहे थे । एक नये मार्ग पर··

और एक नये सूरज के साथ एक नवीन युग का उदय हो रहा था । सच ही कहा है—सुबह का भूला यदि शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नही कहते । ०

—४/८८५ हिरण मगरी,
उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१

मदिरा-त्याग :

मानवता का माहात्म्य

□ डॉ. आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'

△

मेरे प्रतिवेशी प्रसिद्ध उद्योगपति थे : उनके एक ही लडका था । लाड, प्यार मे पला था वह । उसमे शराब की लत थी । अहर्निश पिए रहता । भोजन के विना तो रह लेता लेकिन शराब के बिना जीवन उसे दुश्वार लगता । एक व्यसन के सहारे सारे व्यवसन उसमे आ लिए थे । सान्निध्य शराबियों का जो था ।
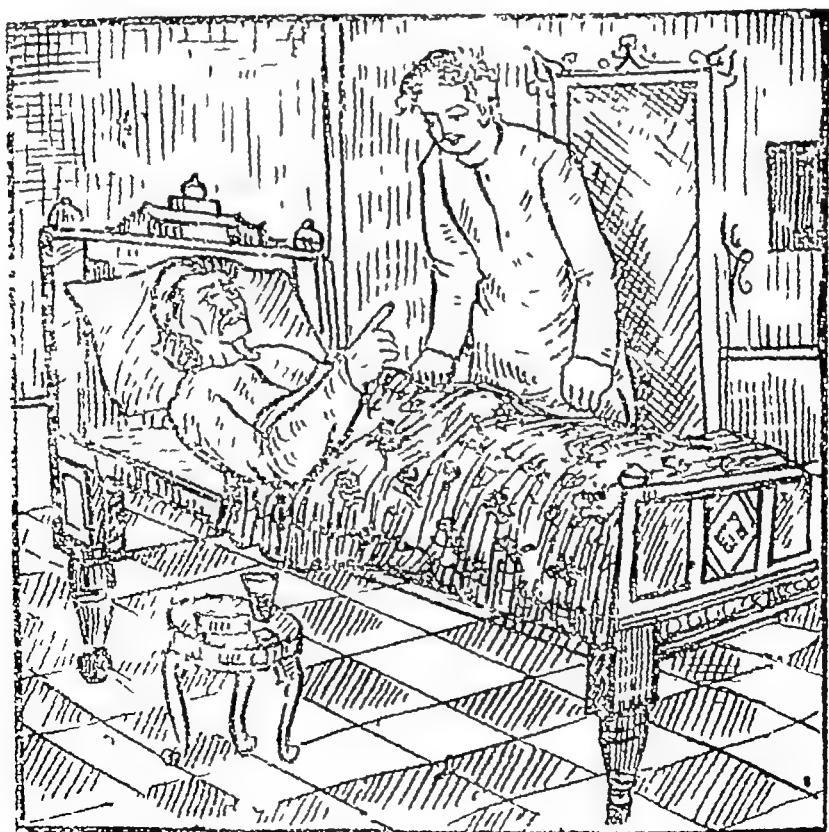
प्रतिवेशी मेरे मरणशय्या पर थे । उन्होने अपने घर के चिराग शराबीपुत्र को बुलाया और बोले—'मेरे बेटे ! मैं अब कुछ समय का

मेहमान हू । इस ससार से कूच करने वाला हू । मेरी अ तिम इच्छा को क्या तुम साकार करोगे ?"

शराबी पुत्र भय खा रहा था कि कही पिताजी शराब तजने की बात न कह दें । वह सकोच का सत्कार करते हुए बोला - "पिताजी ! शराब छोडने के अतिरिक्त आप जो चाहेगे मै सब कुछ करने को तैयार हू ।"

प्रतिवेशी वात्सल्य की बावडी मे डुबकी लगाते हुए बोले— "मेरे बच्चे ! मेरी मृत्यु के बाद तू घर-वार तथा मेरे सभी कारोबार का अधिकारी होगा न, इसलिए यह 'अधिकार पत्र' बडे घूम-धाम से आयोजन के साथ नगर के सबसे बडे शराबी कर-कमलो के से लेना । यह मेरी अ तिम इच्छा है ।"

पिता की अ तिम इच्छा सुनकर शराबी पुत्र प्रमुदित हुआ । पिता ने उसके मन के अनुकूल बात जो कही थी । प्रसन्नता के पर्वत पर चढते हुए वह पिता को आश्वस्ति का शर्बत पिलाने लगा— "मेरे अच्छे पिताजी ! आपकी इच्छा मैं अवश्यपूर्ण करूगा ।"

समय पाकर प्रतिवेशी का मरना हुआ । सस्कार कर्म का सम्पन्न होना हुआ । एक माह वाद 'अधिकार-पत्र' प्राप्त्यर्थ आयोजन की तिथि सुनिश्चित की गई । नगर के नामी-गिरामी सभी शराबियो को आमन्त्रित किया गया ।

निश्चित तिथि पर एक नही अनेक शराबी एकत्रित हुए । शराबी पुत्र ने अपने मित्रो से कहा—"बन्धुओ ! आप आज के इस आयोजन के उद्देश्य से भली प्रकार वाकिफ है । अब आप मे से जो सबसे बडे शराबी हो, वह मुझे 'अधिकार पत्र' विधिपूर्वक प्रदान कर कृतार्थ करें ।"

अभ्यागतो मे से एक उठे और अधिकारपूर्ण भाषा मे कहने लगे—"साथियो, आप जानते हैं कि मेरे पिता इस नगर के लक्षाधिपति

सेठ थे पर मैंने अपनी सारी पैतृक सम्पत्ति शराब देवता के चरणो मे मे समर्पित कर दी है। सिर पर कर्ज का बोझ भी चुका हो है लेकिन चिर साथी शराब का साथ नही छोडा है। अनुदिन भर-भर जाम पीता हूं। लाओ कुकुम, रोली आदि जिससे अपने प्रिय साथी को उसको अधिकार दिलाकर शराब की शोभा का वर्द्धन करें।"

अनन्तर मे दूसरे बन्धु खडे हुए और अस्पष्ट भाषा मे कहने लगे—"मित्रो! मैंने तो अपने पिता की करोडों की जायदाद ही नही, अपनी पत्नी के सारे गहनो को भी शराब के शौक मे तिलाजलि दे दी है लेकिन शराब अब भी मेरा हमदम है। मित्र के अधिकार दिलाने का अधिकारी तो मैं हू।"

तदनन्तर में तीसरे ने तेजी से दावे के साथ कहा—"दोस्तो! मैंने अपना सारा वैभव तथा अपनी पत्नी को भी बेच डाला है लेकिन मेरे जीवन के संजीवन शराब का सग मैंने नही छोडा है। खूब पीता हू और मजा लेता हू। जुएं का भी दाव लगाता हूं और उसमे जो जीत जाता हू तो फिर एक पत्नी की तो बात ही क्या अनेक पत्नियों का ससर्ग प्राप्त कर लेता हू। मैं सबसे बड़ा शराबी हूं।"

अन्त में चौथे आगत अतिथि ने रोमांच से भरे अपने जीवन के इतिहास के पृष्ठो को पलटना शुरु किया—"मेरे जाने जिगरो! इस परम सिद्धि शराब के लिए मैंने अपने सारे ऐश्वर्य का स्वाहा ही ही नही किया अपितु इज्जत भी चौराहे पर नीलाम की हुई है। अब जान लेवा कैन्सर रोग से पीड़ित हूं। इससे बड़ा उत्सर्ग और क्या हो सकता है और कौन हो सकता है मेरे से बडा शराबी? जिगरी दोस्त को 'अधिकार पत्र' देने का अधिकारी सहीमायने मे मैं ही हू।"

शराबी पुत्र की आंखें अब खुल गई थी। शराब की महिमा से उसका परिचित जो होना हुआ था। पिता की सारगर्भित युक्ति ने उसे शराब से मुक्ति के लिए शक्ति प्रदान कर दी थी। वह खडा हुआ और निश्चय के स्वरो मे कहने लगा—"मेरे शुभचिन्तको!

आपने यहा पधार कर जो कष्ट फरमाया है उसके लिए मैं आभारी हू। मुझे 'अधिकार-पत्र' मिल ही गया है। मैंने हमेशा के लिए शराब तजने का सकल्प कर लिया है। मुझे अधिकार मिलें चाहे न मिलें, लेकिन मानवता का माहात्म्य मुखर हो जाए, बस इसे अपना सौभाग्य समझूगा। नमस्कार।"

शराबी पुत्र ने ड्राइगरूम मे टगे पिताश्री के तेल चित्र के समक्ष प्रणाम किया और भावना के दरिया मे बह गया। ०

मंगलकलश ३९४, सर्वोदयनगर, आगरा रोड,
अलीगढ़-२०२००१ (उत्तरप्रदेश)

बंकचूल-कथा

□ श्रीमति सुधा खाव्या

△

विमल नामक प्रतापी सम्राट के पुष्पचूल एव पुष्पचला नामक पुत्र एव पुत्री थे । राजकुमार पुष्पचूल व्यवसनी एव तस्कर-कला मे निपुण था । पुष्पचूला भी उसे इस कार्य के लिए प्रेरित करती थी । अतः प्रजाजन इन्हे बकचूल एव वकचला के नाम से पुकारने लगे ।

एक बार बकचूल के इन कार्यों से परेशान प्रजाजनोने राजा से शिकायत की जिससे क्रुद्ध राजा ने बकचूल को उसकी पत्नी व बहिन सहित घर से निकाल दिया । चलते-२ वे एक भील-पल्ली मे पहुच गये तथा उनके साथ डाका डालने लगे । कुछ समयोपरान्त पल्ली पति के मर जाने पर वह पल्लीपति बन कर स्वतन्त्र रूप से डाका डालना लगे ।

एक बार चन्द्रयश आचार्य अपने शिष्यों सहित मार्ग भूलकर उस भील पल्ली मे पहुच गये तथा वर्षा प्रारम्भ होने से बकचूल से चातुर्मास व्यतीत करने के लिए आश्रय एव आज्ञा मागी । बकचूल ने उपदेश न देने की शर्त पर आवास प्रदान किया । आवास की आज्ञा प्राप्त कर चार मास का निराहार रहकर चातुर्मास पूर्ण होने पर जब आचार्य आवास की आज्ञा लौटाने बंकचूल के पास पहुचे तब उनके तप-त्यागमय जीवन से प्रभावित वह उन्हे विदा देने कुछ दूर आया । तब विदा के समय बकचूल की स्वीकृति पर आचार्य ने धर्मोपदेश देते हुए चार नियम दिलाए—१ अनजान फल न खाना, २ प्रहार के समय सात-आठ कदम पीछे गये बिना प्रहार न करना, ३ राजा की पटरानी को माता के समान मानना, ४ कौए का मास न खाना ।

बकचूल चारो नियम ग्रहण कर प्रसन्नता पूर्वक वापस लोट

गया । एक बार वह किसी गाव को लूटने गया किन्तु गाव वालो को पता लग जाने से उसे खाली हाथ लौटना पडा । उस समय भूख के कारण जगल मे फल आदि की खोज करते हुए भीलो को सुन्दर एव सुगन्धित फल दिखाई दिये । वे उन्हे लेकर बकचूल के पास पहुचे किन्तु अनजान फल होने से उसने उन्हे नही खाया । उसके मना करने पर भी अन्य भीलो ने उन्हे खा लिया तथा मृत्यु को प्राप्त हुए । यह देख वह नियम-पालन मे सजग हो गया ।

तदुपरान्त वह अपने साथियो के शस्त्र लेकर रात्रि के समय घर पहुचा । वहा अपनी पत्नी को किसी पुरुष के साथ सोया देख कर उस पुरुष को मारने को तैयार हो गया किन्तु नियम याद आने पर वह पीछे हटा और अचानक तलवार दिवार से टकरा गई । उस आवाज को सुन पुरुष वेशधारी उसकी वहिन जाग गई । तब बकचूल के

द्वारा पुरुष वेश धारण करने का कारण पूछने पर उसने कहा कि 'आपको यहा न जानकर राजा के गुप्तचर नट-वेश मे आये थे । अतः मैंने आपका वेश धारण कर नाटक देखा जिससे उन्हे शक नही हुआ। तथा रात अधिक हो जाने से मैं वैसे ही लेट गई । यह सुन वह नियम-पालन के प्रति पूर्ण रूपेण श्रद्धावान होगया ।

एक बार वह उज्जयिनी में चोरी करने गया । विभिन्न स्थानों पर घूमते हुए अन्त में राजमहल में चोरी करने गया । अन्दर जाने पर राजमहिषी ने उसे देखा और उस पर मोहित हो काम-याचना की किन्तु उसके इन्कार करने पर राजमहिषी ने अपने वस्त्र फाडकर तथा शोरमचाकर उसे पकडवा दिया । राजा यह सब देख रहा था । सुवह राज सभा में उसे पेश किये जाने पर वास्तविकता को जानते हुए भी राजा ने सारा वृत्तान्त पूछा और कहा कि 'तुम सत्य बोल रहे हो अत. रानी तुम्हे देता हूं ।' तब बंकचूल ने कहा कि 'रानी मेरी मा है ।' राजा द्वारा मृत्यु भय बताने पर भी वह रानी को लेने को तैयार नहीं हुआ । तब राजा नें प्रसन्न होकर उसे अपना पुत्र घोषित किया तथा रानी को निकाल दिया ।

इसके बाद वह पत्नी व बहिन के साथ वहीं रहने लगा । एक बार आचार्य के वहां आने पर उसने श्रावक के बारह व्रत धारण किये तथा उसकी जिनदास से प्रगाढ मैत्री हो गई ।

एक वार कामरूप देश के राजा ने उज्जयिनी पर आक्रमण कर दिया । अतः वकचूल युद्ध युद्ध करने गया तथा विजयी होकर लौट ही रहा था कि पीछे से जहरीला वाण आकर लगा । नगर मे पहुचने पर राजा ने वैद्य से उपचार कराया किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ । अन्त मे एक अनुभवी वेद्य ने कहाकि अगर इन्हे कोए का मास खिलाया जाय तो ये ठीक हो सकते हैं । किन्तु वकचूल ने कौए का मास खाने से तत्क्षण इन्कार कर दिया । राजा, मन्त्री आदि द्वारा समझाए जाने पर भी वह कोए के मांस का भक्षण करने को तैयार नही हुआ । अन्त मे राजा ने जिनदास को वुलाया । जिनदास को मार्ग मे रोती हुई स्त्रियां मिली । रोने का कारण पूछने पर उन्होंने

कहा कि 'हम सौधर्म कल्पवासी देवियां हैं । यह भी वही देव बनेगा किन्तु आपके कहने से अगर मास खा लिया तो उसका पतन हो जाएगा ।' तब जिनदास ने कहा कि 'मैं उसका पतन नही होने दूगा ।'

राजमहल मे पहुचने पर उसने राजा से कहा कि 'इसकी मृत्यु निकट है अत. नियम भग न कराकर इसे अधिकाधिक धर्म करने दें ।' यह सुन बकचूल अत्यन्त प्रसन्न हुआ और जिनदास द्वारा धर्म सुनता हुआ शुभ ध्यान से मृत्यु को प्राप्त हुआ तथा मास भक्षण न करने से बारहवें देवलोक मे देवपद प्राप्त किया । ०

— उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर

दृढ़ अहिंसक

☐ राज सौगानी

△

एक रईस व्यक्ति बहुत दयालु और धर्म प्रेमी था। एक बार किसी अंग्रेज कलेक्टर ने शिकार खेलने के लिए इससे हाथी मांगा अंग्रेजी राज्य मे अंग्रेजो आॅफिसरो की धाक किसी राजा से कम न थी, किन्तु रईस व्यक्ति ने स्पष्ट कह दिया—

सरकार मैं एक अहिंसक जैन हूं। मैं शिकार खेलने के लिए अपना हाथी कभी भी किसी को नही दे सकता।"

यह सुनकर क्लेक्टर ने उसे बहुत धमकिया दी और अन्त मे यहा तक कह दिया कि समझते हो। इसका परिणाम तुम्हारी जमीदारी के लिए क्या हो सकता है ?

व्यक्ति ने धीरज के साथ कहा—

"समझता हू, यही कि कोई अपराध प्रमाणित हो जाने पर जमीदारी हाथ से चली जाएगी, इससे अधिक और क्या हो सकता है ?"

इस उत्तर को सुनकर वह अग्रेज बडा प्रभावित हुआ। उसने मन ही मन सोचा—कैसा व्यक्ति है जो दूसरो के प्राण बचाने के लिए अपने सर्वनाश की चिन्ता भी नही कर रहा और एक मैं हू जो महज शौक पूरा करने के लिए मिनटो मे दूसरो की जान लेने मे भी नही हिचकता।

इस घटना के बाद लोगो ने देखा कि शिकारी क्लेक्टर 'दृढ अहिसक' वन गया।

द्वारा—पी. सी सौगानी, स्टेशन रोड,
भवानी मंडी—३२६५०२

मुझे तंबाकू नही खानें वाले पापा चाहिये।

□ श्री राजमल डांगी

△

'बाप पर बेटा और सवार घोडा, उक्ति सुनी थी पर महाविद्यालय मन्दसौर के प्रोफेसर रतनलाल जैन के घर जो घटित हुआ, वह अद्‌भूत ही समझना चाहिये। घटना इस प्रकार से है।
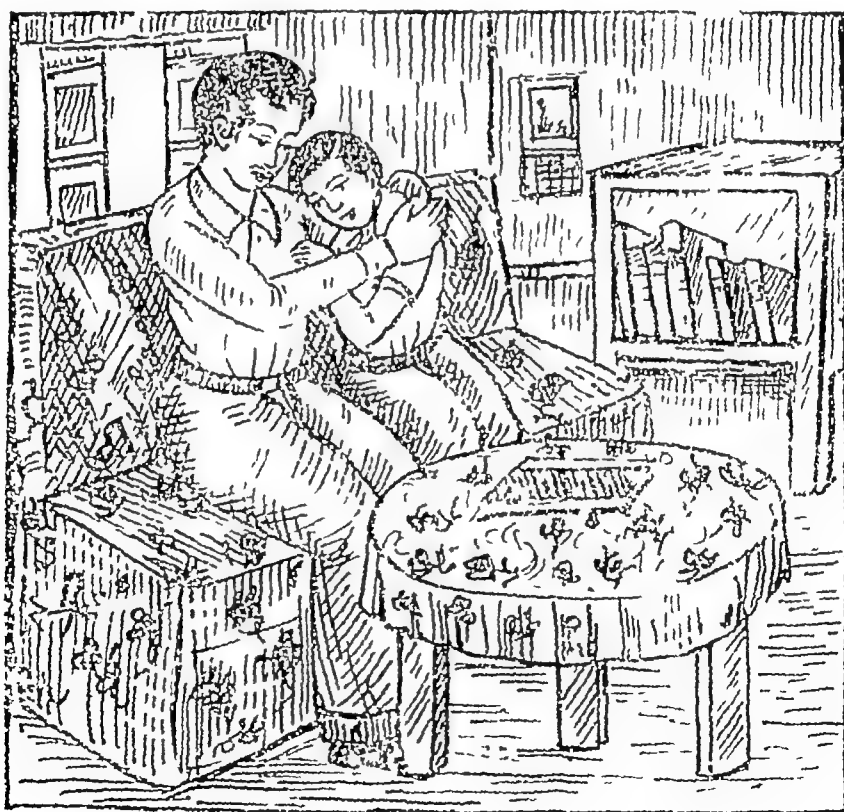
उनके बेटे विश्वास को युनिवर्सिटी द्वार पुन' मूल्याकन करने पर ६ अक गणित मे अधिक प्राप्त हुए तो विश्वास फूला नही समाया। वह अति उत्साह मे विह्वल होकर पापा प्रोफेसर रतनलाल

जैन के पास बैठा गया । बडी आस्था के साथ उस विश्वास का अत-रग चहक उठा और बोला-पापा, युनिवर्सिटी द्वारा प्राप्त इन छः अको की उपलब्धि से मैं अब प्रथम श्रेणी मे सर्वाधिक अक वाला विद्यार्थी हू । मुझे आपकी ओर से कुछ मिलना ही चाहिये ।

प्रोफेसर जैन ने सहज भाव से मुस्कुराते हुए कह-क्या चाहता है बेटा ? अभी तो तू काश्मीर यात्रा से लौटा ही है । अभी कुछ बजट का भी प्रश्न है ।

विश्वास बडे विवेक से बोला—पापा मुझे जो चाहिये उसमे ९ पैसे का भी खर्च नही है ।

प्रोफेसर जैन ने वायदा किया—अब तो तू जो मागेगा वो दूगा । विश्वास ने पुन वायदा पक्का करवाया और बडे स्नेह व विवेक भाव से माग बैठा–'पापा, अब आप तबाकू नही खा ओगे ।'

विद्वान् प्रोफेसर हृदय से गद्गद् हो उठे । कुछ भोचक्के भी हो गये । उनकी आखें शर्म से गड सी गई । अपने प्रिय पुत्र को बाहुपाश मे जकड कर गद्गद्–कठ से स्वीकृति दे दी । पास मे पडी तम्बाकू की पुडिया सडक पर फैंक दी । एक विद्वान पिता ने बौद्धिक पुत्र को पचा लिया । तबाकू खाने वाले प्रोफेसर अब तबाकू नही खाने वाले पापा बन गये । ०

—राम टेकरी, मदसौर

राात्रि भोजन निषेध :

हंस-केशव-कथा

□श्रीमती सुधा खाब्या

△

किसी समय कुण्डपुर नामक नगर में यशोधर नामक व्यापारी रहता था। उसकी पत्नी का नाम रम्भा था। उनके हंस व केशव नामक दो पुत्र थे। एक बार दोनो भाईयो ने उद्यान मे एक मुनि को देखा। वे श्रद्धापूर्वक मुनि को प्रणाम कर उनके पास बैठे। उन्हे योग्य पात्र देखकर मुनि ने रात्रि-भोजन से होने वाले अनर्थों को विस्तार से बताया। जिसे सुनकर दोनो भाईयो ने रात्रि-भोजन न करने की प्रतिज्ञा की। तब मुनि नें उन्हे नियम को दृढता से पालने की प्रेरणा दी। उनके सत्संग से प्रसन्नमना वे उन्हे प्रणाम कर घर आये।

सूर्यास्त की वेला समीप जान कर उन्होंने माता से भोजन मागा। वे हमेशा रात्रि-भोजन करते थे अतः मा ने आश्चर्य से जल्दी भोजन मागने का कारण पूछा। तब दोनो ने रात्रि-भोजन त्याग के नियम के बारे मे बताया। जिसे सुनकर वह क्रुध हो गई और उन्हे बहुत फटकारा तथा भोजन नही दिया।

रात्रि में भोजन के समय पिता ने उन्हें भोजन के लिए कहा तो उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा की बात बताकर भोजन से इन्कार कर दिया जिससे पिता भी क्रुद्ध हुआ किन्तु वे व्रत पर दृढ रहे। दूसरे दिन भी उन्होने भोजन नही किया तब माता-पिता ने उन्हे समझाया किन्तु वे व्रत-त्याग को तैयार नही हुए। तब पिता ने उन्हे भोजन देने की मनाही कर दी।

इस प्रकार पांच दिन व्यतीत हो गये किन्तु माता-पिता को दया नही आयी। छठे दिन माता-पिता के कहने पर हंस ने केशव की

और दयनीय दृष्टि से देखा जिससे केशव समझ गया कि हस विच-लित हो गया है । तब उसने माता-पिता से भोजन करने से इन्कार कर दिया । उसके वचनो को सुनकर क्रुद्ध पिता ने उसे घर से निक-लने को कहा । तब केशव हस के साथ जाने को उद्यत हुआ तो पिता ने हस का हाथ पकड़कर बिठा दिया और भोजन करा दिया । तब केशव अकेला ही घर से निकल गया ।

नगर के बाहर जाने पर उसने यक्ष पूजा मे सलग्न लोगो की भीड देखी । केशव को वहा आया देखकर वे प्रसन्न हुए तथा भोजन करने को कहा किन्तु केशव ने स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया । जिससे क्रुद्ध लोगो ने कहा कि तुम भोजन नही करोगे तो हम भी भोजन नही करेंगे । तुम हम सबको भूखा रखोगे ।

वे लोग यह कह ही रहे थे कि सहसा यक्ष प्रकट हुआ और कहने लगा कि 'तुम्हारे भोजन न करने से मेरे भक्त भूखे रहेगे । अतः

या तो भोजन कर या मरने को तैयार हो जा ।' यह सुनकर सोच-विचार कर केशव मरने को तैयार होकर ध्यान मे लीन हो गया। उसे अविचलित देखकर यक्ष ने मायावी धर्मघोष मुनि बनाये और उनके द्वारा केशव को प्रतिज्ञा भग करने को कहलाया किन्तु केशव उसे यक्ष-माया समझकर अडिग रहा । तत्पश्चात् अनेक प्रकार के प्रयत्न किये जाने पर भी वह अपने नियम पर अडिग रहा ।

कुछ समयोपरान्त सब कुछ शान्त हो गया तथा केशव ने उस स्थान को जन-शून्य देखा । उसी समय उस पर पुष्प-वर्षा होने लगी तथा उसकी दृढता से प्रसन्न एक देव ने उसे वर मागने को कहा। तब केशव ने कहा कि 'मुझे कुछ नही चाहिये । व्रत पर दृढ रहने का ही आशीर्वाद दीजिये ।' यह सुन देव ने प्रसन्न होकर उसे वर दिया कि 'जो तुम्हारे पैर के अगूठे को धोकर पीयेगा वह रोग-मुक्त हो जाएगा तथा कष्ट के समय तू जो सोचेगा वही होगा ।' ऐसा कह-कर देव ने उसे साकेत पहुचा दिया ।

वहा उद्यान में उपदेश देते हुए आचार्य को देखकर केशव भी वहां गया । वहा के राजा धनजय ने आचार्य से अपने स्वप्न के बारे मे पूछा । तब आचार्य ने केशव की ओर सकेत कर कहा कि 'वह्निदेव ने इसकी नियम-दृढता से प्रभावित होकर इसे राज्य देकर तुझे सयम-पालने की प्रेरणा दी थी '

राजा धनंजय ने तत्काल केशव का राज्याभिषेक किया तथा दीक्षा ग्रहण की । एक दिन राजमहल के गवाक्ष में बैठे केशव ने अपने पिता को दीन-हीन दशा में आते देखा । उन्हे देखकर उसने शीघ्र ही उन्हे बुलवाया तथा प्रणाम कर पिता से कुशलक्षेम पूछते हुए हस के बारे मे पूछा । तब रोते हुए पिता ने कहा कि 'जिस रात तुम घर से निकले उसी रात छत पर स्थित नाग के मुख से गिरी विष-बूंद-मिश्रित भोजन करने से उसके शरीर में विष फैल गया । बहुत उपचार किया किन्तु कुछ लाभ नही हुआ । अन्त मे मन्त्रिको ने कहा कि 'यह एक माह तक जीवित रहेगा फिर विष के प्रभाव से इसके अग

गल जायेंगे ।' तब मैं तुझे खोजने के लिए चल पडा और आज तुझसे मिला हू । आज ही एक माह पूर्ण हुआ है । अब पता नही वह जीवित है या नही ?

यह सुनकर केशव भाई की याद मे मग्न हो गया तथा उसे चिन्ता होने लगी कि सौ योजन दूर इतनी जल्दी कैसे पहुचू । तभी वह्निदेव ने तत्क्षण ही उन्हे हस के समीप पहुचा दिया । हस के गलित शरीर मे से तीव्र दुर्गन्ध आ रही थी । उसकी वैसी दयनीय दशा देख कर केशव चिन्तित हो गया । उसी समय देव ने उसे अपने वरदान की याद दिलायी । तब केशव ने उसी समय अपने पैर का अगूठा धोकर उस जल के छीटे हस के शरीर पर दिये जिससे हस तत्क्षण स्वस्थ होकर उठ बैठा ।

यह चमत्कार देखकर रोग-पीडित हजारो नागरिक उस जल के प्रयोग से रोग-मुक्त हो गये तथा केशव सभी परिवार–जनो के साथ रात्रि भोजन का त्याग कर तथा राज्य मे रात्रि-भोजन न करने की घोषणा कर सयम-पूर्वक सुख से राज्य करने लगा । ★

—उदयपुर

विज्ञापन

'चारित्र समभावो' अर्थात्
समभाव ही चारित्र है।
— भ महावीर
श्री राजमलजी गोलछा
परिवार
जयपुर

शक्ति और सम्मान का स्रोत जब गुण न रह
कर धन बन जाता है तो सासारिक जीवनमे
सभी धन के पीछे दौड़ना शुरू करते है एक
गहरा ममत्व लेकर ।
—भ० महावीर
शुभकामनाओ सहित—
फूसराज पूरणमल
६५, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता—७

G. S. ENTERPRISE

Wholesale Fancy Saree Merchants

1, Noormal Lohia Lane

CALCUTTA-700 007

Phone: 33-4342
34-8201
Off. : 323470

Resi:-44-3117
434200

Our Associates :

PRAKASHCHAND VINODKUMAR

Tangail & Fancy Cottan Printed Sarees
1, Noormal Lohialane, CALCUTTA-7

Minni exports

1/1 Noormal Lohialane
CALCUTTA 7

Saree Emporium

House of Fancy Embrodary Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane CALGUTTA-7

"मनुष्य का अनुमान कभी भी उसकी त्रुटियो से नही लगाना चाहिए । मनुष्य मे जो महान् सद्गुण होते है वे उसके हैं । किन्तु उसकी त्रुटिया मानवता की सामान्य दुर्वलताएँ हैं, अत उसके चरित्र के मुल्याकन मे उनका कोई महत्व नही होना चाहिये ।"
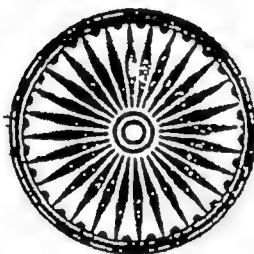
—विवेकानन्द

समता दर्शन का लक्ष्य है कि समता विचार
में हो, दृष्टि और वाणी में हो तथा समता
आचरण के प्रत्येक चरण में हो
—आचार्य श्री नानेश
With best compliments from :
UMA TEXTIIE
116, New Cloth Market
AHMEDABAD

दिल परमात्मा का घर है । परमात्मा मिलेगा तो दिल ही मिलेगा । दिल मे न मिला तो कही नही मिलेगा ।

ज. वा

चोरड़िया परिवार

जयपुर

मनुष्य मे जितनी ज्यादा विनयशीलता होगी,
उसकी पुण्याई उतनी ही ज्यादा बढेगी ।
With best Compliments
FROM
M/s. MUSICALFILMS
(P) LTD.
9-A, Esplanade East
CALCUTTA (W.B) 700069
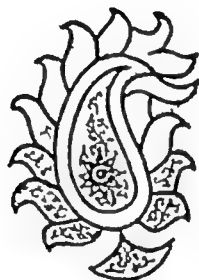
जो साधक आत्मा को आत्मा से जानकर राग-
द्वेष के प्रसगो मे सम रहता है वही पूज्य है।
भ. महावीर
With best Compliments from ;
Kankaria Trading Co.
Opp Bijlighar
Tilak Road,
Ahmedabad
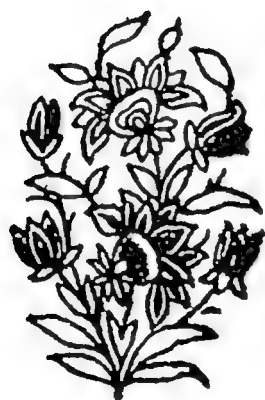
साधक न जीने की आकाक्षा करे और न मरने का कामना करे वह जीवन और मरण दोनो मे ही किसी तरह की आसक्ति न रखे, तटस्थ भाव मे रहे ।

—भ महावीर

शुभकामनाओ सहित —

कोठारी परिवार

जयपुर

गहस्थ को सयम की तरह प्रतिदिन कुछ न कुछ तप भी करना चाहिए । तप से इन्द्रियो के विपय क्षीण होते है और पर दुख मे समवेदना जागृत होती है।

शुभकामनाओ सहित :—

ढड्ढा परिवार

जयपुर

卐

जो साधक ग्रात्मा को ग्रात्मा से जान कर राग-
द्वेष के प्रसगो मे सम रहता है वही पूज्य है ।

—भ महावीर

With best compliments from :
M. P. TEXTILE MILLS
239, New Cloth Market
AHMEDABAD-380 0o2
Tel. : 369050, 393183

WITH BEST
COMPLIMENTS
K.S. TEXTILES
105, New Cloth Market
AHMEDABAD - 380 002

With best compliments from
Narendra Processing Industries
33/1, Plot No 1, BEHIND (Sitejail)
KHATODRA
SURAT 395002
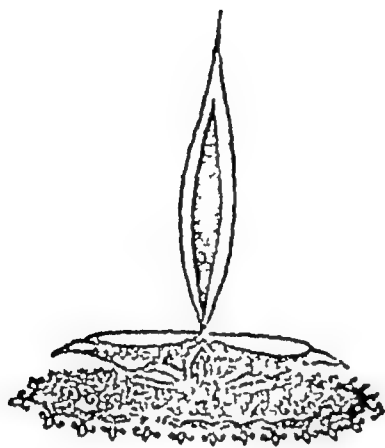
असली सौन्दर्य आत्मा की वस्तु है । आत्मिक सौन्दर्य की सुनहरी किरणें जो बाहर प्रस्फुटित हैं, उन्ही से शरीर की सुन्दरता बढती है ।

— श्रीमद् जवाहराचार्य

शुभकामनाओं सहित —

इन्द्रजीतसिंह बैंद

हेम राज मूथा

जयपुर

जो आत्मा विषयो से निरपेक्ष है,
वह ससार मे रहता हुआ भी जल
मे कमलिनी–पत्र के समान अलिप्त
रहता है । —भ. महावीर
शुभकामनाओं सहित —
नेमसिंह बैद परिवार
जयपुर
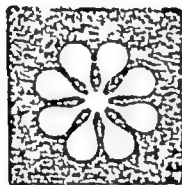
शुभकामनाओं सहित—

सज्जनसिंह सुरेन्द्रकुमार करणावट

कुंदीगरों के भैरूं जी का रास्ता

जयपुर—३०२ ००३

**
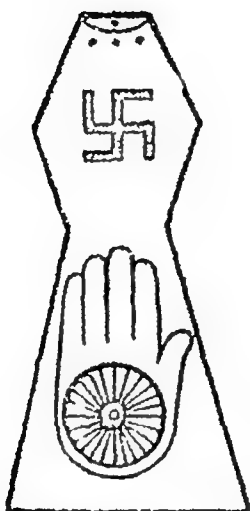
With Best Compliment From
Victor Industries
113 B, Manohardas Chowk
2nd Floor
Calcutta—700007

With best complimets from .
J.K. TRADERS
Jumma Masjid Road,
BANGALORE-560 002
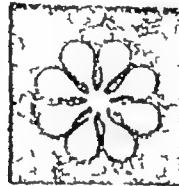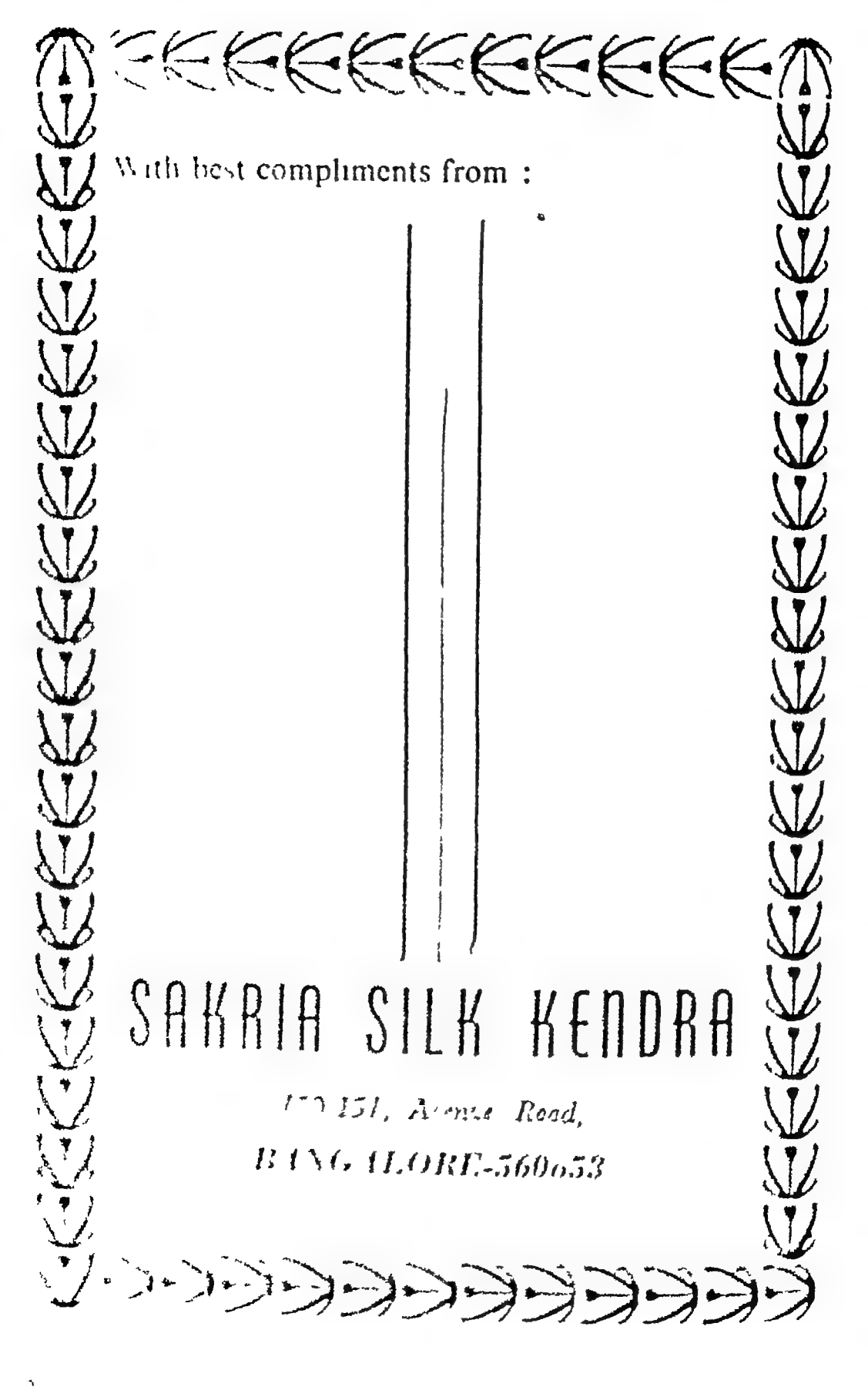
With best compliments from :
SAKRIA SILK KENDRA
151, Avenue Road,
BANGALORE-560053

धन को बडा मत समझो
धर्म को बडा समझो
With best Compliments from ;
राजस्थान होमियो स्टोर्स
ढढ्ढा मार्केट, जौहरी बाजार,
जयपुर-३
Phone : 44010 & 72566
With best compliments from
फोन – ३४
हनुमान मल सम्पत लाल
बंगाई गांव (आसाम)
सम्बन्धित प्रतिष्ठान —
विजय कुमार प्रदीप कुमार
हनुमानमल चम्पालाल
बगाई गांव (आसाम)

अधिक सम्पन्नता तो
अधिक सादगी और
अधिक विशिष्ट विकास
तो अधिक विनम्रता,
यह समता साधक का
धर्म होना चाहिए ।

—आचार्य श्री नानेश
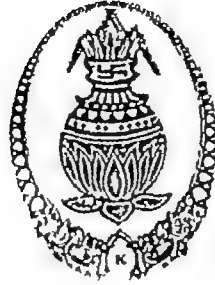
With Best Compliments From :
(Office : 220563-236555
Phones(Factory : 741616-716828
(Resi : 712717
RAJASTHAN
KNITTING MILLS
HOSIERY GOODS MANUFACTURERS
Works
A-51, Industrial Area,
Wazirpur DELHI-110052
Office
2778, Hamilton Road
DELHI-110006

धर्म मगलकारक ही नही है, साक्षात् मगल है ।
शुभकामनाओं सहित
न्यू एशियन इन्टरप्राइजेज
जयपुर
धर्म व्यक्ति और समाज का जीवन है ।
शुभकामनाओं सहित
लिखमीचन्द मानकचन्द तालेरा
जयपुर

With best compliments from :
Mootha Finance Corpn.
555, Bengali Bazar Road, Alandur
MADRAS-600 016
Phones - 431615, 431897, 431729
Gram - MOOTHACO

Garm—RANKATEX
With Best Compliment From:
RANKA
Textiles
Cloth Merchant & Textile Processors
Factory—Near Shahwadi Village,
NAROL Ahmedabad 382405
Phone—397627
OFFICE--61, New Cloth Market,
Ahmedabad 380002
Phone-367584
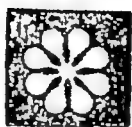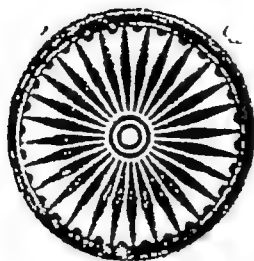
With best compliments from :
Cal Office · 332245
Phone 361170
Gulabchand Motichand
Calcutta Office -
Manikchand Subhashkumar
1/1, Noormal Lohia Lane,
CALCUTTA-7
523, New Cloth Market
AHMEDABAD-2

Tele· Bhai Bhai
Offi . 365801
Resi · 441634
With Best Compliments From
P. A. Chemicals
(Xerox Division)
86 New Cloth Market
Ahmedabad-380002
Specialist
Xerox Copy
Cyclostyle
Amonia Printing

With Best Compliments From –
Kundanmal Parasmal
14, K.M. Market
Kalupur KotNiRang
AHMEDABAD-38001
With Best Compliment From.
Chandan Mal
Daulat Raj & Co.
Cloth Merchants
459-SAKAR BAZAR
AHMEDABAD - 380 002

With best compliments from .
Lalwani Finance Corporation
57, New Cloth Market,
AHMEDABAD-380002
With Best Compliment From.
Manakchand Subashkumar
Cloth Market,
1/1, Noormal Lohia Lane,
Calcutta - 7
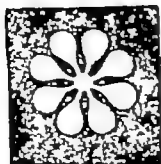
With best compliments from
T Loonchand Chordia
Siremull Hirachand & Co.
Authorised Dealers for
ALL KINDS OF TYERS ❀ EXIDE BATTERY
Opp to Govt Arts College
New Number . 150, Mount Road,
Madras-600 002
Phone 85994, 811443 Resi. : 76181, 75051
With best compliments from
Cable . JEYKEY
Phone : 3213 Office
3417 Factory
3893 Residence
Jey Key Woollen Ind.
Mfr of - Quality Woollen Carpet Yarn
Factory - 58, Industrial Area,
BIKANER-334 001 (Raj)
Off - M/s. Jugalkishore Ganeshilal
Office Compound, Rani Bazar,
Bikaner-334 001 (Raj)

शुभकामनाओं सहित—
अभयराज जैन
श्री महावीर क्लोथ मार्केट,
अहमदाबाद-३८००२२
WITH BEST
COMPLIMENTS
Dinesh Kumar
Rajesh Kumar
135, New Cloth Market,
AHMEDABAD-380002
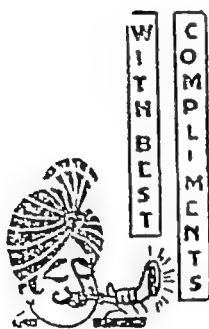
शुभकामनाओं सहित :
प्रतिष्ठान -
राजस्थान होम्यो स्टोर्स
ढढ्ढा मार्किट, जोहरी बाजार, जयपुर-३०२ ००३
फोन - ४४०१०, ७२१६६
सम्बन्धित प्रतिष्ठान -
राजस्थान ट्रेडिंग कम्पनी राजस्थान होम्यो ट्रेड्स
स्टीडक्योर होम्यो लेबोरेट्रीज
जयपुर
शुभकामनाओं सहित -
तार-पारख
Phone : Shop : 24
Resi : 84
केशरीचन्द मूलचन्द पारख
नोखा (बीकानेर) राजस्थान
सम्बन्धित फर्म :
रतन दाल मील, नोखा
आटो सैन्टर, नोखा (बीकानेर) फोन - ५८
फोन-८४२५३८
जयपुर वेक्स प्रोडक्टस
मेंन्युफेक्चर्स वेक्सपेपर केन्डल, वासर एण्ड इन्डस्ट्रीयल प्रीन्टर्स,
जयपुर-३०२०१३

शुभकामनाओं के साथ —
Phone - 525080, 525928
आपकी साड़ी की जीवन साथी
कुसुम साड़ी फाल्स
२०० से अधिक पक्के व आकर्षक रंगों में
मील का रंगा कपड़ा - सुपर फाईन व एक्सपोर्ट
क्वालिटी के एक मात्र निर्माता
मैं: अनिल इन्टरप्राईजेज
४२२३ गली बहूजी पहाड़ी धिरज
दिल्ली-११०००६
With Best Compliments From
Phone - 384459
Shah Mangilal Ghishulal
Cloth Merchant & Commission Agent,
Sugarwala Market, Sakar Bazar
Ahmedabad - 380002
शाह मांगीलाल घीसुलाल
कपड़े के व्यापारी
सुगरवाला मार्केट, साकर बाजार, अहमदाबाद–२

With Best Compliments From —
Phone — Office 64025
Resi. 44478
Sunil Enterprises
Authorised Wholesaler for
VIMAL SUITING & SHIRTING
25-26, Jhulelal Cloth Market
Bapu Bazar, JAIPUR-302003
With Best Compliments From -
Phone - 54430
GAUTAM
INVESTMENT Co.
Automobile, Financiers & General Merchant
137 Shree Mahavir Cloth Market,
Near Hirabhai Market,
AHMEDABAD-380 002

With best compliments from :
Prakashchand Kishanlal
Delhi Office
2324, Gali Hinga Beg Tilak Bazar,
Delhi-110006 Phone 2513509
Ghaziabad Office .
G T Road, U P. Border, Chikamberpur
Ghaziabad U P
Tea Merchants and Commission Agents
With best compliments from :
Parik Trading Co.
160. Jamunalal Bajaj St Punjabi Katra,
Calcutta - 7
Branch .
121 Hariom Market
(Revdi Bazar)
AHMEDABAD-2
Bajaj Khana
KOTA 6
Rajasthan
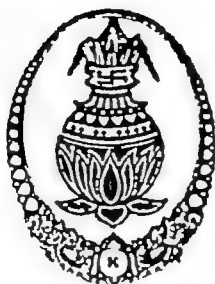
With Best Compliments From —
POLYLAM Industries
Morzavia Industrial Estate,
Bannergatta Road, Bangalore-29
With Best Compliments From -
N.D. DINGRA
CHEMICAL IND.
4/27, Sarvaria Market
Vishwash Nagar, Shahdara
DELHI-110032
Mfrs, of P.U.C. Compounds

With Best Compliments From –
Phone: Office 335368
380741
Resi. 442979
Gautamchand Lalchand
Cloth Merchant & Commission Agent
676/56/28, Dhanlaxmi Market, Cross Lane,
Ahmedabad–380002
With Best Compliments From
VIKAS POLYMERS
6/3 Kirti Nagar, Industrial Area,
NEW DELHI-110015
Mfg. of:P.V.C. COMPOUNDS
Phone 537592,532191 Resi - 538088, 505934

With Best Compliments From
Phone Office : 20223
Resi ; 24115
Ami Chem Corporation
Manufacturers of Fine Chemicals
L/156, G I D C Estate, Odhav Ahmedabad-382415
Shah Mannalal Amarchand & Sons
Ferrous & Non Ferrous Metal Merchant
Arihant Metal Corporation
Ferrous & Non Ferrous Metal Merchant
Chhotalal Chawl, Outside Delhigate,
Ahmedabad - 380001
With best compliments from
Phone Office 51591
Resi 54688
J. Parasmull Manakchand Kothari
No 105, Brigad Road, (Shoolay)
Ashoknagar, Bangalore-560 025
Sister Concern .
KOTHARI AUTOMOBILES
SECO INDUSTRIES BANGALORE
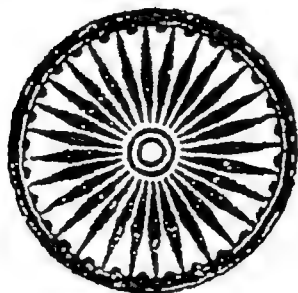
With best compliments from :
GLOBE TRANSPORT CORPN.
43, Ara Koshan Road, Ram Nagar,
NEW DELHI-110055
Phone . 517175
शुभकामनाओं सहित
Gram Oswalcalco
Phone 2511075
2513587
ओसवाल कैलेंडर कम्पनी
१६३६ फव्वारा, दिल्ली-११०००६
कैलेडर एव डायरियो के निर्माता

With best compliments from :
दीं बैंक ग्राफ राजस्थान लिमिटैड
The Bank of Rajasthan Ltd.
Regd. Office · Clock Tower Udaipur
Phone 72669, 67505, 68043
Telegram – 'Bankraj'
Central Office
C-49, Bhagwandass
Road, Jaipur-302001
With best compliments from
Hirachand Ratanchand
Hirachand Prasannchand
Hirachand Sayarchand
Hirachand Goutamchand
Automotive Financiers :
Head Office ·
Hira Mansion
No 17 General Muthiya Mudali St.
Madras-600 079
Regional Office
Ratan Mension
No. 170, 6th Cross, Gandhinagar
BANGALORE-560009
Divisional Office -
Tavva Mansion
1-8-142/B Plot No 4 Prenderghast Road
SECUNDERABAD-500 003
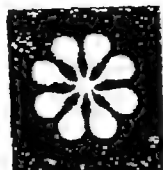
With best compliments from
Office 363001
Tele. · Resi. : 445591
Flat 449913
Surajmal Dineshchander
Cloth Merchant & Commission Agent
Dealer of Calico Mills
281, New Cloth Market
AHMEDABAD-380002
With best compliments from
MOTOR CREDIT CORPN.
Dugar House, Queen's Road,
BANGALORE-560 052

With best compliments from .
HUNDRAJ & SONS
5640, Ist Floor, Pytex House
Main Qutab Road
New Delhi-110055
Phone 529464
Manufacturers Representative
With best compliments from
M/s. Popular Transport
Co. (P.) Ltd.
H O 31 Ware House Road, Indore (M P)
Phone 33095, 6793
B O · 202 Kamla Market, New Delhi
Direct Service - Delhi to Bangalore, Indore,
Bombay, Madras etc

With best Compliments from :
S. Manakchand Pukraj
No. 1 Vinayag Mudali Street
MADRAS-79
With best compliments from .
M/s. Motor Enterprises
Dugar House, Queen's Road
BANGALORE-560052

Mahavir FINANCE CORPORATION
109, Shri Mahavir Cloth Market,
Behind New Cloth Market, Ahmedabad-380 022
Phone 50703
Phone 51741
Rathore Investment
AUTOMOBILES FINANCIERS
130 Shri Mahavir Cloth Market,
Diwan Ballubhai Marg, Ahmedabad-380 022
Phone 52746
Jatan Finance Corpn.
212, Shri Mahavir Cloth Market,
Behind New Cloth Market
Ahmedabad-380 022
Phone - 50357
KISHOR TRADERS
Financiers & General Merchants
c/o 201 Mahavir Cloth Market,
Diwan Ballubhai Marg, Ahmedabad-380 022

With Best Compliments From
Phone .
Off 25647
24750
Resi : 67121
Laxmi Metal Syndicate
Ferrous & Non-Ferrous Metal Merchant Spe in -
Gun Metal, Bronze, Brass, Boring & Scrap
1788/1, Bhagwati pole Naka, Lunsawad, Dariapur.
Ahmedabad—380001
Allied Concerns
Mahendra Metal Syndicate Bombay
Laxmi Alloys & Casting Co Ahmedabad
शुभकामनाओं सहित
मुरली मनोहर सोमानी
प्रीमीयर टैक्सटाइलस मील्स
आशा टेक्सटाइलस मील्स
१५० न्यू क्लोथ मार्केट पहला माला
अहमदाबाद—२
शुभ कामनासहित
विनय ट्रेडींग कम्पनी
ओटो फायनेन्सियर्स एवम् जनरल मर्चेन्टस
२०४ आनन्द क्लोथ मार्केट
अहमदाबाद—३८०००२

With Best Compliments From :
Hello· 22241
20008
DIGITOKO (India)
(Mfg & Exporters of Quartz Clocks &
Laminated Pictures)
15/B Advani Market, Outside Delhi Gate,
Shahibag Road
Ahmedabad—380004
With best compliments from .
Phone
Offi : 33-7913
Res : 34-7340
Jagnnath Kishan Gopal
Wholsale Cloth Merchents
70, Jamanalal Bajaj Street
Calcutta—7
With best compliments from :
Manekchand Jhaverchand
38, Armenian Street
Calcutta—700001

With Best Compliments From -
PREM PLASTICS
A-70, Narayana Industrial Area Phase I
NEW DELHI
Mfg, of P.V.C. Footwear
Phone - 537545

समता का आविर्भाव तभी सम्भव होगा
जब राग और द्वेष को घटाया जाए ।
—आचार्य नानेश
नेमचंद भवरलाल
☐ कपडे के थोक एवम् खुदरा विक्रेता
☐ आसाम चिकनी सुपारी के निर्माता
पो विसासीपाडा (आसाम)
शुभकामनाओ सहित -
कार्यालय · १४५१
निवास ६५७
वुड—क्राफ्ट
१६७, लक्कड पीठा, रतलाम म प्र
उपयोगी, टिकाऊ एव सजावटी श्रेष्ठतम फर्निचर एव
दरवाजो के निर्माता
ईश्वर जब मिलेगा अपने आप मे ही मिलेगा।
—श्री जवाहरलालजी म सा
फोन—१२३
घेवरचन्द केसरीचन्द गोलछा
☐ किराना-चाय के थोक एव खुदरा विक्रेता
☐ आसाम चिकनी सुपारी के निर्माता
ए ओ सी रोड, पो वगाई गाव, जिला गवालपाडा
तृष्णा ही दुख का मूल—आचार्यश्री जवाहरलालजी म सा
फोन ३५
विजयकुमार प्रदीपकुमार
रोड, वगाई गाव (आसाम)
विक्रेता एवम् आढती

With Best Compliments From:
卐 卐
Phone :
Offic 38-2396, 38-3594
Resi , 78198
Motilal Rajendrakumar
2, Rangwala Cloth Market
Ahmedabad-380002
With best compliments from :
Suman Woollen Mills
44, INDUSTRIAL AREA
BIKANER—334001
Mfgr of Woollan Carpat Yaran
Office 4398
Resi 4498
Oswal Woollen Mills
85,INDUSTRIAL AREA,
Bikaner 334001
Manufacturer of Carpet Woollen Yarn Lefa
And Processors of Woollen Yarn Scouring

With Best Compliments From
Phone 382918
Ugamraj Shantilal
676/57, Dhanlaxmi Market, Cross Lane,
Ahmedabad—380002
Phone Off 5727
Res 5527
Lucky Paint & Chemical Industries
Mfgr of Plaster of Paris
B-12, Industrial Estate
BIKANER—334001
Sister Concern:-
Lucky Goods Suppliers & Traders
Bikaner
With best Compliments from ;
Phone 4805
Meghraj Kodamall Bothra
Bothra Chowk
Gangashahar,
Bikaner (Raj)

With Best Compliment From.
LINE
TELE . 382084
Chandmal
Maskatı Market
Ahmedabad 380002
Allıed Concerns
M/s Aakash TexTıle Tradeıs
M/s vıshal Textılc Traders
M/s Tirupati Synthetics
Geeta Katra Calcutta—7
Dealer of Shırtıng & Suıtıng
No. 1 Mullıck Street (29 Armanıan Street)
CALCUTTA-7
Phone
Shop . 330096
Res 345396, 575471
Godwan 311261
Satyanarayan Lalitkumar
16, Pageyaputty Street
Calcutta—7

With Best Compliments From :
METAL UDYOG
Regd Office -
111, New Cloth Market
Ahmedabad-380002
phone C/o 360551, 360852
Works -
Prem Premises, Station Road
Vatva-382440 Dt, Ahb.
Phone: C/o 877281 877281
Always Insist on RUPA Saree Falls
Mfgd by.
Phone 523586
P. K. Enterprises
356-C, Teliwara Sadar Bazar
DELHI—6
Always Insist on SAJNA Fast Colour Saree Falls
Mfgd by
Phone. 523586
Kiran Supply Agency
356/C, Teliwara Sadar Bazar
DELHI—6
With Best Compliments From
Macoplast Pipe Industries
15,B V.K. Iyengar Road
Post Box No-7126
'D' Rengaiah Complex
Bangalore—560053

☐ मुख्य पृष्ठ के चित्रकार : भारत के लब्धप्रतिष्ठित
चित्रकार श्री इन्द्र दुगड, कलकत्ता